विशेष लेखक प्रेमचंद

Course Code: M23HD12DC

Discipline Core Course

Postgraduate Programme in

Hindi Language and Literature

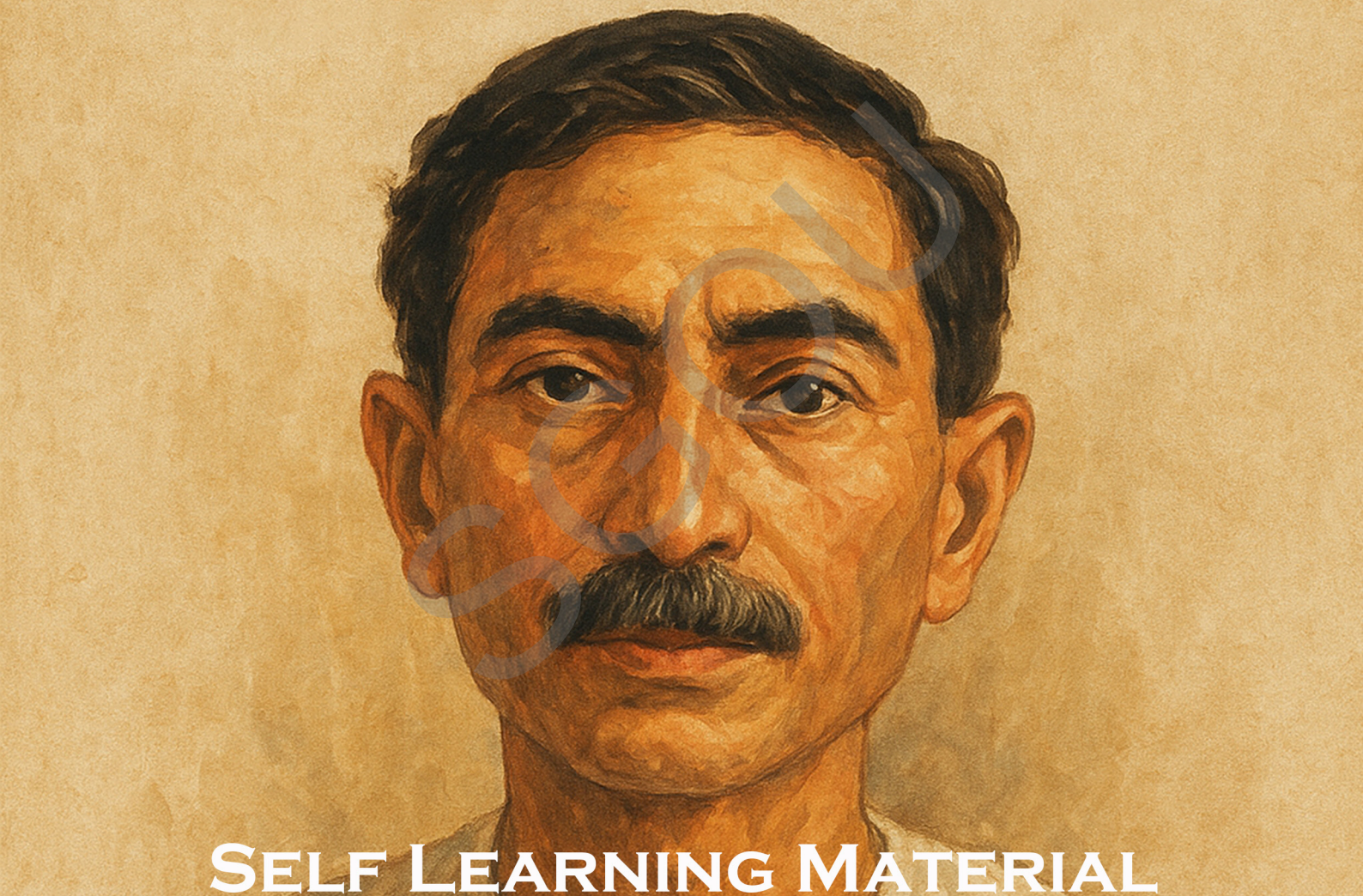

Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University of Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

SGOU

विशेष लेखक प्रेमचंद

Course Code: M23HD12DC

Semester-IV

Discipline Core Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

(with Model Question Paper Sets)

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

विशेष लेखक प्रेमचंद

Course Code: M23HD12DC
Semester- IV
Discipline Core Course
MA Hindi Language and Literature

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. R. Sethunath
Dr. Vijayakumar B.
Dr. B. Ashok

Development of Content

Dr. Sudha T.

Review and Edit

Dr. Sandhya Menon

Linguistics

Prof. N. Vijayakumar

Scrutiny

Dr. Sudha T.
Dr. Indu G. Das
Dr. Krishna Preethy A.R.
Christina Sherin Rose K.J.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
January 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open

ISBN 978-81-990686-6-7

9 788199 068667

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.m

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the PG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-08-2025

SGOU

Contents

BLOCK 01 प्रेमचंद : सामान्य परिचय..... 1

इकाई 1: प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास, प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास एवं उपन्यासकार..... 2
इकाई 2: प्रेमचंद : जीवन और कृतित्व मेरा जीवन (संक्षिप्त आत्मवृत्त)..... 11
इकाई 3: प्रेमचंद और उनका युग सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, प्रगतिशील लेखक संघ..... 22
इकाई 4: राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद..... 29

BLOCK 02 कहानीकार प्रेमचंद..... 35

इकाई 1: कहानीकार प्रेमचंद..... 36
इकाई 2: ईदगाह, पूस की रात..... 47
इकाई 3: सद्गति, बूढ़ी काकी..... 69
इकाई 4: कफ़न, पंच परमेश्वर..... 89

BLOCK 03 उपन्यासकार प्रेमचंद..... 112

इकाई 1: हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का स्थान उपन्यासकार प्रेमचंद
प्रमुख उपन्यास - संक्षिप्त परिचय..... 113
इकाई 2: गोदान..... 139
इकाई 3: 'गोदान'-कथानक, 'गोदान'-आदर्श एवं यथार्थ, 'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य,
गोदान की पात्र - योजना..... 147
इकाई 4: गोदान में ग्रामीण और नगरीय कथाओं का विवेचन, गोदान की समस्याएँ..... 162

BLOCK 04 हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद..... 173

इकाई 1: प्रेमचंद और आदर्शोन्मुख यथार्थवाद..... 174
इकाई 2: प्रेमचंद और पत्रकारिता, पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान..... 182
इकाई 3: प्रेमचंद का वैचारिक गद्य (समाज, राजनीति, संस्कृति, साहित्य एवं भाषा
संबंधी प्रेमचंद के विचार) साहित्य का उद्देश्य-निबंध-प्रेमचंद..... 191
इकाई 4: प्रेमचंद की प्रासंगिकता..... 198

MODEL QUESTION PAPER SETS..... 207

SGOU

BLOCK 01

प्रेमचंद : सामान्य परिचय

SGOU

Unit 1: प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास, प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास एवं उपन्यासकार

Unit 2: प्रेमचंद : जीवन और कृतित्व मेरा जीवन (संक्षिप्त आत्मवृत्त)

Unit 3: प्रेमचंद और उनका युग सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, प्रगतिशील लेखक संघ

Unit 4: राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद

इकाई 1

प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास, प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास एवं उपन्यासकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के महान साहित्यकार प्रेमचंद के बारे में जानता है
- प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास एवं उपन्यासकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास के बारे में समझता है
- प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यासकारों के बारे में जानता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी और उर्दू के महान लेखक मुंशी प्रेमचंद उपन्यास सम्राट और कहानी सम्राट के नाम से जाने जाते हैं। उन्होंने समाज सुधार, देशप्रेम, स्वाधीनता संग्राम आदि से संबंधित रचनाएँ कीं। उनकी ऐतिहासिक व प्रेम कहानीयाँ भी काफी लोकप्रिय हैं। प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक हैं। हिन्दी साहित्य में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की एक नयी परम्परा की शुरूआत उन्होंने की। उनकी लगभग सभी रचनाओं का अन्य भारतीय भाषाओँ और अंग्रेजी में रूपांतर किया गया और चीनी, रूसी आदि विदेशी भाषाओं में भी कहानियां प्रकाशित हुईं। 'हिन्दी का गोर्की' कहकर उनका आदर किया जाता है। प्रेमचंद की ख्याति एवं लोकप्रियता इस बात से ही समझी जा सकती है कि हिन्दीतर प्रदेश के लोगों की ज़बान पर आज भी उन्हीं का नाम चढ़ा रहता है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की ख़ूबी यह है कि समस्त देश के लोगों को हिन्दी साहित्य के प्रति विशेष लगाव होने लगा। जो उनके पहले कबीर, तुलसी और प्रेमचंद आदि इने-गिने साहित्य नायकों के कारण ही हुआ है। प्रेमचंद को समझने केलिए तथा उनके साहित्य का सही मूल्यांकन करने केलिए आवश्यक है कि प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कथा साहित्य का थोड़ा-सा परचिय पा लें। इस दृष्टि से हम प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास का संक्षिप्त विवरण देंगे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

गद्य का विकास, अनूदित उपन्यास, नयी क्रान्ति, चरित्र प्रधान उपन्यास

Discussion / चर्चा

1.1.1 प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास

उपन्यास को आधुनिक युग का साहित्य रूप मानना उचित है। उपन्यास व्यक्ति की रचना होते हुए भी जनता का साहित्य है और व्यक्तिगत प्रतिभा के साथ ही सामाजिक जीवन को उजागर कर देता है।

▶ उपन्यास और कहानी लोकप्रिय विधा

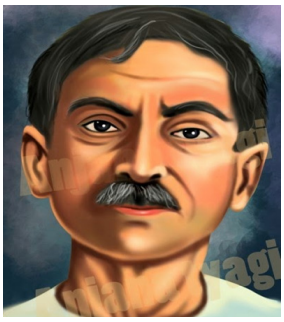

प्रेमचंद

हिन्दी साहित्य के उदयकाल से लेकर मध्यकाल तक साहित्य का विकास काव्यों तक सीमित रहा था। परंतु आधुनिक काल में अर्थात् सन् 1850 ई. से गद्य के विविध रूपों का विकास होता गया। गद्य के विभिन्न रूपों में उपन्यास और कहानी को लोकप्रियता प्राप्त हुई। इसलिए उनके विकास की गति तीव्र हो गई।

पाठकों के मनोरंजन को दृष्टि में रखते हुए हिन्दी के प्रारंभिक कथा लेखक आगे बढे। इंशा अल्ला खां कृत 'रानी केतकी की कहानी' (1800) लल्लूलाल कृत 'सिंहासन बत्तीसी' (1801) 'बेताल पच्चीसी' (1802) और 'प्रेमसागर' (1803) तथा सदल मिश्र रचित 'नासिकेतोपाख्यान' (1803) आदि हिन्दी कथा- साहित्य के प्रारंभकाल की रचनाएँ हैं।

▶ हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास- श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु'

भारतेन्दु काल के उपन्यास प्राचीन कथा परम्परा का अनुसरण करते हुए भी भिन्न है। डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के मत में "उपन्यास साहित्य जिस रूप में आज है, वह पश्चिमी साहित्य की देन है"। भारतेन्दु युग में सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रेम-प्रधान एवं तिलस्मी तथा ऐयारी आदि कई प्रकार के उपन्यास लिखे गए। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' (1882) माना जाता है। कुछ लोग श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते थे लेकिन उनका मत सर्वमान्य न हो सका।

1.1.1.1 सामाजिक उपन्यास

समाज सुधार और धर्मोपदेश को लक्ष्य बनाकर जो उपन्यास लिखे गए उन्हें सामाजिक उपन्यास की कोटि में रखा जा सकता है। बालकृष्ण भट्ट कृत 'नूतन ब्रह्मचारी', सौ अजान एक सुजान, किशोरी लाल गोस्वामी का 'लवंगलता' कुसुमकुमारी, बालमुकुन्द गुप्त का 'कामिनी' आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

▶ 'चन्द्रकान्ता' पढने केलिए अनेक उर्दू भाषियों ने हिन्दी सीखी

1.1.1.2 तिलस्मी-ऐयारी उपन्यास

देवकी नंदन खत्री हिन्दी में तिलस्मी-ऐयारी उपन्यास के प्रवर्तक माने जाते हैं। मनोरंजन ही इस प्रकार के उपन्यासों का लक्ष्य होता था। हिन्दी साहित्य के इतिहास में

SGOU

खत्री का नाम इस कारण नित्य लिया जाएगा कि जितने पाठक उन्होंने उत्पन्न किए उतने और किसी लेखक ने नहीं। 'चन्द्रकान्ता' पढने केलिए ही न जाने कितने उर्दू भाषियों ने हिन्दी सीखी। 'चन्द्रकान्ता' और 'चन्द्रकान्ता संतति' पढ़कर अनेक नौजवानों ने हिन्दी में उपन्यास लेखन शुरू किए। कलात्मक और साहित्यिक दृष्टि से तिलस्मी-ऐयारी उपन्यासों का कोई महत्व नहीं है, फिर भी हिन्दी पाठकों का मानसिक धरातल तैयार करने में इनका निश्चय ही ऐतिहासिक योगदान रहा है।

1.1.1.3 जासूसी उपन्यास

▶ अपराध-वृत्ति उपन्यासों का मूल-आधार

जासूसी उपन्यासों के प्रवर्तन का श्रेय गोपालराम गहमरी को दिया जाता है। उन्होंने मनुष्य की अपराध-वृत्ति को अपने उपन्यासों का मूल-आधार बनाया है। उनके ढाई दर्जन उपन्यास मिलते हैं। इनके उपन्यासों के मूल-विषय हैं- चोरी, डकैती और हत्या।

1.1.1.4 ऐतिहासिक उपन्यास

▶ ऐतिहासिक उपन्यासों में उपदेशात्मकता एवं मनोरंजन की भावना

हिन्दी के प्रारंभिक ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं किशोरीलाल गोस्वामी, बलदेव प्रसाद मिश्र, गंगाप्रसाद गुप्त आदि। ऐतिहासिक उपन्यासों में नीति कथा एवं लोककथा साहित्य की तरह उपदेशात्मकता एवं मनोरंजन की भावना है। "इस समय अनेक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए, जिसमें इतिहास नाममात्र को है। ब्रजनन्दन सहाय के 'लाल चीन' तथा मिश्रबन्धुओं के 'वीरमणि' को ऐतिहासिक उपन्यास कला की दृष्टि से थोड़ा सा सफल कहा जा सकता है।" (शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृत्तियाँ) परंतु भारतेन्दु कालीन उपन्यास अपेक्षित स्तर पर नहीं पहुँचे। वे साधारण श्रेणी के उपन्यास ही रहे।

1.1.2 पश्चिमीप्रभाव

▶ पश्चिमी प्रवृत्तियों का अन्धानुकरण

पाश्चात्य सम्पर्क से हमारा विचार बदला, हमारी दृष्टि बदली। पश्चिम के प्रभाव ने जहाँ एक ओर पश्चिमी प्रवृत्तियों का अन्धानुकरण करनेवाले मध्यवर्गीय समाज की सृष्टि की, वहाँ ऐसे व्यक्तियों को भी जन्म दिया जिसके द्वारा पाश्चात्य सांस्कृतिक दृष्टिकोण भारतीय साहित्य में व्यक्त हुआ और उन्होंने नव निर्माण की प्रेरणा ग्रहण की।

1.1.3 प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास

▶ सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित उपन्यास

हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन से एक नयी क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। इस युग के उपन्यासकारों ने जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया। इस युग का प्रारम्भ प्रेमचंद के 'सेवा सदन' (सन् 1918) नामक उपन्यास से हुआ था। वैसे तो पूर्व में मुंशी प्रेमचंद ने आदर्शवादी उपन्यास लिखे लेकिन बाद में ये यथार्थवादी उपन्यास लिखने लगे। इन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को स्थान दिया।

इस युग के प्रतिनिधि उपन्यासकार होने के कारण मुंशी प्रेमचंद से प्रेरणा पाकर

SGOU

▶ युग के प्रतिनिधि उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद

कई उपन्यासकार हिन्दी उपन्यास विधा को आगे बढ़ाने लगे। इनमें कुछ यथार्थवादी उपन्यासकार थे तो कुछ आदर्शवादी।

1.1.4 प्रेमचंद युग के उपन्यासकार और उनकी रचनाएँ

प्रेमचंद का पहला उपन्यास 'सेवासदन' 1918 में प्रकाशित हुआ। इसी के साथ हिन्दी उपन्यास में नये युग का सूत्रपात होता है। इसे 'प्रेमचंद युग' या हिन्दी उपन्यास का 'विकास युग' के नाम से जाना जाता है।

यह समय भारतीय स्वंत्रता संग्राम और समाज सुधार संबंधी आन्दोलनों का काल था। अंग्रेज़ी शासन और शिक्षा एवं सभ्यता के प्रभाव से हमारे समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक आडंबरों के ख़िलाफ़ विद्रोह का एक नवीन चेतना और गौरव की भावना का उदय हो रहा था। महात्मा गांधी राजनीतिक मंच पर पूरी तरह से उदित हो गए थे। उनके सत्य, अहिंसा, सदाचार, सत्याग्रह, अस्पृश्यता विरोध, स्त्रियों की उन्नति, ग्राम सुधार, अछूतोद्धार, स्वदेशी आदि से संबंधित विचारधारा का लोगों पर काफ़ी प्रभाव पड़ने लगा था। इसलिए कल्पना, रोमांस और चमत्कार-प्रदर्शन के इन्द्रजाल से मुक्ति लेकर हिन्दी उपन्यासकार यथार्थ के कठोर धरातल पर कदम रख कर समाज के हित में साहित्य की रचना करने लगे। इस नयी रचना-दृष्टि के संवाहक थे मुंशी प्रेमचंद।

1.1.4.1 उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद (सन् 1880-1936)

▶ हिन्दी में चरित्र प्रधान उपन्यास लिखने वाले पहले उपन्यासकार

हिन्दी में चरित्र प्रधान उपन्यास लिखने में मुंशी प्रेमचंद की चर्चा सबसे पहले होती है। हिन्दी उपन्यास का क्रमबद्ध और वास्तविक विकास प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य से ही होता है। इससे पूर्व के उपन्यास या तो मराठी-बंगला और अंग्रेजी के अनुदित उपन्यास थे या तिलिस्मि, एय्यारी और जासूसी उपन्यास। लेकिन प्रेमचंद के उपन्यासों में इन सबसे हटकर जो सामाजिक परिदृश्य उत्पन्न हुए उनसे हिन्दी उपन्यास विधा को एक नई दिशा मिली।

▶ सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास

मुंशी प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में तीन प्रकार के उपन्यास लिखे।इनकी पहली श्रेणी में आने वाले उपन्यास 'प्रतिज्ञा' और 'वरदान' है जिन्हें इन्होंने प्रारम्भिक काल में लिखा। दूसरी श्रेणी के उपन्यास 'सेवा सदन', 'निर्मला' और 'गबन' है। इस श्रेणी के उन्यासों में मुंशी प्रेमचंद द्वारा सामाजिक समस्याओं को उभारा गया है।

▶ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकार

तीसरी श्रेणी के उपन्यास- 'प्रेमाश्रय', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' है। इस श्रेणी के उपन्यासों में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने जीवन को समग्रता से देखने का प्रयास किया है।

1.1.4.2 जयशंकर प्रसाद (सन् 1881-1933)

प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में जयशंकर प्रसाद का भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान

▶ सुधारवादी उपन्यासकार

है। इन्होंने मात्र उपन्यास ही नहीं कहानियाँ भी लिखीं, लेकिन इनकी सभी कहानियाँ आदर्शवादी कहानियाँ हैं, जबकि उपन्यास यथार्थ के अत्यन्त निकट है। प्रसाद जी ने अपने जीवन काल में तीन उपन्यास लिखे। इन उपन्यासों में 'तितली' और 'कंकाल' पूरे और 'इरावती' अधूरा उपन्यास है। प्रसाद एक सुधारवादी उपन्यासकार थे इसलिए वे लोगों का ध्यान समाज में फैली बुराइयों की ओर आकृष्ट कर उनसे बचे रहने के लिए सजग करते थे।

▶ ग्रामीण जीवन और समस्याओं का चित्रण

प्रसाद का 'कंकाल' नामक उपन्यास गोस्वामी के उपदेशों के माध्यम से हिन्दू संगठन और धार्मिक तथा सामाजिक आदेर्शों को स्थापित करने का प्रयत्न करता है। इसी संदर्भ में इनका 'तितली' उपन्यास ग्रामीण जीवन की झाँकी और ग्रामीण समस्याओं को प्रस्तुत करता है। 'इरावती' इनका ऐतिहासिक उपन्यास जो इनके आसामायिक निधन से अधूरा ही रह गया।

1.1.4.3 पंडित विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' (सन् 1891-1945)

▶ प्रेमचंद परम्परा के ख्याति प्राप्त कहानीकार

पंडित विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक उपन्यासकार और कहानीकार दोनों ही थे। 'भिखारिणी', माँ, और संघर्ष, इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं, तो मणिमाला और चित्रशाला' इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह। 'माँ' आपका सफलतम उपन्यास है। प्रेमचंद परम्परा के ख्याति प्राप्त कहानीकार थे। प्रेमचंद के समान साहित्य में कौशिक का दृष्टिकोण भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद था।

1.1.4.4 सुदर्शन (सन् 1869-1967)

▶ प्रेमचंद की भाँति आदर्शोन्मुख यथार्थवादी थे।

श्री सुदर्शन' का पूरा नाम पंडित बदरीनाथ भट्ट था। ये पहले उर्दू में लिखते थे और बाद में हिन्दी कथा साहित्य में अवतीर्ण हुए। इनके 'अमर अभिलाषा' और 'भाग्यवती अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। इनके उपन्यास और कहानियों में व्यक्तिगत और परिवारिक जीवन समस्याओं का चित्रण मिलता है। ये भी प्रेमचंद की भाँति आदर्शोन्मुख यथार्थवादी थे।

1.1.4.5 वृन्दावन लाल वर्मा (सन् 1891-1969)

▶ ऐतिहासिक उपन्यासकार

श्री वृन्दावनलाल वर्मा ऐतिहासिक उपन्यासकार है। इन्होंने अपने जीवन काल में, 'गढ़- कुण्डार', 'विराटा की पद्मिनी', 'मृग नयनी', 'माधव जी सिन्धिया','महारानी दुर्गावती','रामगढ़ की रानी','मुसाहिबजू','ललित विक्रम और अहिल्याबाई' जैसे ऐतिहासिक उपन्यास लिखे तो कुण्डली चक्र, सोना और संग्राम', 'कभी न कभी', 'टूटे काँटे', 'अमर बेल', 'कचनार' जैसे उपन्यास भी हैं जिनमें प्रेम के साथ- साथ अनके सामाजिक समस्याओं पर भी खुलकर प्रकाश डाला गया है। 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' इनका प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है जिसे लोकप्रियता में किसी अन्य उपन्यास से कम नहीं आँका जा सकता।

SGOU

1.1.4.6 मुंशी प्रताप नारायण श्रीवास्तव

▶ स्त्री स्वतन्त्रता का पक्ष

शहरी जीवन पर अपनी लेखनी चलाने वाले मुंशी प्रताप नारायण भी प्रेमचंद युगीन उपन्याकारों में सदैव समादृत रहे हैं। इन्होंने अपने जीवन काल में 'विदा', 'विकास'और 'विलय' नामक तीन उपन्यास लिखे। मुंशी प्रताप नारायण श्रीवास्तव ने इन तीनों उपन्यासों में एक विशेष सीमा में रहकर स्त्री स्वतन्त्रता का पक्ष लिया।

1.1.4.7 पाण्डेय बेचन शर्मा 'उय' (सन् 1900-1967)

▶ अपनी खबर' - आत्म कथा

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों में अपनी एक विशिष्ट शैली के लिए काफी चर्चित रहे। 'चन्द हसीनों के खतूत' 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुआ की बेटी', 'शराबी', 'जीजीजी', 'घण्टा', 'फागुन के दिन चार' आदि आपके महत्वपूर्ण किन्तु चटपटें उपन्यास हैं। आपने 'महात्मा ईसा' नामक एक नाटक और 'अपनी खबर' नामक आत्म कथा लिखी जो काफी चर्चित रही।

1.1.4.8 जैनेन्द्र कुमार (सन् 1905-1988)

हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में मनोविश्लेषणत्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में मान्य है। इनके उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक चित्रण की एक विशेष शैली दिखायी पड़ती है। 'तापोभूमि', 'परख', 'सुनीता', 'सुखदा', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'मुक्तिबोध', 'विवरण', 'व्यतीत', 'जयवर्धन', 'अनाम स्वामी', आदि आपके उपन्यास हैं। उपन्यासों के अतिरिक्त 'वातायन', 'एक रात', 'दो चिड़ियाँ', 'और नीलम देश की राजकन्या' जैसे कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए। आपने हिन्दी साहित्य को लगभग एक दर्जन उपन्यासों, दस से अधिक कथा-संकलनों, चिन्तनपरक निबन्धों तथा दार्शनिक लेखों से समृद्ध किया। स्त्री पुरुष सम्बन्धों, प्रेम विवाह और काम-प्रसंगों के सम्बन्ध में आपके विचारों को लेकर काफ़ी विवाद भी हुआ ।चरित्रों की प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाओं का विश्लेषण उपन्यासों में मिलता है।

1.1.4.9 शिवपूजन सहाय (सन् 1893-1963)

श्री शिवपूजन सहाय प्रायः सामाजिक विषयों पर लेख लिखते थे। इन्होंने देहाती दुनिया, नामक एक आंचलिक उपन्यास लिखा।

1.1.4.10 राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह (सन् 1891-1966)

▶ मुंशी प्रेमचंद ने जैनेन्द्र जी को भारत का गोर्की कहकर सम्मान दिया था

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने अपने जीवन काल में 'राम रहीम' नामक वह प्रसिद्ध उपन्यास लिखा जिसकी कथा शैली ने सहृदय पाठकों को इसकी और आकृष्ट किया। इसके अतिरिक्त आपने 'चुम्बन और चाँटा', 'पुरुष और नारी', तथा 'संस्कार' जैसे उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास विधा को और समृद्ध किया।

प्रेमचंद युग के अन्य उपन्यासकार

प्रेमचंद के युग में हिन्दी उपन्यास बहुमुखी होकर निरन्तर विकास शिखरों को स्पर्श करने लगा। इस युग में उपरोक्त उपन्यासकारों के अतिरिक्त महाप्राण निराला, राहुल सांकृत्यायन, चतुरसेन शास्त्री, यशपाल, भगवती चरण वर्मा, भगवती प्रसाद बाजपेयी आदि लेखक- कवियों ने उपन्यास लेखन प्रारम्भ किया, लेकिन प्रेमचन्दोतर युग में ही इन्हें विशेष प्रसिद्धि मिली।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

"सौभाग्य उसी को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचलित रहता है।"

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में अलौकिकता और चमत्कारिकता से जुड़ी बातें ज़्यादा होती थीं। इनमें आम जनजीवन के यथार्थवादी चित्रण नहीं मिलता था। ये उपन्यास आदर्शवाद से भरे होते थे और इनमें भावुकता का समावेश अधिक था। प्रेमचंदपूर्व उपन्यासों में अधिकतर धार्मिकता, अलौकिकता, चमत्कारिक बातों, देवी-देवताओं आदि का वर्णन होता था।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास के बारे में टिप्पणी लिखिए।
2. प्रेमचंद पूर्व के प्रमुख हिन्दी उपन्यासकार पर आलेख तैयार कीजिए।
3. प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास की विशेषताओं पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
4. प्रेमचंद युग के हिन्दी उपन्यासकारों के बारे में चर्चा कीजिये।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद - डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मजदूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामवृक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

प्रेमचंद : जीवन और कृतित्व मेरा जीवन (संक्षिप्त आत्मवृत्त)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद का जन्म और विवाह के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- शिक्षा और नौकरी से परिचित होता है
- साहित्यिक जीवन से परिचित होता है
- प्रेमचंद की कृतियाँ और पुरस्कार की जानकारी मिलता है
- 'मेरा जीवन'- संक्षिप्त आत्मवृत्त से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के पास लमही नामक गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था। नाम रखा गया धनपतराय श्रीवास्तव। पिता का नाम मुंशी अजायबलाल और माता का नाम आनंदी देवी था। किसानी से गुज़ारा न होता था तो पिता ने डाकख़ाने में 20 रुपए पगार पर मुंशी की नौकरी कर ली थी। सात वर्ष के थे तो माता का देहांत हो गया और पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। पंद्रह की आयु में उनका विवाह करा दिया गया और सोलह की आयु में पिता चल बसे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रतिकूल परिस्थिति, डिप्टी इन्स्पेक्टर, सोज़े वतन, उपन्यास सम्राट, क़लम का सिपाही

Discussion / चर्चा

1.2.1 जन्म और विवाह

प्रेमचंद का जन्म काशी से चार मील दूर लमही नामक गाँव में 31 जुलाई, 1880 ई. को हुआ था। इनके पिता अजायब राय डाक- मुंशी थे। सात साल की अवस्था

में माता का और चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। घर में यों ही बहुत निर्धनता थी, पिता की मृत्यु के पश्चात् इनके सिर पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पड़ा। रोटी कमाने की चिन्ता बहुत जल्दी इनके सिर पर आ पड़ी। ट्यूशन करके इन्होंने मेट्रिक की परीक्षा पास की। आपका विवाह कम उम्र में हो गया था, जो इनके अनुरूप नहीं था, अतः शिवरानी देवी के साथ दूसरा विवाह किया।

▶ शिवरानी देवी के साथ दूसरा विवाह

1.2.2 शिक्षा और नौकरी

गरीबी से लड़ते हुए प्रेमचंद ने अपनी पढ़ाई मैट्रिक तक पहुंचाई। जीवन के आरंभ में ही इन्हें गांव से दूर वाराणसी पढ़ने के लिए नंगे पांव जाना पड़ता था। इसी बीच में इनके पिता का देहान्त हो गया। प्रेमचंद को पढ़ने का शौक था, आगे चलकर वह वकील बनना चाहते थे, मगर गरीबी ने इसे बदला दिया। प्रेमचंद ने स्कूल आने-जाने के झंझट से बचने के लिए एक वकील साहब के यहां ट्यूशन ले लिया और उसी के घर में एक कमरा लेकर रहने लगे। इनको ट्यूशन का पांच रुपया मिलता था। पांच रुपए में से तीन रुपए घर वालों को और दो रुपए से प्रेमचंद अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे। प्रेमचंद महीना भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते थे। इन्हीं जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेमचंद ने मैट्रिक पास किया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य, पर्सियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की थी।

अध्यापक की नौकरी करते हुए इन्होंने बी.ए. और एम.ए. पास किया। स्कूल मास्टरी के रास्ते पर चलते-चलते सन् 1921 में वह गोरखपुर में स्कूलों के डिप्टी इन्स्पेक्टर बन गये। जब गाँधीजी ने सरकारी नौकरी से इस्तीफे का बिगुल बजाया तो प्रेमचंद ने भी तुरन्त त्याग पत्र दे दिया। उसके बाद कुछ दिनों तक इन्होंने कानपुर के मारवाड़ी स्कूल में अध्यापन किया फिर 'काशी विद्यापीठ' में प्रधान अध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करते हुए काशी में प्रेस खोला। सन् 1934-35 में आपने आठ हजार रुपये वार्षिक वेतन पर मुम्बई की एक फिल्म कम्पनी में नौकरी कर ली। रोग के कारण 8 अक्टूबर, 1936 ई. को काशी स्थित इनके गाँव में इनका स्वर्गवास हो गया।

▶ पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करते हुए काशी में प्रेस खोला

1.2.3 साहित्यिक जीवन

प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षों बाद उन्होंने यह नाम अपनाया था। उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। जब उन्होंने सरकारी सेवा करते हुए कहानी लिखना आरम्भ किया, तब उन्होंने नवाब राय नाम अपनाया। बहुत से मित्र उन्हें जीवन पर्यन्त नवाब के नाम से ही सम्बोधित करते रहे। जब सरकार ने उनका पहला कहानी-संग्रह, 'सोजे वतन' जब्त किया, तब उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा। बाद का उनका अधिकतर साहित्य प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित हुआ। इसी काल में प्रेमचंद ने कथा-साहित्य बड़े मनोयोग से पढ़ना शुरू किया। एक तम्बाकू-विक्रेता की दुकान में

▶ वास्तविक नाम 'धनपत राय' था

उन्होंने कहानियों के अक्षय भण्डार, 'तिलिस्मे होशरूबा' का पाठ सुना। इस पौराणिक गाथा के लेखक फौजी बताए जाते हैं, जिन्होंने अकबर के मनोरंजन के लिए ये कथाएं लिखी थीं। एक पूरे वर्ष प्रेमचंद ये कहानियां सुनते रहे और इन्हें सुनकर उनकी कल्पना को बड़ी उत्तेजना मिली। कथा साहित्य की अन्य अमूल्य कृतियां भी प्रेमचंद ने पढ़ीं। इनमें 'सरशार' की कृतियां और रेनाल्ड की 'लन्दन-रहस्य' भी थी।

1.2.4 साहित्य की विशेषताएँ

- बहुमुखी प्रतिभा के संपन्न साहित्यकार थे

प्रेमचंद की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा के संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं।

1.2.5 कृतियाँ

- जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गई थी

प्रेमचंद की कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गई थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और न ही प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकिम बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रुसी साहित्यकार थे। उन्होंने 'गोदान' जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है।

1.2.6 पुरस्कार

मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक विभाग की ओर से 31 जुलाई, 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहां प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक भित्तिलेख है। यहां उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। जहां उनकी आवक्षप्रतिमा भी है। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे। उनके ही बेटे अमृत राय ने 'क़लम का सिपाही' नाम से पिता की जीवनी लिखी है। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेज़ी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियां लोकप्रिय हुई हैं।

SGOU

1.2.7 मेरा जीवन

प्रेमचंद (संक्षिप्त आत्मवृत्त)

मेरा जन्म संवत् 1880 में हुआ। पिता डाकखाने में क्लर्क थे, माता मरीज। एक बड़ी बहन भी थी। उस समय पिताजी शायद 20 रुपये पाते थे। 40 रुपये तक पहुँचते-पहुँचते उनकी मृत्यु हो गयी। यों वे बड़े विचारशील, जीवन-पथ पर आँखें खोलकर चलनेवाले आदमी थे। लेकिन आखिरी दिनों में ठोकर खा ही गये और खुद तो गिरे ही थे, उसी धक्के में मुझे भी गिरा दिया। पन्द्रह साल की अवस्था में मेरा विवाह कर दिया और विवाह करने के साल-भर बाद ही परलोक सिधारे। उस समय मैं नवें दर्जे में पढ़ता था। घर में मेरी स्त्री थी, विमाता थी, उनके बालक थे और आमदनी एक पैसे की नहीं। घर में जो कुछ लेई-पूँजी थी, वह पिताजी की छः महीने की बीमारी और क्रिया-कर्म में खर्च हो चुकी थी और मुझे अरमान था वकील बनने का और एम.ए पास करने का। नौकरी उस ज़माने में इतनी ही दुष्प्राप्य थी जितनी अब है। दौड़-धूप करके शायद दस-बारह की कोई जगह पा जाता पर यहाँ तो आगे पढ़ने की धुन थी।

पाँव में जूते न थे, देह पर कपड़े न थे। मंहगाई अलग। स्कूल में साढ़े तीन बजे छुट्टी मिलती थी। काशी के किंग्स कालेज में पढ़ता था, हेडमास्टर ने फीस माफ़ कर दी थी। इम्तिहान सिर पर था, और मैं बांस के फाटक पर एक लड़के को पढ़ाने जाता था। जाड़ों के दिन थे। चार बजे पहुँचता था पढ़ाकर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। तेज़ चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच सकता और प्रातःकाल आठ ही बजे से पहले घर से चलना पड़ता था। कभी वक्त पर स्कूल न पहुँचता। रात को भोजन करके कुप्पी के सामने पढ़ने बैठता और न जाने कब सो जाता। फिर भी हिम्मत बाँधे हुए था।

मैट्रिक्युलेशन तो किसी तरह पास हो गया, पर आया सैकन्ड डिवीज़न में और किंग्स कालेज में भरती होने की आशा न रही। फीस केवल अव्वल दर्जे वालों की ही मुआफ हो सकती थी। संयोग से उसी साल हिन्दू कालेज खुल गया था। मैंने इस नये कालेज में पढ़ने का निश्चय किया। प्रिंसिपल थे मि.रिचर्डसन। उनके मकान पर गया। वे पूरे हिन्दुस्तानी वेश में थे। कुरता और धोती पहने हुए फर्श पर बैठे हुए कुछ लिख रहे थे। मगर मिजाज को तबदील करना इतना आसान न था। मेरी प्रार्थना सुनकर-आधी ही कहने पाया था। बोले कि घर पर मैं कालेज की बातचीत नहीं करता, कालेज में आओ। खैर, मैं कालेज में गया। मुलाकात तो हुई, पर निराशाजनक। फीस मुआफ न हो सकती थी। अब क्या करूँ? अगर प्रतिष्ठित सिफारिशें ला सकता तो मेरी प्रार्थना पर विचार होता, लेकिन देहाती युवकों को शहर में जानता ही कौन था।

रोज़ घर से चलता कि कहीं से सिफारिश लाऊँ पर बारह मील की मंजिल पार कर शाम को घर लौट जाता। किससे कहूँ? कोई अपना पूछत्तर न था। कई दिनों बाद सिफारिश मिली। एक ठाकुर इन्द्रनारायण सिंह हिन्दू कालेज की प्रबंधकारिणी सभा में

थे। उनसे जाकर रोया। उन्हें मुझ पर दया आ गई। सिफारिशी चिट्ठी दे दी। उसे समय मेरे आनन्द की सीमा न थी। खुश होता हुआ घर आया। दूसरे दिन प्रिंसिपल से मिलने का इरादा था, लेकिन घर पहुँचते ही मुझे ज्वर आ गया और सप्ताह से पहले न हिला। नीम का काढ़ा पीते-पीते नाक में दम आ गया। एक दिन मैं द्वार पर बैठा था कि मेरे पुरोहित जी आ गये। मेरी दशा देखकर समाचार पूछा और तुरन्त खेतों में जाकर एक जड़ खोद लाए और उसे धोकर सात दाने काली मिर्च के साथ पिसवा कर मुझे खिला दिया। उसने जादू का असर किया। ज्वर चढ़ने में घंटे ही भर की देर थी। इस औषधि ने, मानो जाकर उसका गला ही दबा दिया। मैंने बार-बार पंडितजी से इस जड़ का नाम पूछा पर उन्होंने न बताया। कहीं नाम बता देने से उसका असर जाता रहेगा।

एक महीने बाद में फिर मि. रिचर्डसन से मिला और सिफारिशी चिट्ठी दिखाई। प्रिंसिपल ने मेरी ओर तीव्र नेत्रों से देखर पूछा, "इतने दिन कहाँ थे।'

बीमार हो गया था।'

'क्या बीमारी थी ?'

मैं इस प्रश्न के लिए तैयार न था। अगर ज्वर बताता हूँ तो शायद साहब मुझे झूठा समझें। ज्वर मेरी समझ में हल्की चीज़ थी, जिसके लिए इतनी लम्बी गैरहाज़िरी अनावश्यक थी। कोई ऐसी बीमारी बतानी चाहिए, जो अपनी कष्ठ-साध्यता के कारण दया भी उभारे। उस वक्त मुझे और किसी बीमारी का नाम याद न आया। ठाकुर इन्द्रनारायण सिंह से जब मैं सिफारिश के लिए मिला था तब उन्होंने अपने दिल की धड़कन की बीमारी की चर्चा की थी। वह शब्द याद आ गया। मैंने कहा, 'पेलपिटेशन आफ हार्ट (दिल की धड़कन), सर।"

"अब तुम बिलकुल अच्छे हो?"

"जी, हाँ।"

"अच्छा, प्रवेश-पत्र भरकर लाओ।"

मैंने समझा, बेड़ा पार हुआ। फार्म लिया, खानापूरी की और पेश कर दिया। साहब उस समय कोई क्लास ले रहे थे। तीन बजे मुझे फार्म वापस मिला। उस पर लिखा था इसकी योग्यता की जाँच की जाय।

यह नई समस्या उपस्थित हुई। मेरा दिल बैठ गया। अंग्रेज़ी के सिवा और किसी विषय में मुझे पास होने की आशा न थी, और बीजगणित से मेरी रूह काँपती थी; जो कुछ याद था वह भी भूल गया था, परन्तु दूसरा उपाय ही क्या था। भाग्य का भरोसा करके क्लास में गया और अपना फार्म दिखाया। प्रोफेसर साहब बंगाली थे। अंग्रेज़ी पढ़ा रहे थे। वाशिंगटन इर्विङ्ग का 'रिपवान विंकल' था। मैं पीछे की कतार में जाकर बैठ गया।

और दो ही चार मिनट में मुझे ज्ञात हो गया कि प्रोफेसर साहब अपने विषय के ज्ञाता हैं। घंटा समाप्त होने पर उन्होंने आज के पाठ पर मुझसे कई प्रश्न किये और कार्य सन्तोषजनक लिख दिया।

दूसरा घण्टा बीजगणित का था, प्रोफेसर भी बंगाली थे। मैंने अपना फार्म दिखाया। नई संस्थाओं में प्रायः वही छात्र जाते हैं जिन्हें कहीं जगह नहीं मिलती। यहाँ भी यही हाल था। क्लासों में अयोग्य छात्र भरे हुए थे। पहले रेले में जो आया वह भरती हो गया। अब पेट भर गया था। छात्र चुन-चुनकर लिए जाते थे। इन प्रोफेसर साहब ने गणित में मेरी परीक्षा ली और मैं फेल हो गया। फार्म पर गणित के खाने में असंतोषजनक लिख दिया।

इतना हताश हुआ कि फार्म लेकर प्रिंसिपल के पास न गया। सीधा घर चला आया। गणित मेरे लिए गौरीशंकर की चोटी थी। कभी उस पर चढ़ न सका। इंटरमीडिएट में दो बार गणित में फेल हुआ और निराश होकर इम्तहान देना छोड़ दिया। दस-बारह साल के बाद जब गणित की परीक्षा में अख्तियारी हो गई, तब मैंने दूसरे विषय लेकर आसानी से पास कर लिया। उस समय यूनिवर्सिटी के इस नियम ने कितने युवकों की आकांक्षाओं का खून किया, कौन कह सकता है। खैर, मैं निराश होकर घर तो लौट गया, लेकिन पढ़ने की लालसा अभी तक बनी हुई थी। घर बैठकर क्या करता। किसी तरह गणित को सुधारूँ और फिर कालेज में भरती हो जाऊँ यह धुन थी। इसके लिए शहरों में रहना ज़रूरी था। संयोग से एक वकील साहब के लड़कों को पढ़ाने का काम मिल गया। पाँच रुपए वेतन ठहरा। मैंने दो रुपए में अपना गुजार करके तीन रुपए घर देने का निश्चय किया। वकील साहब के अस्तबल के ऊपर एक छोटी-सी कच्ची कोठरी थी, उसी में रहने को मैंने आज्ञा ले ली। एक टाट का टुकड़ा बिछा लिया। बाज़ार से एक छोटा-सा लैम्प ले लिया और शहर में रहने लगा। घर से कुछ बर्तन भी लाया। एक वक्त खिचड़ी पका लेता और बरतन धो-माँजकर लाइब्रेरी चला जाता। गणित तो बहाना था, उपन्यास आदि पढ़ा करता। पंडित रतननाथ धर का 'फसाना आज़ाद' उन्हीं दिनों पढ़ा। 'चन्द्रकांता संतति' भी पढ़ी। बंकिम बाबू के उर्दू अनुवाद जितने पुस्तकालय में मिले, सब पढ़ ड़ाले। जिन वकील साहब के लड़कों को पढ़ाता था उनके साले मेरे साथ मैट्रिक्यूलेशन में पढ़ते थे। उन्हीं की सिफारिश से पद मिला था। उनसे दोस्ती थी; इसलिए जब ज़रूरत होती पैसे उधार ले लिया करता था। वेतन मिलने पर हिसाब हो जाता था, कभी दो रुपए हाथ आते कभी तीन। जिस दिन वेतन के दो-तीन रुपए मिलते, मेरा संयम हाथ से निकल जाता। प्यासी तृष्णा हलवाई की दूकान की ओर खींच ले जाती। दो-तीन आने पैसे खाकर ही उठता। उसी दिन घर जाता और दो-अढ़ाई रुपए दे आता। दूसरे दिन से उधार लेना शुरू कर लेता लेकिन कभी-कभी उधार माँगने में संकोच होता और दिन का दिन निराहार व्रत रखना पड़ जाता।

जाड़ों के दिन थे। पास एक कौड़ी न थी। दो दिन एक-एक पैसे का चबेना खाकर काटे थे। मेरे महाजन ने उधार देने से इन्कार कर दिया था, या संकोचवश मैं उससे माँग न सका था। चिराग जल चुके थे, मैं एक बुकसेलर की दूकान पर एक किताब बेचने

गया। चक्रवर्ती गणित की कुंजी थी। दो साल हुए खरीदी थी। अब तक उसे बड़े जतन से रखे हुए था। पर आज चारों ओर निराश होकर मैंने उसे बेचने का निश्चय किया। किताब दो रुपए की थी। लेकिन एक रुपये पर सौदा ठीक हुआ। मैं रुपया लेकर दूकान पर से उतरा ही था कि एक बड़ी-बड़ी मूँछों वाले सौम्य पुरुष ने, जो उस दूकान पर बैठे हुए थे, मुझसे पूछा- 'तुम कहाँ पढ़ते हो?'

मैंने कहा – "पढ़ता तो कहीं नहीं हूँ, पर आशा करता हूँ कि कहीं नाम लिख लूँगा।"

"मैट्रिक्यूलेशन पास हो?"

"जी हाँ।"

"नौकरी करने की इच्छा तो नहीं है?"

"नौकरी कहीं मिलती ही नहीं।"

वे सज्जन स्कूल के हेडमास्टर थे। उन्हें एक सहकारी अध्यापक की ज़रूरत थी। अठारह रुपए वेतन था। मैंने स्वीकार कर लिया। अठारह रुपए उस समय मेरी निराश-व्यथित कल्पना की ऊँची-से-ऊँची उड़ान से भी ऊपर थे। मैं दूसरे दिन हेडमास्टर साहब से मिलने का वादा करके चला। पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे! यह 1899 की बात है।

मैं ने पहले-पहल 1907 में गल्पें लिखनी शुरू कीं। रवीन्द्रनाथ टैगोर की नई गल्पें मैंने अंग्रेज़ी में पढ़ी थीं और उनका उर्दू अनुवाद उर्दू- पत्रिकाओं में छपवाया था। उपन्यास तो मैंने 1901 ही से लिखना शुरू किया। मेरा एक उपन्यास 1902 में निकला और दूसरा 1904 में, लेकिन गल्प 1907 से पहले मैं ने एक भी न लिखी। मेरी पहली कहानी का नाम था – 'संसार का सबसे अमोल रत्न', वह 1907 के 'ज़माना' में छपी। उसके बाद मैंने चार-पाँच कहानियाँ और लिखीं। पाँच कहानियों का संग्रह 'सोजेवतन' के नाम से 1907 में छपा। इन पाँचों कहानियों में स्वदेश-प्रेम की महिमा गाई गई थी।

उस वक्त में शिक्षा-विभाग में डिप्टी-इंस्पक्टर था और हमीरपुर जिले में तैनात था। पुस्तक को छपे छः महीने हो चुके थे। एक दिन में अपनी रावटी में बैठा हुआ था कि मेरे नाम जिलाधीश का परवाना पहुँचा कि मुझसे तुरन्त मिलो। जाड़ों के दिन थे। साहब दौरे पर थे। मैंने बैलगाड़ी जुतवाई और रातों-रात 30-40 मील तय करके दूसरे दिन साहब से मिला। साहब के सामने 'सोजेवतन' की एक प्रति रखी हुई थी। मेरा माथा ठनका। उस वक्त मैं नवाबराय के नाम से लिखा करता था। मुझे इसका पता कुछ-कुछ मिल चुका था कि खुफिया पुलिस इस किताब के लेखक की खोज में है। मैं समझ गया, उन लोगों ने मुझे खोज निकाला है और उसी की जवाब देही करने के लिए बुलाया गया है।

साहब ने मुझसे पूछा – "यह पुस्तक तुमने लिखी है ?" मैंने स्वीकार किया।

साहब ने मुझसे एक-एक कहानी का आशय पूछा और अन्त में बिगड़कर बोले- "तुम्हारी कहानियों में राजद्रोह भरा हुआ है। अपने भाग्य को बखानो कि अंग्रेज़ी राज्य में हो। मुगलों का राज्य होता तो तुम्हारे दोनों हाथ काट लिए जाते। तुम्हारी कहानियाँ एकांकी हैं, तुमने अंग्रेज़ी सरकार की तौहीन की है" आदि। फैसला यह हुआ कि 'सोजेवतन' की सारी प्रतियों को सरकार के हवाले कर दूँ और साहब की अनुमति के बिना कभी कुछ न लिखूँ। मैंने समझा, चलो सस्ते में छूटे। एक हज़ार प्रतियाँ छपी थीं। अभी मुश्किल से 300 बिकी थीं। शेष 700 प्रतियाँ मैंने 'ज़माना' कार्यालय से मँगवाकर साहब की सेवा में अर्पित कर दीं।

तब मैंने अपना तबादला करवाया। चाहता था रुहेलखंड, पर पटका गया बस्ती जिले में, और इलाका वह मिला जो नेपाल की तराई है। सौभाग्य से वहीं मेरा परिचय स्वर्गीय पं.मन्नन द्विवेदी गजपुरी से हुआ जो डोमरियागंज में तहसीलदार थे। कभी उनके साथ साहित्य चर्चा हो जाती थी, परन्तु यहाँ आकर मेरी पेचिश की पुरानी बीमारी और बढ़ गई। तब मैंने छः महीने की छुट्टी ली, और लखनऊ के मेडिकल कालेज से निराश होकर काशी के एक हकीम से इलाज कराने लगा। तीन चार महीने बाद कुछ थोड़ा-सा फायदा तो मालूम हुआ, पर बीमारी जड़ से न गई। जब फिर बस्ती पहुँचा तो वही हालत हो गई। तब मैंने दौरे की नौकरी छोड़ दी और बस्ती हाई स्कूल में स्कूल मास्टर ही हो गया। फिर वहाँ से तबदील होकर गोरखपुर पहुँचा। पेचिश पूर्ववत जारी रही। यहाँ मेरा परिचय महावीरप्रसाद जी पोद्दार से हुआ जो साहित्य के मर्मज्ञ, राष्ट्र के सच्चे सेवक और बड़े ही उद्योगी पुरुष थे। मैंने बस्ती में ही कई गल्पें छपवायी थीं। पोद्दार जी की प्रेरणा से मैंने फिर एक उपन्यास लिखा और 'सेवासदन' की सृष्टि हुई। वहीं मैंने प्राईवेट बी.ए. भी पास किया। 'सेवासदन' का जो आदर हुआ, उससे उत्साहित होकर मैंने 'प्रेमाश्रम' लिख डाला और गल्पों को भी बराबर लिखता रहा। एक दिन बाज़ार में श्री. दशरथप्रसाद जी द्विवेदी सम्पादक 'स्वदेश' से भेंट हुई। कभी-कभी उनसे भी साहित्य चर्चा होती रहती थी। उन्होंने मेरी पीली सूरत देखकर खेद के साथ कहा - 'बाबूजी आप तो बिलकुल पीले पड़ गए हैं, कोई इलाज करवाइए।'

मुझे अपनी बीमारी का ज़िक्र बहुत बुरा लगता था। मैं भूल जाना चाहता था कि मैं बीमार हूँ। जब दो-चार महीने ही की जिंदगी का नाता है, तो क्यों न हँसकर मरूँ? मैंने चिढ़कर कहा – "मर ही तो जाऊँगा भाई, या और कुछ ? मैं मौत का स्वागत करने को तैयार हूँ।" द्विवेदी जी बेचारे लज्जित हो गए। मुझे पीछे से अपनी उग्रता पर बड़ा खेद हुआ। यह 1920 की बात है। असहयोग आन्दोलन ज़ोरों पर था। जालियाँवाला बाग का हत्याकांड हो चुका था। उन्हीं दिनों महात्मा गाँधी ने गोरखपुर का दौरा किया। गाजी मियाँ के मैदान में ऊँचा प्लेटफार्म तैयार किया गया। दो लाख से कम का जमाव न था। क्या शहर, क्या देहात, श्रद्धालु जनता दौड़ी चली आती थी। ऐसा समारोह मैं ने अपने जीवन में कभी न देखा था। महात्माओं के दर्शन का प्रताप यह था कि मुझ जैसा मरा हुआ आदमी भी चेत उठा। दो ही चार दिन बाद मैंने अपनी 20 साल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

अब देहात में चलकर प्रचार करने की इच्छा हुई। पोद्दारजी का देहात में एक मकान था। हम और वे दोनों वहाँ चले गए और चर्खे बनवाने लगे। वहाँ जाने के एक ही सप्ताह बाद मेरी पेचिश कम होने लगी। फिर मैं काशी चला आया और अपने देहात में बैठकर प्रचार और कुछ साहित्य-सेवा में जीवन को सार्थक करने लगा। .....से मुक्त होते ही मैं नौ साल के जीर्ण रोग से मुक्त हो गया।

सारांश

'मेरा जीवन' में प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत, समाज में व्याप्त कुरीतियों, और अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में बदलाव लाने की इच्छाओं को स्पष्ट किया है। इस आत्मकथा में उन्होंने अपने जीवन के व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्षों को सामने रखा और यह बताया कि साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य समाज की समस्याओं को उजागर करना और उन्हें सुधारने के लिए प्रयास करना है।

इसमें प्रेमचंद ने यह भी वर्णन किया है कि उनके साहित्य में गरीबी, असमानता, शोषण और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को प्रमुखता दी गई, क्योंकि वे इनसे गहरे रूप से प्रभावित थे। इसके अलावा, प्रेमचंद ने अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों को भी खुलकर स्पष्ट किया, जैसे परिवार की आर्थिक स्थिति, शिक्षा की सीमाएँ, और सामाजिक असमानताएँ।

कुल मिलाकर, 'मेरा जीवन' प्रेमचंद के जीवन और उनके साहित्यिक दृष्टिकोण का गहन और व्यक्तिगत चित्रण है।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

"आदमी का सबसे बड़ा शत्रु उसका अहंकार है"।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद ने अपने जीवन में कई अद्भुत कृतियाँ लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही उनके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा।प्रेमचंद का जीवन वृत्त 'मेरा जीवन' उनके अनुभवों और विचारों का आत्मकथात्मक संग्रह है। इसमें उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष, संवेदनाओं, और साहित्यिक यात्रा को पेश किया है। यह वृत्तांत उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है, जैसे उनके बचपन की कठिनाइयाँ, शिक्षा, परिवारिक जीवन, समाज में व्याप्त अन्याय और उनसे निपटने के प्रयास।

SGOU

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद का जन्म और विवाह के बारे में परिचय दीजिए।
2. साहित्यकार प्रेमचंद का परिचय दीजिए।
3. प्रेमचंद की शिक्षा और नौकरी पर टिप्पणी लिखिए।
4. साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद का परिचय दीजिए।
5. प्रेमचंद की पुरस्कार प्राप्त कृतियों पर टिप्पणी लिखिए।
6. 'मेरा जीवन' संक्षिप्त आत्मवृत्त का सारांश लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा : नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद - डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मजदूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

प्रेमचंद और उनका युग सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, प्रगतिशील लेखक संघ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद युग में राजनीतिक दशा का प्रभाव समझता है
- तत्कालीन समाज की विभिन्न परिस्तिथितियाँ जानता है
- प्रेमचंद युगीन साहित्यिक परिस्थितयों से परिचय पाता है
- प्रेमचंद कथा-साहित्य पर युगीन-परिस्थितियों का प्रभाव समझता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रेमचंद का युग भारतीय जनता के राष्ट्रीय संघर्ष का युग है। पराधीनता के कारण प्रत्येक क्षेत्र में भारत का विकास रुका हुआ था और उसकी सभी समस्याओं का निराकरण बिना स्वाधीनता-प्राप्ति के सम्भव नहीं हो पा रहा था। राष्ट्रीय पराधीनता एक ग्रंथि के समान बन गई थी जो भारतीय जीवन की आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं के सूत्रों को सुलझने नहीं देती थी। सबसे पहला प्रश्न देश को साम्रज्यवादी शक्तियों से मुक्त करने का था। भारत की समग्र चेतना व कर्म-शक्ति ब्रिटिश साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने में लगी हुई थी। अतः सर्वप्रथम राजनीतिक भारत पर दृष्टिपात करना उपयुक्त होगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

ब्रिटिश सम्राज्यवाद, भारतीय स्वाधीनता संग्राम, मानव-मूल्य, धार्मिक - आडम्बर, अवतारवाद, प्रगतिशील लेखक संघ

Discussion / चर्चा

3.1.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ

- चारों ओर दमन और अभाव का अन्धकार

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में देश में निराशा का वातावरण छाया हुआ था। सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम विफल हो चुका था। ब्रिटिश सरकार का दमन-चक्र अपनी पूरी गति से चल रहा था। ब्रिटिश साम्रज्यवाद राजाओं, जागीरदारों, जमींदारों

और ताल्लुकेदारों का समूह अपनी रक्षा के लिये जनता का शोषण कर रहा था। चारों ओर दमन और अभाव का अन्धकार व्याप्त था। ऐसे में भारतीय जन-जीवन कोई राह न पाकर अनिश्चितता के बीहड़ प्रदेश में भटकता रहा।

- प्रेमचंद का युग भारतीय स्वाधीनता संग्राम का युग

प्रेमचंद के जीवन काल में भारत उपर्युक्त राजनीतिक घटनाचक्रों में से गुजर रहा था। वास्तव में प्रेमचंद का युग भारतीय स्वाधीनता संग्राम का युग है। उनके समय देश का यौवन अपने पूरे विकास पर था। एक ओर नवयुवक बड़े उत्साह से स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान केलिए उत्सुक थे तो दूसरी ओर ब्रिटिश साम्रज्यवाद का दमन नीति अपनी पूरी कठोरता व निर्दयता के साथ चल रही थी। देश में जगह-जगह सभाओं और आन्दोलनों की धूम थी। विशाल जन-समूह के जुलूस प्रमुख नगरों में प्रायः निकला ही करते थे।

3.1.2 सामाजिक-परिस्थितियाँ

- समाज का ढांचा रूढ़ि-ग्रस्त था

'प्रेमचंद-युग' को मोटे तौर पर सन् 1880 ई. से सन् 1936 ई. तक माना जा सकता है। यह भारत की दासता का युग था। उस समय समाज का ढांचा रूढ़ि-ग्रस्त था। समाज में यद्यपि अंग्रेजी शिक्षा प्रारम्भ हो गई थी, फिर भी पुरातन व्यवस्था नष्ट नहीं होने पाई थी, और समाज में पुरानी परम्पराओं के प्रति वही आस्था, विश्वास था, जो 18 वीं शताब्दी में विद्यमान था। समाज की कुरीतियाँ, कुप्रथाएँ, व्यभिचार, पापाचार, शराबखोरी आदि बुराइयाँ लोगों को निष्प्राण कर रहीं थीं। धन के लिये कभी कम आयु की बालिका वृद्ध के साथ विवाह करने केलिए मजबूर भी तो कहीं धनाभाव के कारण बहू-बेटियों को वेश्या बनने के लिये विवश किया जाता था। स्त्रियों के लिये परदे के बाहर आना मुश्किल था। तत्कालीन नारी भोग की वस्तु मानी जाती थी। अशिक्षित नारी और भी भयंकर स्थिति में थी। विवाह-पद्धति इतनी दूषित थी कि दाम्पत्य-जीवन नारकीय हो रहा था। निम्न वर्ग की नारी की स्थिति तो और भी दयनीय और भयानक थी। प्रेमचंद युगीन सामाजिक-जीवन की अधिकांश समस्याएँ परिवार एवं नारी जीवन से सम्बन्धित थीं।

- अनपढ़ और दरिद्र जनता

अधिकांश जनता अनपढ़ और दरिद्र थी जो अपना खून-पसीना बहाकर जीवन आगे बढ़ती थी और नई सभ्यता के सभी साधन जुटाती थी, लेकिन स्वयं इन साधनों से वंचित थी।

3.1.3 साहित्यिक परिस्थितियाँ

- उपयोगी साहित्य परम्परा के सूत्रधार- कथाकार - प्रेमचंद

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी में उपयोगी साहित्य का नितान्त अभाव था। परन्तु आधुनिक युग में उपयोगी साहित्य और ललित-साहित्य दोनों का विकास हुआ और उनकी स्वतंत्र परम्परा चल पड़ी। और प्रेमचंद इस परम्परा के सूत्रधार- कथाकार थे। वस्तुतः सच तो यह है कि समस्या चाहे अखण्ड मानव जाति से संबंधित हो या राष्ट्रीय जीवन के विविध पक्षों से, हिन्दी के साहित्यकार के सामने जो मूर्धन्य प्रश्न है,

वह मानव-मूल्यों का है, एक ऐसी नैतिकता को जन्म देने का है जो अब तक की नैतिकता से भिन्न और नवीन हो और जो व्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा करते हुए भी उसे रागात्मक-एकता में बाँध सके। वह ऐसे मूल्यों और नैतिकता की स्थापना चाहता है, जिनसे नायकों की नहीं, मठाधीशों की नहीं, अधिनायकों की नहीं, पार्टी के नियंत्रणों की नहीं, वरन् सामान्य जन सर्वांगीण विकास की प्रतिष्ठा हो सके। सामान्य-य-जन का निस्संग जीवन तरंगायित हो और उसमें सुख के जल-जात खिल उठें। प्रेमचंद के कथा साहित्य में आद्यन्त उनका यही प्रयास प्रतिबिंबित है, जो उनको निश्चय ही, मानवतावादी, समाजवादी कथाकार के रूप में रेखांकित करता है।

3.1.4 धार्मिक-परिस्थितियाँ

▶ आर्य समाज की स्थापना

हिन्दुत्व सो रहा था और उसकी नींद तब टूटी जब उसके अंग पर वजपात किया जाने लगा। ईसाई धर्म प्रचारकों का मनसूबा बढ़ता जा रहा था। जहाँ तक धर्म का सम्बन्ध है, प्रेमचंद के समय में हिन्दुत्व के समर्थन में एक सशक्त आन्दोलन आर्य समाज (10 अप्रैल सन् 1875 ई.) का था, जिसके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। लेकिन धार्मिक-रूढ़ियों, धार्मिक-आडम्बरों, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, अनुष्ठानों एवं कर्मकाण्डों आदि में भारतीय हिन्दू- समाज डूबा हुआ था। आर्य-समाज सुधारकों ने वैसे भारतवासियों को वास्तविकता से परिचित करवाकर, इन बुराइयों से मुक्त करवाने का प्रयास किया।

▶ ब्रह्म - समाज की स्थापना

19 वीं सदी का सर्वप्रथम सुधार आन्दोलन ब्रह्म - समाज (राजा राम मोहन राय, 20 अगस्त सन् 1828 ई.) के नाम से विख्यात है। इसने बहु-विवाह, छुआछूत, मूर्तिपूजा आदि का प्रबल विरोध किया और वैदिक हिन्दू धर्म को अत्यन्त सरल, सम्पूर्ण और युक्ति-असंगत बताया। आर्य-समाज ने भी जाति-भेद विरोध, विधवा-विवाह के प्रचलन, नारी-शिक्षा, विधवा-आश्रमों की स्थापना और सम्मिलित खान-पान पर बल दिया। आर्य-समाज आन्दोलन आत्मिक शुद्धि पर अधिक बल देता था और लोगों में स्वदेश-प्रेम, आत्म-गौरव जाति-धर्म निष्ठा और परम्परागत रूढ़ियों को समाप्त करने की भावना का संचार कर रहा था। आर्य समाज ने सती प्रथा का भी डटकर विरोध किया था।

वस्तुतः हिन्दू-धर्म का ठेका पण्डा और पुरोहित वर्ग ने ले रखा था। यह वर्ग अशिक्षित-जनता का धर्म की आड़ में शोषण करता था। मन्दिर, स्वार्थ और दुराचार के अड्डे बने हुए थे। महन्त भोग-विलास में लिप्त थे। हिन्दू समाज में कड़ी प्रथाएँ और परदे का रिवाज था।

3.1.5 आर्थिक-परिस्थितियाँ

▶ आर्थिक शोषण की नीति अंग्रेजों ने भारत में अपनाई

अंग्रेजों ने भारत में आर्थिक शोषण की नीति अपनाई, उसके फलस्वरूप भारतीय अर्थ-व्यवस्था का संतुलन पूर्णतया बिगड़ हो गया। गांधी-युग में देश में बलिदानों का तांता लग गया था, किन्तु, इस सारणी का भी आरम्भ लोकमान्य ने अपने बलिदानों से किया था। इस प्रकार तिलक के ही महती-प्रयासों से बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में

राष्ट्रीय-चेतना जागृत हुई।

▶ होम-रूल आन्दोलन का प्रारम्भ

सन् 1904 ई. में रूस-जापान युद्ध हुआ। इसमें रूस पर जापान की विजय एक आश्चर्यजनक बात थी। इसी समय बंग-भंग आंदोलन हुआ जिसकी ध्वनि भारत के कोने-कोने में फैल गयी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय-चेतना उभारने में सशक्त योगदान दिया। सन् 1916 में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने होम-रूल आन्दोलन प्रारम्भ किया, जिससे भारतीय जीवन को एक नयी दिशा मिली।

महात्मा गांधी का राजनीति में आगमन ही भारतवासियों के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ। उन्होंने देश की दुर्दशा और अंग्रेजों की शोषण-वृत्ति, अत्याचार, विश्वासघात को देखा तथा अहिंसा के आधार पर आंदोलन करने की घोषणा की। गांधीजी ने बड़ी कुशलता से भारतीय जन-जीवन में राष्ट्रीयता का समावेश किया।

प्रेमचंद कथा-साहित्य पर युगीन-परिस्थितियों का प्रभाव

▶ साहित्य समाज का दर्पण

साहित्य-समकालीन-परिस्थितियों से निश्चय ही प्रभावित होता है। साहित्य समसामयिक घटनाओं का प्रतिबिम्ब है, जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस प्रकार परिभाषित किया है कि साहित्य समाज का दर्पण है।

3.1.6 साहित्य समाज का दर्पण

▶ साहित्यकार अपने देश-काल से प्रभावित है

वस्तुतः युग की परिस्थितियां ही साहित्यकार को जन्म देती है और उसको साहित्य-सृजन हेतु प्रेरित भी करतीं हैं। यही कारण है कि अपने युग के प्रति तटस्थ रहने का दंभ करने वाले सहित्यकार की विभिन्न कृतियों में कहीं न कहीं, युग की प्रतिछाया प्रतिबिंबित होती ही है। साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर राष्ट्र में ज्वारभाटा की मानिंद उठती है तो साहित्यकार उससे वंचित रह जाय और न विचलित।

▶ प्रेमचंद का जीवन ही स्वयं एक कहानी है

आवश्यकताएँ ही कार्यकर्ता की जननी हैं। प्रेमचंद के साहित्य- विशेष रूप से कथा-साहित्य के सन्दर्भ में डॉ.रामसिंह दिनकर का कथन है कि प्रेमचंद का जीवन ही स्वयं एक कहानी है और तत्कालीन गतिविधियों उनकी प्रमुख घटनाएँ। वस्तुतः प्रेमचंद के जीवन-दर्शन का मूलतत्व मानववाद है और इस मानववाद का धरातल सर्वथा मौलिक है, जो उन जीवन को व्यावहारिक उपयोगिता की सीमाओं तक पहुँचा देता है। प्रेमचंद के कथा-साहित्य पर निस्सन्देह उनकी युगीन परिस्थितियों का सम्यक् प्रभाव पड़ा है। जो सहज स्वाभाविक भी प्रतीत होता है। यही कारण है कि उनकी प्रायः सभी कहानियों में इन समकालीन स्थितियों के स्पष्ट स्वर मुखरित हुए है।

3.1.7 प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना

बीसवीं शती के प्रारंभ में भारतीय प्रगतिशील लेखकों का एक समूह था। यह लेखक

समूह अपने लेखन से सामाजिक समानता का समर्थन करता था और कुरीतियों, अन्याय व पिछड़ेपन का विरोध करता था।

प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए मुंशी प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्य का उद्देश्य दबे-कुचले हुए वर्ग की मुक्ति का होना चाहिए'। 1935 में फोस्टर ने प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन नामक एक संस्था की नींव पेरिस में रखी थी, उसी की तर्ज़ पर भारत में 1936 में सज्जाद जहीर और मुल्क राज आनंद ने 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की थी। इसने साहित्य में प्रगतिवादी साहित्यिक सृजन केलिए प्रेरणा प्रदान की।

साहित्यिक लेखन के अलावा प्रेमचंद 'हंस' पत्रिका के सम्पादकीय और अपने आलेखों में भी प्रगतिशील विचारों को आगे बढ़ा रहे थे। वे अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य प्रगतिशील और जनवादी विचारों को अधिक से अधिक देशवासियों तक पहुंचाना चाहते थे। लेकिन एक गंभीर बीमारी से जूझते हुए, 8 अक्टूबर 1936 को उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। प्रगतिशील लेखक संघ का आज का जो स्वरूप दिखाई देता है, उसमें प्रेमचंद की रहनुमाई का बड़ा हाथ है।

3.1.8 प्रगतिशील लेखक संघ का उद्देश्य

1. भारत के विभिन्न भाषाई क्षेत्रों के अनुरूप लेखकों के संगठन की स्थापना करना ; सम्मेलन आयोजित करके और साहित्य प्रकाशित करके इन संगठनों का समन्वय करना ; केंद्रीय संगठनों के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित करना और उन साहित्यिक संगठनों के साथ सहयोग करना जिनके उद्देश्य संघ के मूल उद्देश्यों के साथ संघर्ष नहीं करते।
2. भारत के सभी महत्वपूर्ण शहरों में संघ की शाखाएँ स्थापित करना।
3. प्रगतिशील प्रकृति के साहित्य का उत्पादन और अनुवाद करना, सांस्कृतिक प्रतिक्रिया से लड़ना और इस तरह भारत की स्वतंत्रता और सामाजिक पुनरुद्धार के कारण को आगे बढ़ाना।
4. प्रगतिशील लेखकों के हितों की रक्षा करना।
5. विचार और राय की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार के लिए लड़ना।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

"आत्मसम्मान की रक्षा हमारा सबसे पहला धर्म और अधिकार है"।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में जिन-जिन विचारधाराओं का स्वर हैं, वे हैं आर्यसमाज के समाज-सुधारवादी सिद्धान्त, गांधी के सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन से जन-समाज में उत्पन्न नवचेतना की जागृति मानवतावाद आदि। युगीन प्रवृत्तियां, समाज-सुधार, राष्ट्रीय जागरण, गांधीवाद और आदर्श-यथार्थ के समन्वय के साथ-साथ समाजवादी विचार-धारा का उन्मेष इस युग की मूल विशेषता है, जिसका सही प्रतिबिंब प्रेमचंद कथा-साहित्य में दृष्टिगोचर होता है।

युगीन सामाजिक परिस्थितियों से साक्षात्कार करने के फलस्वरूप प्रेमचंद के कथा-साहित्य में, सामाजिक रीति-रिवाजों, कुरीतियों, कुप्रथाओं, अंध- विश्वासों, बाल-विवाह, नारी और विधवा की दयनीय स्थिति, वेश्यावृत्ति, पापाचार, व्यभिचार, शराबखोरी, संयुक्त परिवारों की चरमराहट, अशिक्षा, आदि का अत्यन्त ही मार्मिक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी चित्रण सम्भव हो सका है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद युग की राजनीतिक दशा पर टिप्पणी लिखिए।
2. प्रेमचंद युगीन समाज की विभिन्न परिस्तिथितियों का अवलोकन कीजिए।
3. प्रेमचंद युगीन साहित्यिक परिस्थितियों पर चर्चा कीजिए।
4. प्रेमचंद कथा-साहित्य पर युगीन-परिस्थितियों का प्रभाव समझाइए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं. राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद - डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मजदूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल

4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय

5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल

6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में प्रेमचंद का योगदान समझता है
- गाँधी जी के आदर्शों का प्रेमचंद पर प्रभाव समझता है
- राष्ट्रीय आन्दोलन में 'जागरण' और 'हंस' की भूमिका जानता है
- आर्थिक शोषण के विरुद्ध आन्दोलन समझता है

Background / पृष्ठभूमि

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में जिन थोड़े लेखकों ने भागीदारी की, (फणीश्वर नाथ रेणु के शब्दों में कहें तो न सिर्फ़ कलम से बल्कि काया से भी) प्रेमचंद उनमें से एक थे। उन्होंने स्वाधीनता-आंदोलन के लिए न सिर्फ पत्र-पत्रिकाओं में लेख और कथा लिखे, अपितु काया से भागीदारी भी की। उनके कहानी-लेखन का आरंभ देश-भक्ति की कहानियों से हुआ, जिसका सभी दृष्टियों से अनवरत विकास होता गया।

सन् 1917 से पहले प्रेमचंद की रचनाओं में राष्ट्रीय प्रश्न नहीं मिलता। हालांकि इस बीच उनकी कुछ अच्छी कहानियां छप चुकी थीं। 'सोजे-वतन' में प्रेमचंद ने देशभक्ति को दिखाया था। 'उपदेश' में राष्ट्रीय आंदोलन पर विचार किया। इस प्रकार, प्रेमचंद देशभक्ति से सफ़र शुरू करके राष्ट्रवाद के स्थान तक गए। देशभक्ति से राष्ट्रवाद की यात्रा में उनकी दृष्टि का विकास हुआ है। इसकी पहली झलक 'उपदेश' कहानी में मिलती है। 'उपदेश' में राष्ट्रीय आंदोलन पर विचार किया गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सांप्रदायिक एकता, राष्ट्रीय आन्दोलन, हरिजन उद्धार, धार्मिक तत्ववाद, जागरण

Discussion / चर्चा

राष्ट्रीयता एक विशिष्ट भावना है और राष्ट्रीय सचेतना से अनुप्राणित साहित्य जनमानस को आंदोलित कर नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का साहस रखता है।यह उन मूल्यों को महत्व प्रदान करने की प्रेरणा देता है, जिसमें हिंसा, घृणा, विश्वासघात जैसी भावनाओं के लिए कोई स्थान न हो। यह प्रेम, भाईचारा, बंधुत्व, सद्भावना, शांति और सौहार्द्र से परिपूर्ण एक उन्मुक्त वातावरण के निर्माण में सहायक होता है, जो किसी भी प्रकार के भेदभाव से मुक्त हो और जिसमें विभिन्न धर्मो को मानने वाले एक साथ निश्चिंत होकर भागीदार हो। समाज के अंदर इस तरह के व्यापक उदात्त भावों का संचार करनेवाला साहित्य ही सही अर्थों में कल्याणकारी साहित्य होता है। इसी कोटि के साहित्य को मानवतावादी साहित्य कहा जाता है।

1.4.1 लेखन का आरंभिक काल

▶ गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन

प्रेमचंद अपने राजनीतिक विचारों में, अपने लेखन के आरंभिक दौर में, कांग्रेस में गरम दल के प्रवक्ता बाल गंगाधर तिलक के उग्र राष्ट्रवाद से प्रभावित थे। कालांतर में, जब दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटकर गाँधी जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर सँभाली, राष्ट्रीय आन्दोलन के स्वरूप और चरित्र में बदलाव तो आया ही, उसका जनाधार भी बढ़ा और नगरों तथा गाँवों तक साधारण जनता ने भी आगे बढ़कर उसमें भाग लेना शुरू कर दिया। गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन राजनीतिक लक्ष्यों के अलावा सामाजिक प्रश्नों से भी जुड़ा और सांप्रदायिक एकता, स्त्री-उत्थान तथा हरिजन उद्धार जैसे विषय भी उसके दायरे में आये। सत्याग्रह, अहिंसा, सविनय अवज्ञा जैसी बातें गाँधी जी के कार्य नीति का अंग बनीं।

1.4.2 गाँधी जी का प्रभाव

प्रेमचंद केवल वैचारिक स्तर पर ही गाँधी जी के प्रभाव में नहीं आये, अपने उपन्यासों तथा कहानियों में रचना के धरातल पर भी उन्होंने गाँधी जी के आदर्शों और कार्यक्रमों के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की।

▶ देश का युवा-मानस क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े

राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी जी के प्रवेश के साथ सन् 1947 ई. में राजनीतिक आजादी मिलने तक के राष्ट्रीय आन्दोलन के समूचे इतिहास तथा गतिविधियों पर दृष्टि डालें, तो देखेंगे कि गाँधी जी के नेतृत्व वाली उसकी मुख्य धारा के अलावा उसकी एक अंतर्धारा के रूप में उन क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ भी उसका एक अमिट हिस्सा थीं, जो गांधी जी के सिद्धान्तों और विचारों से अलग अपने गुप्त संगठनों के तहत अंग्रेजी राज की हिंसा तथा दमन नीति का जवाब देने पर विश्वास रखते थे। क्रांतिकारियों के ये संगठन देशव्यापी थे और देश का युवा-मानस क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े हुए स्वाधीनता सेनानियों के वीरतापूर्ण कार्यों से न केवल प्रभावित था, अपने शौर्य और बलिदान के चलते ये क्रांतिकारी उसका आदर्श भी बन चुके थे।

▶ प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में क्रांतिकारियों के विचारों और आदर्शों को भी अभिव्यक्ति दी

महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित होने के बावजूद प्रेमचंद के मन में इन क्रांतिकारियों की देशभक्ति ने भी अपनी गहरी छाप छोड़ी थी। अपने कुछेक उपन्यासों और कहानियों में प्रेमचंद ने इन क्रांतिकारियों के विचारों और आदर्शों को भी अभिव्यक्ति दी। इससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप और चरित्र को लेकर प्रेमचंद के मन में लगातार विचारों का मंथन चल रहा था। उसके संदर्भ में वे एक ऐसी जमीन की तलाश में थे, जिस पर स्थिर होकर वे रचना तथा विचार दोनों आयामों पर आश्वस्त होकर आगे बढ़ सकें।

1.4.3 राष्ट्रवाद और धार्मिक तत्ववाद का प्रभाव

▶ समाजवादी विचारधारा का प्रसार

1930 ई. के आसपास समाजवादी विचारधारा का प्रचार-प्रसार और उसकी गहमागहमी भारत के अपने राजनीतिक सामाजिक जीवन में तेजी से बढ़ी। भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना तो हुई ही, किसानों और मजदूरों के संगठन भी उसके नेतृत्व में बने और स्वाधीनता आन्दोलन के मुख्य मंच कांग्रेस के तहत ही उनकी अपनी गतिविधियों ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रभावित किया। यहाँ तक कि भारत में चल रहे क्रांतिकारी आन्दोलन पर भी उनकी छाप पड़ी और जो क्रांतिकारी आन्दोलन अपने शुरुआती दौर में उग्र राष्ट्रवाद और धार्मिक तत्ववाद से प्रभावित था, उसका एक बड़ा हिस्सा समाजवादी विचारों के प्रभाव में आ गया। क्रांतिकारी आन्दोलन ही नहीं, स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्त्व कर रही कांग्रेस के भीतर भी समाजवादी विचारों का प्रभाव इस हद तक पड़ा कि उसके जवाहरलाल नेहरू जैसे नेता तो प्रवक्ता बने ही, कांग्रेस के भीतर ही कुछ नेताओं आचार्य नरेन्द्रदेव, अच्युत पटवर्द्धन आदि ने कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना करते हुए उसके तहत् कार्य करना प्रारम्भ कर दिया।

1.4.4 'जागरण' और 'हंस' की भूमिका

▶ 'जागरण' और 'हंस' में प्रेमचंद की टिप्पणियाँ छपी

प्रेमचंद राष्ट्रीय आन्दोलन के स्वरूप तथा चरित्र के गुणात्मक बदलाव के प्रति न केवल जागरूक थे, वे स्वयं 'जागरण' जैसे पत्रों के माध्यम से गाँधीजी के अपने विचारों तथा कार्य नीति के प्रति शंका व्यक्त करते हुए स्वाधीनता आन्दोलन के स्वरूप और चरित्र में गुणात्मक बदलाव की बात कर रहे थे। वे जानते थे कि समाजवादी विचारों के प्रभाव के बावजूद राष्ट्रीय आन्दोलन का मुख्य नेतृत्त्व अपने विचारगत अंतर्विरोधों से मुक्त नहीं हो सका था। 'जागरण' और 'हंस' में छपी प्रेमचंद की टिप्पणियाँ और लेख साक्ष्य हैं कि प्रेमचंद कितनी शिद्दत माने कठिनाई से राष्ट्रीय आन्दोलन के इस विचलन और विपधन की न केवल खिलाफत कर रहे थे, वे मांग कर रहे थे कि स्वाधीनता - आन्दोलन को महज राजनीतिक आजादी तक सीमित न रखते हुए उसे भारत की जनता की आर्थिक और सामाजिक आजादी के सवालों से जोड़ा जाय। उनका मानना था कि स्वाधीनता का आन्दोलन केवल साम्राज्यवाद विरोध के मोर्चे में ही न लड़ा जाय, जैसा कि हो रहा था, वह सामंतवाद और पूँजीवाद विरोध के मोर्चे पर भी समानांतर लड़ा जाय। इस संश्लिष्ट लड़ाई की फलश्रुति ही भारत की वास्तविक आज़ादी होगी। केवल

राजनीतिक आज़ादी भारत की वास्तविक आजादी नहीं मानी जायेगी। यह तो वैसा ही होगा जैसे जॉन के हाथों से गोविन्द के हाथों में राजनीतिक सत्ता का जाना। यह उदाहरण प्रेमचंद का अपना है, जो उनकी ही एक कहानी 'आहुति' में है।

प्रेमचंद राष्ट्रीय आन्दोलन की चल रही गतिविधि से कितने असंतुष्ट थे, यह इस बात से भी जाना जा सकता है कि कभी-कभी वे एकदम बोल्शेविक क्रांतिकारियों के शब्दों और कर्मों के प्रभाववश आतताइयों के प्रति हिंसा तक की बात करने लगते थे। स्वाधीनता आन्दोलन जिस वर्ग-चरित्र को लेकर आगे बढ़ रहा था, प्रेमचंद उससे निराश थे। राजा-महाराजा, नवाब, जमींदार, जागीरदार, रायबहादुर, खानबहादुर सभी तो आजादी की लड़ाई में अपने-अपने वर्गीय स्वार्थों के नाते शामिल थे।

1.4.5 आर्थिक शोषण के विरुद्ध आन्दोलन

▶ अंग्रेजी-राज की लूट-नीति

प्रेमचंद के साहित्य में हम देखते हैं कि उनके समय भारत राजनीतिक पराधीनता के पाश में ही बद्ध न था वरन् भयंकर शोषण का भी शिकार था। कर्ज के बोझ से लदा हुआ अधिकांश भारतीय समाज असंतोष के धुएँ में सांस ले रहा था। इसका प्रमुख कारण अंग्रेजी-राज की लूट-नीति थी। अंग्रेज शासकों ने भारतीय जनता की गरीबी दूर करने के लिये कोई कदम नहीं उठाया।

▶ सामाजिक समस्याओं का आधार आर्थिक

प्रेमचंद ने भारत की इस लूट को अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने भारतीय समाज के प्रत्येक अंग- मजदूर, किसान, मध्यमवर्गीय परिवार आदि की आर्थिक स्थिति अपने उपन्यासों में चित्रित की। तत्कालीन भारत की आर्थिक दशा का यथार्थ ज्ञान प्रेमचंद-साहित्य से होता है। प्रेमचंद ने पूर्ण राष्ट्रीय स्वाधीनता के आन्दोलन को इसीलिए प्राथमिकता दी। सामाजिक समस्याएँ आर्थिक कारणों पर ही अवलम्बित रहती हैं। अर्थव्यवस्था में परिवर्तन होने से सामाजिक ढाँचा अपने आप बदलने लगता है। अनेक सामाजिक कुरीतियों को जन्म देनेवाली दूषित अर्थव्यवस्था ही होती है। प्रेमचंद के रचनाओं में जहाँ कहीं भी सामाजिक समस्याएं आई हैं उनका आधार आर्थिक है। वेश्या-वृत्ति, विधवा-विवाह, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, धूम्र- पान, छुआ -छूत, शिक्षा, ग्राम्य-जीवन आदि सभी के मूल में आर्थिक पहलू है। हमें आगे यह देखना चाहिये कि प्रेमचंद ने अपने समय के भारत का किस प्रकार प्रतिनिधित्व किया। वे कौन-कौन-सी तत्कालीन समस्याएँ थीं, जिनकी युग-धर्म को माननेवाला जागरूक साहित्यकार उपेक्षा नहीं कर सकता था।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

"निराशा संभव को असंभव बना देती है"।

SGOU

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद, स्वतंत्रता आंदोलन के सर्जनात्मक नायक थे। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों में राष्ट्रीय चेतना को दिखाया है। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को शोषित-उत्पीड़ित किसान-मज़दूरों की व्यापक सामाजिक मुक्ति के साथ जोड़ा। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में जमींदारों, महाजनों, और सरकारी अफ़सरों द्वारा किसानों के शोषण का चित्रण किया है। प्रेमचंद ने कांग्रेस के वर्ग चरित्र पर सवाल उठाए हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में प्रेमचंद का योगदान पर आलेख तैयार कीजिए।
2. गाँधी जी के आदर्शों का प्रेमचंद पर प्रभाव कैसा पड़ा? समझाइए।
3. राष्ट्रीय आन्दोलन में 'जागरण' और 'हंस' की भूमिका पर टिप्पणी लिखिए।
4. आर्थिक शोषण के विरुद्ध आन्दोलन प्रेमचंद ने किस प्रकार दिखाया है? स्पष्ट कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद . डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मजदूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 02

कहानीकार प्रेमचंद

SGOU

Unit 1: कहानीकार प्रेमचंद

Unit 2: ईदगाह, पूस की रात

Unit 3: सद्गति, बूढ़ी काकी

Unit 4: कफ़न, पंच परमेश्वर

इकाई 1

कहानीकार प्रेमचंद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानीकार के रूप में प्रेमचंद का आगमन जानता है
- प्रेमचंद की कहानी कला की विशेषताएँ समझता है
- प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विभिन्न विषय जानता है
- हिन्दी कथा साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद का स्थान जानता है

Background / पृष्ठभूमि

कहानी सम्राट प्रेमचंद ने कहानियाँ ही नहीं लिखीं, कहानी के बारे में भी लिखा है। प्रेमचंद जितना पश्चिम में विकसित कहानी की आधुनिक विधा से परिचित थे उतना ही वे उर्दू-फारसी की कथा-परंपरा और भारतीय साहित्य की अपनी कथा-परंपरा से भी परिचित थे। इसके अलावा लोक जीवन में तथा लोक-मन में जिस तरह कहानी, कथा कहने की परंपरा रही है, प्रेमचंद को उसका भी गहरा ज्ञान था। कहानियों के सृजन के साथ-साथ जब तब उन्होंने कहानी के बारे में अपनी समझ का खुला दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया है। 'कुछ विचार' शीर्षक उनके निबन्ध संग्रह में कहानी-कला पर उनके तीन निबंध प्रकाशित हैं।

प्रेमचंद सबसे उत्तम कहानी की अपनी अवधारणा को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं- "सबसे उत्तम कहानी वह होती है जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।... बुरा आदमी भी बिल्कुल बुरा नहीं होता। उसमें कहीं देवता अवश्य छिपा होता है, यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। उस देवता को खोलकर दिखा देना सफल आख्यायिका लेखक का काम है।' प्रेमचंद कहानी में जीवन समस्या को जरूरी मानते हैं। किसी भी समस्या का समावेश कहानी को आकर्षक बनाने का सबसे उत्तम साधन है। प्रेमचंद की रचनाओं में जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण हुआ है। उन्होंने मिल मालिक और मजदूरों, ज़मीदारों और किसानों तथा नवीनता और प्राचीनता का संघर्ष दिखाया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सोज़ेवतन,सौत,भारतीय संस्कृति के पुजारी,अंग्रेजों के प्रभाव का चित्रण ,भाषा शैली

Discussion / चर्चा

2.1.1 उर्दू कहानीकार के रूप में शुरुआत

▶ प्रथम उर्दू कहानी संग्रह 'सोज़ेवतन'

सभी जानते हैं कि प्रेमचंद उर्दू से हिन्दी में आए। नवाबराय नाम से उर्दू में लिखते थे। उनका प्रथम उर्दू कहानी संग्रह 'सोज़ेवतन' महत्वपूर्ण हैं। वे जब कहानी क्षेत्र में आये तो उन्होंने सब से पहले अपने देश की परतंत्रता पर ध्यान दिया ओर देशप्रेम पूर्ण कहानियों की उर्दू में रचना की। उस समय प्रेमचंद सरकारी नौकर थे। सरकारी नौकर के लिए स्वराज्य और देशप्रेम की चर्चा करना मना किया गया था। 'सोजेवतन की कहानियाँ देशप्रेम से भरी हुई थी और पाठकों के मन में मातृभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न करती थी। अंग्रेज़ी सरकार ने इसे आपत्तिजनक कहकर ज़ब्त कर लिया। 'सोजेवतन में दी गयी भूमिका में अपने मन में उठनेवाली देशप्रेम की तरंगे और दासता की ज़ंजीरों को तोड़ने की आतुरता झलकती है-

साहित्य को समाज का प्रतिबिंब मानना और समाज की बातें साहित्य में चित्रण करके समाज में राष्ट्रीय चेतना का जागरण करने का प्रयास हिन्दी साहित्य में बाद में हुआ था। इस दृष्टि से देखा जाय तो प्रेमचंद अपनी उर्दू कहानियों में से ही हिन्दी की तुलना में एकदम आधुनिक चेतना संपन्न कहानीकार के रूप में पाठकों के सामने आते हैं।

2.1.2 हिन्दी कहानीकार के रूप में पदार्पण

▶ 'सौत' कहानी उर्दू से हिन्दी में अनुवाद किया

प्रेमचंद ने जिस समय उर्दू से हिन्दी साहित्य में प्रदार्पण किया उस समय वह हिन्दी साहित्य के इतिहास में ऐतिहासिक महत्व का समय था। उन्होंने पहले पहल अपनी उर्दू कहानियों का हिन्दी में अनुवाद करके पत्रिकाओं में प्रकाशित किया। कहा जाता है कि उनकी पहली कहानी 'सौत' थी जो साल 1915 में सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी सामाजिक मुद्दों, स्त्री विमर्श, और पारिवारिक संघर्षों पर आधारित है। इस कहानी में प्रेमचंद ने पारंपरिक समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके संघर्षों को दिखाया है। यह उनकी इसी नाम से प्रकाशित उर्दू कहानी का हिन्दी अनुवाद थी। सात हिन्दी कहानियों का संग्रह 'सप्त सरोज' हिन्दी पुस्तक एजन्सी कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रेमचंद के दोस्त प. मन्त्रन द्विवेदी ने इसकी भूमिका लिखी है। यह भूमिका कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है, क्योंकि वास्तव में यह प्रेमचंद के हिन्दी आगमन की स्वागत भूमिका है। प्रेमचंद की हिन्दी कहानियों को पाठकों ने खुले दिल से स्वीकार किया। उनकी हिन्दी कहानियाँ अनूठी चीज़ मानी जाने लगीं।

2.1.3 ऐतिहासिक कहानियों का प्रणयन

उर्दू साहित्य का प्रभाव होने के कारण प्रेमचंद मुस्लिम संस्कृति, इतिहास एवं साहित्य से अच्छी तरह परिचित थे। इसलिए उन्होंने अपनी कहानियों में मुस्लिम संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। मुगलकालीन इतिहास के आधार पर भी उन्होंने कहानियों

SGOU

लिखी है। उस समय समाज के प्रचलित अन्धविश्वासों और अनाचारों का भी चित्रण इसमें है। मुस्लिम बादशाहों की विलासिता का भी उन्होंने वर्णन किया है। उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन करने के लिए आदर्श को ही मुख्यरूप से अपनाया है। प्रेमचंद ने राजपूत जाति के स्त्री और पुरुषों की वीरता तथा वचनपालन को अपनी कहानियों में अंकित किया है। इसलिए ऐतिहासिक कहानियाँ चरित्र प्रधान भी हो गयी है। राजा हरदौल, रानी सारधा, सती, मर्यादा की बेदी, जुगनू की चमक आदि कहानियाँ राजपूत जाति के आदर्शों पर आधारित हैं।

▶ ऐतिहासिक कहानियाँ चरित्र प्रधान थीं

2.1.4 भारतीय संस्कृति की पूजारी

भारत की संस्कृति का मुख्य पक्ष कृषि संस्कृति है जिसमें किसान-समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद ने किसान को साहित्य का विषय बनाया। उनके कथा-साहित्य में किसान-जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ है। भारत का सबसे बड़ा वर्ग किसान रहा है। किसान भारत की कृषि-संस्कृति का मूलाधार है। किसान के बिना भारतीय संस्कृति का कोई भी विश्लेषण अधूरा होगा। यह बात बार-बार दुहराई गई है कि भारत एक कृषि-प्रधान देश है। प्रेमचंद ने इस कृषि-व्यवस्था के कर्ता-धर्ता किसान को अपने उपन्यासों और कहानियों का मुख्य विषय बनाया। उनके पहले तथा उनके बाद किसी भी रचनाकार ने इतने विस्तार से किसान को आधार बनाकर हिन्दी में साहित्य-सृजन नहीं किया। भारतीय संस्कृति का चित्रण करना प्रेमचंद का लक्ष्य था। उनके पात्र कायर नहीं है। वे परिस्थितियों से संघर्ष करके जीवन बिताते है। प्रेमचंद के किसान-साहित्य में भारतीय संस्कृति की तलाश है। प्रेमचंद के किसान की संस्कृति को भारतीय संस्कृति माना जाना चाहिए।

▶ किसान भारत की कृषि-संस्कृति का मूलाधार है

2.1.5 आर्थिक दशा का चित्रण

प्रेमचंद के समय देश की आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी। किसानों के पास धरती थी, पर उसका फल भोग रहे थे ज़मीदार लोग। शोषण के कारण किसान लोग पीड़ित थे। किसान के अभिशप्त जीवन को प्रेमचंद ने निकट से देखा। श्रमिक वर्ग भी आर्थिक हीनता से पीड़ित थे। उनके साथ महाजन का व्यवहार भी क्रूर था। धनिकवर्ग सुखी जीवन बिताते थे। मध्यमवर्ग की आर्थिक दशा भी अत्यन्त दयनीय थी। उनको रहने केलिए एक मकान बनाना भी असाध्य कार्य था। इन सब बातों को प्रेमचंद ने अपनी कहानियों का आधार बनाया। उनकी कहानियाँ आर्थिक समस्याओं का जीता जागता चित्रण प्रस्तुत करती हैं

▶ मध्यमवर्ग की आर्थिक दशा अत्यन्त दयनीय थी

2.1.6 वर्तमान समाज का चित्रण

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में तत्कालीन समाज का प्रतिबिंब प्रस्तुत किया है। उन्होंने वर्तमान दूषित समाज का चित्रण करने के लिए प्राचीन समाज में प्रचलित आदर्शों को ग्रहण किया। प्रेमचंद ने 'कायर' कहानी में यह बताने का प्रयास किया है कि आज

SGOU

▶ स्वार्थ सेवा अंग्रेज़ी शिक्षा का प्राण है

की शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। 'दीक्षा' कहानी में वे लिखते हैं- स्वार्थ सेवा अंग्रेज़ी शिक्षा का प्राण है। पूर्व के लोग सन्तान के लिए, यश के लिए, धर्म के लिए करता है, तो पश्चिम के लोग अपने लिए। पूर्व में घर का स्वामी सबका सेवक होता है, वह सबसे ज़्यादा काम करता, दूसरों को खिलाकर खाता, दूसरों को पहनाकर पहनता है, किन्तु पश्चिम में वह सबसे अच्छा खाना, अच्छा पहनना अपना अधिकार समझता है। हम बाहर से पूर्व और भीतर से पश्चिम है। हमारे सत्आदर्श दिन ब दिन लुप्त होते जा रहे हैं।

2.1.7 मनोवैज्ञानिक कहानियों की रचना

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में मनोविज्ञान का बेहतरीन प्रयोग किया है। उल्लेखनीय है कि हिन्दी साहित्य के कुछ कहानीकार जैसे जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी और अज्ञेय; पश्चिमी विचारक सिग्मंड फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित थे और इन कहानीकारों ने फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद को ही आधार मानकर मनोवैज्ञानिक कहानियों की रचना की। लेकिन प्रेमचंद के मनोविज्ञान का आधार किसी दार्शनिक के विचार नहीं थे। प्रेमचंद को समाज की अच्छी समझ थी। इसी समझ और अपने जीवन अनुभवों को आधार बनाकर प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग किया। अपनी कहानियों में प्रेमचंद ने समाज के विभिन्न वर्गों के मनोवैज्ञानिक का चित्रण ख़ूबसूरती के साथ किया है।

2.1.8 दैनिक जीवन में अंग्रेज़ों के प्रभाव का चित्रण

▶ प्रेमचंद पाश्चात्य सभ्यता के गुलामों पर व्यंग्य करते हैं

भारतीय जनता के दैनिक जीवन में अंग्रेज़ों के पूर्ण प्रभाव का चित्रण भी प्रेमचंद की कहानियों में देख सकते हैं। प्रेमचंद ने 'साहित्य का उद्देश्य' नामक लेख में लिखा है जो हमारा अंग्रेज़ी साहब करता है, वही हमारा हिन्दुस्तानी साहब करता है, करने पर मज़बूर हैं। अंग्रेज़ियत ने उसे हिप्नाटाइस कर दिया है। उसमें बेहद उदारता आ गई है, छुआछूत से सोलहों आने नफ़रत हो गई है। वह अंग्रज़ साहब की मेज़ का जूठन भी खाने लगा और उसे गुरु का प्रसाद समझने लगा। लेकिन जनता उसकी उदारता में स्थान नहीं पा सकती, उसे तो काला आदमी समझता है। यहाँ प्रेमचंद पाश्चात्य सम्यता के अन्धानुकरण पर व्यंग्य करते हैं। उनकी कहानियों में व्यंग्य की ध्वनि स्पष्ट सुनाई देती है।

2.1.9 ग्राम और किसान जीवन से जुड़ी कहानियाँ

कहानी सम्राट प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के अमर कथाकार हैं। उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन और किसानों की समस्याओं का विस्तृत चित्रण मिलता है। इन उपन्यासों में प्रेमचंद ने किसानों की आर्थिक स्थिति, सामाजिक समस्याओं और ग्रामीण जीवन की वास्तविकता का मार्मिक चित्रण किया है।

2.1.9.1 ग्राम

- भारतीय सामाजिक जीवन की कहानी

प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानियों की संख्या तीन सौ से भी ऊपर है। उनकी कहानियाँ भारतीय सामाजिक जीवन को उसकी समग्रता में अपना विषय बनाती हैं और उनमें नगर और ग्राम-जैसा कोई आयास-साध्य विभाजन नहीं है। उनकी मानवीय संवेदना जब भारतीय तथा सामाजिक जीवन के किसी पहलू को लेकर आहत, विचलित या स्पंदित हुई है, उसे उन्होंने अपनी रचना का विषय बनाया है। किन्तु उनके बुनियादी रचनात्मक सरोकारों में किसान, स्त्री और दलित जीवन संदर्भों को अहम मानते हुए प्रस्तुत किया है, इस नाते यह ज़रूरी प्रतीत होता है कि उनकी ऐसी कुछ विशिष्ट कहानियों की ओर इंगित किया जाये जिनमें उनके रचनात्मक सरोकारों के ये पहलू उजागर हुए हैं।

2.1.9.2 किसान

- हाड़-तोड़ मेहनत कर अपने घर-परिवार का पालन-पोषण करने वाले किसान की कहानी

किसान प्रेमचंद के रचनात्मक सरोकारों और उनकी संवेदना के दायरे में अपने तमाम जीवन-संदर्भों को लिए हुए इस नाते आए कि प्रेमचंद ने हिन्दुस्तान के किसानों के स्वभाव, उसके चरित्र और उसके स्वरूप को समझने में कहीं कोई गलती नहीं की थी। गाँधी जी बराबर इस बात को दुहराते रहे थे कि भारत मूलतः कृषक जीवन पर आधारित एक ग्राम-प्रधान देश है। किसान जो प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों में प्रमुखता से आए हैं, ये धनी किसान नहीं, निम्न जाति के किसान हैं, हाड़-तोड़ मेहनत कर किसी तरह अपने घर-परिवार का पालन-पोषण करने वाले। ये वे किसान हैं जिनकी गरदनें या तो ज़मीदारों के पैरों के नीचे दबी हैं या महाजनों के। जिनके सूद को अदा करने केलिए कमरतोड़ मेहनत करता है और मृत्यु पर्यंत गरीब रहता है।

- संपूर्ण भारतीय किसान की नियति का वर्णन

सूद बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक पहुँच जाता है कि किसान को खेतों से बेदखल होना पड़ता है, या खलिहान में मेहनत-मशक्कत से पैदा की गई इकट्ठी फसल से हाथ धोना पड़ता है। फिर बेगार करना पड़ता है, बंधुआ होना पड़ता है, अपने बेटे-बेटियों को दाँव पर लगाना पड़ता है, मज़दूरी करनी पड़ती है और अंततः मर जाना पड़ता है। शंकर की नियति (सवासेर गेहूँ) उनकी नियति बनती है या होरी (गोदान) की नियति उनकी नियति बन जाती है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में अपनी संपूर्ण भारतीय संवेदना के साथ उन्हें उनके पूरे वस्तुगत परिप्रेक्ष्य में हमारे सामने पेश किया है।

ग्राम तथा किसान जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ - पूस की रात, मुक्तिमार्ग, बलिदान, शंखनाद, पंच-परमेश्वर, सवा-सेर गेहूँ, दो बैलों की कथा, आत्माराम, लाग-डॉट, प्रेम का उदय, दो भाई, सुजान भगत आदि।

SGOU

2.1.10 स्त्री और दलित जीवन से संबंधित कहानियाँ

2.1.10.1 स्त्री

स्त्री प्रेमचंद के रचनात्मक सरोकारों में किसान की ही भाँति अपने समग्र जीवन-संदर्भों के साथ प्रेमचंद के रचनाकाल के आरम्भिक दौर से ही अहम रही है। हमने प्रेमचंद की पहचान स्वाधीनता-आन्दोलन के लेखक के रूप में की है। ध्यान देने की बात है कि प्रेमचंद ने स्त्री की अस्मिता और सामाजिक हैसियत के सवाल को किसी वर्ग विशेष की स्त्रियों तक ही सीमित न रखकर स्त्री-मात्र की ज़िन्दगी से जोड़ा है। स्त्री-हर वर्ग में चाहे वह उच्च वर्ग हो, मध्यवर्ग हो था फिर निम्न वर्ग, अपने जायज अधिकारों तथा सामाजिक हैसियत से वंचित अपने-अपने ढंग से शोषण का शिकार है। आर्थिक शोषण, गैर बराबरी के अलावा वह यौन शोषण की भी शिकार है, उसका किसी ख़ास वर्ग से सम्बन्ध नहीं है। पुरुष वर्चस्व वाले समाज में वह पुरुषों से दोयम दर्जा पाये हुए है और उसे हर वर्ग में पुरुष-दंभ और पुरुष-वर्चस्व का शिकार होना पड़ता है।

▶ स्त्री-हर वर्ग में अपने ढंग से शोषण का शिकार

प्रेमचंद की स्त्री जीवन की विशिष्ट कहानियाँ हैं - आहुति, शांति, कायर, बड़े घर की बेटी, निष्कासन, घासवाली, विमाता, बूढ़ी काकी, सुभागी, शिकार, ज्योति, स्वामिनी आदि।

2.1.10.2 दलित

आज मराठी समेत अनेक भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य आन्दोलन की गहमागहमी दिखाई पड़ रही है। जिस गहरी पक्षधरता और मानवीय संवेदना के साथ उन्होंने किसान और स्त्री को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया, वैसी ही पक्षधरता उनमें दलितों के प्रति भी दिखाई दी। दलित-जीवन की यातना के चित्रण के सिलसिले में उन्होंने उनके स्त्रोत हमारे धर्मशास्त्रों तथा धर्म धुरंधरों के चेहरे भी बेनकाब किये, चली आ रही सामाजिक संरचना में मनुष्य और मनुष्य में भेद करने वाली मानसिकता और उसे ढोने वाली सामाजिक शक्तियों तथा सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवाद के पोषक व्यक्तियों और वर्गों पर भी जमकर प्रहार किये। उन्हें उनकी सारी अमानवीयता तथा बर्बरता में प्रस्तुत किया, जिसे लेकर उनके ऊपर ब्राह्मण विद्वेषी होने तथा घृणा का प्रचारक होने के आरोप भी लगे, परन्तु इन सारे आरोपों से अप्रभावित प्रेमचंद अपने इस रचनात्मक सरोकार को साथ लिये आगे बढ़ते गये।

▶ दलित-जीवन की यातना का चित्रण

उनकी 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ', 'मंत्र', 'दूध का दाम', 'गुल्ली-डंडा, 'कफन' जैसी कहानियाँ इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय रहीं। दलितों के प्रति प्रेमचंद जी की इस उन्मुखता का सम्बन्ध भी भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता-आन्दोलन से मिलीं प्रेरणाओं से है। यह अंत तक उनके रचनात्मक लेखन में उनके साथ रहीं।

▶ भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता-आन्दोलन से प्रेरणा

SGOU

2.1.11 भाषा और शैली

▶ प्रेमचंद जी की भाषा के दो प्रमुख रूप

मुंशी प्रेमचंद जी की भाषा के दो प्रमुख रूप हैं: एक वह जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का अधिक उपयोग होता है, और दूसरा वह जिसमें उर्दू, संस्कृत और हिन्दी के व्यावहारिक शब्दों का समावेश होता है। दूसरी प्रकार की भाषा अधिक सजीव, व्यावहारिक और प्रवाहमयी है। प्रेमचंद की भाषा सहज, सरल, व्यावहारिक, प्रवाहपूर्ण, मुहावरेदार और प्रभावशाली है।

वे विषय और भावों के अनुरूप अपनी शैली को परिवर्तित करने में निपुण थे। उन्होंने अपने साहित्य में मुख्यतः पाँच शैलियों का प्रयोग किया है:

1. वर्णनात्मक शैली
2. विवेचनात्मक शैली
3. मनोवैज्ञानिक शैली
4. हास्य-व्यंग्यप्रधान शैली
5. भावात्मक शैली

▶ प्रेमचंद ने साहित्य में मुख्यतः पाँच शैलियों का प्रयोग किया है

प्रेमचंद की कहानी 'मंत्र' एक मर्मस्पर्शी रचना है, जो उच्च और निम्न स्थितियों के भेदभाव पर आधारित है। इसमें लेखक ने विरोधाभासी घटनाओं, परिस्थितियों और भावनाओं का चित्रण करके कर्तव्य-बोध का मार्ग दिखाया है। इस कहानी की शैली और प्रस्तुति इतनी प्रभावशाली है कि पाठक मंत्रमुग्ध होकर पूरी कहानी पढ़ जाता है।

2.1.12 प्रेमचंद की कहानी कला की विशेषताएँ

प्रेमचंद भाव और कला दोनों ही दृष्टियों से बहुत महान है। हिन्दी कहानी कला के सच्चे तत्व पहली बार उनके कथा साहित्य में अंकुरित हुए है। वे निश्चय ही हमारे पहले मौलिक कहानिकार हैं। उनकी कहानी कला की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

2.1.12.1 कथानक

कथानक की दृष्टि से प्रेमचंद का कथा साहित्य बड़ी व्यापकता लिए हुए है। ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों से उन्होंने अपनी कहानियों के कथानक लिए हैं। सामाजिक कहानियों में उन्होंने समाज सुधार, ग्रामीण नागरिक और नारी जीवन की अनेक प्रकार की समस्याओं का चित्रण किया हैं।

▶ विभिन्न क्षेत्रों से उन्होंने अपनी कहानियों के कथानक लिए हैं

जिन घटनाओं को प्रेमचंदजी ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है उन्हें बड़े कलात्मक ढंग से हमारे सामने रखा है। तिलस्मी कहानी की भाँति वे केवल बैचित्र्य और कुतूहल प्रधान नही हैं, उनका कार्य केवल मनोरंजन करना ही नहीं हैं, बल्कि वे एक निश्चित उद्देश्य और सिद्धांत को लेकर चली हैं।

2.1.12.2 पात्र-योजना एवं चरित्र चित्रण

▶ पहली बार चरित्र प्रधान कहानियों का जन्म

प्रेमचंद जी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता वस्तुतः मानव चरित्र की व्याख्या है। प्रेमचंदपूर्व हिन्दी कहानी साहित्य, कहानी के इस मूल तत्व से सर्वथा अछूता था। प्रेमचंद ने पहली बार चरित्र प्रधान कहानियों को जन्म दिया।

2.1.12.3 प्रेमचंद की कहानी कला की विशेषताएँ

▶ स्वाभाविक और सजीव कथोपकथन

प्रेमचंद जी की कहानियों के कथोपकथन भी बड़े स्वाभाविक और सजीव हैं। वे सर्वत्र पात्र, देश काल, परिस्थिति, स्वभाव, रुचि के अनुकूल हैं। वह शिक्षित, राजा-रंक, सेठ मजदूर सबके मुँह से मर्यादानुकूल उसी की भाषा में बातचीत कराते हैं। इसके साथ ही वह कथोपकथन की सुसम्बद्धता, उसकी श्रृंखला और नियंत्रित स्वरूप का भी ध्यान रखते हैं जो सर्वथा औचित्यपूर्ण है।

2.1.12.4 देशकाल एवं वातावरण योजना

▶ परिस्थितियों एवं वातावरण का कुशलतापूर्वक चित्रण

प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में परिस्थितियों एवं वातावरण का चित्रण बड़े कौशल से किया है। उनके सभी वर्णन सजीव और कथानक या विषय केलिए सहायक हुए है। घटनाओं के वर्णन में, घटनाओं की पृष्ठ भूमि के चित्रण में, पात्रों के चरित्र को प्रस्तुत करने में सचमुच प्रेमचंद जी सिद्धहस्त हैं।

2.1.12.5 भाषा-शैली

▶ उत्कृष्ट भाषा शैली

प्रेमचंद जी की कहानी कला की उत्कृष्टता का बहुत श्रेय उनकी भाषा को है। भाषा प्रयोग में प्रेमचंद समर्थ हैं। उच्च साहित्यिक हिन्दी, बोलचाल की हिन्दी, उर्दू-हिन्दी के संयोग से बनी हिन्दुस्तानी सभी प्रकार की भाषा उनकी चेरी थी और अपने स्वामी के पीछे हाथ जोड़े फिरती थी। शब्दों का तो उनके पास अटूट खजाना था। भाषा की भाँति शैली के भी अनेक रूप हमें देखने को मिलते हैं। वह वर्णनात्मक, संकेतात्मक, चित्रात्मक, नाटकीय और हास्य व्यंग्य प्रधान सभी कुछ हैं। शिल्प विधान की दृष्टि से प्रेमचंद जी ने ऐतिहासिक, नाटकीय, आत्मचरित्रात्मक, पत्रात्मक, डायरी शैली आदि सभी शैलियों में अपनी कहानियाँ लिखी हैं। ऐतिहासिक शैली को अवश्य उन्होंने अधिक प्रधानता दी है। इस प्रकार की शैली में लिखी गई कहानियों में उन्हें सफलता भी खूब मिली है।

2.1.12.6 उद्देश्य

▶ सोद्देश्यपरक रचनाएँ

प्रेमचंद जी का सभी कथा साहित्य सोद्देश्य है वह मनोरंजन के लिए नहीं लिखा गया है। वह किसी न किसी निश्चित उद्देश्य का प्रतिपादन करता हुआ चलता है। प्रेमचंद जी का अपना जीवन दर्शन है, अपनी विचारधारा है। इसी ने उनके कथा साहित्य के घटना चक्र को जन्म दिया है और पात्रों की सृष्टि की है। मानवतावादी कथाकार होने के कारण प्रेमचंद का अपना निश्चित दृष्टिकोण है।

SGOU

2.1.13 हिन्दी कथा साहित्य में स्थान

हिन्दी कथा साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालने से यह बात सर्वथा स्पष्ट है कि प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी तथा साहित्य के जन्म दाता है। उनका एक अलग कहानी युग थे। जिसमें हिन्दी कहानियों के सच्चे तत्व अंकुरित हुए, विकसित हुए और उनसे भारतीय नए कथा साहित्य की सुगन्ध फैलने लगी। बंगला कहानी साहित्य में टैगोर की भाँति उन्होंने कहानी रचना को प्रेरणा दी और उसके भाव क्षेत्र को अधिक से अधिक विकसित किया।

अन्मोल वचनः प्रेमचंद

"सोने और खाने का नाम जिंदगी नहीं है, आगे बढ़ते रहने की लगन का नाम ही जिंदगी हैं"।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी की नवजात परंपरा को अपने लेखन के द्वारा एक परिपक्व परंपरा में रूपांतरित किया। अपने लेखन कला के माध्यम से जिस प्रकार प्रेमचंद ने स्वतंत्र चरित्रों का निर्माण किया, चरम यथार्थवाद की स्थापना की और चरित्र प्रधान कहानियों की नींव डाली - यह सब विशेषताएँ बाद के हिन्दी कहानी आंदोलनों का आधार बनीं और नई कहानी आंदोलन के कहानीकारों ने 'भोगे हुए यथार्थ' को प्राथमिकता देते हुए इन विशेषताओं को पूर्णता तक पहुँचाया। अतः इस बात में कोई दो राय नहीं कि प्रेमचंद की कहानी कला के वैशिष्ट्य ने हिन्दी कहानी के विकास में महती भूमिका अदा किया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद की कहानी कला की विशेषताओं का परिचय दीजिए।
2. कहानीकार प्रेमचंद विषय पर आलेख तैयार कीजिए।
3. 'कहानी सम्राट प्रेमचंद'के बारे में टिप्पणी लिखिए।
4. हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद का स्थान निर्धारित कीजिये।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद - डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
7. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष
8. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
9. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कहानीकार प्रेमचंद - शिवकुमार मिश्र
2. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
3. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

ईदगाह, पूस की रात

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'ईदगाह' कहानी समझता है
- हामिद नामक छोटे बालक की कहानी जानता है
- बाल मनोविज्ञान का एक पहलू समझता है
- 'पूस की रात' कहानी के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- गरीब किसान की मानसिक दशा का अनुभव होता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रेमचंद हिन्दी कहानी के वास्तविक संस्थापक हैं। हिन्दी कहानी का इतिहास देखें तो मालूम होता है कि प्रेमचंद के आगमन से पहले ही हिन्दी कहानी की शुरूआत हो चुकी थी लेकिन यूरोपीय ढंग की आधुनिक कहानी को भारतीय परम्परा में ढालकर उसे सामूहिक अभिव्यक्ति का स्वरूप देना प्रेमचंद का ही कौशल था। उन्होंने न केवल बड़ी संख्या में कहानियाँ लिखीं बल्कि गुणवत्ता की दृष्टि से भी बेहद मूल्यवान कहानियाँ लिखीं। सन् 1933 में लिखी गई 'ईदगाह' कहानी उनकी कहानियों में अग्रगण्य है। 'ईदगाह' लोकप्रिय कहानी है। एक बच्चे का अपनी दादी से अटूट, प्रेम कहानी का लोकप्रिय पाठ है किन्तु दादी का बच्चे और बच्चे का बूढ़े की तरह आचरण करना मनुष्य के मन की थाह लेने का अद्‌भुत सौन्दर्य चित्र है। इसे भी कहानी में देखा जा सकता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

ईदगाह, ईद की बधाई, अब्बाजान, पैसे कमाने, मनोवैज्ञानिक, चिमटा खरीदना, गोबर से लीपना, बेसमझ लड़का

SGOU

Discussion / चर्चा

2.2.1 ईदगाह

एक

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक़ है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितन्ा शीतल है, यानी संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सुई- धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर पर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दुपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दुपहर के पहले लौटना असंभव है। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दुपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की ख़ुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। इन्हें गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेवैयों के लिए दूध ओर शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवैयाँ खाएँगे। वह क्या जानें कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी क़ायम अली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या ख़बर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना ख़ज़ाना निकालकर गिनते हैं और ख़ुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह, उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीज़ें लाएँगें—खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या। और सबसे ज़ियाद प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का ग़रीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। किसी को पता ना चला, क्या बीमारी है। कहती तो कौन सुनने वाला था। दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी ओर जब न सहा गया तो संसार से विदा हो गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रूपए कमाने गए हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आएँगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी

▶ हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है—तुम डरना नहीं अम्माँ, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

SGOU

अच्छी-अच्छी चीज़ें लाने गई हैं; इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज़ है, और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजान नियामतें लेकर आएँगी, तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी कहाँ से उतने पैसे निकालेंगे। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन, उसके घर में दाना नहीं! आज आबिद होता, तो क्या इसी तरह ईद आती ओर चली जाती! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को? इस घर में उसका काम नहीं, लेकिन हामिद! उसे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब? उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है! उसे कैसे अकेले मेले जाने दे? उस भीड़-भाड़ से बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो? नहीं, अमीना उसे यूँ न जाने देगी। नन्हीं-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे! पैर में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद में ले लेगी; लेकिन यहाँ सेवैयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीज़ें जमा करते लगेंगे। माँगे ही का तो भरोसा ठहरा। उस दिन फ़हीमन के कपड़े सिले थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती! हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्यौहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए। धोबन और नाइन ओर मेहतरानी और चूड़ीहारिन सभी तो आएँगी। सभी को सेवैयाँ चाहिए और थोड़ा किसी को आँखों नहीं लगता। किस-किस सें मुँह चुराएगी? और मुँह क्यों चुराए? साल भर का त्यौहार है। ज़िंदगी ख़ैरियत से रहे, उनकी तक़दीर भी तो उसी के साथ है। बच्चे को ख़ुदा सलामत रखे, दिन भी कट जाएँगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इंतज़ार करते। यह लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं! हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है! शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बग़ीचे हैं। पक्की चारदीवारी बनी हुई है। पेड़ो में आम और लीचियाँ लगी हुई हैं। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशान लगाता है। माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के वहाँ से एक फर्लांग पर हैं। ख़ूब हँस रहे हैं। माली को कैसा उल्लू बनाया है।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं। यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब-घर है! इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे? सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े-बड़े आदमी हैं, सच! उनकी बड़ी-बड़ी मूँछे हैं। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर! हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं, बिल्कुल तीन कौड़ी के। रोज़ मार खाते हैं, काम से जी चुराने वाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे ओर क्या। क्लब-घर में जादू होता है। सुना है, यहाँ मुर्दों की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं। और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अंदर नहीं जाने देते। और वहाँ शाम को साहब लोग खेलते हैं। बड़े-बड़े आदमी खेलते हैं, मूँछों दाढ़ीवाले। और मेमें भी खेलती हैं, सच! हमारी अम्माँ को वह दे दो, क्या नाम है, बैट, तो उसे पकड़ ही न सकें। घुमाते ही लुढ़क जाएँ।

महमूद ने कहा—हमारी अम्मीजान का तो हाथ काँपने लगे, अल्ला क़सम।

मोहसिन बोला—चलो, मनों आटा पीस डालती हैं। ज़रा-सा बैट पकड़ लेंगी, तो हाथ काँपने लगेंगे? सैकड़ों घड़े पानी रोज़ निकालती हैं। पाँच घड़े तो तेरी भैंस पी जाती है। किसी मेम को एक घड़ा पानी भरना पड़े, तो आँखों तले अँधेरा आ जाए। महमूद—लेकिन दौड़ती तो नहीं, उछल-कूद तो नहीं सकतीं।

मोहसिन—हाँ, उछल-कूद तो नहीं सकतीं, लेकिन उस दिन मेरी गाय खुल गई थी और चौधरी के खेत में जा पड़ी थी, अम्माँ इतना तेज़ दौड़ीं कि मैं उन्हें न पा सका, सच।

आगे चले। हलवाइयों की दुकानें शुरू हुईं। आज ख़ूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है? देखो न, एक-एक दूकान पर मनों होंगी। सुना है, रात को जिन्नात आकर ख़रीद ले जाते हैं। अब्बा कहते थे कि आधी रात को एक आदमी हर दुकान पर जाता है और जितना माल बचा होता है, वह तुलवा लेता है और सचमुच के रुपए देता है, बिल्कुल ऐसे ही रुपए।

हामिद को यक़ीन न आया—ऐसे रुपए जिन्नात को कहाँ से मिल जाएँगे?

मोहसिन ने कहा—जिन्नात को रुपए की क्या कमी? जिस ख़ज़ाने में चाहें चले जाएँ। लोहे के दरवाज़े तक उन्हें नहीं रोक सकते जनाब, आप हैं किस फेर में! हीरे-जवाहरात तक उनके पास रहते हैं। जिससे ख़ुश हो गए, उसे टोकरों जवाहरात दे दिए। अभी यहीं बैठे हैं, पाँच मिनट में कलकत्ता पहुँच जाएँ।

हामिद ने फिर पूछा—जिन्नात बहुत बड़े-बड़े होते हैं?

मोहसिन—एक-एक आसमान के बराबर होता है जी। ज़मीन पर खड़ा हो जाए तो उसका सिर आसमान से जा लगे, मगर चाहे तो एक लोटे में घुस जाएँ।

हामिद—लोग उन्हें कैसे ख़ुश करते होंगे? कोई मुझे यह मंतर बता दे तो एक जिन्न को ख़ुश कर लूँ।

मोहसिन—अब यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन चौधरी साहब के क़ाबू में बहुत से जिन्नात हैं। कोई चीज़ चोरी हो जाए चौधरी साहब उसका पता लगा देंगे और चोर का नाम भी बता देंगे। जुमेराती का बछवा उस दिन खो गया था। तीन दिन हैरान हुए, कहीं न मिला तब झख मारकर चौधरी के पास गए। चौधरी ने तुरंत बता दिया, मवेशीख़ाने में है और वहीं मिला। जिन्नात आकर उन्हें सारे जहान की ख़बर दे जाते हैं।

अब उसकी समझ में आ गया कि चौधरी के पास क्यों इतना धन है और क्यों उनका इतना सम्मान है।

आगे चले। यह पुलिस लाइन है। यहीं सब कांस्टेबल क़वायद करते हैं। रैटन! फाय फो! रात को बेचारे घूम-घूमकर पहरा देते हैं, नहीं चोरियाँ हो जाए।

मोहसिन ने प्रतिवाद किया—यह कानिसटिबिल पहरा देते हैं! तभी तुम बहुत जानते हो अजी हज़रत, यह चोरी कराते हैं। शहर के जितने चोर-डाकू हैं, सब इनसे मिले रहते हैं। रात को ये लोग चोरों से तो कहते हैं, चोरी करो और आप दूसरे मुहल्ले में जाकर 'जागते रहो! जागते रहो!' पुकारते हैं। तभी इन लोगों के पास इतने रुपए आते हैं। मेरे मामू एक थाने में कानिसटिबिल हैं। बीस रूपया महीना पाते हैं, लेकिन पचास रूपए घर भेजते हैं। अल्ला क़सम! मैंने एक बार पूछा था कि मामू, आप इतने रुपए कहाँ से पाते हैं? हँसकर कहने लगे—बेटा, अल्लाह देता है। फिर आप ही बोला—हम लोग चाहें तो एक दिन में लाखों मार लाएँ। हम तो इतना ही लेते हैं, जिसमें अपनी बदनामी न हो और नौकरी न चली जाए। हामिद ने पूछा—यह लोग चोरी करवाते हैं, तो कोई इन्हें पकड़ता नहीं?

मोहसिन उसकी नादानी पर दया दिखाकर बोला—अरे पागल!, इन्हें कौन पकड़ेगा! पकड़ने वाले तो यह लोग ख़ुद हैं; लेकिन अल्लाह, इन्हें सज़ा भी ख़ूब देता है। हराम का माल हराम में जाता है। थोड़े ही दिन हुए, मामू के घर में आग लग गई। सारी लेई-पूँजी जल गई। एक बरतन तक न बचा। कई दिन पेड़ के नीचे सोए, अल्ला क़सम, पेड़ के नीचे! फिर न जाने कहाँ से एक सौ क़र्ज़ लाए तो बरतन-भाँडे आए।

हामिद—एक सौ तो पचास से ज़ियादा होते हैं?

'कहाँ पचास, कहाँ एक सौ। पचास एक थैली-भर होता है। सौ तो दो थैलियों में भी न आए।'

अब बस्ती घनी होने लगी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नज़र आने लगी। एक-से-एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्केताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेख़बर, संतोष ओर धैर्य में मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीज़ें अनोखी थीं। जिस चीज़ की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे से बराबर हार्न की आवाज़ होने पर भी न चेतते। हामिद तो मोटर के नीचे जाते-जाते बचा।

सहसा ईदगाह नज़र आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फ़र्श है, जिस पर जाज़िम बिछा हुआ है। और रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं, पक्के जगत के नीचे तक, जहाँ जाज़िम भी नहीं है। नए आने वाले आकर पीछे की क़तार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वज़ू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुंदर संचालन है, कितनी सुंदर व्यवस्था! लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं, और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ, और यही क्रम चलता रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानों भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।

दो

नमाज़ ख़त्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। मिठाई और खिलौने की दूकान पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला है एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होगें, कभी ज़मीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट, छड़ों में लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद और मोहसिन ओर नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई ज़रा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खीयों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दूकानों की क़तार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं - सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबन और साधु। वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं। अब बोला ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक़ रखे हुए; मालूम होता है, अभी क़वायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वता है उसके मुख पर! काला चोग़ा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी ज़ंजीर, एक हाथ में क़ानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए, ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग घुल जाए, ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के?

मोहसिन कहता है - मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जाएगा साँझ-सबेरे।

महमूद - और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा कोई चोर आएगा, तो फ़ौरन बंदूक़ से फ़ायर कर देगा।

नूरे - और मेरा वकील ख़ूब मुक़दमा लड़ेगा।

सम्मी - और मेरी धोबन रोज़ कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है - ट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ, लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं; लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते हैं, विशेषकर जब अभी नया शौक़ है। हामिद ललचाता रह जाता है।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब–जामुन किसी ने सोहन हलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद उनकी बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता ह - हामिद रेवड़ी ले जा, कितनी ख़ुशबूदार है!

हामिद को संदेह हुआ, ये केवल क्रूर विनोद है, मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और सम्मी ख़ूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन- अच्छा, अबकी ज़रूर देंगे हामिद, अल्लाह क़सम, ले जा।

हामिद - रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?

सम्मी - तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?

महमूद - हमसे गुलाब-जामुन ले जाओ हामिद। मोहसिन बदमाश है।

हामिद - मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन - लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद - हम समझते हैं, इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे ख़र्च हो जाएँगे, तो हमें ललचा-ललचाकर खाएगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दूकानें लोहे की चीज़ों की, कुछ गिलट और कुछ नक़ली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं।

हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख़याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितना प्रसन्न होंगी! फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या फ़ायदा। व्यर्थ में पैसे ख़राब होते हैं। ज़रा देर ही तो ख़ुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आँख उठाकर नहीं देखता। या तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूट बराबर हो जाएँगे। चिमटा कितने काम की चीज़ है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हें में सेंक लो। कोई आग माँगने आए तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फ़ुरसत है कि बाज़ार आएँ और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज़ हाथ जला लेती हैं। हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं।

सबील पर सब-के सब शरबत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं! इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते है, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुंसियाँ निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसे चुराएँगे और मार खाएँगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी ज़बान क्यों ख़राब होगी। अम्माँ चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी - मेरा बच्चा अम्माँ के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ देगा? बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं, और तुरंत सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं हैं। तभी तो मोहसिन और महमूद यूँ मिज़ाज दिखाते हैं। मैं भी इनसे मिज़ाज दिखाऊँगा। खेलें खिलौने और खाएँ मिठाइयाँ। मैं नहीं खेलता खिलौने, किसी का मिज़ाज क्यों सहूँ। मैं ग़रीब सही, किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता। आखिर अब्बाजान कभी न कभी आएँगे। अम्माँ भी आएँगी ही। फिर इन लोगों से पूछूँगा, कितने खिलौने लोगे? एक-एक को टोकरियों खिलौने दूँ और दिखा दूँ कि दोस्तों के साथ इस तरह का सलूक किया जाता है। यह नहीं कि एक पैसे की रेवड़ियाँ लीं, तो चिढ़ा-चिढ़ाकर खाने लगे। सब-के-सब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें! मेरी बला से। उसने दुकानदार से पूछा - यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा - तुम्हारे काम का नहीं है जी!

'बिकाऊ है कि नहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है। और यहाँ क्यों लाद लाए हैं ?

'तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है ?'

'छः पैसे लगेंगे।'

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक–ठीक बताओ'

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा - तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक़ है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। ज़रा सुनें, सबके सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा - यह चिमटा क्यों लाया पगले, इसे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को ज़मीन पर पटककर कहा - ज़रा अपना भिश्ती ज़मीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की। महमूद बोला - तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद - खिलौना क्यों नहीं है? अभी कंधे पर रखा, बंदूक़ हो गई। हाथ में ले लिया, फ़क़ीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए।

तुम्हारे खिलौने कितना ही ज़ोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है चिमटा।

सम्मी ने खँजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला - मेरी खँजरी से बदलोगे? दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा - मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। ज़रा-सा पानी लग जाए तो ख़त्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफ़ान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। फिर मेले से दूर निकल आए हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज़ हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। बाप से ज़िद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। मोहसिन, मह्मूद, सम्मी और नूरे एक तरफ़ हैं, हामिद अकेला दूसरी तरफ़। शास्त्रार्थ हो रहा है। सम्मी तो विधर्मी हो गया। दूसरे पक्ष से जा मिला; लेकिन मोहसिन, महमूद और नूरे भी हामिद से एक - एक, दो-दो साल

बड़े होने पर भी हामिद के आघातों से आतंकित हो उठे हैं। उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक़्त अपने को फ़ौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक़ छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चोग़े में मुँह छिपाकर ज़मीन पर लेट जाएँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रूस्तम–ए–हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाकर कहा - अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता।

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा - भिश्ती को एक डाँट बताएगा तो दौड़ा हुआ पानी लाकर उसके द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया; पर महमूद ने कुमुक पहुँचाई - अगर बच्चा पकड़ जाएँ तो अदालत में बँधे-बँधे फिरेंगे। तब तो वकील साहब के पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा - हमें पकड़ने कौन आएगा?

नूरे ने अकड़कर कहा - यह सिपाही बंदूक़वाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा - यह बेचारे हम बहादुर रूस्तम - ए - हिंद को पकड़ेंगे! अच्छा लाओ, अभी ज़रा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे!

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई - तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज़ आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा; लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया - आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती लेडियों की तरह घर में घुस जाएँगे। आग में कूदना वह काम है, जो यह रूस्तम-ए-हिंद ही कर सकता है।

महमूद ने एक ज़ोर लगाया - वकील साहब कुरसी-मेज़ पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरची-ख़ाने में ज़मीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया। कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने। चिमटा बावरची-ख़ाने में पड़ा रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा, तो उसने धाँधली शुरू की - मेरा चिमटा बावरची-ख़ाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेंगे, तो जाकर उन्हें ज़मीन पर पटक देगा और उनका क़ानून उनके पेट में डाल देगा।

बात कुछ बनी नहीं। ख़ासी गाल-गलौज थी; लेकिन क़ानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए मानो कोई धेलचा

कनकौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। क़ानून मुँह से बाहर निकलने वाली चीज़ है। उसको पेट के अंदर डाल दिया जाना बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रूस्तम-ए-हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

विजेता को हारने वालों से जो सत्कार मिलना स्वाभविक है, वह हामिद को भी मिला। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे ख़र्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट-फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसों!

संधि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा—ज़रा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों को मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया; और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने ख़ूबसूरत खिलौने हैं!

हामिद ने हारने वालों के आँसू पोंछे—मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था, सच! यह चिमटा भला, इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा; मालूम होता है, अब बोले, अब बोले।

लेकिन मोहसिन की पार्टी को इस दिलासे से संतोष नहीं होता। चिमटे का सिक्का ख़ूब बैठ गया है। चिपका हुआ टिकट अब पानी से नहीं छूट रहा है।

मोहसिन—लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा?

महमूद—दुआ को लिए फिरते हो। उल्टे मार न पड़े। अम्माँ ज़रूर कहेंगी कि मेले में यही मिट्टी के खिलौने मिले?

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौनों को देखकर किसी की माँ इतनी ख़ुश न होंगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। तीन पैसों ही में तो उसे सब कुछ करना था ओर उन पैसों के इस उपयोग पर पछतावे की बिल्कुल ज़रूरत न थी। फिर अब तो चिमटा रूस्तम-ए-हिंद है और सभी खिलौनों का बादशाह!

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

तीन

ग्यारह बजे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन ने

दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे ख़ुशी के जा उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे। इस पर भाई-बहन में मार-पीट हुई। दानों ख़ूब रोए। उनकी अम्माँ यह शोर सुनकर बिगड़ी और दोनों को ऊपर से दो-दो चाँटे और लगाए।

मियाँ नूरे के वकील का अंत उनके प्रतिष्ठानुकूल इससे ज़ियादा गौरवमय हुआ। वकील ज़मीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में खूँटियाँ गाड़ी गई। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर काग़ज़ का क़ालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया।

अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो! क़ानून की गर्मी दिमाग़ पर चढ़ जाएगी कि नहीं। बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगे। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े ज़ोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूर पर डाल दी गई।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया; लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं, जो अपने पैरों चलें। वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाए गए; जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरफ़ से 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात तो अँधेरी ही होनी चाहिए; महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बंदूक़ लिए ज़मीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डाक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिला गया है जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फ़ानन जोड़ सकता है। केवल गूलर का दूध चाहिए। गूलर का दूध आता है। टाँग जोड़ दी जाती है, लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे देती है। शल्य-क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम-से-कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है। एक टाँग से तो न चल सकता था, न बैठ सकता था। अब वह सिपाही सन्यासी हो गया है। अपनी जगह पर बैठा-बैठा पहरा देता है। कभी-कभी देवता भी बन जाता है। उसके सिर का झालरदार साफ़ा खुरच दिया गया है। अब उसका जितना रूपांतर चाहो, कर सकते हो। कभी-कभी तो उससे बाट का काम भी लिया जाता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

'यह चिमटा कहाँ था?'

'मैंने मोल लिया है।'

'कै पैसे में?'

'तीन पैसे दिए।'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दुपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा ! सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?

हामिद ने अपराधी भाव से कहा—तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं; इसलिए मैंने इसे लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, ख़ूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? इतना ज़ब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया।

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

ईदगाह(संक्षिप्त परिचय)

▶ चार साल के हामिद इस कथा का केन्द्र है

'ईदगाह' प्रेमचंद की ऐसी कहानी है जिसमें कथाकार ने एक बालक की विशेष सूझ-बूझ को मनोवैज्ञानिक भूमिका पर चित्रित किया है। प्रेमचंद के संपूर्ण कथा-साहित्य में बाल- कथापात्र शायद एक ही है और वह प्रस्तुत कहानी का हामिद है। हामिद इस कथा का केन्द्र है। चार साल के उस बालक की मानसिक स्थिति से वह पूर्ण रूप से अवगत है। छोटी सी उम्र में ही उसे गरीबी, भूख जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। अपनी पारिवारिक स्थिति वह जानता है। बूढ़ी दादी की विवशता से भी वह परिचित है। इसलिए अपनी बाल-सुलभ बहुत सी जिज्ञासाओं पर वह अंकुश लगाता है। बड़े बूढ़े भी जिन बातों को समझ नहीं पाते उनको वह बच्चा खूब समझ लेता है और अपने व्यवहार को भी अपने अनुभवों के अनुकूल कर लेता है।

हामिद गरीब परिवार का लड़का था। उसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया था और माँ भी असमय में ही स्वर्ग सिधार हो गयी थी। हामिद को यह विश्वास कराया गया था कि उसका अब्बाजान रुपये कमाने गया है, माँ भी अल्लाह के घर से उसकेलिए अच्छी चीजें लाने गयी है। ऐसी आशाओं से हामिद प्रसन्न है, लेकिन अभागिन दादी अमीना अपने दौर्भाग्य पर रो रही है। वह दुःखी थी कि ईद के दिन दूसरे बच्चों के

साथ हामिद कैसे जाएगा? दादी के पास पाँच पैसे थे और हामिद की जेब में तीन पैसे। ईद तो खुशी का दिन है और सभी बच्चे मिठाइयों, खिलौने आदि लेंगे। लेकिन हामिद क्या करेगा? ऐसे विचारों से दादी परेशान है। दादी उसे समझाती है कि मिठाई खाने से तबीयत खराब हो जायेगी और खिलौने तो मिट्टी के हैं तो वे टूट जाएँगे। बालक के मन में दादी की बात लग गयी थी। जब उसके दोस्त महमूद मोहसिन आदि ने कई प्रकार के खिलौने खरीदे तो हामिद का मन मचलता रह गया। मिठाइयों का मोह को भी उसने अपने दिल में दबाकर रख दिया। खिलौने और मिठाई की इच्छा को दबाये रखकर अन्य बच्चों से अलग स्वभाव का परिचय हामिद देता है। दादी की आँसू और वात्सल्य ने बालक की चेतना को प्रौढ़ बना दिया था। ऐसा नहीं है कि बाल सुलभ जिज्ञासा उसमें नहीं है। बालक के मन की इस खासियत का विश्लेषण प्रेमचंद स्वाभाविक रूप से करते हैं। हामिद के असाधारण आत्मविश्वास ने उसकी जिज्ञासा पर विजय पा ली।

▶ हामिद में अन्य बच्चों से अलग स्वभाव का परिचय

रसोई में दादी की सहायता के लिए वह एक चिमटा खरीदता है। हामिद के मन में घर की गरीबी तथा खिलौने और मिठाई खरीदने की इच्छा, अर्थात गरीबी और बच्चे की सहजात वासना, दोनों का संघर्ष दिखाकर प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज की असंतुलित आर्थिक व्यवस्था की ओर भी इशारा किया है। दादी अमीना और हामिद उसी समाज के सदस्य हैं जिस में अपने को श्रेष्ठ माननेवाले उच्च वर्ग के ज़मीन्दार, पूँजीपति आदि अपनी अमीरी में मस्त रहते हैं। तत्कालीन आर्थिक विषमता का ही यह परिणाम है कि हामिद जैसे बच्चों को भी अपनी आशाओं को अपने भीतर गाड़ देना पडता है। इसी सामाजिक व्यवस्था ने हामिद को खिलौने और मिठाई के बदले चिमटा लेने को मजबूर किया है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि जहाँ एक ओर प्रेमचंद ने कठोर सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया है, वहाँ दूसरी ओर बाल-मन की विचित्रताओं का सहज विश्लेषण भी किया है।

▶ मेले से मिठाई के बदले दादी की सहायता के लिए चिमटा खरीदना

'ईदगाह' के द्वारा युग-जीवन की विसंगतियों पर लेखक ने प्रकाश डाला है। परिवेश से प्राप्त कठोर और दारुण अनुभव यथार्थ को आत्मसात करके लेखक ने उन्हीं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। प्रेमचंद की विकासकालीन कहानियों में 'ईदगाह' का स्थान अप्रतिम है।

▶ बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण

2.2.2 पूस की रात

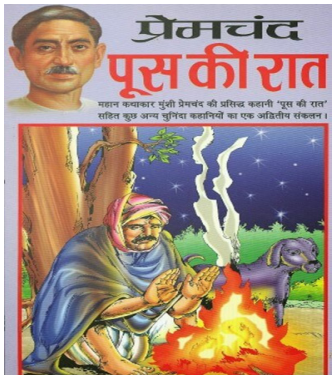

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा, 'सहना आया है, लाओ, जो रुपए रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।'

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली, 'तीन ही तो रुपए हैं, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे, अभी नहीं।'

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कम्बल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं जा सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा. बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी. यह सोचता हुआ वह अपना भारी- भरकम डील लिए हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और ख़ुशामद करके बोला, 'ला दे दे, गला तो छूटे. कम्बल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।'

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आंखें तरेरती हुई बोली, 'कर चुके दूसरा उपाय! ज़रा सुनूं तो कौन-सा उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती. मैं कहती हूं, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई. बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपए न दूँगी, न दूँगी।'

हल्कू उदास होकर बोला, 'तो क्या गाली खाऊँ?'

मुन्नी ने तड़पकर कहा, 'गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?'

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौहें ढीली पड़ गईं हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भांति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपए निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए। फिर बोली, 'तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी तो खाने को मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।'

हल्कू ने रुपए लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो. उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-कपटकर तीन रुपए कम्बल के लिए जमा किए थे. वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अंधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे. हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा कांप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट मे मुंह डाले सर्दी से कूं-कूं कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी। हल्कू ने घुटनियों कों गरदन में चिपकाते हुए कहा, 'क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे? अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ? जानते थे, मै यहाँ हलुवा-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को। जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूं-कूं को दीर्घ बनाता हुआ एक

बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान-बुध्दि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूं-कूं से नींद नहीं आ रही है। हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा, 'कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह रांड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है। उठूं, फिर एक चिलम भरूं। किसी तरह रात तो कट ! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक-एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गरमी से घबड़ाकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ- कम्बल। मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाय। तकदीर की खूबी! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!' हल्कू उठा, गड्ढे में से ज़रा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा। हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, 'पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, जरा मन बदल जाता है।' जबरा ने उसके मुंह की ओर प्रेम से छलकती हुई आंखों से देखा। हल्कू, 'आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा. उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।' जबरा ने अपने पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुंह के पास अपना मुंह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म सांस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस करवट लेट ता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भांति उसकी छाती को दबाए हुए था। जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसक सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया. कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद मे चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद यह समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहूँचा दिया. नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उनका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था। सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई. इस विशेष आत्मीयता ने उसमे एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोकों को तुच्छ समझती थी. वह झपट कर उठा और छपरी से बाहर आकर भूंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूंकता रहा. एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भांति ही उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया. हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाक़ी है! सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएँगे तब कहीं सबेरा होगा।

अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग़ था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग़ में पत्तियों को ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, 'चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर ख़ूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देख तो समझे कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।'

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ़ चला। जबरा ने उसे आते देखा तो पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा, 'अब तो नहीं रहा जाता जबरू. चलो बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें. टांठे हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएंगें. अभी तो बहुत रात है।'

जबरा ने कूं-कूं करके सहमति प्रकट की और आगे-आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में ख़ूब अंधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदे टप-टप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेहंदी के फूलों की ख़ुशबू लिए हुए आया।

हल्कू ने कहा, 'कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी तो सुगंध आ रही है?'

जबरा को कहीं ज़मीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिंचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग ज़मीन पर रख दी और पत्तियां बटोरने लगा। ज़रा देर में पत्तियों का ढेर लग गया. हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पांव गले जाते थ। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था. इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों अंधकार के उस अनंत सागर मे यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उताकर बगल में दबा ली, दोनों पांव फैला दिए, मानो ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आए सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा, 'क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है?'

जब्बर ने कूं-कूं करके मानो कहा अब क्या ठंड लगती ही रहेगी?

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जब्बर ने पूंछ हिलाई।

'अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें. देखें, कौन निकल जाता है. अगर जल गए बच्चा, तो मैं दवा न करूंगा।'

जब्बर ने उस अग्निराशि की ओर कातर नेत्रों से देखा!

मुन्नी से कल न कह देना, नहीं तो लड़ाई करेगी।

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ़ निकल गया. पैरों में ज़रा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी. जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा, 'चलो-चलो इसकी सही नहीं! ऊपर से कूदकर आओ।' वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

पत्तियाँ जल चुकी थीं. बगीचे में फिर अंधेरा छा गया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाक़ी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर ज़रा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आंखें बंद कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा जोर से भूंककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुंड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाज़ें साफ़ कान में आ रही थीं। फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज़ चर-चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा, 'नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता. नोच ही डाल। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!'

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई, 'जबरा, जबरा।'

जबरा भूंकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना ज़हर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ था। इस जाड़े-पाले में

खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई, 'लिहो-लिहो! लिहो!'

जबरा फिर भूंक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन क़दम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभने वाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़ डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भांति उसे चारों तरफ़ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म ज़मीन पर वह चादर ओढ़ कर सो गया।

सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ़ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी, 'क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।'

हल्कू ने उठकर कहा, 'क्या तू खेत से होकर आ रही है?'

मुन्नी बोली, 'हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मड़ैया डालने से क्या हुआ?'

हल्कू ने बहाना किया, 'मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है. पेट में ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ!'

दोनों फिर खेत के डांड़ पर आए. देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मड़ैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हों।

दोनों खेत की दशा देख रहे थें। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी, पर हल्कू प्रसन्न था। मुन्नी ने चिंतित होकर कहा, 'अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।'

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा, 'रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।'

'पूस की रात' (संक्षिप्त परिचय)

प्रेमचंदजी की मशहूर कहानियों में एक है 'पूस की रात'। परिस्थिति से जूझनेवाले किसान के संघर्ष का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण प्रस्तुत कहानी में देखा जा सकता है।

हल्कू एक गरीब किसान है। मुन्नी उसकी पत्नी है। हल्कू रात में खेत का पहरा देने

का काम करता है। पूस के महीने में सर्दी कठोर होती थी। सर्दी से बचने के लिए हल्कू एक कम्बल खरीदना चाहता है। उसके लिए मुन्नी ने एक-एक रुपया इकट्ठा करके तीन रुपये जमाकर लिए। लेकिन उस रुपये से सहना का कर्ज चुकाना पड़ा।

पूस की रात में हल्कू खेत का पहरा दे रहा है। कठोर सर्दी में वह ठिठुरने लगा। उसके साथ उसका प्यारा कुत्ता जबरा भी है। सर्दी से दोनों को नींद नहीं आती। सर्दी को मिटाने के लिए वह बार-बार चिलम पीता रहता है। सूखे पत्ते जलाकर शरीर को गरम किया और वहीं पडकर सो गया। खेत में नीलगाय घुस आयीं और सर्वनाश करने लगीं। कुत्ता भौंक रहा था। फिर भी हल्कू नहीं उठा। सवेरे मुन्नी ने आकर उसे जगाया और कहा कि सारा खेत चर लिया गया है। लेकिन हल्कु को यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि उसे अब रात की ठंड में खेत पर पहरा नहीं देना पड़ेगा।

आर्थिक विपन्नता के कारण किसान वर्ग ऋणग्रस्त होते हैं। उसके अलावा ज़मींदारों के अत्याचार का शिकार भी बनना पड़ता है। किसान की अकर्मण्यता का चित्रण यहाँ मिलता है। ऋणग्रस्त भारतीय किसानों का प्रतिनिधि है हल्कू। प्रेमचंद के यथार्थवादी संदर्भ बोध का चित्रण 'पूस की रात' में है।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

"आकाश में उड़ने वाले पंछी को भी अपना घर याद आता है"।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद की सादगी को आलोचक समझ लेते है किन्तु कला का रहस्य मनुष्य के चरित्र की किसी गहरी सच्चाई को उद्घाटित कर देना है। प्रेमचंद के यहाँ यह सच्चाई असल में अच्छाई की खोज है क्योंकि वे विषमताओं से भरे समाज में मनुष्य के निजी दुर्गुणों को उसकी अपनी नहीं अपितु व्यवस्था की देन समझते हैं और मनुष्य में सद्गुणों की प्रतिष्ठा करना साहित्यकार का परम लक्ष्य समझते हैं।'ईदगाह' और 'पूस की रात' में निर्धनता और आर्थिक अभावग्रस्त परिवार का चित्रण है। दादी अमीना और पोते हामिद फिर हल्कू और मुन्नी पति -पत्नी के रूप में प्रेमचंद अविस्मरणीय प्रतिनिधि चरित्रों का निर्माण करते हैं जिन्हें कभी भी भूला नहीं जा सकता। यहाँ प्रेमचंद की कहानी कला में अन्तर्निहित गहरे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का पता चलता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'पूस की रात' कहानी का सारांश लिखिए।
2. 'पूस की रात' कहानी में चित्रित मनोविज्ञान पर चर्चा कीजिये।

3. 'ईदगाह' कहानी का सारांश लिखिए।

4. 'ईदगाह' कहानी में चित्रित बाल मनोविज्ञान पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मजदूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत राय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रॉमविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

सद्गति, बूढ़ी काकी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'सद्गति' कहानी समझता है
- ऊँच -नीच का भेद-भाव जानता है
- दुखी चमार के द्वारा चमार जाति का यथार्थ जीवन समझता है
- 'बूढ़ी काकी' कहानी से परिचित होता है
- वृद्धजनों को आदर देने की आवश्यकता समझता है

Background / पृष्ठभूमि

मुंशी प्रेमचंद की पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' (सन् 1907) और अंतिम कहानी कफन सन् 1936 ई. में प्रकाशित हुई। अतः इस काल को प्रेमचंद युग कहना समीचीन प्रतीत होता है। पूस की रात, सवा सेर गेहूं, ठाकुर का कुआं, बूढी काकी, माता का हृदय, हार की जीत, आत्माराम, ईदगाह, नशा, सद्गति, आदि कहानियों के रचनाकार प्रेमचंद कहानी लेखन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ शिल्पी बनकर उभरे हैं। उनकी 'सदगति' कहानी में व्याप्त जातिवादी परंपरा का प्रबल प्रतिकार करते हुए कर्तव्यबोध की प्रेरणा देती है। यह कहानी छुआछूत की सड़ी-गली रूढ़ि पर प्रहार करते हुए मानवता के शत्रुओं को आत्मावलोकन करने को विवश करती है।

मानवीय करुणा की भावना से ओतप्रोत 'बूढ़ी काकी' कहानी के ज़रिए प्रेमचंद चाहते थे कि समाज में बुज़ुर्गों के प्रति होने वाली उपेक्षा पर ध्यान दिया जाए। कहानी में एक वृद्ध महिला तिरस्कार और अपमान का जीवन जीती है। अपने जीवन में मनुष्य की तरह-तरह की कामनाएं होती हैं। बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था तथा प्रौढ़ावस्था तक मनुष्य को जल्द-से-जल्द कामनाओं की पूर्ति की उतनी चिंता नहीं होती, जितनी वृद्धावस्था में। क्योंकि वृद्धावस्था में मनुष्य के जीवन के गिने-चुने वर्ष ही बचे रहते हैं।वृद्धजनों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार अनुचित है, बुज़ुर्गों का आदर देना चाहिए।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अंधविश्वास, परंपरागत रिवाज़, अंग शिथिल, आग की चिनगारी, बुजुर्गों के प्रति तिरस्कार, भोजन लालसा, मेहमानों का भोजन

Discussion / चर्चा

2.3.1 सद्गति

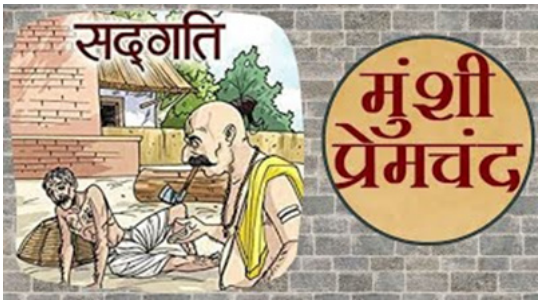

दुखी चमार द्वार पर झाड़ू लगा रहा था और उसकी पत्नी झुरिया, घर को गोबर से लीप रही थी। दोनों अपने-अपने काम से फ़ुर्सत पा चुकेथे, तो चमारिन ने कहा, 'तो जाके पंडित बाबा से कह आओ न। ऐसा न हो कहीं चले जाएँ।'

'दुखी –'हाँ जाता हूँ, लेकिन यह तो सोच, बैठेंगे किस चीज़ पर?

झुरिया –'कहीं से खटिया न मिल जाएगी? ठकुराने से माँग लाना।'

दुखी –'तू तो कभी-कभी ऐसी बात कह देती है कि देह जल जाती है। ठकुरानेवाले मुझे खटिया देंगे! आग तक तो घर से निकलती नहीं, खटिया देंगे! कैथाने में जाकर एक लोटा पानी माँगूँ तो न मिले। भला खटिया कौन देगा! हमारे उपले, सेंठे, भूसा, लकड़ी थोड़े ही हैं कि जो चाहे उठा ले जाएँ। ले अपनी खटोली धोकर रख दे। गरमी के तो दिन हैं। उनके आते-आते सूख जाएगी।'

झुरिया–'वह हमारी खटोली पर बैठेंगे नहीं। देखते नहीं कितने नेम-धरम से रहते हैं।'

दुखी ने ज़रा चिंतित होकर कहा, 'हाँ, यह बात तो है। महुए के पत्ते तोड़कर एक पत्तल बना लूँ तो ठीक हो जाए। पत्तल में बड़े-बड़े आदमी खाते हैं। वह पवित्तर है। ला तो डंडा, पत्ते तोड़ लूँ।'

झुरिया –'पत्तल मैं बना लूँगी, तुम जाओ। लेकिन हाँ, उन्हें सीधा भी तो देना होगा। अपनी थाली में रख दूँ?'

दुखी–'कहीं ऐसा गज़ब न करना, नहीं तो सीधा भी जाए और थाली भी फूटे! बाबा थाली उठाकर पटक देंगे। उनको बड़ी जल्दी विरोध चढ़ आता है। किरोध में पंडिताइन तक को छोड़ते नहीं, लड़के को ऐसा पीटा कि आज तक टूटा हाथ लिए फिरता है। पत्तल में सीधा भी देना, हाँ। मुदा तू छूना मत।'

झूरी –'गोंड़ की लड़की को लेकर साह की दूकान से सब चीज़ें ले आना। सीधा भरपूर हो। सेर भर आटा, आधा सेर चावल, पाव भर दाल, आधा पाव घी, नोन, हल्दी और पत्तल में एक किनारे चार आने पैसे रख देना। गोंड़ की लड़की न मिले तो भुर्जिन के हाथ-पैर जोड़कर ले जाना। तू कुछ मत छूना, नहीं गज़ब हो जाएगा।'

SGOU

इन बातों की ताकीद करके दुखी ने लकड़ी उठाई और घास का एक बड़ा-सा गट्ठा लेकर पंडितजी से अर्ज करने चला। ख़ाली हाथ बाबाजी की सेवा में कैसे जाता। नज़राने के लिए उसके पास घास के सिवाय और क्या था। उसे ख़ाली देखकर तो बाबा दूर ही से दुत्कारते। पं. घासीराम ईश्वर के परम भक्त थे। नींद खुलते ही ईशोपासन में लग जाते। मुँह-हाथ धोते आठ बजते, तब असली पूजा शुरू होती, जिसका पहला भाग भंग की तैयारी थी। उसके बाद आधा घंटे तक चंदन रगड़ते, फिर आईने के सामने एक तिनके से माथे पर तिलक लगाते। चंदन की दो रेखाओं के बीच में लाल रोरी की बिंदी होती थी। फिर छाती पर, बाहों पर चंदन की गोल-गोल मुद्रिकाएँ बनाते। फिर ठाकुरजी की मूर्ति निकालकर उसे नहलाते, चंदन लगाते, फूल चढ़ाते, आरती करते, घंटी बजाते। दस बजते-बजते वह पूजन से उठते और भंग छानकर बाहर आते। तब तक दो-चार जजमान द्वार पर आ जाते! ईशोपासन का तत्काल फल मिल जाता। वही उनकी खेती थी। आज वह पूजन-गृह से निकले, तो देखा दुखी चमार घास का एक गट्ठा लिए बैठा है। दुखी उन्हें देखते ही उठ खड़ा हुआ और उन्हें साष्टांग दंडवत् करके हाथ बाँधकर खड़ा हो गया। यह तेजस्वी मूर्ति देखकर उसका हृदय श्रृद्धा से परिपूर्ण हो गया! कितनी दिव्य मूर्ति थी। छोटा-सा गोल-मटोल आदमी, चिकना सिर, फूले गाल, ब्रह्मतेज से प्रदीप्त आँखें। रोरी और चंदन देवताओं की प्रतिभा प्रदान कर रही थी। दुखी को देखकर श्रीमुख से बोले–'आज कैसे चला रे दुखिया?'

दुखी ने सिर झुकाकर कहा, 'बिटिया की सगाई कर रहा हूँ महाराज। कुछ साइत-सगुन विचारना है। कब मर्ज़ी होगी?'

घासी–'आज मुझे छुट्टी नहीं। हाँ साँझ तक आ जाऊँगा।'

दुखी–'नहीं महराज, जल्दी मर्ज़ी हो जा,। सब सामान ठीक कर आया हूँ। यह घास कहाँ रख दूँ?

घासी–'इस गाय के सामने डाल दे और ज़रा झाड़ू लेकर द्वार तो साफ़ कर दे। यह बैठक भी कई दिन से लीपी नहीं गई। उसे भी गोबर से लीप दे। तब तक मैं भोजन कर लूँ। फिर ज़रा आराम करके चलूँगा। हाँ, यह लकड़ी भी चीर देना। खलिहान में चार खाँची भूसा पड़ा है। उसे भी उठा लाना और भुसौली में रख देना।'

दुखी फ़ौरन हुक्म की तामील करने लगा। द्वार पर झाड़ू लगाई, बैठक को गोबर से लीपा। तब बारह बज गए। पंडितजी भोजन करने चले गए। दुखी ने सुबह से कुछ नहीं खाया था। उसे भी ज़ोर की भूख लगी; पर वहाँ खाने को क्या धारा था। घर यहाँ से मील भर था। वहाँ खाने चला जाए, तो पंडितजी बिगड़ जाएँ। बेचारे ने भूख दबाई और लकड़ी फाड़ने लगा। लकड़ी की मोटी-सी गाँठ थी; जिस पर पहले कितने ही भक्तों ने अपना ज़ोर आज़मा लिया था। वह उसी दम-खम के साथ लोहे से लोहा लेने के लिए तैयार थी। दुखी घास छीलकर बाज़ार ले जाता था। लकड़ी चीरने का उसे अभ्यास

न था। घास उसके खुरपे के सामने सिर झुका देती थी। यहाँ कस-कसकर कुल्हाड़ी का भरपूर हाथ लगाता; पर उस गाँठ पर निशान तक न पड़ता था। कुल्हाड़ी उचट जाती। पसीने में तर था, हाँफता था, थककर बैठ जाता था, फिर उठता था। हाथ उठाए न उठते थे, पाँव काँप रहे थे, कमर न सीधी होती थी, आँखों तले अँधेरा हो रहा था, सिर में चक्कर आ रहे थे, तितलियाँ उड़ रही थीं, फिर भी अपना काम किए जाता था। अगर एक चिलम तंबाकू पीने को मिल जाती, तो शायद कुछ ताक़त आती।

उसने सोचा, यहाँ चिलम और तंबाकू कहाँ मिलेगी। ब्राह्मणों का पूरा है। ब्राह्मण लोग हम नीच जातों की तरह तंबाकू थोड़े ही पीते हैं। सहसा उसे याद आया कि गाँव में एक गोंड़ भी रहता है। उसके यहाँ ज़रूर चिलम-तमाखू होगी। तुरंत उसके घर दौड़ा। ख़ैर मेहनत सुफल हुई। उसने तमाखू भी दी और चिलम भी दी; पर आग वहाँ न थी। दुखी ने कहा, आग की चिंता न करो भाई। मैं जाता हूँ, पंडितजी के घर से आग माँग लूँगा। वहाँ तो अभी रसोई बन रही थी। यह कहता हुआ वह दोनों चीज़ें लेकर चला आया और पंडितजी के घर में बरौठे के द्वार पर खड़ा होकर बोला, 'मालिक, रचिके आग मिल जाए, तो चिलम पी लें।'

पंडितजी भोजन कर रहे थे। पंडिताइन ने पूछा, 'यह कौन आदमी आग माँग रहा है?'

पंडित–'अरे वही ससुरा दुखिया चमार है। कहा, है थोड़ी-सी लकड़ी चीर दे। आग तो है, दे दो।'

पंडिताइन ने भँवें चढ़ाकर कहा, 'तुम्हें तो जैसे पोथी-पत्रो के फेर में धरम-करम किसी बात की सुधि ही नहीं रही। चमार हो, धोबी हो, पासी हो, मुँह उठाए घर में चला आए। हिंदू का घर न हुआ, कोई सराय हुई। कह दो दाढ़ीजार से चला जाए, नहीं तो इस लुआठे से मुँह झुलस दूँगी। आग माँगने चले हैं।'

पंडितजी ने उन्हें समझाकर कहा, 'भीतर आ गया, तो क्या हुआ। तुम्हारी कोई चीज़ तो नहीं छुई। धरती पवित्र है। ज़रा-सी आग दे क्यों नहीं देती, काम तो हमारा ही कर रहा है। कोई लोनिया यही लकड़ी फाड़ता, तो कम-से-कम चार आने लेता।'

पंडिताइन ने गरजकर कहा, 'वह घर में आया क्यों!'

पंडित ने हारकर कहा, 'ससुरे का अभाग था और क्या!'

पंडिताइन—'अच्छा, इस बखत तो आग दिए देती हूँ, लेकिन फिर जो इस तरह घर में आएगा, तो उसका मुँह ही जला दूँगी।'

दुखी के कानों में इन बातों की भनक पड़ रही थी। पछता रहा था, नाहक आया। सच तो कहती हैं। पंडित के घर में चमार कैसे चला आए। बड़े पवित्तर होते हैं यह लोग, तभी तो संसार पूजता है, तभी तो इतना मान है। भर-चमार थोड़े ही हैं। इसी गाँव में बूढ़ा हो गया; मगर मुझे इतनी अक़ल भी न आई। इसलिए जब पंडिताइन आग लेकर

निकलीं, तो वह मानो स्वर्ग का वरदान पा गया। दोनों हाथ जोड़कर ज़मीन पर माथा टेकता हुआ बोला, 'पड़ाइन माता, मुझसे बड़ी भूल हुई कि घर में चला आया। चमार की अक़्ल ही तो तो ठहरी। इतने मूरख न होते, तो लात क्यों खाते।'

पंडिताइन चिमटे से पकड़कर आग लाई थीं। पाँच हाथ की दूरी से घूँघट की आड़ से दुखी की तरफ़ आग फेंकी। आग की बड़ी-सी चिनगारी दुखी के सिर पर पड़ गई। जल्दी से पीछे हटकर सिर के झोटे देने लगा। उसने मन में कहा, यह एक पवित्तर ब्राह्मण के घर को अपवित्तर करने का फल है। भगवान ने कितनी जल्दी फल दे दिया। इसी से तो संसार पंडितों से डरता है। और सबके रुपए मारे जाते हैं ब्राह्मण के रुपए भला कोई मार तो ले! घर भर का सत्यानाश हो जाए, पाँव गल-गलकर गिरने लगे। बाहर आकर उसने चिलम पी और फिर कुल्हाड़ी लेकर जुट गया। खट-खट की आवाज़ें आने लगीं। उस पर आग पड़ गई, तो पंडिताइन को उस पर कुछ दया आ गई। पंडितजी भोजन करके उठे, तो बोलीं–'इस चमरवा को भी कुछ खाने को दे दो, बेचारा कब से काम कर रहा है। भूखा होगा।'

पंडितजी ने इस प्रस्ताव को व्यावहारिक क्षेत्र से दूर समझकर पूछा, 'रोटियाँ हैं?'

पंडिताइन–'दो-चार बच जाएँगी।'

पंडित–'दो-चार रोटियों में क्या होगा? चमार है, कम से कम सेर भर चढ़ा जाएगा।'

पंडिताइन कानों पर हाथ रखकर बोलीं, 'अरे बाप रे! सेर भर! तो फिर रहने दो।'

पंडितजी ने अब शेर बनकर कहा, 'कुछ भूसी-चोकर हो तो आटे में मिलाकर दो ठोलिट्टा ठोंक दो। साले का पेट भर जाएगा। पतली रोटियों से इन नीचों का पेट नहीं भरता। इन्हें तो जुआर का लिट्टा चाहिए।'

पंडिताइन ने कहा, 'अब जाने भी दो, धूप में कौन मरे।'

दुखी ने चिलम पीकर फिर कुल्हाड़ी सँभाली। दम लेने से ज़रा हाथों में ताक़त आ गई थी। कोई आधा घंटे तक फिर कुल्हाड़ी चलाता रहा। फिर बेदम होकर वहीं सिर पकड़ के बैठ गया। इतने में वही गोंड़ आ गया। बोला, 'क्यों जान देते हो बूढ़े दादा, तुम्हारे फाड़े यह गाँठ न फटेगी। नाहक हलाकान होते हो' दुखी ने माथे का पसीना पोंछकर कहा, 'अभी गाड़ी भर भूसा ढोना है भाई!'

गोंड़ - 'कुछ खाने को मिला कि काम ही कराना जानते हैं। जाके माँगते क्यों नहीं?'

दुखी - 'कैसी बात करते हो चिखुरी, बाह्मन की रोटी हमको पचेगी!'

गोंड़ -'पचने को पच जाएगी, पहले मिले तो। मूँछों पर ताव देकर भोजन किया और आराम से सोए, तुम्हें लकड़ी फाड़ने का हुक्म लगा दिया। ज़मींदार भी कुछ खाने को देता है। हाकिम भी बेगार लेता है, तो थोड़ी बहुत मजूरी देता है। यह उनसे भी बढ़

गए, उस पर धर्मात्मा बनते हैं।'

दुखी–'धीरे-धीरे बोलो भाई, कहीं सुन लें तो आफ़त आ जाए।'

यह कहकर दुखी फिर सँभल पड़ा और कुल्हाड़ी की चोट मारने लगा। चिखुरी को उस पर दया आई। आकर कुल्हाड़ी उसके हाथ से छीन ली और कोई आधा घंटे ख़ूब कस-कसकर कुल्हाड़ी चलाई; पर गाँठ में एक दरार भी न पड़ी। तब उसने कुल्हाड़ी फेंक दी और यह कहकर चला गया तुम्हारे फाड़े यह न फटेगी, जान भले निकल जाए।'

दुखी सोचने लगा, बाबा ने यह गाँठ कहाँ रख छोड़ी थी कि फाड़े नहीं फटती। कहीं दरार तक तो नहीं पड़ती। मैं कब तक इसे चीरता रहूँगा। अभी घर पर सौ काम पड़े हैं। कार-परोजन का घर है, एक-न-एक चीज़ घटी ही रहती है; पर इन्हें इसकी क्या चिंता। चलूँ जब तक भूसा ही उठा लाऊँ। कह दूँगा, बाबा, आज तो लकड़ी नहीं फटी, कल आकर फाड़ दूँगा। उसने झौवा उठाया और भूसा ढोने लगा। खलिहान यहाँ से दो फरलांग से कम न था। अगर झौवा ख़ूब भर-भर कर लाता तो काम जल्द ख़त्म हो जाता; फिर झौवे को उठाता कौन। अकेले भरा हुआ झौवा उससे न उठ सकता था। इसलिए थोड़ा-थोड़ा लाता था। चार बजे कहीं भूसा ख़त्म हुआ। पंडितजी की नींद भी खुली। मुँह-हाथ धोया, पान खाया और बाहर निकले। देखा, तो दुखी झौवा सिर पर रखे सो रहा है। ज़ोर से बोले –'अरे, दुखिया तू सो रहा है? लकड़ी तो अभी ज्यों की त्यों पड़ी हुई है। इतनी देर तू करता क्या रहा? मुट्ठी भर भूसा ढोने में संझा कर दी! उस पर सो रहा है। उठा ले कुल्हाड़ी और लकड़ी फाड़ डाल। तुझसे ज़रा-सी लकड़ी नहीं फटती। फिर साइत भी वैसी ही निकलेगी, मुझे दोष मत देना! इसी से कहा, है कि नीच के घर में खाने को हुआ और उसकी आँख बदली।'

दुखी ने फिर कुल्हाड़ी उठाई। जो बातें पहले से सोच रखी थीं, वह सब भूल गईं। पेट पीठ में धँसा जाता था, आज सबेरे जलपान तक न किया था। अवकाश ही न मिला। उठना ही पहाड़ मालूम होता था। जी डूबा जाता था, पर दिल को समझाकर उठा। पंडित हैं, कहीं साइत ठीक न विचारें, तो फिर सत्यानाश ही हो जाए। जभी तो संसार में इतना मान है। साइत ही का तो सब खेल है। जिसे चाहे बिगाड़ दें। पंडितजी गाँठ के पास आकर खड़े हो गए और बढ़ावा देने लगे हाँ, मार कसके, और मार कसके मार अबे ज़ोर से मार तेरे हाथ में तो जैसे दम ही नहीं है लगा कसके, खड़ा सोचने क्या लगता है हाँ बस फटा ही चाहती है! दे उसी दरार में! दुखी अपने होश में न था। न-जाने कौन-सी गुप्तशक्ति उसके हाथों को चला रही थी। वह थकान, भूख, कमज़ोरी सब मानो भाग गई। उसे अपने बाहुबल पर स्वयं आश्चर्य हो रहा था। एक-एक चोट वज्र की तरह पड़ती थी। आधा घंटे तक वह इसी उन्माद की दशा में हाथ चलाता रहा, यहाँ तक कि लकड़ी बीच से फट गई और दुखी के हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर गिर पड़ी। इसके साथ वह भी चक्कर खाकर गिर पड़ा। भूखा, प्यासा, थका हुआ शरीर जवाब दे गया।

पंडितजी ने पुकारा, 'उठके दो-चार हाथ और लगा दे। पतली-पतली चैलियाँ हो जाएँ। दुखी न उठा। पंडितजी ने अब उसे दिक करना उचित न समझा। भीतर जाकर बूटी छानी, शौच गए, स्नान किया और पंडिताई बाना पहनकर बाहर निकले! दुखी अभी तक वहीं पड़ा हुआ था। ज़ोर से पुकारा–'अरे क्या पड़े ही रहोगे दुखी, चलो तुम्हारे ही घर चल रहा हूँ। सब सामान ठीक-ठीक है न?

दुखी फिर भी न उठा।'

अब पंडितजी को कुछ शंका हुई। पास जाकर देखा, तो दुखी अकड़ा पड़ा हुआ था। बदहवास होकर भागे और पंडिताइन से बोले, 'दुखिया तो जैसे मर गया।'

पंडिताइन हकबकाकर बोलीं—'वह तो अभी लकड़ी चीर रहा था न?'

पंडित–'हाँ लकड़ी चीरते-चीरते मर गया। अब क्या होगा?'

पंडिताइन ने शांत होकर कहा, 'होगा क्या, चमरौने में कहला भेजो मुर्दा उठा ले जाएँ।'

एक क्षण में गाँव भर में ख़बर हो गई। पूरे में ब्रह्मनों की ही बस्ती थी। केवल एक घर गोंड़ का था। लोगों ने इधर का रास्ता छोड़ दिया। कुएँ का रास्ता उधर ही से था, पानी कैसे भरा जाए! चमार की लाश के पास से होकर पानी भरने कौन जाए। एक बुढ़िया ने पंडितजी से कहा, अब मुर्दा फेंकवाते क्यों नहीं? कोई गाँव में पानी पीएगा या नहीं। इधर गोंड़ ने चमरौने में जाकर सबसे कह दिया ख़बरदार, मुर्दा उठाने मत जाना। अभी पुलिस की तहक़ीक़ात होगी। दिल्लगी है कि एक ग़रीब की जान ले ली। पंडितजी होंगे, तो अपने घर के होंगे। लाश उठाओगे तो तुम भी पकड़ जाओगे। इसके बाद ही पंडितजी पहुँचे; पर चमरौने का कोई आदमी लाश उठा लाने को तैयार न हुआ, हाँ दुखी की स्त्री और कन्या दोनों हाय-हाय करती वहाँ चलीं और पंडितजी के द्वार पर आकर सिर पीट-पीटकर रोने लगीं। उनके साथ दस-पाँच और चमारिनें थीं। कोई रोती थी, कोई समझाती थी, पर चमार एक भी न था। पंडितजी ने चमारों को बहुत धमकाया, समझाया, मिन्नत की; पर चमारों के दिल पर पुलिस का रोब छाया हुआ था, एक भी न मिनका। आखिर निराश होकर लौट आए।

आधी रात तक रोना-पीटना जारी रहा। देवताओं का सोना मुश्किल हो गया। पर लाश उठाने कोई चमार न आया और ब्रह्मन चमार की लाश कैसे उठाते! भला ऐसा किसी शास्त्र-पुराण में लिखा है? कहीं कोई दिखा दे। पंडिताइन ने झुँझलाकर कहा, 'इन डाइनों ने तो खोपड़ी चाट डाली। सभी का गला भी नहीं पकता। पंडित ने कहा, रोने दो चुड़ैलों को, कब तक रोएँगी। जीता था, तो कोई बात न पूछता था। मर गया, तो कोलाहल मचाने के लिए सब की सब आ पहुँचीं।'

पंडिताइन–'चमार का रोना मनहूस है।'

पंडित –'हाँ, बहुत मनहूस।'

पंडिताइन –'अभी से दुर्गंध उठने लगी।'

पंडित –'चमार था ससुरा कि नहीं। साध-असाध किसी का विचार है इन सबों को।'

पंडिताइन –'इन सबों को घिन भी नहीं लगती।'

पंडित —'भ्रष्ट हैं सब।'

रात तो किसी तरह कटी; मगर सबेरे भी कोई चमार न आया। चमारिनें भी रो-पीटकर चली गईं। दुर्गंध कुछ-कुछ फैलने लगी। पंडितजी ने एक रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधलका था। पंडितजी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए।वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

उधर दुखी की लाश को खेत में गीदड़ और गिद्ध, कुत्ते और कौए नोच रहे थे। यही जीवन-पर्यंत की भक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था।

सद्गति (संक्षिप्त परिचय)

'सद्गति' कहानी का दुखी चमार जाति का है। प्रेमचंद ने कहानी में इसे केन्द्रीय पात्र बनाया है। वह अंधविश्वास, परंपरागत रिवाज और ब्रह्मण के द्वारा शोषित भी है। वह अपनी लड़की की सगाई कर रहा है। पंडितजी से मिलकर कुछ साइत सगुन विचारना है। पंडितजी ऐसे है कि वैसे तो उनकी खाट-खाटोली पर न बैठे, दान दक्षिण भी उनके हाथ से न ले, उनकी स्पर्श की हुई हवा भी पास से गुज़र जाय तो सात बार गंगा में जाकर डुबकी लगाएँ, मगर दूसरी तरफ ऐसे कि उनकी कष्ट- कमाई का सबकुछ हजम कर जाएँ मगर डकार या अशिष्ट भी न लें।

▶ अछूतों की यथार्थ स्थिति का चित्रण

▶ उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के प्रति किया जा रहे अत्याचार

दुखी सब कुछ जानता है मगर फिर भी श्रद्धा करता है। निर्जल, निराहार दुखी प्रातः पंडित की गाय के लिए घास का गट्ठर लेकर उनके दरवाजे पर आता है। श्रद्धा से नत होकर अपना मंतव्य दुहराता है मगर उनका आदेश हुआ घास को गाय के सामने डाल दे, और जरा झाड़ू लेकर द्वार तो साफ कर दे। यह बैठक भी गोबर से लीप दे। तब तक मैं भोजन कर लूँ। फिर ज़रा आराम करके चलूँगा। साथ ही साथ अन्य कई काम भी उसे सौंप दिये।

▶ दुखी अपनी नियति और भाग्य समझता है

निराहार दुखी आज्ञा सिर माथे पर रखकर कार्य में जुट जाता है। काम- करते करते दुःखी का अंग शिथिल हो गया। बेचारा भूख और प्यास से तड़प गया। लेकिन पंडितजी में उदारता नहीं थी। फिर भी दुखी को पंडितजी से कोई ईर्ष्या नहीं है।

▶ छुआछूत की ढोंगी व्यवस्था का शिकार है दुखी

अनपढ़ और वर्ण-व्यवस्था से दबा हुआ दुखी अत्यन्त भोला है। पंडिताइन के द्वारा आग देते समय उसकी चिनगारी उसके सिर पर पड़ने से वह मन में सोचता है कि यह

पवित्र ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने का फल है। भगवान ने इस रूप में जल्दी फल दे दिया। दुखी की यह धारणा उसका अज्ञान और परंपरागत सस्कारों का फल है। दिन भर काम करते-करते पंडित के यहाँ चमार की मृत्यु हो जाती है।

▶ पूजा-पाठ और पुरोहिताई करने वाले घासीराम को निम्न जाति के लोगों के प्रति कोई करुणा और औदार्य नहीं

एक क्षण में गाँव भर में खबर फैल गयी। पूरे में ब्राहम्णों की बस्ती थी। एक ही घर गोंड का था। लोगों ने उधर का रास्ता छोड़ दिया। कुएँ का रास्ता उधर से था। पानी भरने के लिए अलग रास्ता नहीं था। रात किसी तरह कटी, लेकिन सबेरे भी कोई चमार न आया। चमारिने भी रो-पीटकर चली गई। दुर्गन्ध फैलने लगी। अंत में पंडितजी ने एक रस्सी से फंदा बनाकर लाश को घसीटकर गाँव के बाहर फेंक दिया। दुखी की लाश को खेत में गीदड और गिद्ध, कुत्ते और कौए नोच रहे थे। यही जीवन पर्यन्त की शक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था।

▶ प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' की पृष्ठभूमि, समाज की जाति-पाँति, वर्गों के भेदभाव और शोषण से जुड़ी हुई है

वर्णव्यवस्था और उससे उत्पन्न दुर्दशा का अत्यन्त दयनीय चित्रण 'सद्गति' के द्वारा प्रेमचंद ने प्रस्तुत किया है। जिस वर्णव्यवस्था ने अस्पृश्यता के आधार पर दुखी की बलि ले ली, वही दुखी की मृत्यु के बाद उसकी लाश की दुर्दशा होते हुए देखकर भी लज्जित नहीं होती है।

2.3.2 बूढ़ी काकी

1

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा-स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का,

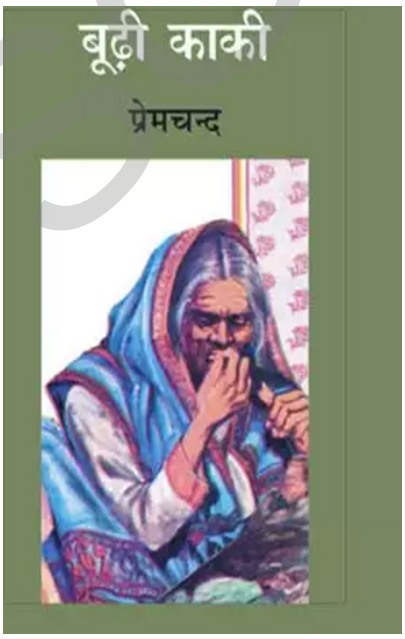

रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही। समस्त इन्द्रियाँ, नेत्र, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पड़ी रहती और घरवाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो ये रोने लगती थीं। उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़ कर रोती थीं।

उनके पतिदेव को स्वर्ग सिधारे कालांतर हो चुका था। बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे। अब एक भतीजे के सिवाय और कोई न था। उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति लिख दी। भतीजे ने सारी सम्पत्ति लिखाते समय खूब लम्बे-चौड़े वादे किये, किंतु वे सब वादे केवल कुली डिपो के दलालों के दिखाये हुए सब्जबाग थे। यद्यपि उस सम्पति

की वार्षिक आय डेढ़-दो सौ रुपये से कम न थी तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था। इसमें उसके भतीजे पंडित बुद्धिराम का अपराध था अथवा उसकी अर्धाङ्गिनी श्रीमती रूपा का, इसका निर्णय करना सहज नहीं। बुद्धिराम स्वभाव के सज्जन थे, किन्तु उसी समय तक जब कि उनके कोष पर कोई आँच न आये। रूपा स्वभाव से तीव्र थी सही, पर ईश्वर से डरती थी। अतएव बूढ़ी काकी को उसकी तीव्रता उतनी न खलती थी जितनी बुद्धिराम की भलमनसाहत। बुद्धिराम को कभी-कभी अपने अत्याचार का खेद होता था। विचारते कि इसी सम्पत्ति के कारण में इस समय भला मानुष बना बैठा हूँ। यदि मौखिक आश्वासन और सूखी सहानुभूति से स्थिति में सुधार हो सकता हो उन्हें कदाचित् कोई आपत्ति न होती, परंतु विशेष व्यय का भय उनकी सुचेष्टा को दबाये रखता था। यहाँ तक कि यदि द्वार पर कोई भला आदमी बैठा होता और बूढ़ी काकी उस समय अपना राग अलापने लगती तो वह आग हो जाते और घर में आकर उन्हें जोर से डाँटते। लड़कों को बुड्ढ़ों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और सताया करते। कोई चुटकी काट कर भागता, कोई इन पर पानी की कुल्ली कर देता ! काकी चीख मार कर रोतीं परन्तु यह बात प्रसिद्ध थी कि वह केवल खाने के लिए रोती हैं, अतएव उनके संताप और आर्त्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था। हाँ, काकी क्रोधातुर होकर बच्चों को गालियाँ देने लगतीं तो रूपा घटनास्थल पर आ पहुँचती। इस भय से काकी अपनी जिह्वा कृपाण का कदाचित् ही प्रयोग करती थीं, यद्यपि उपद्रव-शांति का यह उपाय रोने से कहीं अधिक उपयुक्त था।

सम्पूर्ण परिवार में यदि काकी से किसी को अनुराग था, तो वह बुद्धिराम की छोटी लड़की लाडली थी। लाडली अपने दोनों भाइयों के भय से अपने हिस्से की मिठाई- चबैना बूढ़ी काकी के पास बैठकर खाया करती थी। यही उसका रक्षागार था और यद्यपि काकी की शरण उनकी लोलुपता के कारण बहुत महँगी पड़ती थी, तथापि भाइयों के अन्याय से कहीं सुलभ थी। इसी स्वार्थानुकूलता ने उन दोनों में सहानुभूति का आरोपण कर दिया था।

2

रात का समय था। बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वादन कर रहा था। चारपाइयों पर मेहमान विश्राम करते हुए नाइयों से मुक्कियाँ लगवा रहे थे। समीप खड़ा हुआ भाट विरदावली सुना रहा था और कुछ भावज्ञ मेहमानों की 'वाह, वाह' पर ऐसा खुश हो रहां था मानो इस वाह-वाह का यथार्थ में वही अधिकारी है। दो-एक अँग्रेजी पढ़े हुए नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे। वे इस गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे।

आज बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया है। यह उसी का उत्सव है। घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबन्ध में व्यस्त

थी। भट्ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे। एक में पूडियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं, दूसरे में अन्य पकवान बनते थे। एक बड़े हण्डे में मसालेदार तरकारी पक रही थी। धी और मसाले की क्षुधावर्द्धक सुगंधि चारों ओर फैली हुई थी।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में शोकमय विचार की भाँति बैठी हुई थीं। यह स्वाद मिश्रित सुगंधि उन्हें बेचैन कर रही थी। वे मन ही मन विचार कर रही थीं, सम्भवतः मुझे पूड़ियाँ न मिलेंगी। इतनी देर हो गयी, कोई भोजन लेकर नहीं आया। मालूम होता है, सब लोग भोजन कर चुके हैं। मेरे लिए कुछ न बचा। यह सोचकर उन्हें रोना आया; परन्तु अशकुन के भय से वह रो न सकीं।

'आहा ! कैसी सुगंधि है? अब मुझे कौन पूछता है। जब रोटियों ही के लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपेट पूड़ियाँ मिलें ?' यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में हूक-सी उठने लगी। परन्तु रूपा के भय से उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया।

बूढ़ी काकी देर तक इन्हीं दुःखदायक विचारों में डूबी रहीं। घी और मसालों की सुगंधि रह-रह कर मन को आपे से बाहर किये देती थी। मुँह में पानी भर-भर आता था। पूड़ियों का स्वाद स्मरण करके हृदय में गुदगुदी होने लगती थी। किसे पुकारूँ, आज लाडली बेटी भी नहीं आयी। दोनों छोकड़े सदा दिक दिया करते हैं। आज उनका भी कहीं पता नहीं। कुछ मालूम तो होता कि क्या बन रहा है।

बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की तस्वीर नाचने लगी। खूब लाल-लाल, फूली-फूली, नरम नरम होंगी। रूपा ने भली-भाँति भोजन किया होगा। कचौड़ियों में अजवाइन और इलायची की महक आ रही होगी। एक पूड़ी मिलती तो जरा हाथ में लेकर देखती। क्यों न चलकर कड़ाह के सामने ही बैठूं। पूड़ियाँ छन-छन कर तैयार होंगी। कड़ाह से गरम-गरम निकालकर थाल में रखी जाती होंगी। फूल हम घर में भी सूंघ सकते हैं; परन्तु वाटिका में कुछ और बात होती है। इस प्रकार निर्णय करके बूढ़ी काकी उकहूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई में चौखट से उतरी और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठी। यहाँ आने पर उन्हें उतना ही धैर्य हुआ जितना भूखे कुत्ते को खाने वाले के सम्मुख बैठने में होता है।

रूपा उस समय कार्यभार से उद्विग्न हो रही थी। कभी इस कोठे में जाती, कभी उस कोठे में, कभी कड़ाह के पास आती, कभी भंडार में जाती। किसी ने बाहर से आकर कहा- 'महाराज ठंडाई माँग रहे हैं।' ठंड़ाई देने लगी। इतने में फिर किसी ने आकर कहा- 'भाट आया है, उसे कुछ दे दो।' भाट के लिए सीधा निकाल रही थी कि एक तीसरे आदमी ने आकर पूछा- 'अभी भोजन तैयार होने में कितना विलम्ब है? जरा ढोल, मजीरा उतार दो।' बेचारी अकेली स्त्री दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी; झुंझलाती थी, कुढ़ती थी, परन्तु क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी। भय होता, कहीं पड़ोसिनें यह न कहने लगें कि इतने में उबल पड़ीं। प्यास से स्वयं कंठ सूख रहा था। गर्मी के

मारे फुंकी जाती थी, परन्तु इतना अवकाश भी नहीं था कि जरा पानी पी ले अथवा पंखा लेकर झले। यह भी खटका था कि जरा आँख हटी और चीजों की लूट मची। इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठी देखा तो जल गयी। क्रोध न रुक सका। इसका भी ध्यान न रहा कि पड़ोसिनें बैठी हुई हैं, मन में क्या कहेंगी, पुरुषों में लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे। जिस प्रकार मेढ़क केंचुए पर झपटता है, उसी प्रकार वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली- ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़ ? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था ? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका? आकर छाती पर सवार हो गयी। जल जाय ऐसी जीभ। दिन भर खाती न होती तो न जाने किसकी हाँड़ी में मुँह डालती? गाँव देखेगा तो कहेगा कि बुढ़िया भरपेट खाने को नहीं पाती तभी तो इस तरह मुँह बाये फिरती है। डायन न मरे न माँचा छोड़े। नाम बेचने पर लगी है। नाक कटवा कर दम लेगी। इतनी ठूंसती है न जाने कहाँ भस्म हो जाता है। भला चाहती हो तो जाकर कोठरी में बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे तब तुम्हें भी मिलेगा। तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाय, परन्तु तुम्हारी पूजा पहले ही हो जाय।

बूढ़ी काकी ने सिर उठाया; न रोई न बोलीं। चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गयीं। आवाज ऐसी कोठर थी कि हृदय और मस्तिष्क की सम्पूर्ण शक्तियाँ, सम्पूर्ण विचार और सम्पूर्ण भार उसी ओर आकर्षित हो गये थे। नदी में जब कगार का कोई वृहद् खंड कट कर गिरता है तो आस-पास का जलसमूह चारों ओर उसी स्थान को पूरा करने के लिए दौड़ता है!

3

भोजन तैयार हो गया है। आँगन में पत्तलें पड़ गयीं, मेहमान खाने लगे। स्त्रियों ने जेवनार-गीत गाना आरम्भ कर दिया। मेहमानों के नाई और सेवकगण भी उसी मंडली के साथ किंतु कुछ हटकर भोजन करने बैठे थे, परन्तु सभ्यतानुसार जब तक सब के सब खा न चुके कोई उठ नहीं सकता था। दो-एक मेहमान जो कुछ पढ़े-लिखे थे, सेवकों के दीर्घाहार पर झुंझला रहे थे। वे इस बंधन को व्यर्थ और बे-सिर-पैर की बात समझते थे।

बूढ़ी काकी अपनी. कोठरी में जाकर पश्चाताप कर रही थी कि मैं कहाँ से कहाँ गयी। उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था। अपनी जल्दबाजी पर दुःख था। सच ही तो है जब तक मेहमान लोग भोजन कर न चुकेंगे, घर वाले कैसे खायेंगे। मुझसे इतनी देर भी न रहा गया। सबके सामने पानी उतर गया। अब जब तक कोई बुलाने न आयेगा, न जाऊँगी। मन ही मन इस प्रकार का विचार कर वह बुलाने की प्रतीक्षा करने लगीं। परन्तु घी की रुचिकर सुवास बड़ी धैर्य-परीक्षक प्रतीत हो रही थी। उन्हें एक-एक पल एक-एक युग के समान मालूम होता था। अब पत्तल बिछ गयी होगी! अब मेहमान आ गये होंगे। लोग हाथ-पैर धो रहे हैं, नाई पानी दे रहा है। मालूम होता है लोग खाने बैठ गये। जेवनार गाया जा रहा है, यह विचार कर वह मन को बहलाने के लिए लेट गयी।

धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं। उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते देर हो गयी। क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर ही रहे होंगे। किसी की आवाज नहीं सुनायी देती। अवश्य ही लोग खा- पी-कर चले गये। मुझे कोई बुलाने नहीं आया। रूपा चिढ़ गयी है, क्या जाने न बुलाये। सोचती हो कि आप ही आवेंगी, वह कोई मेहमान तो नहीं जो उन्हें बुलाऊँ। बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुई। यह विश्वास कि एक मिनट में पूड़िया और मसालेदार तरकारियाँ सामने आयेंगी, उनकी स्वादेन्द्रियों को गुदगुदाने लगा। उन्होंने मन में तरह- तरह के मंसूबे बाँधे पहले तरकारी से पूड़िया खाऊँगी, फिर दही और शक्कर से, कचौरियाँ रायते के साथ मजेदार मालुम होंगी। चाहे कोई बुरा माने चाहे भला, मैं तो माँग-माँग कर खाऊँगी। यही न लोग कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं? कहा करें, इतने दिन के बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी।

वह उकहूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई आँगन में आयीं। परन्तु हाय दुर्भाग्य ! अभिलाषा ने अपने पुराने स्वभाव के अनुसार समय की मिथ्या कल्पना की थी। मेहमान मंडली अभी बैठी हुई थी। कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं। कोई इस चिंता में था कि पत्तल पर पूड़िया छूटी जाती हैं किसी तरह इन्हें भीतर रख लेता। कोई दही खाकर जीभ चटकारता था, परंतु दूसरा दोना माँगते संकोच करता था कि इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में आ पहुँची। कई आदमी चौंककर उठ खड़े हुए। पुकारने लगे- अरे यह बुढ़िया कौन है। यहाँ कहाँ से आ गयी? देखो किसी को छू न दे। पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गये। पूड़ियों का थाल लिए खड़े थे। थाल को जमीन पर पट क दिया और जिस प्रकार निर्दयी महाजन अपने किसी बेईमान और भगोड़े कर्जदार को देखते ही झपटकर उसका टेटुआ पकड़ लेता है उसी तरह लपक कर उन्होंने काकी के दोनों हाथ पकड़े और घसीटते हुए लाकर उन्हें अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया। आशा रूपी वाटिका लू के एक झोंके में नष्ट-विनष्ट हो गयी।

मेहमानों ने भोजन किया। घरवालों ने भोजन किया। बाजे वाले, धोबी, चमार भी भोजन कर चुके, परन्तु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछा। बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे। उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर, ह्तज्ञान पर किसी को करुणा न आयी थी। अकेली लाडली उनके लिए कुढ़ रही थी।

लाडली को काकी से अत्यन्त प्रेम था। बेचारी भोली लड़की थी। बाल-विनोद और चंचलता की उसमें गंध तक न थी। दोनों बार जब उसके माता-पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा तो लाडली का हृदय ऐंठ कर रह गया। वह झुंझला रही थी कि हम. लोग काकी को क्यों बहुत-सी पूड़िया नहीं देते। क्या मेहमान सब की सब खा जायेंगे ? और यदि काकी ने मेहमानों से पहले खा लिया तो क्या बिगड़ जायेगा ? वह काकी के पास जाकर उन्हें धैर्य देना चाहती थी, परंतु माता के भय से न जाती थी। उसने

अपने हिस्से की पूड़ियाँ बिलकुल न खायी थीं। अपनी गुड़ियों की पिटारी में बन्द कर रक्खी थीं।

उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी। उसका हृदय अधीर हो रहा था। बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी ! मुझे खूब प्यार करेंगी !

4

रात को ग्यारह बज गये थे। रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी। लाडली की आँखों में नींद न आती थी। काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी। उसने गुड़ियों की पिटारी सामने रखी थी। जब विश्वास हो गया कि अम्माँ सो रही हैं, तो वह चुपके से उठी और विचारने लगी, कैसे चलूँ। चारों ओर अँधेरा था। केवल चूल्हों में आग चमक रही थी और चूल्हों के पास एक कुत्ता लेटा हुआ था। लाडली की दृष्टि द्वार के सामने वाले नीम की ओर गयी। उसे मालूम हुआ कि उस पर हनुमानजी बैठे हुए हैं। उनकी पूँछ, उनकी गदा, वह स्पष्ट दिखलाई दे रही है। मारे भय के उसने आँखें बन्द कर लीं। इतने में कुत्ता उठ बैठा, लाडली को ढाढ़स हुआ। कई सोये हुए मनुष्यों के बदले एक भागता हुआ कुत्ता उसके लिए अधिक धैर्य का कारण हुआ। उसने पिटारी उठायी और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली।

5

बूढ़ी काकी को केवल इतना स्मरण था कि किसी ने मेरे हाथ पकड़ कर घसीटे, फिर ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कोई पहाड़ पर उड़ाये लिये जाता है। उनके पैर बार-बार पत्थरों से टकराये तब किसी ने उन्हें पहाड़ पर से पटका, वे मूर्छित हो गयीं।

जब वे सचेत हुईं तो किसी की जरा भी आहट न मिलती थी। समझी कि सब लोग खा-पीकर सो गये और उनके साथ मेरी तकदीर भी सो गयी। रात कैसे कटेगी? राम : क्या खाऊँ ? पेट में अग्नि धधक रही है। हा! किसी ने मेरी सुधि न ली! क्या मेरा पेट काटने से धन जुड़ जायेगा ? इन लोगों को इतनी भी दया नहीं आती कि न जाने बुढ़िया कब मर जाय ? उसका जी क्यों दुखावें? मैं पेट की रोटियाँ ही खाती हूँ कि और कुछ ? इस पर यह हाल। मैं अंधी, अपाहिज ठहरी, न कुछ सुनूँ न बूझूँ। यदि आँगन में चली गयी तो क्या बुद्धिराम से इतना कहते न बनता था कि काकी अभी लोग खा रहे हैं फिर आना। मुझे घसीटा, पटका। उन्हीं पूड़ियों के लिए रूपा ने सबके सामने गालियाँ दीं। उन्हीं पूड़ियों के लिए इतनी दुर्गति करने पर भी उनका पत्थर का कलेजा न पसीजा। सबको खिलाया, मेरी बात तक न पूछी। जब तब ही न दीं, तब अब क्या देंगे ?

यह विचार कर काकी निराशामय संतोष के साथ लेट गयीं। ग्लानि से गला भर-भर आता था, परन्तु मेहमानों के भय से रोती न थीं।

सहसा उनके कानों में आवाज आयी- 'काकी उठो; मैं पूड़ियाँ लायी हूँ।' काकी ने लाडली की बोली पहचानी। चटपट उठ बैठीं। दोनों हाथों से लाडली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया। लाडली ने पूड़ियाँ निकाल कर दीं।

काकी ने पूछा-क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं?

लाडली ने कहा-नहीं, यह मेरे हिस्से की हैं।

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ीं। पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गयी। लाटली ने पूछा काकी पेट भर गया।

जैसी थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर और भी गर्मी पैदा कर देती है उस भाँति इन थोड़ी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था। बोलीं- नहीं बेटी, जाकर अम्माँ से और माँग लाओ।

लाडली ने कहा-अम्माँ सोती हैं, जगाऊँगी तो मारेंगी।

काकी ने पिटारी को फिर टटोला। उसमें कुछ खुर्चन गिरी थी। उन्हें निकाल कर वे खा गयीं। बार-बार होंठ चाटती थी, चटखारे भरती थीं।

हृदय मसोस रहा था कि और पूड़ियाँ कैसे पाऊँ। संतोष-सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है। मतवालों को मद का स्मरण करना उन्हें मदांध बनाता है। काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया। उचित और अनुचित का विचार जाता रहा। वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं। सहसा लाडली से बोलीं- मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो जहाँ मेहमानों ने बैठकर भोजन किया है।

लाडली उनका अभिप्राय समझ न सकी। उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पत्तलों के पास बैठा दिया। दीन, क्षुधातुर, हतज्ञान बुढ़िया पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुन कर भक्षण करने लगी। ओह दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियों कितनी सलोनी, खस्ता कितने सुकोमल। काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ, जो मुझे कदापि न करना चाहिए। मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ। परन्तु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केंद्र पर आ लगती हैं। बूढ़ी काकी में यह केन्द्र उनकी स्वादेन्द्रिय थी।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं। उसे मालूम हुआ कि लाडली मेरे पास नहीं है। वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी। उसे. वहाँ न पाकर वह उठी तो क्या देखती है कि लाडली जूठे पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठा कर खा रही हैं। रूपा का हृदय सन्न हो गया। किसी गाय की गर्दन पर छुरी चलते देखकर जो अवस्था उसकी होती, वही उस समय हुई। एक ब्रह्मणी दूसरों की जूठी पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य

असम्भव था। पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा पतित और निकृष्ट कर्म कर रही है। यह वह दृश्य था जिसे देखकर देखने वालों के हृदय काँप उठते हैं। ऐसा प्रतीत होता मानो जमीन रुक गयी, आसमान चक्कर खा रहा है। संसार पर कोई आपत्ति आने वाली है। रूपा को क्रोध न आया। शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आयीं! इस अधर्म के पाप का भागी कौन है? उसने सच्चे हृदय से गगन-मंडल की ओर हाथ उठाकर कहा- परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो। इस अधर्म का दण्ड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जायेगा।

रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न देख पड़े थे। वह सोचने लगी- हाय! कितनी निर्दय हूँ। जिसकी सम्पत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति! और मेरे कारण ! हे दयामय भगवान् ! मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो। आज मेरे बेटे का तिलक था। सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन पाया। मैं उनके इशारों की दासी बनी रही। अपने नाम के लिए सैकड़ों रुपये व्यय कर दिये; परंतु जिसकी बदौलत हजारों रुपये खाये, उसे इस उत्सव में भी भरपेट भोजन न दे सकी। केवल इसी कारण तो, वह वृद्धा असहाय है।

रूपा ने दिया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में सम्पूर्ण सामग्रियाँ सजाकर लिए हुए बूढ़ी काकी की ओर चली।

आधी रात जा चुकी थी, आकाश पर तारों के थाल सजे हुए थे और उन पर बैठे हुए देवगण स्वर्गीय पदार्थ सजा रहे थे, परंतु उसमें किसी को वह परमानंद प्राप्त न हो सकता था, जो बूढ़ी काकी को अपने सम्मुख थाल देखकर प्राप्त हुआ। रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा-काकी उठो, भोजन कर लो। मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें।

भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाता है, बूढ़ी काकी वैसे ही सब भुलाकर बैठी हुई खाना खा रही थीं। उनके एक-एक रोयें से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं और रूपा बैठी स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी।

▶ वृद्धावस्था में मन किसी बच्चे की तरह चंचल

(बूढ़ी काकी) (संक्षिप्त परिचय)

'बूढ़ी काकी' प्रेमचंद की यथार्थपरक प्रमुख कहानियों में एक है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने परिवार में बुजुर्गों के प्रति होनेवाले तिरस्कार भाव का मार्मिक चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में उन्होंने एक उपेक्षित बुढ़िया का चित्रण किया है। बुढ़ापे में भोजन के प्रति लालसा होना स्वाभाविक है। बूढ़ी काकी की भोजन लालसा से उत्पन्न सहज विकृतियों के द्वारा प्रेमचंद जी ने बुढ़ापे की इस मानसिक स्थिति का चित्रण बड़ी कुशलता से किया है।

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के

सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा भी। बूढ़ी काकी का पति बहुत समय पहले ही मर गया था। उसका युवक लड़का भी मर गया था। केवल उसका भतीजा बुद्धिराम ही बचा रहा। बूढ़ी काकी ने अपनी सारी संपत्ती उसी भतीजे के नाम पर लिख दी और अपनी शेष जीवन का भार उसी के कंधों पर रख दिया। भतीजे ने संपत्ति लिखाते समय खूब लंबे चौडे वादे किये। लेकिन सारी संपत्ति हाथ में आते ही उसकी स्वार्थ प्रकृति का विकट रूप बाहर आने लगा। उसकी स्त्री भी बूढ़ी काकी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। बुद्धिराम स्वभाव से सज्जन थे किन्तु उसी समय तक जबकि उनके कोष पर कोई आँच न आये।

▶ समाज में वृद्धजनों के प्रति उपेक्षा की समस्या

काकी को बुद्धिराम की छोटी लड़की लाडली से अनुराग है। आज बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया है। मेहमानों के लिए भोजन की तैयारियाँ हो रही थी। मसाले की सुगन्ध पाकर बूढी काकी बेचैन हो रही थी। बूढ़ी काकी उकहूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई धीरे-धीरे रेंगती हुई कडाह के पास आ बैठी। यहाँ आने पर उन्हें उतना ही धैर्य हुआ जितना भूखे कुते को खानेवाले के सम्मुख बैठने में होता है। इसी समय बुद्धिराम की पत्नी रूपा ने उसे देख लिया। वह नाराज हो गयी। और बूढ़ी काकी को अपमानित कर दिया। बूढी काकी चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गयी।

▶ बूढ़ी काकी अपमानित कर दिया गया

मेहमानों का भोजन हो गया। केवल बूढ़ी काकी भूखी रही। उसके दिल में अंधेरा छाया हुआ था। सब भोजन करके चले गये तो भी बूढ़ी काकी को बुलावा नहीं आयी। वह सरकती रेंगती बाहर आयी तब बुद्धिराम की दृष्टि उस पर पड़ी। वह भी क्रोध के मारे अंधा बन गया और उसे घसीटते हुए ले जाकर अंधेरी कोठरी में घम से पटक दिया। लाडली रात में अपना भोजन का हिस्सा लेकर काकी की कोठरी में पहुंची। उसे खाने पर भी उसकी लालसा तृप्त नहीं हुई और लाडली के सहारे बूढ़ी काकी जूठे पत्तों तक पहुँच गई और उन पत्तों में बचे टुकडों को खाने लगी। इस दयनीय दशा को देखकर रूपा की आँख खुल गयी उसे बूढ़ी काकी पर किये अत्याचारों पर घोर पश्चाताप होने लगा। रूपा ने अपने भण्डार का द्वार खोला और एक थाली में संपूर्ण सामग्री सजाकर बूढ़ी काकी की ओर चली। उसने अपनी अपराधों पर क्षमा माँगी। भावी संतानों की भलाई के लिए भगवान से प्रार्थना की। भोली बच्चों की तरह सब भूलकर बूढ़ी काकी खाना खाने लगी और उसके रोम-रोम से आशीर्वाद निकल रही थी। उस दृश्य को देखकर रूपा अमित आनंद का अनुभव कर रही थी।

▶ वृद्धावस्था को आनंद के साथ व्यतीत करना चाहिए

प्रेमचंद अपनी कहानियों में किसी न किसी प्रकार समाज के विशेष व्यक्तित्व का चित्र प्रस्तुत करते हैं। साथ ही साथ उनकी कहानियों में यह विशिष्टता भी देखी जाती है कि कथानक का कोई सजीव पात्र किसी स्थाई समस्या की ओर इशारा भी करता है। यद्यपि बूढ़ी काकी कहानी में बूढ़ी काकी की भोजन लालसा प्रवृत्ति का विशद चित्रण मिलता है फिर भी बुढ़ापे की एक मानसिक स्थिति की ओर भी इसके द्वारा प्रकाश डाला

SGOU

गया है।बुढ़ापे की उपेक्षा,जैविक दुर्बलताएं तज्जन्य सूक्ष्म व्यवहारों का मार्मिक चित्रण इस कहानि में है।

अनमोलवचनः प्रेमचंद

"जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उनको लूटने में नहीं"।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद के समय में समाज में जाति-पांति और वर्गों का भेदभाव था। उस समय ब्राह्मणों का आदर-सत्कार किया जाता था। बाहरी तौर पर दिखावा करने वाले ब्राह्मण, आंतरिक रूप से धर्म-संस्कार के नाम पर निम्न जातियों पर शोषण करते थे। प्रेमचंद ने 'सद्गति' कहानी में समाज की ऐसी अमानवीय क्रूरता को दिखाया है।

समाज में बुज़ुर्गों के प्रति उपेक्षा की स्थिति है। 'बूढ़ी काकी' कहानी में लेखक ने वृद्धावस्था में आने वाली समस्याओं को उठाया है। पंडित बुद्धिराम जैसे लोग मीठी-मीठी बातें करके बहलाकर बूढ़ों से उनकी संपत्ति अपने नाम लिखवा लेते हैं। बूढ़ी काकी के संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता बूढ़ी काकी को समाज में उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।

'बूढ़ी काकी' में लेखक ने बुढ़ापे की निस्सहायता और पारिवारिक उपेक्षा को संवेदनात्मक रूप में किया है जिससे कहानि का धरातल अधिक यथार्थपरक हो जाता है।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद - डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मजदूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
7. प्रेमचंद और भारतीय किसान- प्रो. रामबक्ष
8. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र- नन्द किशोर नवल
9. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'सद्गति' कहानी का सारांश लिखिए।
2. 'सद्गति' कहानी में चित्रित वर्ग संघर्ष पर टिप्पणी लिखिए।
3. 'बूढ़ी काकी' कहानी का सारांश लिखिए।
4. बुज़ुर्गों के प्रति उपेक्षा की स्थिति की 'बूढ़ी काकी' कहानी के आधार पर आलोचना कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कहानीकार प्रेमचंद- शिवकुमार मिश्र
2. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
3. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

कफ़न, पंच परमेश्वर

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'कफ़न' कहानी समझता है
- सर्वहारा वर्ग का दयनीय और भयावह स्थिति से परिचित होता है
- 'पंच परमेश्वर' कहानी समझता है
- ग्रामीण पंचायती व्यवस्था की गरिमा जानता है

Background / पृष्ठभूमि

पराधीन भारत के मरणासन्न समाज की पृष्ठभूमि है प्रेमचंद की आख़िरी कहानी 'कफ़न'की। इस कहानी में समाज में व्याप्त शोषण, ग़रीबी, अकर्मण्यता और असमानता को दिखाया गया है। यह कहानी समाज में फैली सामंती व्यवस्था के खिलाफ़ आवाज़ उठाती है। यह कहानी मूल रूप से उर्दू में लिखी गई थी। इसका हिन्दी रूप चांद के अप्रैल, 1936 में प्रकाशित हुआ था।

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'पंच परमेश्वर' की पृष्ठभूमि गांव के सामाजिक ढांचे और पंचायती व्यवस्था है। इस कहानी में पंचायती न्याय व्यवस्था में पंच की मर्यादा और प्रतिष्ठा को दिखाया गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

कफ़न, बेरोजगारी, निकम्मी, सामन्तवादी परिस्थिति, जीवन की अव्यवस्था रूढिग्रस्तता

Discussion / चर्चा

2.4.1 कफ़न

- प्रयोग धर्मिता

झोपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और अन्दर बेटे की जवान बीवी बुधिया प्रसव-वेदना में पछाड़ खा रही थी। रह-रहकर उसके मुँह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज निकलती थी, कि दोनों कलेजा थाम लेते थे। जाड़ों की रात थी, प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई, सारा गाँव अन्धकार में

लय हो गया था।

घीसू ने कहा-मालूम होता है, बचेगी नहीं। सारा दिन दौड़ते हो गया, जा देखते माधव चिढ़कर बोला- मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती? देखकर क्या करूँ?

'तू बड़ा बेदर्द है वे ! साल-भर जिसके साथ सुख-चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई !'

'तो मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ-पाँव पटकना नहीं देखा जाता।'

चमारों का कुनबा था और सारे गाँव में बदनाम। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता। माधव इतना काम-चोर था कि आध घण्टे काम करता तो घंटे- भर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। घर में मुट्ठी-भर भी अनाज मौजूद हो, तो उनके लिए काम करने की कसम थी। जब दो-चार फाके हो जाते तो धीसू पेड़ पर चढ़कर लकड़ियाँ तोड़ लाता और माधव बाज़ार से बेच लाता। और जब तक वह पैसे रहते, दोनों इधर-उधर मारे-मारे फिरते। गाँव में काम की कमी न थी। किसानों का गाँव था, मेहनती आदमी के लिए पचास काम थे। मगर इन दोनों को उसी वक्त बुलाते, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी सन्तोष कर लेने के सिवा और कोई चारा न होता। अगर दोनों साधु होते, तो उन्हें सन्तोष और धैर्य के लिए, संयम और निधम की बिलकुल जरूरत न होती। यह तो इनकी प्रकृति थी। विचित्र जीवन था इनका ! घर में मिट्टी के दो-चार बर्तन के सिवा कोई सम्पत्ति नहीं। फटे चीथड़ों से अपनी नम्नता को ढाँके हुए जिये जाते थे। संसार की चिन्ताओं से मुक्त कर्ज़ से लदे हुए। गालियाँ भी खाते, मार भी खाते, मगर कोई भी गम नहीं। दीन इतने कि वसूली की बिलकुल आशा न रहने पर भी लोग इन्हें कुछ-न-कुछ कर्ज दे देते थे। मटर, आलू की फसल में दूसरों के खेतों से मटर या आलू उखाड़ लाते और भून-भानकर खा लेते या दस-पाँच ऊख उखाड़ लाते और रात को चूसते। घीसू ने इसी आकाश-वृत्ति से साठ साल की उम्र काट दी और माधव भी सपूत बेटे की तरह बाप ही के पद-चिह्नों पर चल रहा था, बल्कि उसका नाम और भी उजागर कर रहा था। इस वक्त भी दोनों अलाव के सामने बैठकर आलू भून रहे थे, जो

कि किसी खेत से खोद लाये थे। घीसू की स्त्री का तो बहुत दिन हुए, देहान्त हो गया था। माधव का ब्याह पिछले साल हुआ था। जब से यह औरत आई थी, उसने इस खानदान में व्यवस्था की नींव डाली थी और इन दोनों बे-गैरतों का दोजख भरती रहती थी। जब से वह आई, यह दोनों और भी आरामतलब हो गये थे। बल्कि कुछ अकड़ने भी लगे थे। कोई कार्य करने को बुलाता, तो निर्ब्याज भाव से दुगनी मजदूरी माँगते। वही औरत आज प्रसव-वेदना से मर रही थी और यह दोनों शायद इसी इन्तजार में थे कि वह मर जाये, तो आराम से सोयें। घीसू ने आलू निकालकर छीलते हुए कहा- जाकर देख तो, क्या दशा है उसकी ?

चुड़ैल का फिसाद होगा, और क्या ? यहाँ तो ओझा भी एक रुपया माँगता है! माधव को भय था, कि वह कोठरी में गया, तो घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ कर देगा। बोला- मुझे वहाँ जाते डर लगता है।

'डर किस बात का है, मैं तो यहाँ हूँ ही।'

तो तुम्हीं जाकर देखो न ?'

'मेरी औरत जब मरी थी, तो मैं तीन दिन तक उसके पास से हिला तक नहीं; और फिर मुझसे लजायेगी कि नहीं? जिसका कभी मुँह नहीं देखा; आज उसका उघड़ा हुआ बदन देखें ! उसे तन की सुध भी तो न होगी ? मुझे देख लेगी तो खुलकर हाथ-पाँव भी न पटक सकेगी !'

'मैं सोचता हूँ कोई बाल-बच्चा हुआ, तो क्या होगा ? सोंठ, गुड़, तेल, कुछ भी तो नहीं है घर में !'

'सब कुछ आ जायेगा। भगवान दें तो ! जो लोग अभी एक पैसा नहीं दे रहे हैं, वे ही कल बुलाकर रुपये देंगे। मेरे नौ लड़के हुए, घर में कभी कुछ न था; मगर भगवान ने

किसी-न-किसी तरह बेड़ा पार ही लगाया।'

जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी, और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे, घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान् था और किसानों के विचार-शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मण्डली में जा मिला था। हाँ, उसमें यह शक्ति न थी, कि बैठकबाजों के नियम और नीति का पालन करता। इसलिए जहाँ उसकी मण्डली के और लोग गाँव के सरगना और मुखिया बने हुए थे, उस पर सारा गाँव उँगली उठाता था। फिर भी उसे यह तसकीन तो थी ही कि अगर वह फटेहाल है तो कम-से-कम उसे किसानों की-सी जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती, और उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेजा फ़ायदा

तो नहीं उठाते ! दोनों आलू निकाल-निकालकर जलते-जलते खाने लगे। कल से कुछ नहीं खाया था। इतना सब्र न था कि ठण्डा हो जाने दें। कई बार दोनों की जबानें जल गईं। छिल जाने पर आलू का बाहरी हिस्सा बहुत ज्यादा गर्म न मालूम होता; लेकिन दाँतों के तले पड़ते ही अन्दर का हिस्सा जबान, हलक और तालू को जला देता था और उस अंगारे को मुँह में रखने से ज्यादा खैरियत इसी में थी कि वह अन्दर पहुँच जाये। वहाँ उसे ठण्डा करने के लिए काफ़ी सामान थे। इसलिए दोनों जल्द-जल्द निगल जाते। हालाँकि इस कोशिश में उनकी आँखों से आँसू निकल आते।

घीसू को उस वक्त ठाकुर की बरात याद आई, जिसमें बीस साल पहले वह गया था। उस दावत में उसे जो तृप्ति मिली थी, वह उसके जीवन में एक याद रखने लायक बात थी, और आज भी उसकी याद ताजी थी। बोला- वह भोज नहीं भूलता। तब से फिर उस तरह का खाना और भरपेट नहीं मिला। लड़की वालों ने सबको भर पेट पूड़ियाँ खिलाई थीं, सबको ! छोटे-बड़े सबने पूड़ियाँ खाई और असली घी की। चटनी, रायता, तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी, दही, चटनी, मिठाई, अब क्या बताऊँ कि उस भोज में क्या स्वाद मिला, कोई रोक-टोक नहीं थी, जो चीज चाहो, माँगो, जितना चाहो, खाओ। लोगों ने ऐसा खाया, ऐसा खाया, कि किसी से पानी न पिया गया। मगर परोसने वाले हैं कि पत्तल में गर्म-गर्म, गोल-गोल सुवासित कचौड़ियाँ डाल देते थे। मना करते हैं कि नहीं चाहिए, पत्तल पर हाथ से रोके हुए हैं, मगर वह हैं कि दिये जाते हैं। और जब सबने मुँह धो लिया, तो पान-इलायची भी मिली। मगर मुझे पान लेने की कहाँ सुध थी ? खड़ा हुआ न जाता था। चटपट जाकर अपने कम्बल पर लेट गया। ऐसा दिल- दरियाव था वह ठाकुर !

माधव ने इन पदार्थों का मन-ही-मन मजा लेते हुए कहा- अब हमें कोई ऐसा भोज नहीं खिलाता।

'अब कोई क्या खिलायेगा ? वह जमाना दूसरा था। अब तो सबको किफायत सूझती है। सादी-ब्याह में मत खर्च करो, क्रिया-कर्म में मत खर्च करो। पूछो, गरीबों का माल बटोर-बटोरकर कहाँ रखोगे? बटोरने में तो कमी नहीं है। हाँ, खर्च में किफायत सूझती है!'

'तुमने एक बीस पूरियाँ खाई होंगी ?'

'बीस से ज्यादा खाई थीं!'

'मैं पचास खा जाता !'

'पचास से कम मैंने न खाई होंगी। अच्छा पट्ठा था। तू तो मेरा आधा भी नहीं है।'

आलू खाकर दोनों ने पानी पिया और वहीं अलाव के सामने अपनी धोतियाँ ओढ़कर पाँव पेट में डाले सो रहे। जैसे दो बड़े-बड़े अजगर गेंडुलिया मारे पड़े हों। और बुधिया अभी तक कराह रही थी।

सबेरे माधव ने कोठरी में जाकर देखा, तो उसकी स्त्री ठण्डी हो गई थी। उसके मुँह पर मक्खियाँ भिनक रही थीं। पथराई हुई आँखें ऊपर टँगी हुई थीं। सारी देह धूल से लथपथ हो रही थी। उसके पेट में बच्चा मर गया था। माधव भागा हुआ घीसू के पास आया। फिर दोनों जोर-जोर से हाय-हाय करने और छाती पीटने लगे। पड़ोस वालों ने यह रोना-धोना सुना, तो दौड़े हुए आये और पुरानी मर्यादा के अनुसार इन अभागों को समझाने लगे। मगर ज्यादा रोने-पीटने का अवसर न था। कफ़न की और लकड़ी की फिक्र करनी थी। घर में तो पैसा-इस तरह गायब था, जैसे चील के घोंसले में मांस ?

बाप-बेटे रोते हुए गाँव के जमींदार के पास गये। वह इन दोनों की सूरत से नफरत करते थे। कई बार इन्हें अपने हाथों से पीट चुके थे। चोरी करने के लिए, वादे पर काम पर न आने के लिए। पूछा- क्या है वे घिसुआ, रोता क्यों है? अब तो तू कहीं दिखलाई भी नहीं देता ! मालूम होता है, इस गाँव में रहना नहीं चाहता।

घीसू ने जमीन पर सिर रखकर आँखों में आँसू भरे हुए कहा सरकार ! बड़ी विपत्ति में हूँ। माधव की घरवाली रात को गुजर गई। रात-भर तड़पती रही सरकार ! हम दोनों उसके सिरहाने बैठे रहे। दवा-दारू जो कुछ हो सका, सब कुछ किया, मुदा वह हमें दगा दे गई। अब कोई एक रोटी देने वाला भी न रहा मालिक ! तबाह हो गये। घर उजड़ गया। आपका गुलाम हूँ, अब आपके सिवा कौन उसकी मिट्टी पार लगायेगा। हमारे हाथ में तो जो कुछ था, वह सब तो दवा-दारू में उठ गया। सरकार ही की दया होगी तो उसकी मिट्टी उठेगी। आपके सिवा किसके द्वार पर जाऊँ।

जमींदार साहब दयालु थे। मगर घीसू पर दया करना काले कम्बल पर रंग चढ़ाना था। जी में तो आया, कह दें, चल, दूर हो यहाँ से। यों तो बुलाने से भी नहीं आता, आज जब गरज पड़ी तो आकर खुशामद कर रहा है। हरामखोर कहीं का, बदमाश ! लेकिन यह क्रोध या दण्ड का अवसर न था। जी में कुढ़ते हुए दो रुपये निकालकर फेंक दिये। मगर सान्त्वना का एक शब्द भी मुँह से न निकला। उसकी तरफ ताका तक नहीं। जैसे सिर का बोझ उतारा हो।

जब जमींदार साहब ने दो रुपये दिये, तो गाँव के बनिये-महाजनों को इनकार का साहस कैसे होता ? घीसू जमींदार के नाम का ढिंढोरा भी पीटना जानता था। किसी ने दो आने दिये, किसी ने चार आने। एक घंटे में घीसू के पास पाँच रुपये की अच्छी रकम जमा हो गई। कहीं से अनाज मिल गया, कहीं से लकड़ी। और दोपहर को घीसू और माधव बाज़ार से कफ़न लाने चले। इधर लोग बाँस-वाँस काटने लगे।

गाँव की नर्मदिल स्त्रियाँ आ-आकर लाश देखती थीं और उसकी बेकसी पर दो बूँद आँसू गिराकर चली जाती थीं।

बाजार में पहुँचकर घीसू बोला- लकड़ी तो उसे जलाने-भर को मिल गई है, क्यों माधव !

माधव बोला-हाँ, लकड़ी तो बहुत है, अब कफ़न चाहिए।

'तो चलो, कोई हलका-सा कफ़न ले लें।'

'हाँ, और क्या ! लाश उठते-उठते रात हो जायेगी। रात को कफ़न कौन देखता है?'

'कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफ़न चाहिए।'

'कफ़न लाश के साथ जल ही तो जाता है।'

'और क्या रखा रहता है? यही पाँच रुपये पहले मिलते, तो कुछ दवा-दारू कर लेते।'

दोनों एक-दूसरे के मन की बात ताड़ रहे थे। बाज़ार में इधर-उधर घूमते रहे। कभी इस बजाज की दूकान पर गये, कभी उसकी दूकान पर ! तरह-तरह के कपड़े, रेशमी और सूती देखे, मगर कुछ जँचा नहीं। यहाँ तक कि शाम हो गई। तब दोनों न जाने किस दैवी प्रेरणा से एक मधुशाला के सामने जा पहुँचे। और जैसे किसी पूर्व निश्चित व्यवस्था से अन्दर चले गये। वहाँ जरा देर तक दोनों असमंजस में खड़े रहे। फिर घीसू ने गद्दी के सामने जाकर कहा-साहूजी, एक बोतल हमें भी देना।

उसके बाद कुछ चिखौना आया, तली हुई मछली आई और दोनों बरामदे में बैठकर शान्तिपूर्वक पीने लगे।

कई कुज्जियाँ ताबड़तोड़ पीने के बाद दोनों सरूर में आ गये।

घीसू बोला- कफ़न लगाने से क्या मिलता ? आखिर जल ही तो जाता। कुछ बहू के साथ तो न जाता।

माधव आसमान की तरफ देखकर बोला, मानों देवताओं को अपनी निष्पापता का साक्षी बना रहा हो दुनिया का दस्तूर है, नहीं लोग बाँभनों को हजारों रुपये क्यों दे देते हैं? कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं!

'बड़े आदमियों के पास धन है, फूँकें। हमारे पास फूंकने को क्या है?'

'लेकिन लोगों को जवाब क्या दोगे? लोग पूछेंगे नहीं, कफ़न कहाँ है ?'

घीसू हँसा अबे, कह देंगे कि रुपये कमर से खिसक गये। बहुत ढूँढ़ा, मिले नहीं।

लोगों को विश्वास न आयेगा, लेकिन फिर वही रुपये देंगे।

माधव भी हँसा - इस अनपेक्षित सौभाग्य पर। बोला-बड़ी अच्छी थी बेचारी। मरी तो खूब खिला-पिलाकर !

आधी बोतल से ज्यादा उड़ गई। घीसू ने दो सेर पूड़ियाँ मँगाई। चटनी, अचार, कलेजियाँ। शराबखाने के सामने ही दूकान थी। माधव लपककर दो पत्तलों में सारे सामान

ले आया। पूरा डेढ़ रुपया खर्च हो गया। सिर्फ थोड़े से पैसे बच रहे।

दोनों इस वक्त इस शान में बैठे पूड़ियाँ खा रहे थे जैसे जंगल में कोई शेर अपना शिकार उड़ा रहा हो। न जवाबदेही का खौफ़ था, न बदनामी की फ़िक्र। इन सब भावन्ाओं को उन्होंने बहुत पहले ही जीत लिया था।

धीसू दार्शनिक भाव से बोला- हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे पुन्न न होगा ?

माधव ने श्रध्दा से सिर झुकाकर तसदीक की जरूर-से-जरूर होगा। भगवान, तुम अन्तर्यामी हो। उसे बैकुण्ठ ले जाना। हम दोनों हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं। आज जो भोजन मिला वह कभी उम्र-भर न मिला था।

एक क्षण के बाद माधव के मन में एक शंका जागी। बोला- क्यों दादा, हम लोग भी एक-न-एक दिन वहाँ जायेंगे ही ?

घीसू ने इस भोले-भाले सवाल का कुछ उत्तर न दिया। वह परलोक की बातें सोचकर इस आनन्द में बाधा न डालना चाहता था।

'जो वहाँ हम लोगों से पूछे कि तुमने हमें कफ़न क्यों नहीं दिया तो क्या कहोगे ?'

'कहेंगे तुम्हारा सिर!'

'पूछेगी तो जरूर !'

'तू कैसे जानता है कि उसे कफ़न न मिलेगा ? तू मुझे ऐसा गधा समझता है? साठ साल क्या दुनिया में घास खोदता रहा हूँ ? उसको कफ़न मिलेगा और बहुत अच्छा मिलेगा !'

माधव को विश्वास न आया। बोला- कौन देगा? रुपये तो तुमने चट कर दिये। वह

तो मुझसे पूछेगी। उसकी माँग में तो सेंदुर मैंने डाला था।

'कौन देगा, बताते क्यों नहीं ?'

'वही लोग देंगे, जिन्होंने अबकी दिया। हाँ, अबकी रुपये हमारे हाथ न आयेंगे।'

ज्यों-ज्यों अँधेरा बढ़ता था और सितारों की चमक तेज होती थी, मधुशाला की रौनक भी बढ़ती जाती थी। कोई गाता था, कोई डींग मारता था, कोई अपने संगी के गले

लिपटा जाता था। कोई अपने दोस्त के मुँह में कुल्हड़ लगाये देता था।

वहाँ के वातावरण में सरूर था, हवा में नशा। कितने तो यहाँ आकर एक चुल्लू में मस्त हो जाते थे। शराब से ज्यादा यहाँ की हवा उन पर नशा करती थी। जीवन की

बाधाएं यहाँ खींच लाती थीं और कुछ देर के लिए यह भूल जाते थे कि वे जीते हैं या मरते हैं। या न जीते हैं, न मरते हैं।

और यह दोनों बाप-बेटे अब भी मजे ले-लेकर चुसकियाँ ले रहे थे। सबकी निगाहें इनकी ओर जमी हुई थीं। दोनों कितने भाग्य के बली हैं! पूरी बोतल बीच में है।

भरपेट खाकर माधव ने बची हुई पूड़ियों का पत्तल उठाकर एक भिखारी को दे दिया, जो खड़ा इनकी ओर भूखी आँखों से देख रहा था। और देने के गौरव, आनन्द और उल्लास का अपने जीवन में पहली बार अनुभव किया।

घीसू ने कहा-ले जा, खूब खा और आशीर्वाद दे ! जिसकी कमाई है, वह तो मर गई। मगर तेरा आशीर्वाद उसे जरूर पहुँचेगा। रोयें-रोयें से आशीर्वाद दो, बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं!

माधव ने फिर आसमान की तरफ देखकर कहा- वह बैकुण्ठ में जायेगी दादा, बैकुण्ठ की रानी बनेगी।

घीसू खड़ा हो गया और जैसे उल्लास की लहरों में तैरता हुआ बोला- हाँ, बेटा बैकुण्ठ में जायेगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई। वह न बैकुण्ठ में जायेगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं, और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं ?

श्रद्धालुता का यह रंग तुरन्त ही बदल गया। अस्थिरता नशे की खासियत है। दुःख और निराशा का दौरा हुआ।

माधव बोला- मगर दादा, बेचारी ने जिन्दगी में बड़ा दुःख भोगा। कितना दुःख झेलकर मरी !

वह आँखों पर हाथ रखकर रोने लगा, चीखें मार-मारकर।

घीसू ने समझाया-क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह माया-जाल से मुक्त हो गई, जंजाल से छूट गई। बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्द माया-मोह के बन्धन तोड़ दिये। और दोनों खड़े होकर गाने लगे-

'ठगिनी क्यों नैना झमकावे ! ठगिनी।

पियक्कड़ों की आँखें इनकी ओर लगी हुई थीं और यह दोनों अपने दिल में मस्त गाये जाते थे। फिर दोनों नाचने लगे। उछले भी, कूदे भी। गिरे भी, मटके भी। भाव भी बताये, अभिनय भी किये। और आखिर नशे से मदमस्त होकर वहीं गिर पड़े।

कफन (संक्षिप्त परिचय)

प्रेमचंद के कहानी साहित्य में 'कफन' एक ऐसी कहानी है, जिसमें ज़िन्दगी को अपनी पूरी सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया गया है। अपने यथार्थ धरातल के कारण प्रेमचंद की सभी कहानियों में से यह अत्युदात्त मानी गयी है। इस में सर्वहारा वर्ग अपनी दयनीय और भयावह स्थिति में प्रकट है। इस कहानी की मूल समस्या बेरोज़गारी, निकम्मी समाज-व्यवस्था, सामन्तवादी परिस्थिति आदि से संबान्धित है। सर्वहारा वर्ग कितना विवश, दयनीय, स्वार्थी, कमज़ोर और अकर्मण्य हो जाता है, इसका यथातथ्य चित्रण इसमें है। तत्कालीन समाज की अव्यवस्था के कारण उपस्थित आर्थिक विषमता और महाजनी सभ्यता के प्रभाव से पारिवारिक संबन्धों का टूटना इसमें चर्चित है। इस कहानी के मुख्य पात्र माधव और घीसू इस शिथिल पारिवारिक संबन्धों के शैथिल्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

▶ 'मामूली बाप-बेटे के मामूली सोच- विचार

'कफन' के कथानक का आरंभ घीसू और माधव के दीन-हीन एवं कारुणिक पारिवारिक परिस्थिति के संकेत से होता है। गाँव के मामूली बाप-बेटे है धीसू और माधव। माधव की पत्नी को बच्चा होनेवाला है और वह प्रसव पीड़ा से छटपटा रही है, जबकि झोंपडी के द्वार पर घीसू और माधव दोनों उदास बैठे आलू खा रहे थे। बुधिया की चिंता से बढ़कर उनके लिए आलू की कीमत ज़्यादा है। दोनों यही सोचते हैं कि बुधिया कितनी जल्दी मरे ताकि वे आराम से सो सके।उसकी पीड़ा के ओर जीवन के प्रति उनकी तट स्थता वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था की दें है।

▶ 'ग्रामीण जीवन की अव्यवस्था, रूढिग्रस्तता और बेकारी का चित्रण

कोठरी में माधव की पत्नी मर जाती है। पहले तो दोनों हाय-हाय करते हैं, परंतु फिर कफ़न और लकडी के लिए चंदा इकट्ठा करते हैं। दोनों बाप-बेटे कफ़न खरीदने के लिए दुकान पर जाते हैं, कई दुकानों पर चक्कर लगाते हैं, कुछ नहीं खरीदते और शाम हो जाती है। जहाँ दोनों बाप-बेटे अनायास किसी देवी प्रेरणा से एक मधुशाला के सामने आ पहुँचते हैं और कफ़न के पैसों से तली हुई मछलियों, चिखौना आदि खाकर ख़ूब पेट भर शराब पी जाते हैं। शराब की नशे में चूर होकर गाने- नाचने लगते हैं, उछलते कूदते हैं। फिर दोनों भरे दिल से बुधिया को आशीर्वाद देते है कि वह वैकुण्ठ जाएगी। इस प्रकार इस कहानी में ग्रामीण जीवन की अव्यवस्था, रूढिग्रस्तता और बेकारी का चित्रण सफलतापूर्वक हुआ है।

▶ 'सामाजिक विसंगति का चित्रण

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर इतना चुभता व्यंग्य जो कफ़न में प्रस्तुत है अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। धीसु और माधव की अकर्मण्यता, बेईमानी और निठल्ले पन की जिम्मेदारी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर ही है। व्यक्तिगत रूप से घीसू और माधव पर नहीं। बुधिया के तडप-तडपकर मरने के बाद जिस समाज के लोग कफन के लिए जी खोलकर पैसा देते हैं, वे मृत्यु से संघर्ष करने वालों की रक्षा के लिए ऊँगली नहीं उठाते।

SGOU

▶ मानवीय संबन्ध भूख के सामने शिथिल है

इस कहानी के यह विदित होता है कि सामाजिक विषमता का सामना करते-करते घीसू और माधव जड बन गये थे। करुणा, सहानुभूति आदि भाव उनके हृदय से लुप्त हो गए थे। मानवीय संबन्ध भूख के सामने शिथिल हो रहे हैं। 'कफन' में प्रेमचंद अपनी भौतिकवादी दृष्टि स्थापित करते हुए मानवीय संबन्धों के खोखलेपन और मूल्य हीनता की भी पहचान कराते हैं।

▶ मज़दूर वर्गो की शोचनीयता और सामाजिक समस्याओं का वर्णन

समाज में प्रचलित महाजनी सभ्यता की निस्सारता, धार्मिक पाखंड, असन्तुलित अर्थ व्यवस्था, मज़दूर वर्गों की शोचनीयता आदि सामाजिक समस्याओं को कफ़न में प्रेमचंद जी ने उठाया है। शिल्प की खूबी यह है कि कहानीकार ने सामाजिक यथार्थ को किसी उपदेश या आदर्श के माध्यम से नहीं बल्कि व्यंजना के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कहानी के अंत में उभरता तीखा व्यंग्य लेखक के हृदय का आक्रोश है। कहानी में धन की कमी ,दरिद्रता और मानवता की कमी ,संवेदना की निर्ममता -दोनों का यथार्थपरक चित्रण है।

2.4.2 पंच-परमेश्वर

1

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन- देन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गये थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गये थे और अलगू जब कभी बाहर जाते, तो जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे। उनमें न खान-पान का व्यवहार था, न धर्म का नाता, केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूलमंत्र भी यही है।

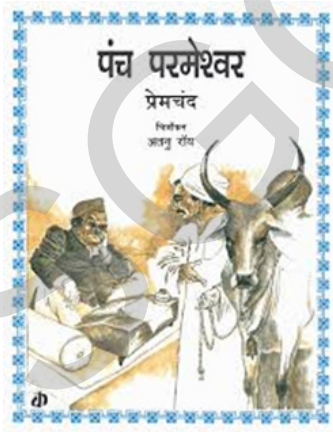

इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ, जब दोनों मित्र बालक ही थे। और जुम्मन के पूज्य पिता, जुमराती, उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे। अलगू ने गुरू जी की बहुत सेवा की थी, खूब रकाबियाँ माँजी, खूब प्याले धोये। उनका हुक्का एक क्षण के लिए भी विश्राम न लेने पाता था, क्योंकि प्रत्येक चिलम अलगू को आध घंटे तक किताबों से अलग कर देती थी। अलगू के पिता पुराने विचारों के मनुष्य थे। उन्हें शिक्षा की अपेक्षा गुरू की सेवा- सुश्रूषा पर अधिक विश्वास था। वह कहते थे कि विद्या पढ़ने से नहीं आती। जो कुछ होता है, गुरू के आशीर्वाद से। बस, गुरू जी की कृपा-दृष्टि चाहिए। अतएव यदि अलगू पर जुमराती शेख के आशीर्वाद अथवा सत्संग का कुछ फल न हुआ, तो यह मान कर संतोष कर लेगा कि विद्योपार्जन में मैंने यथाशक्ति कोई बात उठा नहीं रखी, विद्या उसके भाग्य ही में न थी, तो कैसे आती ?

मगर जुमराती शेख स्वयं आशीर्वाद के कायल न थे। उन्हें अपने सोटे पर अधिक भरोसा था और उसी सोटे के प्रताप से आज आस-पास के गाँवों में जुम्मन की पूजा होती थी। उनके लिखे हुए रेहननामे या बैनामे पर कचहरी का मुहर्रिर भी कलम न उठा सकता था। हल्के का डाकिया, कांस्टेबिल और तहसील का चपरासी - सब उनकी कृपा की आकांक्षा रखते थे। अतएव अलगू का मान उनके धन के कारण था, तो जुम्मन शेख अपनी अनमोल विद्या से ही सबके आदरपात्र बने थे।

2

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला (मौसी) थी। उसके पास कुछ थोड़ी-सी मिल्कियत थी; परन्तु उसके निकट संबंधियों में कोई न था। जुम्मन ने लम्बे-चौड़े वादे करके वह मिल्कियत अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री न हुई थी, तब तक खालाजान का खूब आदर-सत्कार किया गया। उन्हें खूब स्वादिष्ट पदार्थ खिलाये गये। हलवे-पुलाव की वर्षा-सी की गयी; पर रजिस्ट्री की मोहर ने इन खातिरदारियों पर भी मानो मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज, तीखे सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख भी निठुर हो गये। अब बेचारी खालाजान को प्रायः नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं।

बुढ़िया न जाने कब तक जियेगी। दो-तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया, मानो मोल ले लिया है! बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरती ! जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव मोल ले लेते।

कुछ दिन खालाजान ने सुना और सहा; पर जब न सहा गया तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने स्थानीय कर्मचारी गृहस्वामी- के प्रबंध में दखल देना उचित न समझा। कुछ दिन तक और यों ही रो-धोकर काम चलता रहा। अंत में एक दिन खाला ने जुम्मन से कहा-बेटा! तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अपना पका-खा लूँगी।

जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया- रुपये क्या यहाँ फलते हैं? खाला ने नम्रता से कहा मुझे कुछ रूखा-सूखा चाहिए भी कि नहीं ?

जुम्मन ने गम्भीर स्वर से जवाब दिया- तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि तुम

मौत से लड़ कर आयी हो ?

खाला बिगड़ गयीं, उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकारी हिरन को जाल की तरफ आते देख कर मन ही मन हँसता है। वह बोले- हाँ, जरूर पंचायत करो। फैसला हो जाय। मुझे भी यह रात-दिन की खटखट पसंद नहीं।

पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी संदेह न था। आस-

पास के गाँवों में ऐसा कौन था, जो उसके अनुग्रहों का ऋणी न हो; ऐसा कौन था, जो उसको शखु बनाने का साहस कर सके ? किसमें इतना बल था, जो उसका सामना कर सके ? आसमान के फरिश्ते तो पंचायत करने आवेंगे ही नहीं।

3

इसके बाद कई दिन तक बूढ़ी खाला हाथ में एक लकड़ी लिये आस-पास के गाँवों में दौड़ती रही। कमर झुक कर कमान हो गयी थी। एक-एक पग चलना दूभर था; मगर बात आ पड़ी थी। उसका निर्णय करना जरूरी था।

बिरला ही कोई भला आदमी होगा, जिसके सामने बुढ़िया ने दुःख के आँसू न बहाये हों। किसी ने तो यों ही ऊपरी मन से हूँ-हाँ करके टाल दिया और किसी ने इस अन्याय पर जमाने को गालियाँ दीं ! कहा- कब्र में पाँव लटके हुए हैं, आज मरे, कल दूसरा दिन,

पर हवस नहीं मानती। अब तुम्हें क्या चाहिए? रोटी खाओ और अल्लाह का नाम लो। तुम्हें अब खेती-बारी से क्या काम है? कुछ ऐसे सज्जन भी थे, जिन्हें हास्य-रस के रसास्वादन का अच्छा अवसर मिला। झुकी हुई कमर, पोपला मुँह, सन केसे बाल इतनी सामग्री एकत्र हों, तब हँसी क्यों न आवे? ऐसे न्यायप्रिय, दयालु, दीन-वत्सल पुरुष बहुत कम थे, जिन्होंने उस अबला के दुखड़े को गौर से सुना हो और उसको सांत्वना दी हो। चारों ओर से घूम-घाम कर बेचारी अलगू चौधरी के पास आयी। लाठी पटक दी और दम लेकर बोली बेटा, तुम भी दम-भर के लिए मेरी पंचायत में चले आना। अलगू मुझे बुला कर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही ?

खाला अपनी विपद तो सबके आगे रो आयी। अब आने न आने का अख्तियार उनको है।

अलगू यों आने को आ जाऊँगा; मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

खाला- 'क्यों बेटा' ?

अलगू-अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी खुशी। जुम्मन मेरा पुराना मित्र है।

उससे बिगाड़ नहीं कर सकता'।

खाला- 'बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे ?

हमारे सोये हुए धर्म-ज्ञान की सारी सम्पत्ति लुट जाय, तो उसे खबर नहीं होती, परन्तु ललकार सुन कर वह सचेत हो जाता है। फिर उसे कोई जीत नहीं सकता। अलगू इस

सवाल का कोई उत्तर न दे सका, पर उसके हृदय में ये शब्द गूँज रहे थे- क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे ?

4

संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। शेख जुम्मन ने पहले से ही फर्श बिछा रखा था। उन्होंने पान, इलायची, हुक्के तम्बाकू आदि का प्रबन्ध भी किया था। हाँ, वह स्वयं अलबत्ता अलगू चौधरी के साथ जरा दूर पर बैठे हुए थे। जब पंचायत में कोई आ जाता था, तब दबे हुए सलाम से उसका स्वागत करते थे। जब सूर्य अस्त हो गया और चिड़ियों की कलरवयुक्त पंचायत पेड़ों पर बैठी, तब यहाँ भी पंचायत शुरू हुई। फर्श की एक-एक अंगुल जमीन भर गयी; पर अधिकांश दर्शक ही थे। निमंत्रित महाशयों में से केवल वे ही लोग पधारे थे, जिन्हें जुम्मन से अपनी कुछ कसर निकालनी थी। एक कोने में आग सुलग रही थी। नाई ताबड़तोड़ चिलम भर रहा था। यह निर्णय करना असम्भव था कि सुलगते हुए उपलों से अधिक धुआँ निकलता था या चिलम के दमों से। लड़के इधर-उधर दौड़ रहे थे। कोई आपस में गाली-गलौज करते और कोई रोते थे। चारों तरफ कोलाहल मच रहा था। गाँव के कुत्ते इस जमाव को भोज समझ कर झुंड के झुंड जमा हो गये थे।

पंच लोग बैठ गये, तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की-

'पंचों, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। इसे आप लोग जानते ही होंगे। जुम्मन ने मुझे ता-हयात रोटी-कपड़ा देना कबूल किया। साल-भर तो मैंने इसके साथ रो-धोकर काटा। पर अब रात-दिन का रोना नहीं सहा जाता। मुझे न पेट की रोटी मिलती है न तन का कपड़ा। बेकस बेवा हूँ। कचहरी दरबार नहीं कर सकती। तुम्हारे सिवा और किसको अपना दुःख सुनाऊँ ? तुम

लोग जो राह काल दो, उसी राह पर चलूँ। अगर मुझमें कोई ऐब देखो, तो मेरे मुँह पर थप्पड़ मारो। जुम्मन में बुराई देखो, तो उसे समझाओ, क्यों एक बेकस की आह लेता है! मैं पंचों का हुक्म सिर-माथे पर चढ़ाऊँगी।'

रामधन मिश्र, जिनके कई असामियों को जुम्मन ने अपने गाँव में बसा लिया था, बोले- जुम्मन मियाँ, किसे पंच बदते हो? अभी से इसका निपटारा कर लो। फिर जो कुछ पंच कहेंगे, वही मानना पड़ेगा।

जुम्मन को इस समय सदस्यों में विशेषकर वे ही लोग दीख पड़े, जिनसे किसी न किसी कारण उनका वैमनस्य था। जुम्मन बोले- पंचों का हुक्म अल्लाह का हुक्म है। खालाजान जिसे चाहें, उसे बढ़ें। मुझे कोई उज्र नहीं।

खाला ने चिल्ला कर कहा- अरे अल्लाह के बन्दे ! पंचों का नाम क्यों नहीं बता देता? कुछ मुझे भी तो मालूम हो।

जुम्मन ने क्रोध से कहा-अब इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ। तुम्हारी बन पड़ी है, जिसे चाहो, पंच बदो।

खालाजान जुम्मन के आक्षेप को समझ गयीं, वह बोलीं बेटा, खुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन, कैसी बात करते हो। और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो, तो जाने दो अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच बदती हूँ।

जुम्मत्त शेख आनंद से फूल उठे, परंतु भावों को छिपा कर बोले- अलगू ही सही, मेरे लिए जैसे रामधन वैसे अलगू।

अलगू इस झमेले में फँसना नहीं चहते थे। वे कन्नी काटने लगे। बोले-खाला, तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है।

खाला ने गम्भीर स्वर में कहा- .बेटा, दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंच के दिल में खुदा बसता है। पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ से निकलती है।

अलगू चौधरी सरपंच हुए। रामधन मिश्र और जुम्मन के दूसरे विरोधियों ने बुढ़िया को मन में बहुत कोसा।

अलगू चौधरी बोले- शेख जुम्मन। हम और तुम पुराने दोस्त हैं। जब काम पड़ा, तुमने हमारी मदद की है और हम भी जो कुछ बन पड़ा, तुम्हारी सेवा करते रहे हैं; मगर इस समय तुम और बूढ़ी खाला, दोनों हमारी निगाह में बराबर हो। तुमको पंचों से जो कुछ अर्ज करनी हो, करो।

जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाजी मेरी है। अलगू यह सब दिखावे की बातें कर रहा है। अतएव शांतचित्त होकर बोले- पंचों, तीन साल हुए खालाजान ने अपनी जायदाद मेरे नाम हिब्बा कर दी थी। मैंने उन्हें ता-हयात खाना-कपड़ा देना कबूल किया था। खुदा गवाह है, आज तक मैंने खालाजान को कोई तकलीफ नहीं दी। मैं उन्हें अपनी माँ के समान समझता हूँ। उनकी खिदमत करना मेरा फर्ज है; मगर औरतों में जरा अनबन रहती है, इसमें मेरा क्या बस है? खालाजान मुझसे माहवार खर्च अलग माँगती हैं। जायदाद जितनी है; वह पंचों से छिपी नहीं। उससे इतना मुनाफा नहीं होता है कि माहवार खर्च दे सकूँ। इसके अलावा हिब्बानामे में माहवार खर्च का कोई जिक्र नहीं। नहीं तो मैं भूल कर भी इस झमेले में न पड़ता। बस, मुझे यही कहना है। आइंदा पंचों को अख्तियार है, जो फैसला चाहें, करें।

अलगू चौधरी को हमेशा कचहरी से काम पड़ता था। अतएव वह पूरा कानूनी आदमी था। उसने जुम्मन से जिरह शुरू की। एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ता था। रामधन मिश्र इन प्रश्नों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन चकित थे

कि अलगू को क्या हो गया। अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था ! इतनी ही देर में ऐसी कायापलट हो गयी कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर यह निकाल रहा है? क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आवेगी ?

जुम्मन शेख तो इसी संकल्प-विकल्प में पड़े हुए थे कि इतने में अलगू ने फैसला सुनाया-

जुम्मन शेख ! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह नीति संगत मालूम होता है कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाय। हमारा विचार है कि खाला की जायदाद से इतना मुनाफा अवश्य होता है कि माहवार खर्च दिया जा सके। बस, यही हमारा फैसला है। अगर जुम्मन को खर्च देना मंजूर न हो, तो हिब्बनामा रद्द समझा जाय।

यह फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गये। जो अपना मित्र हो, वह शखु का व्यवहार करे और गले पर छुरी फेरे, इसे समय के हेर-फेर के सिवा और क्या कहें? जिस पर पूरा भरोसा था, उसने समय पड़ने पर धोखा दिया। ऐसे ही अवसरों पर झूठे-सच्चे मित्रों की परीक्षा की जाती है। यही कलयुग की दोस्ती है। अगर लोग ऐसे कपटी- धोखेबाज न होते, तो देश में आपत्तियों का प्रकोप क्यों होता? यह हैजा-प्लेग आदि व्याधियाँ दुष्कर्मों के ही दंड हैं।

मगर रामधन मिश्र और अन्य पंच अलगू चौधरी की इस नीति-परायणता की प्रशंसा जी खोलकर कर रहे थे। वे कहते थे- इसका नाम पंचायत है! दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। दोस्ती, दोस्ती की जगह है, किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत्यवादियों के बल पर पृथ्वी ठहरी है, नहीं तो वह कब की रसातल को चली जाती। इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। अब वे साथ-साथ बातें करते नहीं दिखायी देते। इतनी पुरानी मित्रता-रूपी वृक्ष सत्य का एक झोंका भी न सह सकी। सचमुच यह बालू की ही जमीन पर खड़ी थी

उनमें अब शिष्टाचार का अधिक व्यवहार होने लगा। एक-दूसरे की आवभगत ज्यादा करने लगा। वे मिलते-जुलते थे, मगर उसी तरह जैसे तलवार से ढाल मिलती है।

जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खटका करती थी। उसे हर घड़ी यह चिंता रहती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले।

5

अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है; पर बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं होती; जुम्मन को भी बदला लेने का अवसर जल्द ही मिल गया। पिछले साल अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी गोई मोल लाये थे। बैल पछाहीं जाति के

सुंदर, बड़े-बड़े सींगों वाले थे। महीनों तक आस-पास के गाँव के लोग दर्शन करते रहे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने के बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया।

जुम्मन ने दोस्तों से कहा- यह दागाबाजी की सजा है। इन्सान सब भले ही कर जाय, पर खुदा नेक-बद सब देखता है। अलगू को संदेह हुआ कि जुम्मन ने बैल को विष दिला दिया है। चौधराइन ने भी जुम्मन पर ही इस दुर्घटना का दोषारोपण किया। उसने कहा- जुम्मन ने कुछ कर-करा दिया है। चौधराइन और करीमन में इस विषय पर एक दिन खूब ही वाद-विवाद हुआ। दोनों देवियों ने शब्द-बाहुल्य की नदी बहा दी। व्यंग्य, वक्रोक्ति, अन्योक्ति और उपमा आदि अलंकारों में बातें हुई। जुम्मन ने किसी तरह शांति स्थापित की। उन्होंने अपनी पत्नी को डाँट-डपट कर समझा दिया। वह उसे रणभूमि से हटा भी ले गये। उधर अलगू चौधरी ने समझाने-बुझाने का काम अपने तर्कपूर्ण सोटे से लिया।

अब अकेला बैल किस काम का? उसका जोड़ बहुत ढूँढ़ा गया, पर न मिला। निदान यह सलाह ठहरी कि इसे बेच डालना चाहिए। गाँव में एक समझू साहु थे, वह इक्का-गाड़ी हाँकते थे। गाँव से गुड़-धी लाद कर मंडी ले जाते, मंडी से तेल, नमक भर लाते और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। उन्होंने सोचा, यह बैल हाथ लगे तो दिन-भर में बेखटके तीन खेप हों। आजकल तो एक ही खेप में लाले पड़े रहते हैं। बैल देखा, गाड़ी में दौड़ाया, बाल-भौरी की पहचान करायी, मोल तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बाँध ही दिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी गरज थी ही, घाटे की परवा न की।

समझू साहु ने नया बैल पाया, तो लगे उसे रगेदने। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे। न चारे की फिक्र थी, न पानी की बस खेपों से काम था। मंडी ले गये, वहाँ कुछ सूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न लेने पाया था कि फिर जोत दिया। अलगू चौधरी के घर तो चैन की बंशी बजती थी। बैलराम छठे छमाहें कभी बहली में जोते जाते थे। खूब उछलते-कूदते और कोसों तक दौड़ते चले जाते थे। वहाँ बैलराम का रातिब था, साफ पानी, दली हुई अरहर की दाल और भूसे के साथ खली और यही नहीं, कभी-कभी घी का स्वाद भी चखने को मिल जाता था। शाम-सबेरे एक आदमी खरहरे करता, पोंछता और सहलाता था। कहाँ वह सुख-चैन, कहाँ यह आठों पहर की खपत ! महीने भर ही में वह पिस-सा गया। इक्के का जुआ देखते ही उसका लहू सूख जाता था। एक-एक पग चलना दूभर था। हड्डियाँ निकल आयी थीं; पर था वह पानीदार, मार की बरदाश्त न थी।

एक दिन चौथी खेप में साहु जी ने दूना बोझ लादा। दिन-भर का थका जानवर, पैर न उठते थे। पर साहु जी कोड़े फटकारने लगे। बस, फिर क्या था, बैल कलेजा तोड़ कर चला। कुछ दूर दौड़ा और चाहा कि जरा दम ले लूँ; पर साहु जी को जल्द पहुँचने की फिक्र थी; अतएव उन्होंने कई कोड़े बड़ी निर्दयता से फटकारे। बैल ने एक बार फिर जोर लगाया; पर अबकी बार शक्ति ने जवाब दे दिया। वह धरती पर गिर

पड़ा और ऐसा गिरा कि फिर न उठा। साहु जी ने बहुत पीटा, टाँग पकड़ कर खींचा, नथनों में लकड़ी ट्रेंस दी पर कहीं मृतक भी उठ सकता है? तब साहु जी को कुछ शक हुआ। उन्होंने बैल को गौर से देखा, खोल कर अलग किया और सोचने लगे कि गाड़ी कैसे घर पहुँचे। बहुत चीखे-चिल्लाये; पर देहात का रास्ता बच्चों की आँख की तरह साँझ होते ही बंद हो जाता है। कोई नजर न आया। आस-पास कोई गाँव भी न था। मारे क्रोध के उन्होंने मरे हुए बैल पर और दुर्रे लगाये और कोसने लगे- अभागे। तुझे मरना ही था, तो घर पहुँच कर मरता ! ससुरा बीच रास्ते ही में मर रहा! अब गाड़ी कौन खींचे? इस तरह साहु जी खूब जले-भुने। कई बोरे गुड़ और कई पीपे घी उन्होंने बेचे थे, दो-ढाई सौ रुपये कमर में बँधे थे। इसके सिवा गाड़ी पर कई बोरे नमक के थे, अतएव छोड़ कर जा भी न सकते थे। लाचार बेचारे गाड़ी पर ही लेट गये। वहीं रतजगा करने की ठान ली। चिलम पी, गाया। फिर हुक्का पिया। इस तरह साहु जी आधी रात तक नींद बहलाते रहे। अपनी जान में तो वह जागते ही रहे; पर पौ फटते ही जो नींद टूटी और कमर पर हाथ रखा, तो थैली गायब ! घबरा कर इधर-उधर देखा, तो कई कनस्तर तेल भी नदारत। अफसोस में बेचारे ने सिर पीट लिया और पछाड़ खाने लगा। प्रातःकाल रोते-बिलखते घर पहुँचे। सहुआइन ने जब यह बुरी सुनावनी सुनी, तब पहले तो रोयी, फिर अलगू चौधरी को गालियाँ देने लगी निगोड़े ने ऐसा कुलच्छनी बैल दिया कि जन्म-भर की कमाई लुट गयी।

इस घटना को हुए कई महीने बीत गये। अलगू जब अपने बैल का दाम माँगते तब साहु और सहुआइन, दोनों ही झल्लाये हुए कुत्ते की तरह चढ़ बैठते और अंड-बंड बकने लगते वाह ! यहाँ तो सारे जन्म की कमाई लुट गयी, सत्यानाश हो गया, इन्हें दामों की पड़ी है। मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चले हैं। आँखों में धूल झोंक दी, सत्यानाशी बैल गले बाँध दिया, हमें निरा पोंगा ही समझ लिया है। हम भी बनिये के बच्चे हैं, ऐसे बुद्ध कहीं और होंगे। पहले जाकर किसी गड़हे में मुँह धो आओ, तब दाम लेना। न जी मानता हो, तो हमारा बैल खोल ले जाओ। महीना भर के बदले दो महीना

जोत लो। और क्या लोगे ?

चौधरी के अशुभचिंतकों की कमी न थी। ऐसे अवसरों पर वे भी एकत्र हो जाते

और साहु जी के बरनि की पुष्टि करते। परन्तु डेढ़ सौ रुपये से इस तरह हाथ धो लेना आसान न था। एक बार वह भी गरम पड़े। साहु जी बिगड़ कर लाठी ढूँढ़ने घर चले गये। अब सहुआइन ने मैदान लिया। प्रश्नोत्तर होते-होते हाथापाई की नौबत आ पहुँची। सहुआइन ने घर में घुस कर किवाड़ बंद कर लिये। शोरगुल सुन कर गाँव के भलेमानस जमा हो गये। उन्होंने दोनों को समझाया। साहु जी को दिलासा देकर घर से निकाला। वह परामर्श देने लगे कि इस तरह से काम न चलेगा। पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाय, उसे स्वीकार कर लो। साहु जी राजी हो गये। अलगू ने भी हामी भर ली।

पंचायत की तैयारियों होने लगी। दोनों पक्षों ने अपने-अपने दल बनाने शुरू किये। इसके बाद तीसरे दिन उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी। वही संध्या का समय था। खेतों में कौए पंचायत कर रहे थे। विवादग्रस्त विषय था यह कि मटर की फलियों पर उनका कोई स्वत्व है या नहीं, और जब तक यह प्रश्न हल न हो जाय, तब तक वे रखवाले की पुकार पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट करना आवश्यक समझते थे। पेड़ की डालियों पर बैठी शुक मंडली में यह प्रश्न छिड़ा हुआ था कि मनुष्यों को उन्हें बेमुरौवत कहने का क्या अधिकार है, जब उन्हें स्वयं अपने मित्रों से दगा करने में भी संकोच नहीं होता ?

पंचायत बैठ गयी, तो रामधन मिश्र ने कहा- अब देरी क्या है? पंचों का चुनाव हो जाना चाहिए। बोलो चौधरी, किस-किस को पंच बदते हो।

अलगू ने दीन भाव से कहा- समझू साहु ही चुन लें।

समझू खड़े हुए और कड़क कर बोले- मेरी

ओर से जुम्मन शेख।

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा धक धक करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। रामधन अलगू के मित्र थे। वह बात को ताड़

गये। पूछा- क्यों चौधरी तुम्हें कोई उज्र तो नहीं। चौधरी ने निराश होकर कहा- नहीं, मुझे क्या उज्र होगा ?

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूल कर भटकने लगते हैं तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक बन जाता है।

पत्र-संपादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर आक्रमण करता है; परंतु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिलित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्याय-परायण होती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान है। नवयुवक युवावस्था में कितना उदंड रहता है। माता-पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं! वे उसे कुल-कलंक समझते हैं; परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित-चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है, यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।

जुम्मन शेख के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उसने सोचा, मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में

मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं !

पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने शुरू किये। बहुत देर तक दोनों दल अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते थे। इस विषय में तो सब सहमत थे कि समझू को बैल का मूल्य देना चाहिए। परंतु दो महाशय इस कारण रियायत करना चाहते थे कि बैल के मर जाने से समझू को हानि हुई। इसके प्रतिकूल दो सभ्य मूल के अतिरिक्त समझू को दंड भी देना चाहते थे, जिससे फिर किसी को पशुओं के साथ ऐसी निर्दयता करने का साहस न हो। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया-

अलगू चौधरी और समझू साहु ! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस वक्त उन्होंने बैल लिया, उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय दाम दे दिये जाते, तो आज समझू उसे फेर लेने का आग्रह न करते। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने-चारे का कोई अच्छा प्रबंध न किया गया।

रामधन मिश्र बोले-समझू ने बैल को जान-बूझ कर मारा है, अतएव उससे दंड

लेना चाहिए।

जुम्मन बोले-यह दूसरा सवाल है! हमको इससे कोई मतलब नहीं !

झगडू साहु ने कहा-समझू के साथ कुछ रियायत होनी चाहिए। जुम्मन बोले-यह अलगू चौधरी की इच्छा पर निर्भर है। यह रियासत करें, तो उनकी भलमनसी।

अलगू चौधरी फूले न समाये। उठ खड़े हुए और जोर से बोले- पंच-परमेश्वर की जय !

इसके साथ ही चारों ओर से प्रतिध्वनि हुई- पंच-परमेश्वर की जय !

प्रत्येक मनुष्य जुम्मन की नीति को सराहता था- इसे कहते हैं न्याय ! यह मनुष्य का काम नहीं, पंच में परमेश्वर वास करते हैं, यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है ?

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आये और उनके गले लिपट कर बोले- भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण-घातक शखु बन गया था; पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठ कर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की जबान से खुदा बोलता है। अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल घुल गया। मित्रता की मुरझायी हुई लता फिर हरी हो गयी।

पंच-परमेश्वर(संक्षिप्त परिचय)

▶ पंचायती न्याय व्यवस्था में पंच की मर्यादा और प्रतिष्ठा को दिखाया गया है

मुंशी प्रेमचंद की 'पंच परमेश्वर' एक कालजयी कहानी है, जो न्याय, नैतिकता और आत्मसम्मान के मूल्य पर आधारित है। यह कहानी गांव के सामाजिक ढांचे और पंचायती व्यवस्था को दर्शाती है, जिसमें 'पंच' या न्यायाधीश को 'परमेश्वर' के रूप में माना जाता है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया है कि जब व्यक्ति न्याय करने की स्थिति में होता है, तो उसे निजी हितों और भावनाओं को अलग रखकर निष्पक्ष होकर निर्णय लेना चाहिए।

▶ गांव के दो दोस्त जुम्मन शेख और अलगू चौधरी

बहुत सरल-सीधी, परंपरागत वर्णन-शैली की यह कहानी प्रेमचंद के शुरुआती दौर की कहानियों में शायद सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। लोक में परंपरा से चले आ रहे इस विश्वास का, कि पंच की आत्मा में ईश्वर या खुदा का वास होता है, पंच का आसन साधारण आसन नहीं है, उस पर बैठते ही आदमी का मन निश्छल-निष्पक्ष, देवता का मन हो जाता है, यह कहानी भाष्य प्रतीत होती है। दो विशिष्ट घटना-प्रसंगों से जुड़े दो साधारण पात्रों, दो मित्रों की कहानी है 'पंच-परमेश्वर'। बहुत सरल-सीधी, परंपरागत वर्णन-शैली की यह कहानी प्रेमचंद के शुरु आती दौर की कहानियों में शायद सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। लोक में परंपरा से चले आ रहे इस विश्वास का, कि पंच की आत्मा में ईश्वर या खुदा का वास होता है, पंच का आसन साधारण आसन नहीं है, उस पर बैठते ही आदमी का मन निश्छल-निष्पक्ष, देवता का मन हो जाता है, यह कहानी भाष्य प्रतीत होती है। दो विशिष्ट घटना-प्रसंगों से जुड़े दो साधारण पात्रों, दो मित्रों की कहानी है 'पंच-परमेश्वर'।

▶ जुम्मन की बूढ़ी खाला अपनी ज़मीन का मामला पंचायत में ले आती हैं

मित्र हैं अलगू चौधरी और जुम्मन शेख। खानदानी मैत्री तो उनमें है ही, साझे में खेती-बाड़ी भी होती है। जुम्मन की खाला अपना सब कुछ जुम्मन के नाम करके उनकी आश्रिता की तरह उनके साथ रहती है, 'बूड़ी काकी' की काकी की तरह। जुम्मन की पत्नी खाला के साथ दुर्व्यवहार करती है, और जुम्मन उसकी अनदेखी करते हैं। खाला अंततः जुम्मन के खिलाफ पंचायत बिठाती है। घर-घर जाकर लोगों से फरियाद करती है। जुम्मन के अपने दबदबे के चलते अधिकांश लोग पंचायत में नहीं आते। वहीं आते हैं जो जुम्मन के प्रति मन में गाँठ रखते थे। खाला अलगू चौधरी के पास भी जाती है, परंतु अलगू साफ शब्दों में कहते हैं कि उसके नाते वे जुम्मन से बिगाड़ नहीं करेंगे। हताश खाला अलगू से इतना ही कहती है कि 'बिगाड़ की खातिर क्या ईमान की बात नहीं कहोगे।' खाला का यह वाक्य अलगू के हृदय में चुभ जाता है। वह उनकी चेतना पर बार-बार दस्तक देता है।

▶ अलगू चौधरी को पंच बनाया जाता है

पंचायत बैठती है। खाला अलगू को पंच चुनती है। जुम्मन मन ही मन प्रसन्न होते हैं कि अलगू का फैसला उनके पक्ष में होगा। दोनों ओर की दलीलें सुनने के बाद जुम्मन के खिलाफ फैसला देते हैं। न्याय और धर्म की जीत होती है। अलगू की वाह-वाह होती है। जुम्मन चकित रह जाते हैं। उनकी और अलगू की पुरानी मैत्री लगभग टूट जाती है।

SGOU

संयोगवश एक अन्य संदर्भ में समझ साहु के खिलाफ अलगू को पंचायत बुलानी पड़ती है, जो अलगू से खरीदे बैल का दाम चुकाने से इंकार कर रहा था। इस बार पंच शेख को चुना जाता है। जुम्मन लंबे अर्से से अलगू से प्रतिशोध लेने की सोच रहे थे। उन्हें प्रतिशोध का अवसर मिल जाता है। वे पंच के आसन पर बैठते हैं। दोनों तरफ की दलीलें सुनने के बाद वे फैसला अलगू के पक्ष में देते है। पंच की जय- जयकार होती है। अलगू भी विस्मित परंतु अभिभूत था। वे जुम्मन के गले लग जाते हैं। पुश्तैनी मैत्री फिर बहाल हो जाती है। जुम्मन स्वीकार करते हैं कि उनके मन में कलुष था, परंतु पंच के आसन पर बैठते ही वह धुल गया। सचमुच पंच में परमेश्वर का, खुदा का वास होता है। इस तरह एक नैतिक आदर्श की प्रतिष्ठा इस कहानी में है, जो आदर्श जरूर है, किन्तु अप्राप्य नहीं। अपने दैनंदिन जीवन व्यवहार में हम सोते जागते, सुबह के भूलों को शाम को घर वापस लौटते देखते हैं। यह आरोपित आदर्श नहीं है, हमारे साधारण जीवन-व्यवहारों में देखी गई सच्चाई है। ग्रामीण जीवन और परिवेश से लोक-मन से प्रेमचंद के गहन परिचय का साक्ष्य भी कहानी में है।

▶ वास्तव में पंच में परमेश्वर का वास होता है

कुल मिलाकर, 'पंच परमेश्वर' ने समाज में न्याय, निष्पक्षता, नैतिकता और सच्चाई के मूल्यों को बढ़ावा देने के साथ-साथ ग्रामीण पंचायती व्यवस्था की गरिमा को ऊँचा उठाने का काम किया है।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

"कार्यकुशल व्यक्ति की सभी जगह जरूरत पड़ती है"।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'कफन' कहानी चमारजाती सामंती व्यवस्था के अंत का उद्घोष है, समाज द्वारा दबाया हुआ दलित वर्ग जब समाज की आँख में धूल झोंककर उसके नियमों की धज्जियाँ उड़ाता है। घीसू और माधव इस व्यवस्था से प्रतिशोध लेते प्रतीत होते हैं। वे खुल कर सामाजिक नियमों की रीति-रिवाजों तथा धार्मिक पाखंडों की धज्जियाँ उड़ाते हैं।

वास्तव में 'कफन' प्रेमचंद द्वारा रचित ऐसी कहानी है जो सार्वकालिक और सर्वदेशीय मंच पर अग्रणी स्थान रखती है। इस कहानी में 'भूख' को माध्यम बनाकर उन्होंने जिस संवेदनशून्यता को दर्शाया है, वह अमानवीयता की पराकाष्ठा है।

'पंच परमेश्वर' कहानी में पंच परमेश्वर का विचार इस बात की ओर इशारा करता है कि पंच का दर्जा समाज में परमेश्वर के समान होता है। न्याय करते समय पंच किसी इंसान की तरह नहीं, बल्कि एक उच्च नैतिक शक्ति के प्रतिनिधि के रूप में काम करता है। न्याय की स्थिति में उसे केवल, सच्चाई का साथ देना चाहिए। प्रेमचंद की रचनाएँ हृदयों को हमेशा प्रभावित करती रहती हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'कफन' कहानी की सारांश लिखिए।
2. 'भूख' को माध्यम बनाकर प्रेमचंद ने जिस संवेदनशून्यता को दर्शाया है, वह अमानवीयता की पराकाष्ठा है'। स्पष्ट कीजिए।
3. 'पंच परमेश्वर' कहानी की सारांश लिखिए।
4. 'पंच परमेश्वर' ने समाज में न्याय, निष्पक्षता, नैतिकता और सच्चाई के मूल्यों को बढ़ावा देने के साथ-साथ ग्रामीण पंचायती व्यवस्था की गरिमा को ऊँचा उठाने का काम किया है'। सिद्ध कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मजदूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 03

उपन्यासकार प्रेमचंद

Block Content

Unit 1 : हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का स्थान, उपन्यासकार प्रेमचंद प्रमुख उपन्यास - संक्षिप्त परिचय

Unit 2 : गोदान

Unit 3 : 'गोदान'-कथानक, 'गोदान'-आदर्श एवं यथार्थ, 'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य, गोदान की पात्र - योजना

Unit 4 : गोदान में ग्रामीण और नगरीय कथाओं का विवेचन,गोदान की समस्याएँ

SGOU

इकाई 1

हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का स्थान
उपन्यासकार प्रेमचंद
प्रमुख उपन्यास - संक्षिप्त परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का स्थान समझता है
- उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद की देन से अवगत होता है
- 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'गोदान' आदि उपन्यासों से परिचित होता है
- 'निर्मला', 'मंगलसूत्र', 'गबन' आदि उपन्यासों का सारंश समझता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रेमचंद को हिन्दी और उर्दू के महानतम लेखकों में शुमार किया जाता है। प्रेमचंद की रचनाओं को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी थी। प्रेमचंद ने कहानी और उपन्यास में एक नई परंपरा की शुरुआत की, जिसने आने वाली पीढ़ियों के साहित्यकारों का मार्गदर्शन किया। प्रेमचंद ने साहित्य में यथार्थवाद की नींव रखी। प्रेमचंद की रचनाएं हिन्दी साहित्य की धरोहर हैं। सन् 1900 ई से 1917 ई तक का काल प्रेमचंद के लेखन का आरंभ काल माना जा सकता है। सन् 1900 ई. के आसपास उन्होंने उर्दू में तीन उपन्यास लिखे 'हमखुर्मा व हमसवाब', 'किशना' और 'आसरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य।' उनके प्रारंभिक उपन्यासों का संकलन 'मंगलचरण' (अमृतराय द्वारा प्रस्तुत, हंस प्रकाश, प्रथम संस्करण 1932) शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

उपन्यास सम्राट, इतिहास का पुनर्निर्माण, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गोदान, निर्मला, मंगलसूत्र, गबन, कर्मभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा।

Discussion / चर्चा

3.1.1 हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का स्थान

▶ गाँधीजी की भाँति प्रेमचंद ने भी भारत की जनता को हृदय के नेत्रों से देखा था।

गांधी जी ने भारतीय समाज को सुधारने के लिए जो कुछ कहा उसे 'सत्यं-शिवं-सुन्दरं' के रूप में हिन्दी गद्य साहित्य में साकार रूप प्रदान करने वाला, गाँधीजी को जैसी भाषा प्रिय थी उसी भाषा को लिखने वाला यदि कोई साहित्यकार हुआ तो वे प्रेमचंद ही हैं। निःसंदेह वे गाँधी वादी विचारधारा के अनन्य उपासक थे। गाँधीजी की भाँति प्रेमचंद ने भी भारत की जनता को हृदय के नेत्रों से देखा था। गाँधीजी ने भी राजनीति और समाज सुधारों का गठबन्धन कर दलित जातियों के उद्धार, मादक द्रव्यों के निषेध, अस्पृश्यता निवारण, स्त्रियों की उन्नति, प्रौढ़ शिक्षा आदि पर बल देते हुए अपना अठारह सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रेमचंद पर उनका भी प्रभाव पड़ा। भारतीय नारी को घर की कारा से निकालने का श्रेय गाँधीजी के आन्दोलनों को है। प्रेमचंद के नारी पात्र भी इसी जागृति के प्रतीक है। प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य अपने युग की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक प्रवृत्तियों का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है, वह युग का दर्पण है। इसीलिए कहा गया है कि यदि प्रेमचंद युग के भारत का इतिहास नष्ट भी हो जाय, तो भी प्रेमचंद साहित्य द्वारा उसका पुनर्निर्माण हो सकता है। प्रेमचंद को केन्द्र मानकर हिन्दी उपन्यास के विकास को निम्न युगों में विभाजित किया जा सकता है- 1. प्रेमचंद के पूर्ववर्ती उपन्यास, 2. प्रेमचंद युगीन उपन्यास, 3. प्रेमचंदोत्तर उपन्यास।

▶ हिन्दी उपन्यास को नई प्राणधारा प्रदान की

हिन्दी उपन्यास जगत में प्रेमचंद का स्थान सर्वोच्च है। मानवता का व्यापक संदेश, युग का सजीव चित्रण, कथा शिल्प की कलात्मकता, चरित्र-चित्रण की कला, भाषा में लोकभाषा और साहित्यिक सौष्ठव का समन्वय सभी के कारण उपन्यास साहित्य में उनकी कृतियों का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होनें हिन्दी उपन्यास को नई प्राणधारा प्रदान की है। वे उपन्यास क्षेत्र में 'मील के पत्थर ' हैं।

3.1.2 उपन्यासकार प्रेमचंद

▶ बाज़ारे हुस्न' नामक अपने उर्दू उपन्यास का अनूदित रूप - 'सेवा सदन'

प्रेमचंद के उपन्यास-लेखन का उत्कर्षकाल 1918 ई. से 'सेवासदन' के प्रकाशन से शुरू होता है। इसकी लेखन-तिथि की निश्चित सूचना नहीं मिलती। परंतु यह बात निर्विवाद है कि 'बाजारे हुस्न' नामक अपने उर्दू उपन्यास का अनूदित रूप ही प्रेमचंद ने 'सेवा सदन' नाम से प्रकाशित हुआ। सन् 1918 ई. के लगभग अंत में 'सेवासदन' कलकत्ता से प्रकाशित हो गया। इसके साथ हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद का आगमन ऐतिहासिक हो गया। 'सेवासदन' के पूर्व प्रेमचंद द्वारा लिखित सभी उपन्यासों की लेखन-तिथि तथा संख्या कम विवादास्पद रही है। अपने मित्रों को लिखे पत्रों में प्रेमचंद ने अपने प्रथम उपन्यास के प्रकाशन वर्ष के बारे में भिन्न मत प्रकट किए हैं। प्रेमचंद का सबसे पुराना उपन्यास 'असरारे मआबिद' बनारस के उर्दू साप्ताहिक 'आवाज ए-खल्क' में 1905 में धाराप्रवाह प्रकाशित हुआ था। हिन्दी साहित्य- जगत् केलिए प्रेमचंद का

यह उपन्यास अज्ञात था। इस उपन्यास में एक महन्त और उसके विलासमय, कुत्सित जीवन चित्रित किया गया है। यह उपन्यास प्राचीन फारसी शैली में रचा गया है, स्थानों, दृश्यों और वस्तुओं के वर्णन भी फारसी काव्यों की शैली में हैं।

- उपन्यास को आधुनिक नवजागरण का सन्देशवाहक तथा जीवन का प्रतिनिधि बनाया

प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'प्रेमा' (दो सखियों का विवाह) सन् 1920 ई में प्रकाशित हुआ। यह उर्दू में प्रकाशित उन्हीं का 'हमखुर्मा व हमसवाब' का हिन्दी तर्जुमा है। विधवा-विवाह ही इस उपन्यास का प्रतिपाद्य है। श्री गोपाल के अनुसार प्रेमचंद (नवाबराय बनारसी) ने 'प्रेमा' की रचना करके उपन्यास को आधुनिक नवजागरण का सन्देशवाहक तथा जीवन का प्रतिनिधि बना दिया। 'प्रेमा' उपन्यास में लेखक ने समस्या को अधिक महत्व देकर उपन्यास में चित्रित जीवन को विश्वसनीय बना दिया है।

- उर्दू में प्रकाशित 'जनवए ईसार' नामक उपन्यास हिन्दी में 'वरदान' शीर्षक में प्रकाशित

पहले प्रेमचंद ने 'किशन' नाम से जो उपन्यास उर्दू में, प्रकाशित किया उसी को 'गबन' के रूप में प्रस्तुत किया था। 'रूठी रानी' उर्दू में पुस्तकाकार छपा था। 1912 ई में उर्दू में प्रकाशित 'जनवए ईसार' नामक उपन्यास 1921 ई में 'वरदान' शीर्षक से हिन्दी में प्रकाशित हुआ। इसमें देश सेवा, देश-भक्ति आदि नये विषयों के प्रतिपादन का प्रयास हुआ है। 'वरदान' देश-सेवा की नहीं, प्रेम की कहानी बनकर रह गया है। प्रेमचंद के परवर्ती उपन्यासों के बीज-ग्रामीणों की निर्धनता, अंधविश्वास, रूढिवादिता, सरलता आदि की झलक इसमें पाये जाते हैं। श्री नित्यानंद पटेल का विचार है कि 'वरदान' से हिन्दी उपन्यास को नये युग की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

- प्रेमचंद ने समाज सुधार और आन्दोलन की झाँकी को प्रस्तुत किया

कम उम्र में विवाह करने की कुप्रथा, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में, स्वास्थ्य में तथा संस्कार में बाधक है। बाल-विवाह के परिणामस्वरूप छोटी उम्र में लाखों बालिकाएं विधवाएँ हो जाती हैं, वे सामाजिक कुप्रथा के अनुसार पुनर्विवाह कर ही नहीं सकती थीं। 'वरदान ' की विरजन 17-18 वर्ष की उम्र में ही विधवा हो गयी। उसकी सास प्रेमवती को यह भ्रम हो गया था कि ये सब आपत्तियाँ बहु की लायी हुई हैं। अंधेपन में कमलाचरण जान खो बैठा, और विरजन बालपन में विधवा हो गयी। सुखी घर उजड गया। वह अनमेल विवाह का दुष्परिणाम नहीं तो और क्या ? इसका कारण, माता पिता की लापरवाही, असावधानी, प्रमाद और आलस्य ही था। वे सिर्फ अपनी पसंदगी के अनुसार लड़की का विवाह करते थे। इसमें गाँवो की गरीबी का चित्रण भी है। हिन्दुस्तान के ग्रामवासियों की दुर्दशा का, भूख-नंगेपन का संक्षिप्त चित्रण और गाँवों में शिक्षा की असुविधा आदि ग्रामीण समाज में स्वतंत्र रूप से सोचने-विचारने, देखने-सुनने, की शक्ति नष्ट कर दी। सारा गाँव भूत-प्रेतों और चुडैलों से भयभीत था। आर्य समाज इन अंधविश्वासों के विरूद्ध आवाज उठाने लगा था, परन्तु ये भावनाएँ लोगों के मानस से उतनी जल्दी नहीं मिट सकती। भूत-प्रेतों और चुडैलों ने हिन्दू समाज को ऐसा दबोचा है कि आज भी यह अंधविश्वास ग्रामवासियों के दिल में से दूर नहीं हो सका। होली के दिन में होनेवाले उपद्रव, जादू टोना आदि अनेक रीतियों का चित्रण विरजन के पत्रों द्वारा प्रेमचंद ने किया है। तत्कालीन समाज के विचारों-विश्वसों, त्योहारों भांति-भांति के कुसंस्कारों-कुरीतियों

SGOU

एवं अंधविश्वासों का पर्याप्त सूक्ष्मता से परिचय इसमें है। महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रचार कार्यों में पडे पुजारियों, धर्मध्वजियों, महतों-मठाधीशों ने विघ्न-बाधाएँ उपस्थित की थीं। इस प्रकार की प्रतिक्रियाओं का वर्णन प्रेमचंद ने 'वरदान' में किया है। इस प्रकार प्रेमचंद समाज में सुधारवादी आन्दोलन की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। 'वरदान' उपन्यास में प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज का जीता-जागता चित्रण किया है।

3.1.3 प्रमुख उपन्यास - संक्षिप्त परिचय

3.1.3.1 सेवासदन(1918)

हिन्दी साहित्य में युग परिवर्तन करनेवाला एक उपन्यास है- 'सेवासदन'। इस उपन्यास की मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता और वेश्या वृत्ति है। स्त्रियों का आदर-सम्मान न घर में था, और न समाज में। प्रेमचंद निस्संदेह स्त्रियों के अधिकारों के बड़े से बड़े हिमायती थे। वे उन्हें समाज में पुरुषों के समान दर्जा एवं आदर-सम्मान दिलाना चाहते थे। श्री. नित्यानंद पटेल इसके बारे में कहते हैं कि "अपने उपन्यासों में इस आतुरता और मधुर स्वप्न को उन्होंने बड़े सुन्दर शब्दों में जहाँ-तहाँ अभिव्यक्त किया है। परन्तु इस अभिलाषा को 'सेवासदन ' की मुख्य सामाजिक समस्या या प्रतिपाद्य विषय नहीं कहा जा सकता। यह तो प्रेमचंद के बहुत से उपन्यासों की प्रमुख समस्या है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास के प्रारंभ से अन्त तक वेश्या समस्या के विविध पहलुओं पर, घटना-क्रम तथा चरित्रों द्वारा प्रेमचंद ने अपने विचार स्पष्ट किए हैं।"

▶ वेश्या समस्या के विविध पहलुओं पर, घटना-क्रम तथा चरित्रों द्वारा विचार स्पष्ट किया है

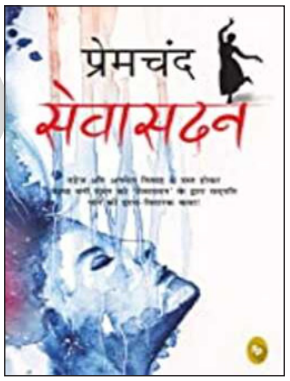

'सेवासदन' में मुख्य रूप से भोलीबाई और सुमन इन दो वेश्याओं का चित्रण है। भोलीबाई की शादी उसकी अनुमति के बिना पैसे के लोभ से माँ-बाप ने एक बूढ़े खूसट से कर दी थी। उम्र की दृष्टि से अनमेल विवाह नारीजाति पर भयंकर अन्याय है। इस प्रकार के अनमेल विवाहों से वेश्या-प्रथा भली भाँति फूलती फलती है। सुमन ने वेश्यावृत्ति स्वयं स्वीकार नहीं की थी। घर से, समाज से निरादृत सुमन पर, बडे बडे लोगों से आदर सत्कार पानेवाली भोली की सहानुभूति और संगति ने जादू का सा असर डाला। भोली का घर सुमन की कोठरी के सामने ही था। परिस्थितियों से लाचार होकर सुमन का विवाह गजाधर प्रसाद के साथ मामा उमानाथ ने निश्चय किया। लेकिन दोनों में ज़मीन-आसमान का अन्तर था। आस-पास बडे-बडे लोगों से संपर्क बढ़ाकर समाज में आदर सत्कार पाना वह चाहती थी। वह तो रूपवती थी, इसलिए ही वह अपने को श्रेष्ठ एवं उच्चतर समझती थी। वह स्वाभिमानी भी थी। गजाधर ने उसे कुलटा कहकर खूब डाँटा।लेकिन अंत में गजाधर की आँखें खुलीं, और उन्हें लगा कि अपनी निर्दयता और निष्ठुरता से ही सब हुआ है। सुमन को वेश्या बनने का दोष गजाधर के सिवाय मामा उमानाथ और पद्मसिंह शर्मा को है -जिन्होंने समाज के डर से उसे शरण नहीं दी।

▶ उम्र की दृष्टि से अनमेल विवाह नारीजाति पर भयंकर अन्याय है

SGOU

लेकिन दोष किसी व्यक्ति विशेष का नहीं है, मुख्य रूप से समाज व्यवस्था का ही है।

दहेज की कुप्रथा उस समय ज़ोरों से प्रचलित थी। इस प्रकार दहेज की कुप्रथा और समाज की मान्यता के कारण समाज में अनमेल विवाह होता था पद्मसिंह जैसे लोग भी शरण में आयी हुई सुमन को, अपनी संकुचित मनोवृत्ति के कारण, समाज से डरकर, बाहर निकाला। इस का कारण समाज की संकुचित मनोवृत्ति है। उस समय समाज स्त्रियों को आर्थिक दृष्टि से भी अपना गुलाम बनाये रखने में अपनी कृतार्थता समझता था लेकिन समाज में वेश्याओं के पैरों तले सज्जनों, विद्वानों, धार्मिकों एवं प्रतिष्ठितों की भी आँखें बिछाते देख, सुमन आदर पाने की भूख को संतुष्ट करने केलिए ही वेश्या बनी थी इस प्रकार समाज के कुत्सित रीति-रिवाज़ों ने ही सुमन को वेश्या बनने पर मजबूर किया था।

▶ दहेज की कुप्रथा और अनमेल विवाह का चित्रण

प्रेमचंद ने समाज में फैली हुई वेश्यावृत्ति की बुराई का यथार्थ कारण ढूँढ निकाला है और उसके लिए व्यक्तियों को दोषी न ठहराकर तत्कालीन समाज-व्यवस्था को ज़िम्मेदार ठहराया है। प्रेमचंद ने वेश्यावृत्ति के मनोवैज्ञानिक, आर्थिक तथा सामाजिक कुप्रभाओं से संबंधित मूल कारणों का स्पष्ट निर्देश इन पंक्तियों में किया है। म्युनिसिपलिटी के सदस्य पदमसिंह शर्मा तथा कुँवर अनिरूद्ध सिंह के शब्दों से 'हमने वेश्याओं को शहर से बाहर रखने का प्रस्ताव इसलिए नही किया है कि हमें उनसे घृणा है। हमें उनसे घृणा करने का काई अधिकार नहीं है। ये हमारी ही कुवासनाएँ, हमारे ही सामाजिक अत्याचार, हमारी ही कुप्रथाओं के उपज हैं जिन्होंने वेश्याओं का रूप धारण किया है। यह दालमण्डी हमारे ही जीवन का कलुषित प्रतिबिंब हमारे ही पैशाचिक अधर्म का साक्षात् स्वरूप है। हम किस मुँह से उनसे घृणा करें। उनकी अवस्था शोचनीय है।' सेवासदन उपन्यास की कथा के साथ-साथ, वेश्या समस्या के विभिन्न पहलुओं का प्रेमचंद ने बडे विस्तार एवं कुशलता से चित्रण किया है। इस समस्या के विविध कारणों का विश्लेषण बडी सूक्ष्मता एवं यथार्थवादी ढंग से किया। वे वेश्यावृत्ति का अन्त चाहते थे।

▶ वेश्या समस्या के विविध कारणों का विश्लेषण बडी सूक्ष्मता एवं यथार्थवादी ढंग से किया

लेकिन श्री. नित्यानन्त पटेल यह मानते हैं कि, 'प्रेमचंद ने जो कुछ लिखा है, वह सिर्फ भावात्मक या कोरा आदर्शवाद नहीं है, अपितु वेश्यावृत्ति को यथाशक्ति दूर करने का पूर्ण व्यावहारिक इलाज भी सूचित किया है। प्रेमचंद यह जानते थे कि वेश्यावृत्ति को जड़ से उखाड़कर दूर करना असंभव है। फिर उनके द्वारा सूचित समाधान के अनुसार जितना कार्य होगा, वेश्यावृत्ति दूर करने में उतनी ही अधिक सहायता मिल सकेगी।प्रेमचंद कहते हैं कि सुमन की भाँति दूसरी वेश्याओं को भी समझाया जाय और उनकी तथा उनकी संतान की शिक्षा, परवरिश तथा आजीविका आदि की 'सेवावदन ' जैसे आश्रमों द्वारा व्यवस्था की जाय तो लगभग पचहत्तर फीसदी वेश्यायें, शरीर बेचने के कुत्सित कार्य से अवश्य विरत हो सकती हैं। जो वेश्यायें, सुमन के समान वेश्यावृत्ति को हमेशा के लिए त्यागने को तैयार हों, उन्हें समाज को पूरे हृदय से अपनाने को तैयार होना चाहिए, और वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें इसका योग्य प्रबंध करना चाहिए। प्रेमचंद

▶ समाज की मुख्य एवं गौण सामाजिक समस्याओं पर 'सेवासदन' में चित्रण

ने पदमसिंह वर्मा तथा कुँवर अनिरूद्ध सिंह की ज़बान से बार-बार यही कहलवाया है। समाज के कुसंस्कारों का त्याग भी वेश्याओं के उद्धार केलिए वे परम-आवश्यक मानते हैं। इस प्रकार समाज की मुख्य एवं गौण बहुत- सी सामाजिक समस्याओं पर प्रेमचंद ने 'सेवासदन ' में मौलिक विचार व्यक्त किए हैं।

3.1.3.2 वरदान (1920)

▶ अधिकांश कथा में कृत्रिमता और कल्पना की अतिशयता

'सेवासदन' के उपरांत सन् 1920 में प्रेमचंद का 'वरदान' उपन्यास प्रकाशित हुआ। किन्तु 'सेवासदन' की भाँती इस उपन्यास में भाव की गरिमा और वैचारिक स्पष्टता नहीं थी। उपन्यास की अधिकांश कथा में क्रमशः कृत्रिमता बढ़ती चली गयी है और कल्पना की अतिशयता ने मूल कथानक को ही गड़बड़ कर दिया है।

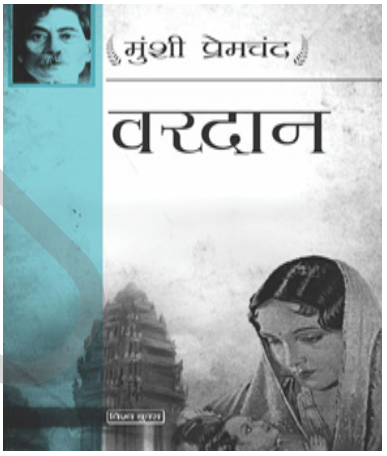

▶ दो प्रेमियों की दुःखांत कथा

'वरदान' दो प्रेमियों की दुःखांत कथा है। ऐसे दो प्रेमी जो बचपन में साथ-साथ खेले, जिन्होंने तरुणाई में भावी जीवन की सरल और कोमल कल्पनाएं संजोईं, जिनके सुन्दर घर के निर्माण के अपने सपने थे और भावी जीवन के निर्धारण के लिए अपनी विचारधारा थी। किन्तु उनकी कल्पनाओं का महल शीघ्र ढह गया। विश्व के महान कथा-शिल्पी प्रेमचंद के उपन्यास वरदान में सुदामा अष्टभुजा देवी से एक ऐसे सपूत का वरदान माँगती है, जो जाति की भलाई में संलग्न हो। इसी ताने-बाने पर प्रेमचंद की सशक्त कलम से बुना कथानक जीवन की स्थितियों की बारीकी से पड़ताल करता है। सुदामा का पुत्र प्रताप एक ऐसा पात्र है जो दीन-दुःखियों, रोगियों, दलितों की निस्वार्थ सहायता करता है।

▶ सशक्त कृति नहीं है

इसमें विरजन और प्रताप की प्रेम-कथा भी है, और है विरजन तथा कमलाचरण के अनमेल विवाह का मार्मिक प्रसंग। इसी तरह एक माधवी है, जो प्रताप के प्रति भाव से भर उठती है, लेकिन अंत में वह सन्यासी जो मोहपाश में बाँधने की जगह स्वयं योगिनी बनना पसंद करती हैं। वास्तव में 'वरदान' प्रेमचंद की एक सशक्त कृति नहीं है।

3.1.3:3 प्रेमाश्रम (1922)

▶ राष्ट्रीय उपन्यास

'प्रेमाश्रम' प्रेमचंद ने उर्दू में लिखना प्रारंभ किया और पहला नाम 'नेकनाम' था। हिन्दी में 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से हुआ। सन् 1928 में 'दारुल इशायत' लाहोर ने प्रकाशित किया। प्रेमचंद के लेखन काल की विभिन्न परिस्थितियों, घटनाओं, महत्मा गाँधी द्वारा प्रवर्तित आन्दोलनों ने इस उपन्यास के रंगरूप, विषय वस्तु, समस्याओं, भाव विचार तथा सुझाये गये समाधान आदि पर गहरा प्रभाव डाला है। विषयवस्तु की दृष्टि से राष्ट्रीय उपन्यास बन पडा है प्रेमाश्रम। इस में

राष्ट्र की समस्याओं को प्रधानता मिली है जैसे - किसानों की गरीबी एवं असहाय दशा, जमींदारों तथा कारिन्दों द्वारा किसानों का शोषण, हिन्दू-मुस्लिम एकता, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की एकांगिता आदि।महत्मा गाँधी ने शोषित-दलित किसानों की दशा सुधारने केलिए चंपारन तथा खोडा में जो सत्याग्रह किया था, इन आंदोलनों का पर्याप्त प्रभाव प्रेमचंद पर पड़ा था। किसानों की दशा सुधारने केलिए वे ज़मीन्दारी प्रथा का उन्मूलन आवश्यक बताते हैं। प्रेमशंकर, जो अमेरिका से उच्चशिक्षा प्राप्त करके स्वदेश लौटे हैं कृषकों की स्थिति सुधारने केलिए जीवन अर्पण करते हैं। वे हाजीपुर गाँव के किसानों के विचारों में एक क्रांति-सी उत्पन्न करते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुधरने लगती है। प्रेमशंकर के सेवाभाव, सहृदयता, सादगी और सच्चरित्र से प्रभावित होकर किसानों की दशा सुधारने में शहर के बहुत से धनी-मानी उन्हें सहायता देने लगते हैं। नौकरी से इस्तीफा देकर डिप्टी कलेक्टर ज्वालासिंह भी प्रेम शंकर के प्रेमाश्रम में आ जाते हैं। वकील इर्फान अली, डॉक्टर प्रियनाथ, थानेदार दयाशंकर, सैयद ईजाद हुसैन आदि भी प्रेम शंकर की निस्वार्थ सेवावृत्ति से प्रभावित होकर अपना जीवन-क्रम बदल लेते हैं, किसानों की भलाई के लिए वे कार्य करते हैं। इन सबके फलस्वरूप लोग बुरी आदतों को छोड़कर मेहनत में जुट जाते हैं, गाँव की काया-पलट बड़ी तेज़ी से होने लगती है। गाँव में सफाई होने लगती है, रोगों के इलाज की सुविधा हो जाती है, पढ़ाई-लिखाई शुरू होती है और आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगता है। ज्ञानशंकर के सुपुत्र मायाशंकर की शिक्षा-दीक्षा का उत्तमोत्तम प्रबंध प्रेमशंकर के सत्संग में रहकर ही होता है। प्रेमशंकर की संगति से उसके चरित्र में दया, माया, सेवा, सहानुभूति, सहयोग आदि सद्‌गुणों का भी विकास होता है। सच्ची शिक्षा के प्रभाव से मायाशंकर ज़मींदारी के अधिकार का स्वेच्छा से त्याग करता है और लखनपुर के किसानों का खेती पर किए गए परिश्रम के फल का उपभोग करने को स्वतंत्र करता है। लखनपुर के किसानों की आर्थिक स्थिति में इस कारण सुधार भी होने लगता है। बलराज मायाशंकर से कहता भी है- 'अब आपकी दया से गाँव में राम-राज्य है।' ज़मींदारी उन्मूलन के लिए हिंसा या मार-काट नहीं, हृदयपरिवर्तन को वे उचित समझते हैं। वे मानते हैं कि सच्ची शिक्षा के प्रसार से, समझाने बुझाने से, सत्संगति से तथा त्यागमय जीवन के उदाहरण प्रस्तुत करने से मनुष्य का हृदय परिवर्तन संभव है। किसानों की भलाई के लिए ज़मींदारी प्रथा का उन्मूलन यही 'प्रेमाश्रम' का मुख्य सन्देश है।

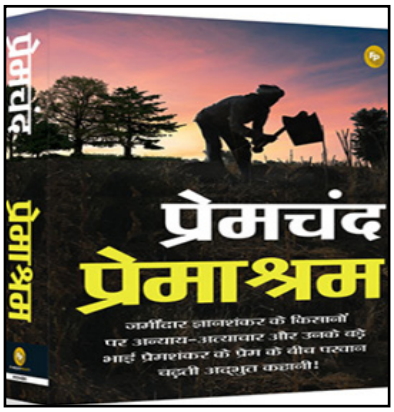

► किसानों की भलाई के लिए ज़मींदारी प्रथा के उन्मूलन की आवश्यकता

► देश के करोड़ों किसानों को जगाने के उद्देश्य से हुई रचना

शिक्षा प्रणाली की एकांगिता ज्ञानशंकर के द्वारा उपन्यासकार ने इसमें दिखायी है। उसी प्रकार हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य को भी कादिर मियाँ तथा मनोहर बलराज की अटूट मैत्री के द्वारा तथा प्रेमशंकर के कार्यों में वकील इर्फान अली के हार्दिक सहकार सहयोग द्वारा,

हिन्दू-मुस्लिम एकता का बड़ा कलात्मक अंकन किया गया है।

'हमारी जनता कृषक वर्ग है जो प्रधानतः देहातों में रहती है, उसे जगाना, उसे अपनाना, उसकी उपेक्षा न करके उसके प्रति प्रेम और संवेदना का भाव प्रकट करना प्रत्येक स्वदेशाभिमानी का प्रधान कर्तव्य है। इसी प्रधान कर्तव्य का पालन प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम' में अच्छे ढंग से किया है। यह कहा जा सकता है कि 'जिस प्रकार तालस्ताय ने, तुर्गनव ने, चेखेव ने, गोर्की ने अपनी अपनी कृतियों द्वारा रूस के किसानों को जगाया था, उसी प्रकार अपने देश के करोड़ों किसानों को जगाने के उद्देश्य से प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम ' की रचना की। किसानों की गरीबी के साथ-साथ उसके मूल कारणों का निरूपण भी सूक्ष्मता, गहराई और निर्भयता के साथ उन्होने किया है।

किसानों की सबसे बड़ी कमजोरी आपसी फूट ही है। किसानों की आय में वृद्धि केलिए गाँवों में गृह-उद्योगों का विकास होना चाहिए, इसकेलिए प्रेमाश्रम के कमलानन्द किसानों को प्रेरणा देते हैं। प्रेमचन्द ने धर्म के नाम पर पनप रहे पाखंड, पोप लीला, अंधविश्वास तथा विचार शून्य रूढ़ियों, परंपराओं पर वज्र प्रहार किया। समाज सुधार को दृष्टि में रखते हुए उन्होंने धर्म के विरोधी रूप को अपने कथा-साहित्य में स्पष्ट किया है। 'प्रेमाश्रम' में गायत्री के माध्यम से निस्संतान युवा विधवा के हृदयस्थ भावों का बड़ा मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। लेकिन इसमें विधवा समस्या का कोई समाधान उन्होंने प्रस्तुत नहीं किया। गायत्री की कथा प्रेम से शुरू होकर आत्म-ग्लानि पर समाप्त होती थी, गायत्री जैसी गौरवशील विधवा भी अधःपतन से न बच सकी तो सामान्य स्त्रियों की क्या दशा है मनोवैज्ञानिक तौर पर इस प्रश्न पर प्रेमचंद ने विचार किया।

▶ समाज सुधार की दृष्टि से धर्म के विरोधी रूप को कथा-साहित्य में स्पष्ट करने का श्रेय

3.1.3.4 रंगभूमि-1925

'प्रेमाश्रम' के बाद प्रेमचंद का 'रंगभूमि' उपन्यास लखनऊ से प्रकाशित हुआ। (1925)'रंगभूमि' पहले उर्दू में लिखा गया, लेकिन हिन्दी में पहले छपा। उर्दू में इसका नाम था 'चौगाने हस्ती'। उर्दू से हिन्दी में अनुवाद करते समय उन्होंने उर्दू सामग्री में कुछ परिवर्तन भी किया और साथ ही कुछ अध्याय सर्वप्रथम हिन्दी में लिखकर मूल उर्दू सामग्री के हिन्दी अनुवाद के साथ यथा-स्थान जोड़ दिए। उर्दू में फिर 'रंगभूमि' का अनुवाद 'चौगाने हस्ती' सन 1927 में लाहौर से प्रकाशित हुआ।

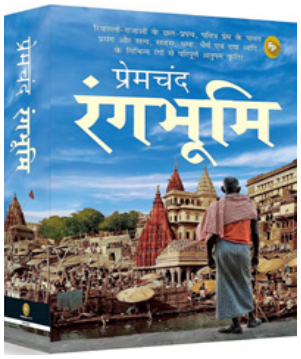

'रंगभूमि' के सूरदास की सृष्टि प्रेमचंद ने गाँधीवादी आदर्श के नमूने पर की है। अनेक आलोचकों का मत है कि 'रंगभूमि' का सूरदास इतिहास पुरुष गाँधीजी का प्रतीक है। इसकी रचना असहयोग आन्दोलन के उपरान्त हुई, अतः उसका प्रभाव पात्रों पर पड़ना स्वाभाविक ही है। सूरदास गाँधीजी के अहिंसावाद का पुजारी है। वह सत्य, अहिंसा और त्याग का साक्षात् उदाहरण है। नित्यानन्द पटेल के शब्दों में- 'सूरदास

का आत्मबल, रंगभूमि के पाठक के हृदय को भक्ति प्रदान करनेवाला है। सूरदास इस 'रंगभूमि' का ऐसा खिलाड़ी है जो बार-बार कहता है, 'खेल को खेल की भांति खेलो।प्रेमचंद की रंगभूमि वास्तविक रंगभूमि है, जिसमें जीवन का एक महान नाट क खेला गया है।' प्रेमचंद ने लिखा है- 'सूरदास का बीजांकुर हमें एक अन्धे भिखारी से मिला, जो हमारे गाँव में रहता था। इस अंधे भिखारी में प्रेमचंद ने ऐसी अभूतपूर्व शक्ति भर दी कि आलोचकों ने उसे गाँधी का प्रतीक माना। यह अन्याय का विरोध करता है। सूरदास का पूरा जीवन एक संघर्ष की कहानी है। वह गाँव की संस्कृति को बचाना चाहता है।

▶ मनुष्य-जीवन की विशाल रंगस्थली है

यह उपन्यास मनुष्य-जीवन की विशाल रंगस्थली है। हसमें अनेक वर्गो के पात्र हैं। गरीब, अमीर, भिखारी, पूँजीपति, मजदूर, किसान, पुजारी, समाजसेवक इत्यादि। लेकिन इनमें सूरदास, सोफिया, विनय और प्रभु सेवक प्रमुख हैं। इस उपन्यास में औद्योगिक विकास एवं तज्जनित समस्यायें प्रधान रूप से आयी हैं। सूरदास सैद्धांतिक दृष्टि से कारखाना खोलने के पक्ष में नहीं है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि औद्योगिक विकास होने पर लोगों के सद्‌गुण और सद् वृत्तियाँ विनष्ट हो जायेंगी, गाँव अत्याचार का केन्द्र बन जाएगा। इसमें सूरदास और उसकी ग्रामीण परिस्थिति के अतिरिक्त दो-तीन परिवारों के माध्यम से नगर की परिस्थिति का भी वर्णन किया गया है- जॉन सेवक कुँवर भरतसिंह तथा महेंद्र कुमार आदि के परिवार के द्वारा।

▶ सूरदास के माध्यम से औद्योगिक विकास से उत्पन्न बुराइयों का स्पष्ट चित्रण

प्रस्तुत उपन्यास में औद्योगीकरण के विस्तार-विकास तथा उससे उत्पन्न समस्याओं को प्रेमचंद ने यथार्थ रूप से दिखाने का प्रयत्न किया है। पात्रों और घटनाओं के माध्यम से तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों एवं औद्योगिक विकास की समस्याओं को बहुत सुन्दर ढंग से उन्होंने इस उपन्यास में उपस्थित किया है। औद्योगिक और कृषि जीवन की तुलनात्मक विशेषताओं को भी इसमें प्रस्तुत किया गया है। वे महात्मा गाँधी के आदर्शों के अनुयायी थे और पूँजी के केन्द्रीकरण के विरोधी भी थे। सूरदास के माध्यम से औद्योगिक विकास से उत्पन्न बुराइयों को स्पष्ट किया गया है। सूरदास अपने सिद्धांतों पर अडिग है। सरल और निष्कपट सूरदास अपने विरोधियों के प्रति भी सद्‌भावना रखता है। अपने विरोधियों के भी हृदय परिवर्तन की आशा वह रखता है। वह गाँधी के द्वारा प्रवर्तित अहिंसात्मक आंदोलन का नायक है।

▶ सामाजिक, सांप्रदायिक तथा राजनैतिक समस्याओं का चित्रण

सामयिक, राजनैतिक गतिविधियों का सम्यक विश्लेषण इसमें है। देशी राज्यों की राजनीति के संबंध में प्रेमचंद ने अपने विचार स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किये हैं। प्रेमचंद की मर्मग्रहिणी विचार-दृष्टि का अच्छा परिचय इसमें मिलता है। उन्होंने एक ओर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विविध रूपों को उद्‌घाटित किया है, दूसरी ओर पूँजीपति उद्योगपति, ज़मींदार, व्यवसायी और व्यापार-वर्ग के पारस्परिक संबंध को भी विशद रूप से अंकित किया है, साथ ही आश्रयहीन जनता और उसके पक्ष में आवाज़ उठानेवाले त्यागी पुरुषों के संघर्ष और बलिदान को भी चित्रित किया है।।'रंगभूमि' में जिस प्रकार की व्यापक

राजनैतिक चेतना को अभिव्यक्ति मिली हैं, उस प्रकार की अभिव्यक्ति प्रेमचंद के अन्य उपन्यासों में नहीं है। उन्हें तत्कालीन राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों के चित्रण में अच्छी सफलता मिली है। सभी प्रकार की समस्याओं की प्रस्तुति यथार्थपरक भी है।

पूँजीवाद और कारखानेदारी का बढ़ना इस युग का एक सत्य है अगर उसके अतिरिक्त और कई सत्य हैं जो इसके सामने टिक नहीं सकता। एक पुरानी सामाजिक और राजनैतिक पद्धति को अब कोई आदर्शवादी बचा नहीं सकता। कारखाना लगता है और पाण्डेपुर उजड़ जाता है। यदि इसके मुकाबले में प्रेमचंद, सूरदास के आदर्शवाद की जीत दिखाते, तो शायद ठीक न होता। इसमें पुरानी मान्याताओं को टूटते हुए दिखाकर प्रेमचंद यथार्थवाद और आदर्शवाद के नीचे दब नहीं गए हैं, अपितु समानान्तर रहते हुए यथार्थवाद और वस्तुवाद का महत्व प्रकट करते हैं।

3.1.3.5 कायाकल्प- 1926

'कायाकल्प' प्रेमचंद का पहला एक उपन्यास है जिसकी मूल पाण्डुलिपि हिन्दी में प्राप्त होती है। 'कायाकल्प' का प्रकाशन 1926 का पूर्वार्द्ध माना जा सकता है। इसमें प्रेमचंद ने सामाजिक, सांप्रदायिक तथा राजनैतिक समस्याओं को लिया है, उनका समाधान भी प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। 'कायाकल्प' की कथावस्तु में अनेक अलौकिक घटनाएँ आती है। उपन्यास की मुख्य कथाधारा चक्रधर, विशाल-सिंह, मनोरमा, अहल्या आदि को प्रमुख पात्र बनाकर चलती है। इसके कथानक में देवप्रिय के जीवन से संबंधित समस्त घटनायें रहस्यमय प्रतीत होती हैं। प्रेमचंद के प्रशंसक, समालोचक कालिदास कपूर ने इस प्रकार लिखा - 'प्रेमचंद का कोई भी उपन्यास ऐसा नहीं है, जिसमें भारतवर्ष के राष्ट्रीय जीवन के दैनिक रूप- रंग के परिवर्तन का प्रतिबिंब न पड़ा हो।'

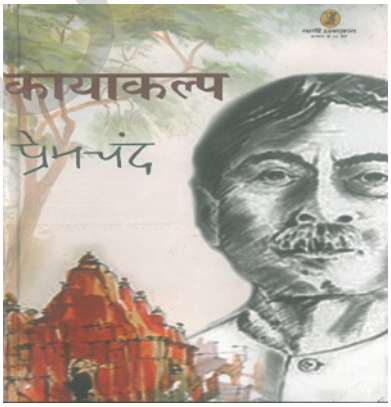

▶ मूल पाण्डुलिपि हिन्दी में प्राप्त पहला उपन्यास

'सेवासदन' और 'प्रेमाश्रम' में नवयुवकों और सेवा समितियों के आदर्श और कठिनाइयों का परिचय है, तो 'रंगभूमि' में देहाती जीवन के विप्लव की झलक है और 'कायाकल्प' में इस जीवन के हिन्दू-मुस्लिम विरोध की कठिन समस्या पर प्रकाश डाला गया है। इसके परे अन्य विषय पुराने हैं। 'कायाकल्प' उपन्यास में प्रेमचंद ने तत्कालीन कुछ समस्याओं पर गहन विचार प्रस्तुत किये हैं। यशोदानंदन और ख्वाजा महमूद को उन्होंने हिन्दू और मुसलमान, दोनों जातियां के एक-एक प्रतिनिधि के रूप में ही प्रस्तुत किया है। यद्यपि हिन्दू और मुसलमान दोनों ही चक्रधर के त्याग की प्रशंसा करते हैं, फिर भी साम्प्रदायिकता का प्रभाव समाप्त नहीं हो पाता। यशोदानंदन की हत्या हो जाने पर ख्वाजा महमूद बहुत दुःखी होते हैं और वे उनकी बेटी अहल्या को अपनी बेटी मानने लगते हैं। डॉ. त्रिभुवन सिंह इसके बारे में कहते हैं- 'जब तक हिन्दू और मुस्लिम

▶ देहाती जीवन के हिन्दू-मुस्लिम विरोध की कठिन समस्या पर प्रकाश डाला

दोनों संप्रदायों में ख्वाजा महमूद और यशादानंदन जैसे उदार दृष्टिवाले नहीं पैदा होंगे तब तक संकुचित धर्मान्धता का नंगा नाच होता ही रहेगा, ऐसा प्रेमचंदजी का अडिग विश्वास है।'

आलोचकों ने कायाकल्प को दो भागों में विभाजित करके देखा है - चक्रधर की कथा और रानी देवप्रिया की कथा। श्री. कमल किशोर गोयंका के अनुसार 'कायाकल्प' के अबूझ पहेली बने रहने का प्रमुख कारण यह है कि आलोचकों ने इन कथाओं की मूल धुरी की खोज नहीं की। उनके अनुसार 'आलोचकों ने न केवल इस कथा की अवैज्ञानिक व्याख्याएँ कीं, बल्कि समग्र उपन्यास के प्रति भी वे न्याय नहीं कर सके। आलोचकों की अपनी भ्रान्तियों के कारण 'कायाकल्प' पूर्व परंपरा से हटा एवं एक अबूझ पहेली बनकर रह गया। वास्तव में 'कायाकल्प' के कथा-तंत्र के वैज्ञानिक विश्लेषण की जितनी आवश्यकता है, उतनी प्रेमचंद के किसी अन्य उपन्यास की नहीं। 'कायाकल्प' का केन्द्रीय बिन्दु धन, प्रभूत और विलास-लालसा है, जिसमें लेखक के अनुसार मनुष्य का मानसिक एवं भौतिक कायाकल्प हो जाता है। प्रेमचंद की दृष्टि में धन के साथ प्रभुता और विलास साथ-साथ आते हैं। 'कायाकल्प' के बारे में उन्होंने लिखा है 'मैं ने अपनी एक बड़ी पुस्तक 'कायाकल्प' और दर्जनों गल्पों में धन को जीवन का शाप सिद्ध किया है जो वह वास्तव में है। धन और विलास जुड़वा है। अलग नहीं रहते।'

▶ कायाकल्प का केन्द्रीय बिन्दु धन, प्रभुत्व और विलास-लालसा का चित्रण है

चक्रधर, अहल्या, विशाल सिंह आदि के मन और देवप्रिया की काया का कल्प होता है, लेकिन इनमें चक्रधर ही एकमात्र ऐसा पात्र है, जो धन और प्रभुता के प्रभाव से उत्पन्न मानसिक कायाकल्प से स्वयं को बचा सका है, इस प्रकार अन्य पात्रों की तुलना में चक्रधर की कथा सभी दृष्टियों से उपन्यास की महत्वपूर्ण कथा बन जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य धन-प्रभुता और ऐश्वर्य-विलास की अमंगलता दिखाना ही है। इसकी कथा का निष्कर्ष यही है कि मानव दरिद्र रहकर भी सुखी रह सकता है। इस प्रकार धन-प्रभुता विलास की अमंगलता का प्रदर्शन निस्वार्थ देश-सेवा एवं दरिद्र जीवन के गौरव के महत्व की स्थापना केलिए ही किया गया है।

▶ मानव दरिद्र रहकर भी सुखी रह सकता है

3.1.3.6 निर्मला-1927

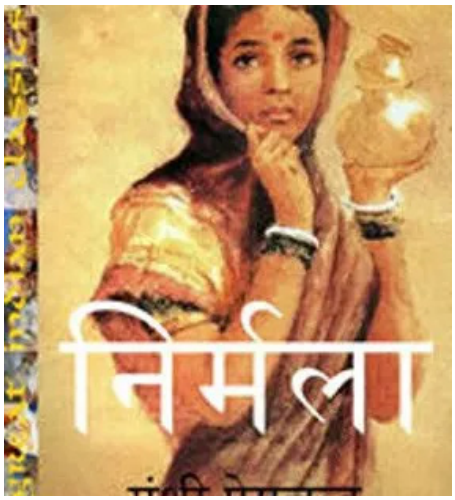

'निर्मला' उपन्यास का सर्वप्रथम प्रकाशन 'चाँद' पत्रिका में नवंबर 1927 से धारावाहिक रूप में नवंबर 1928 तक हुआ। इसकी लेखन-तिथि अज्ञात है। अमृतराय के अनुसार सन् 1927 के आरंभ में 'निर्मला' उपन्यास पुस्तक के रूप में चाँद प्रेस से पहली बार प्रकाशित हुआ। प्रेमचंद ने इस उपन्यास को उर्दू में

'निर्मला' के नाम से ही सन् 1929 में लाहौर से प्रकाशित कराया।

▶ 'निर्मला' उपन्यास की मुख्य समस्या अनमेल विवाह है

'निर्मला' उपन्यास की मुख्य समस्या अनमेल विवाह है। विधवा विवाह, वेश्या-समस्या, दहेज, अनमेल विवाह आदि जिन समस्याओं को प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में जहाँ-जहाँ स्थान दिया है, वे समस्यायें समाज में आज भी विद्यमान हैं, परंतु उनकी तीव्रता कम हो गई है। इसमें सैकड़ों समाज-सुधारकों के समान प्रेमचंद का योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। स्वयं प्रेमचंद का प्रथम विवाह भी एक अनमेल विवाह था।यह मुँशी अजायबलाल की असावधानी और प्रमाद के कारण ही हुआ था। पुत्र-वधू को देखकर अजायबलाल ने अपनी पत्नी से कहा था- 'लालाजी (नाना साहब) ने मेरे लड़के को कुएँ में ढकेल दिया। मेरा गुलाब-सा लड़का और उसकी यह बीबी। मैं तो उसकी दूसरी शादी कराऊँगा। (अमृतराय - प्रेमचंद : कलम का सिपाही, पृ 390) लेकिन यहाँ बात और थी। निर्मला और मुंशी तोताराम के अनमेल विवाह का कारण 'दहेज की कुप्रथा' अवश्य कही जा सकती है। इसी कुप्रथा के अभिशाप के कारण निर्मला का मोहन से विवाह न हो सका।

▶ माता- पिता की अकर्मण्यता, आलस्य या अविवेक भी अनमेल विवाह का कारण है

मुख्य विषयवास्तु की दृष्टि से 'निर्मला' और 'सेवासदन' का पर्याप्त निकट संबंध स्थापित होता है सेवासदन' मुख्य समस्या 'वेश्या समस्या' है, लेकिन इसका मूल तो अनमेल विवाह में ही है। अनमेल विवाह के कारण निर्मला और तोताराम के पारिवारिक जीवन में कटुता, क्लेश, कलह आदि स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हो गए।अंत में निर्मला की असमय मृत्यु हुई। 'सेवासदन' में सुमन का वेश्या बनना भी इसी वजह से हैं।इन दोनों उपन्यासों में प्रेमचंद अनमेल विवाह के भयंकर परिणाम को दिखाते हैं। इसकी वजह से ही बहुत-सी युवतियाँ वेश्या बनती हैं, बहुत सी आत्महत्या करती हैं, या अकाल मृत्यु का शिकार होती हैं, अथवा वैधव्य का भयंकर दुःख सहन करके जीवन को बर्बाद करते हैं। दहेज की कुप्रथा ही नहीं, माता- पिता की अकर्मण्यता, आलस्य या अविवेक भी अनमेल विवाह का कारण बनता है। निर्मला के अनमेल विवाह में दहेज के साथ-साथ उसकी माँ कल्याणी का भी हाथ है।

यह उपन्यास आदर्शवाद की छाया से मुक्त यथार्थवादी रचना होने के कारण बडी कलात्मक बन पडी है। श्री. रामदीनगुप्त लिखते हैं 'निर्मला' प्रेमचंद की प्रथम यथार्थवादी त्रासदी है, जिसमें उन्होंने समस्या का कोई खास आदर्शवादी आश्रयपरक समाधान नहीं सुझाया है। 'निर्मला' के लेखक ने किसी समाधान की अपेक्षा समस्या के विश्लेषण पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किये रखा है। यही कारण है कि उपन्यास की कला आदर्शवाद की भूल भुलैयों में न भटक कर बडी तीव्र गति से अपने निर्मम, किन्तु तर्कसंगत निष्कर्ष की ओर आगे बढती है और नायिका निर्मला की हृदय-विदारक मृत्यु के साथ ही उसका अंत होता है। डॉ राजेश्वर गुरु बताते हैं- 'निर्मला' घोर यथार्थवादी रचना है।..... अनेक उपन्यासों में प्रेमचंद ने जहाँ समस्या का हल देना भी नहीं चाहा है, उन्होंने परिस्थिति का गहरा विश्लेषण करके छोड दिया है। किसी झूठे संतोष का पल्ला नहीं पकड़ना चाहा।'

फिर भी इसमें कहीं-कहीं आदर्शवाद की भी छाप है। इसमें प्रेमचंद ने अपने संदेश को संकेतात्मक ढंग से मृत्युशय्या पर पड़ी निर्मला के अंतिम शब्दों द्वारा संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया है- 'दीदीजी बच्ची को आपकी गोद में छोड़े जाती हूँ। अगर जीती-जागती रहे तो अच्छे कुल में विवाह कर दीजिएगा, इतनी ही आपसे मेरी विनय है।' प्रेमचंद ने दर्द भरे इन मार्मिक शब्दों को निर्मला के मुँह से कहलवाया है। वे समाज के विवेक और विचार-ज्योति को जगाना चाहते हैं।इस उपन्यास के बारे में डॉ. त्रिभुवन सिंह इस प्रकार लिखते हैं 'निर्मला' जैसा समाज को उसके यथार्थ रूप में चित्रित करनेवाला उपन्यास हिन्दी साहित्य में दूसरा लिखा ही नहीं गया। इसके अन्दर अनमेल विवाह तथा विमाता की समस्या का सजीव चित्रण है।'

▶ अनमेल विवाह तथा विमाता की समस्या का सजीव चित्रण

3.1.3.7 प्रतिज्ञा-1929

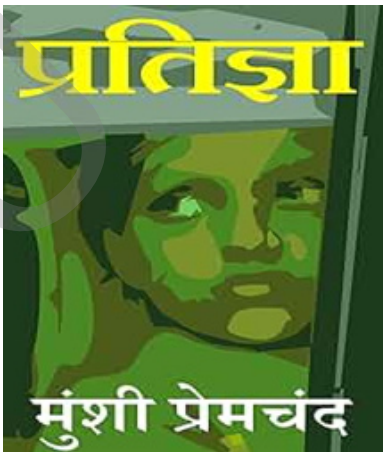

यह उपन्यास 'चाँद' के जनवरी 1927 से नवंबर 1929 तक के अंकों में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था। पुस्तक रूप में सरस्वती प्रेस, वारणासी से 1929 में प्रकाशित हुआ था। इसमें प्रेमचंद ने अपने बीस वर्ष पुराने उपन्यास 'प्रेमा' के कथानक को आधार बनाया है और उन्हीं पात्रों को लेकर उपन्यास की रचना की लेकिन इस उपन्यास के संबंध में एक भ्रांति प्रचलित है कि 'प्रेमा' और 'प्रतिज्ञा' एक ही उपन्यास के दो नाम हैं। विद्यानिवास मिश्र, मन्मथनाथ गुप्त, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, हंसराज रहबर आदि विद्वानों ने ऐसा ही माना है। इसके संबंध में डॉ. कमल किशोर गोयंका ने इस प्रकार लिखा - 'इस भ्रान्ति का मूल कारण संभवतः 'प्रेमा' और 'प्रतिज्ञा' के कथानकों तथा पात्रों के नामों में पर्याप्त समानता है, जिसके कारण हिन्दी विद्वानों ने उन्हें एक ही समझ लेने की भूल की है, और 'प्रेमा अथवा प्रतिज्ञा' या 'प्रतिज्ञा अथवा प्रेमा' लिखकर उनका एक ही उपन्यास के रूप में उल्लेख किया है। लेकिन सत्य यह है कि 'प्रेमा' और 'प्रतिज्ञा' प्रेमचंद के दो अलग-अलग उपन्यास हैं जो भिन्न-भिन्न समय पर लिखे एवं प्रकाशित किए गए।

▶ 'प्रेमा' और 'प्रतिज्ञा' के कथानकों तथा पात्रों के नामों में पर्याप्त समानता है

प्रेमचंद ने भी 3 सितंबर 1929 को लखनऊ से केशीराम सब्बरवाल को लिखे पत्र में 'प्रतिज्ञा' का उल्लेख करते हुए लिखा, 'मैं ने हाल में दो छोटे उपन्यास लिखे हैं 'निर्मला 'और 'प्रतिज्ञा'। दोनों में से किसी का भी दावा कलाकृति होने का नहीं है, उनमें कमोबेश समाज की बुराइयों का पर्दाफाश किया है।

प्रेमचंद के सबसे छोटा सामाजिक उपन्यास है 'प्रतिज्ञा'। त्रिकोण प्रेम की मनोरंजन कहानी इसमे है, एक साधारण सी कहानी। लेकिन उन्होंने प्रेम साधना और कर्तव्य निष्ठा का सुन्दर समन्वय दिखाकर इसे अत्यंत मनोरंजक बना दिया है। लाला बदरी

▶ सबसे छोटा सामाजिक उपन्यास है 'प्रतिज्ञा'

प्रसाद की पुत्री प्रेमा से अमृतराय और प्रो. दीननाथ प्रेम करते थे।बडी बहन की मृत्यु के बाद उसकी शादी अमृतराय से निश्चित हो गई। लेकिन दीननाथ इस घटना से प्रसन्न नहीं थे। इसी बीच काशी के आर्य समाज मन्दिर में विधवा-विवाह के संबंध में एक आर्य-उपदेशक का भाषण सुनकर अमृतराय विधवा से ही शादी करने की प्रतिज्ञा कर लेते हैं। इस प्रतिज्ञा से प्रेमा को और उसके पिता को बहुत दुःख होता है, अंत में प्रेमा का विवाह दीननाथ से ही हो जाता है।

▶ विधवाओं को पुनर्विवाह न करने देने की कुरीति पशुता,अमानुषिकता, अस्पृश्यता की तरह हिन्दू समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है।

अमृतराय निस्सहाय विधवाओं को आश्रय देने केलिए वनिताश्रम की स्थापना करता है और उसके संचालन के सेवा-कार्य में अपने शेष जीवन को अर्पण कर देता है। इस उपन्यास के बारे में नित्यानंद पटेल का विचार है- 'प्रेम और कर्तव्य के कठिन संघर्ष में प्रेमा और अमृतराय दोनों ने अपनी गुत्थियों को कैसे सुलझाया और सुखपूर्वक जीवन निर्वाह का मार्ग निकाला, यह सब किस्सा 'प्रतिज्ञा' में अत्यंत रसप्रद बन पड़ा है। उपन्यास छोटा सा है, किंतु उपयुक्त अंतर्द्वन्द्व से उदात्त दृश्यों और चरित्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रणों से यह ऐसा उच्च बन गया है कि इसे प्रेमचंद के अच्छे उपन्यासों में आसानी से स्थान मिल सकता है। 'निर्मला' और 'प्रतिज्ञा' एक ही समस्या को लेकर लिखे गए दो उपन्यास हैं। 'निर्मला' की समस्या एक दुहाजू के कुमारी कन्या के साथ दूसरे विवाह के दुष्परिणामों को व्यक्त करती है। 'प्रतिज्ञा' में मानो इस समस्या का उत्तर देते हुए प्रेमचंद विधवा- विवाह की समस्या को सुलझाना चाहते हैं।'प्रेमचंद के अनुसार विधवाओं को पुनर्विवाह न करने देने की कुरीति पशुता है, अमानुषिकता है अस्पृश्यता की तरह यह भी हिन्दू समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है।

▶ उपन्यासों को जीवनोपयोगी और समाज के विचारों में क्रांति लगने का श्रेष्ठ साधन बनाया

प्रेमचंद के जीवन के साथ भी विधवा-समस्या का गहरा संबंध था। इसलिए इस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर उन्होंने बड़ी गहराई से विचार किया है। इन्हीं व्यक्तिगत अनुभव तथा चिंतन-मनन का परिणाम 'प्रतिज्ञा' उपन्यास है। इसमें विधवा समस्या के दो मुख्य समाधान प्रेमचंद ने दिये हैं- प्रथम यह कि विधवाओं को विधुरों के समान ही पुनर्विवाह का अधिकार मिलना चाहिए तथा दूसरा वनिता भवन की स्थापना।इस प्रकार प्रेमचंद ने एक छोटी-सी प्रेम-कहानी में अपने समय की समस्याओं को तथा उनके संबंध में अपने मन के भावों, विचारों, वेदना विद्रोह और दर्द-बेचैनी को यथास्थान समाविष्ट कर 'प्रतिज्ञा' को समाज का दर्पण बना दिया है। 'इस प्रकार पीछे घिसटते आ रहे उपन्यास साहित्य को वर्तमान युग की समस्याओं के साथ जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर प्रेमचंद ने उपन्यासों को नयी दिशा की ओर मोड़ा, जीवनोपयोगी बनाया और समाज के विचारों में क्रांति करने का श्रेष्ठ साधन बना दिया।'

3.1.3.8 गबन-1931

'गबन' उपन्यास मार्च 1931 में सरस्वती प्रेस वारणासी से प्रकाशित हुआ था। यह प्रेमचंद की एक प्रौढ कलाकृति है। इसमें आभूषण-प्रियता, मिथ्याडम्बर, देशभक्ति, वीरता, सरलता आदि अनेक मनोवृत्तियों का वर्णन किया गया है। मध्य वर्ग की आर्थिक

स्थिति का बहुत ही यथार्थ चित्र इस में है। जालपा की आभूषण लालसा तथा रमानाथ की आडंबर-प्रियता दोनों व्यक्तिगत मनोवृत्तियाँ कथानक को गति देती हैं। जालपा तो एक प्रतिनिधि पात्र ही है। तत्कालीन प्रायः सभी स्त्रियों में आभूषण- लालसा सामान्यतया मिलती है। आभूषण-लालसा, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाजमूलक होने के कारण सामाजिक समस्या का रूप धारण कर लेती है। 'इस प्रकार तत्कालीन स्त्रियों की आभूषण लालसा तथा युवकों की आडंबर प्रियता को सामाजिक समस्या के रूप में देखा जाय, तो 'गबन' को सामाजिक उपन्यास कहा जा सकता है'। 'गबन' में 'प्रतिज्ञा', 'सेवासदन' या 'निर्मला' के समान किसी विशिष्ट सामाजिक कुरीति का विस्तार से विवेचन-विश्लेषण तथा समाधान आदि का संकेत नहीं है। फिर भी इसमें समस्त मध्यम वर्ग की अच्छाइयों-बुराइयों, दुर्बलताओं-सबलताओं आदि सभी का उद्‌घाटन हुआ है। श्री. रामदीन गुप्त के अनुसार- 'प्रेमचंद ने 'गबन' की समस्या को गहनों की समस्या तक ही सीमित नहीं रखा है। गहनों की समस्या के माध्यम से प्रेमचंद ने मध्यवर्गीय समाज के खोखले, झूठे, आडंबरयुक्त और आस्थारहित जीवन का संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।'

▶ आभूषण-लालसा, मिथ्याड़म्बर, देशभक्ति, वीरता, सरलता आदि मनोवृत्तियों का वर्णन

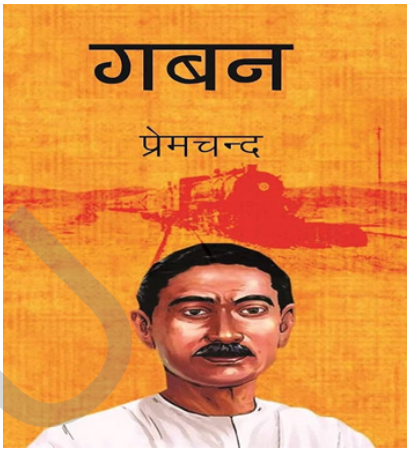

श्री, मन्मथनाथ गुप्त इस उपन्यास के बारे में लिखते हैं 'यों तो प्रेमचंद के कई उपन्यासों में मध्य- वर्ग का चित्रण है, किंतु 'गबन' में लेखक इस वर्ग के चरित्र का जितना सुन्दर, सजीव तथा मनोज्ञ उद्‌घाटन करने में समर्थ हुए हैं, उतना वे और किसी उपन्यास में नहीं कर पाये। यह पुस्तक मानो एक दर्पण है, जिसमें मध्य-वित्त वर्ग अपनी सजीव प्रतिच्छवि देख सकता है'। रामनाथ की आडंबर प्रियता के कारण ऋण के भार से दब गये। बहू केलिए गहनों, वेश-भूषा का दिखावा करके रामनाथ ने अपने अमीर होने का प्रभाव उस पर डाला था। उसी झूठे मान की रक्षा केलिए, विवाह के समय उधार लिए हुए गहनों को लौटाने के बहाने उसे जालपा के गहनों की चोरी करनी पड़ी। जालपा की सहेली रतन के रुपयों को लौटाने केलिए म्युनिसिपालिटी के रुपयों का गबन करना पड़ा, और वह घर छोडकर कलकत्ता भाग गया। कलकत्ता में पुलिस के चक्कर में आ गया। लेकिन इस बीच जालपा अपनी गलतियों को अनुभव करते हुए आभूषणों का मोह छोडकर सादगी का नया जीवन प्रारंभ करती है। उसने कठोर जीवन व्रत लिया, जिससे वह रमानाथ के विचारों में परिवर्तन लाने में सफल हुई है। अंत में सबसे वह मुक्त हो जाता है। 'अन्त में प्रेमचंद ने परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुकूल रमानाथ, जालपा आदि पात्रों का हृदय- परिवर्तन कराके अपनी आदर्शवादी मनोवृत्ति का परिचय दिया है। आदर्श का स्थूल रूप में वर्णन न करके क्रियात्मक रूप में ही स्पष्ट किया है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि 'गबन' में यथार्थवाद और

▶ 'गबन' में यथार्थवाद और आदर्शवाद का अत्यंत कलात्मक सम्मिश्रण '

SGOU

आदर्शवाद का एक प्रकार का रासायनिक सम्मिश्रण हुआ है जो अत्यंत कलात्मक है।'

'गबन' की मुख्य समस्या आभूषण प्रेम की समस्या भारतीय समाज को ग्रसित एक अभिशाप है। आभूषण प्रेम के दुष्परिणामों से पीड़ित होते हुए भी नारी उसे छोडना नहीं चाहती। प्रेमचंद का सुझाव है कि आभूषणों पर खर्च किया हुआ धन गृहस्थ लोग यदि अपने बाल बच्चों की परवरिश या अच्छे हवादार घर में रहने केलिए करें, तो हमारा दुःख -दारिद्य और पति-पत्नी के कलह की बहुत सी समस्यायें सुलझ जाएँ।इसमें भारतीय पुलिस की कार्य वाहियों के खोखलेपन को भी वास्तविक रूप में उन्होंने दिखाया है। 'गबन' अपने समग्र रूप में मध्य-वित्तीय परिवार एवं तत्कालीन राजनैतिक स्थिति को अभिव्यक्त करता है। पुलिस के हथकण्डों एवं न्यायालय के निर्णयों आदि के संबंध में भी प्रेमचंद ने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

▶ मध्य-वित्तीय परिवार एवं तत्कालीन राजनैतिक स्थिति की अभिव्यक्ति

3.1.3.9 कर्मभूमि-1932

प्रायः सभी विद्वानों ने 'कर्मभूमि' का प्रकाशन-वर्ष 1932 माना है, लेकिन निश्चित तिथि का उल्लेख किसी ने नहीं किया। हिन्दी में इसका प्रकाशन सरस्वती प्रेस, बनारस से हुआ और उर्दू में 'मैदाने अमल' के नाम से जामिया मिल्लिया दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

▶ हिन्दी में 'कर्मभूमि' का प्रकाशन सरस्वती प्रेस में

'कर्मभूमि' को सामाजिक उपन्यास न कहकर राजनैतिक अथवा राष्ट्रीय उपन्यास कहा जाता है, क्योंकि इसमें समाज की समस्याओं के स्थान पर संपूर्ण राष्ट्र की समस्याओं को प्रधानता दी गई है इसमें हिन्दू समाज के सबसे पद-दलित अंग अछूतों तथा स्त्रियों की पराधीन दशा की विविध पहलुओं का भी विस्तार से विवेचन हुआ है, जैसे अछूतों की समस्या, उनके उद्धार के सुझाव, शिक्षा-सुधार, अनमेल विवाह, ज़मीन्दार-किसान संघर्ष, सूदखोरी आदि विषयों का। तत्कालीन राजनैतिक जागृति की झलक भी इसमें है। प्रेमचंद के अनुसार राजनैतिक आन्दोलन की सफलता के लिए सामाजिक सुधार अनिवार्य है।

▶ संपूर्ण रूप से राजनैतिक अथवा राष्ट्रीय उपन्यास

'कर्मभूमि' में स्वाधीनता आंदोलन का वर्णन है, साथ ही साथ सेवा द्वारा जीवन को सार्थक बनाने का महान सन्देश भी। अछूतों के मन्दिर प्रवेश केलिए भी उन्होंने अपनी लेखनी चलायी। कर्मभूमि के डॉ. शान्तिकुमार कहते हैं- 'मन्दिर किसी एक आदमी या समुदाय की चीज़ नहीं है। यह हिन्दू मात्र की चीज़ है। यदि तुम्हें कोई रोकता है तो उसकी ज़बरदस्ती है। मत टलो उस मन्दिर के द्वार से, चाहे तुम्हारे ऊपर गोलियों की वर्षा ही क्यों न हो। यहाँ तो धर्म की रक्षा सदा प्राणों से हुई है और प्राणों से होगी'। सन् 1930-31 के राजनैतिक, सामाजिक जागरण के समय भी दलित वर्ग को मन्दिर प्रवेश

▶ सामाजिक समस्याओं को सुलझाने केलिए गाँधीवादी उपायों को स्थान दिया

के लिए ही कितना भीषण संघर्ष करना पड़ा, कितने लोगों को पुलिस की लाठी - गोली का शिकार होना पडा, इस तथ्य से हिन्दू-समाज की संकुचित मनोवृत्ति का यथार्थ चित्र सामने आया है। मन्दिर प्रवेश से अछूतोद्धार का कार्य समाप्त नहीं, शुरू होता है। इसके बाद अछूतों के रहने के लिए मकानों की व्यवस्था करने का महत्वपूर्ण प्रश्न भी प्रेमचंद ने उठाया है। मन्दिर प्रवश के आन्दोलन की सफलता ने नगर की समस्त अछूत एवं निम्नजातियों में अपने अधिकारों की चेतना और संगठन की शक्ति में दृढ़ विश्वास उत्पन्न कर दिया। इसी कारण से ही उन लोगों ने म्युनिसिपालिटी के विरुद्ध हड़ताल करने का आह्वान किया। सामाजिक समस्याओं को सुलझाने केलिए ही प्रेमचंद ने इस प्रकार के गाँधीवादी उपायों को उपन्यास में स्थान दिया है। अनमेल विवाह का भी चित्रण सुखदा और अमरकान्त तथा नैना और मनीराम के माध्यम से इस उपन्यास में दिया गया है और इस समस्या का समाधान भी अन्य उपन्यासों की भाँति इसमें भी है।

▶ प्रेमचंद का कहना है कि धर्म का आडंबर समाप्त होना बहुत जरूरी है

इस उपन्यास में धर्म के ढोंग का भी चित्रण है। मन्दिर ऐश-आराम और भोग विलास के स्थान बने हुए दिखाए गये हैं। गरीबों को भूखों मरना पड़ता है, किंतु ठाकुरजी के मंदिर में दूध-घी की रेल-पेल हो रहा है। प्रेमचंद का कहना है कि धर्म का यह आडंबर समाप्त होना बहुत जरूरी है, अन्यथा अंधविश्वास कम होने की बजाय बढ़ता ही जायगा, और जनता का उद्धार नहीं हो सकेगा। हमारा समाज जिन लोगों को धर्म- चुस्त समझकर इज्जत करता है, उनका प्रतिनिधित्व इस उपन्यास के अमरकांत करते हैं।

▶ यथार्थ जीवन चित्रण और युगीन समस्याओं का समाधान

प्रेमचंद शिक्षा की असीम शक्ति को अच्छी तरह जानते थे। वे जानते थे कि हिन्दू-समाज की सभी समस्याओं का समाधान इससे ही हो सकता है। वे चरित्र-निर्माण को शिक्षा का मुख्य ध्येय मानते हैं। देश में प्रचलित शिक्षा प्रणाली के दोष का उल्लेख भी वे करते हैं। कर्मभूमि में अमरकान्त कहते हैं 'जीवन को सफल बनाने केलिए शिक्षा की ज़रूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है हमारा सेवा भाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागरित नहीं हुई, तो कागज़ की डिग्री व्यर्थ है।' किसानों और मज़दूरों की समस्याओं और दीन-हीन दशाओं का चित्रण भी अनेक स्थान पर है। जनता द्वारा अपने अधिकार प्राप्त करने केलिए किए गए आन्दोलनों- नगर और गाँव दोनों ही स्थान का वर्णन भी इसमें हैं। सुखदा, डॉ. शान्तिकुमार, नैना, रेणुका आदि नगर का नेतृत्व करते हैं।युगीन समस्याओं का समाधान भी प्रेमचंद ने इसमें दिया है इस प्रकार 'कर्मभूमि' उपन्यास में प्रेमचंद ने यथार्थ जीवन चित्रण द्वारा कलाकार के धर्म को अच्छी तरह निभाया है इसलिए इसे प्रेमचंद की एक प्रौढ कृति मानने में कोई आपत्ति नहीं है।

3.1.3.10 गोदान-1936

▶ ग्रामीण समाज का चित्रण करना उपन्यास का मुख्य ध्येय

10 जून 1936 में 'गोदान' का प्रकाशन हुआ 'गऊदान' नाम से उर्दू में प्रेमचंद की मृत्यु के एक वर्ष बाद मकतबा जामिया दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रेमचंद अपने अन्य उपन्यासों की भाँति 'गोदान' में भी विविध समस्याओं-अछूतों की समस्या, जमींदारी प्रथा,

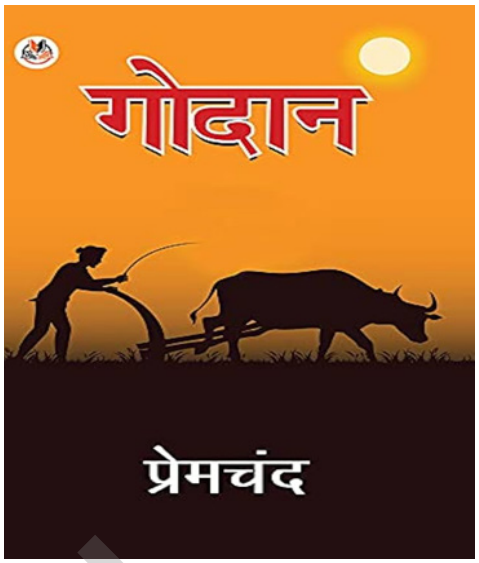

किसानों का शोषण, वैवाहिक समस्यायें, वेश्या समस्या, संयुक्त परिवार की समस्या को अभिव्यक्त किया है। इसमें उपन्यासकार प्रेमचंद का व्यक्तित्व अत्यंत स्पष्ट है। श्री. नित्यानंद पट ेल के अनुसार 'जीवन में जो कुछ वह आरंभ से अंत तक सोचते-विचारते आए, जिन तत्वों, विचारों, सिद्धान्तों और आदर्शों को उन्होंने अपनाया, जो उनका जीवन दर्शन बना, वह सब 'गोदान' में प्रकट हुआ है। ग्रामीण समाज का चित्रण करना ही उपन्यास का मुख्य ध्येय है। धर्म के विकृत रूप, किसानों पर किए गए अत्याचारों का चित्रण आदि का सुन्दर सजीव वर्णन इसका मुख्य अंश है 'गोदान' के अधिकांश पात्र विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। होरी किसान है, पत्नी धनिया साहसी है, बेटा गोबर और बेटियाँ हैं रूपा और सोना। झिंगुरी, पटेश्वरी, सहुआइन, मँगरु तथा नोखेराम किसानों के शोषक भी हैं। ज़मींदार राय साहब, पूँजीपति खन्ना, मिस मालती, प्रोफेसर मेहता आदि नगर जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन भी करते हैं। इस प्रकार नगर जीवन और ग्राम जीवन से संबंधित सभी पात्र अपनी सबलता और दुर्बलता के साथ इसमें प्रस्तुत हैं।

'सेवासदन' में वेश्यावृत्ति के कारण और वेश्या समस्या का गहराई से विवेचन-विश्लेषण किया गया है। इसके बाद उन्होंने 'गोदान' में इस समस्या के आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। वे कहते हैं वेश्यावृत्ति को रोकने केलिए 'ज़ड पर जब तक कुल्हाड़ी न चलेगी, पत्तियां तोड़ने से कोई नतीजा नहीं।' 'गोदान' की स्वाभिमानी गोविन्दी ने अपने पति खन्ना की पशुता और अमानुषिक व्यवहार से ही घर छोड़ दिया। यदि डॉ. मेहता उसे समझा-बुझाकर फिर घर न ले आते तो बात और होती। लेकिन 'सेवासदन' की सुमन वेश्यावृत्ति द्वारा ही जीवन निर्वाह करने को बाध्य होती है। यदि सुमन की तरह गोविन्दी भी जीवन निर्वाह में असमर्थ होती तो, उसकी क्या दुर्गति होती, कहा नहीं जा सकता। उनके अनुसार स्त्री को घर में स्नेह सम्मान मिल जाय तो, वह भोग लालसा को भी बडी आसानी से काबू में रख सकती है। ये विकास क्रम में स्त्री को पुरुष से श्रेष्ठ समझते हैं। 'गोदान' के पूर्वार्द्ध में मालती के चरित्र में विलास-वैभव, फैशन, चंचलता, पश्चिमी रीति-रिवाज़ का अनुकरण आदि सभी विशेषताएँ दिखाई देती हैं, परंतु बाद में प्रो. मेहता के संपर्क में आने पर मालती भारतीय आदर्श नारी के रूप में दिखाया गया है। इस प्रकार एक ओर वैभव विलास-समृद्धि के चित्रण है तो दूसरी और दीन-दुःखी, पीडित, शोषित, भूखे

▶ एक साथ वैभव विलास-समृद्धि के और दीन-दुखी, पीड़ित शोषित, लोगों का चित्रण

रोगी लोगों के चित्रण भी हैं।

'गोदान' के पात्रों में होरी, मेहता, गोबर आदि वर्ग चेतना से भरपूर हैं। सामाजिक वैषम्य पर राय साहब और मिर्जा खुर्शिद आत्म विश्लेषण भी करते हैं। प्रेमचंद के मानव मूर्ति मेहता श्रमिक वर्ग, मिल मालिक पर ही नहीं, नारी की सामाजिक विषमता पर भी विचार व्यक्त करते हैं और विषमता को जन्म देनेवाली पारम्परिक व्यवस्था और पूँजीवादी व्यवस्था के प्रति कटु आलोचक के रूप में उभरते हैं। शोषण का विशद चित्रण और आर्थिक मीमांसा इस उपन्यास में पराकाष्ठा पर है। होरी का अंत कृषक के परंपरागत ग्रामीण जीवन का अंत है। वह भारतीय कृषक जीवन की त्रासदी है। 'होरी, 'रंगभूमि' के नायक सूरदास के समान अपनी रक्षा के लिए इधर-उधर नहीं भागता और न वह 'गबन' के रमानाथ एवं कर्मभूमि के अमरकांत के समान शहर से गाँव और गाँव से शहर की ओर आता-जाता है। वे अपने पुत्र गोबर के समान भी लखनऊ शहर जाकर मज़दूरी नहीं करता- होरी की कथा कृषि-संस्कृति के आरंभ की प्रतीकात्मक कथा भी है। इसी प्रकार शोषक वर्ग को जो फटकार प्रेमचंद ने सशक्त रूप से 'गोदान' में गोबर द्वारा ग्रामीण शोषणकर्ता पटेश्वरी, दातादीन को तथा मेहता द्वारा रायसाहब व खन्ना को दिलवायी है, वह हमें आगामी उपन्यासों में आज तक नहीं मिल सकी है।

▶ होरी की कथा कृषि-संस्कृति के आरंभ की प्रतीकात्मक कथा

धनिया हिन्दू समाज की विषमता की वह शोषित पात्र है, जो अपने मानवीय मूल्यों पर अडिग है। गोबर जब भोला अहीर की विधवा लड़की झुनिया को गर्भवती के रूप में अकेला छोडकर भाग जाता है तो होरी समाज के भय से उसे अपने घर में जगह नहीं देना चाहता लेकिन मानव-भावना से पूर्ण धनिया ने न केवल उसे अपने घर में जगह ही दी बल्कि सारे समाज से लोहा लिया। अस्तित्व संकट को भी धनिया, होरी के समान ही गहराई से अनुभव करती है, होरी इस संकट को झेलता हुआ सभी शोषण-अत्याचार को चुपचाप सहन करता चलता है, वहीं धनिया सभी शोषक शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करती रहती है।

▶ मानव-भावना से पूर्ण धनिया शोषक शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करती रहती है

होरी की त्रासदी को शहरी गोबर के साथ रखकर देखें तो स्पष्ट होता है कि गोबर बेलारी गाँव से भागकर लखनऊ शहर पहुँचता है और चाय की दूकान खोल लेता है। इस प्रकार धनी बन जाता है। डॉ. कमल किशोर गोयंका के शब्दों में 'होरी और गोबर में यद्यपि पीढियों का अन्तर तो है ही, परंतु गाँव और शहर में रहने का भी अन्तर है। होरी यदि गोबर के समान या उसके साथ लखनऊ शहर जाकर मज़दूरी करता तो बेलारी जैसी त्रासदी नहीं होती और यदि गोबर होरी के साथ ही बेलारी गाँव में रहता, तब उसे भी होरी जैसी भयानक परिस्थितियों एवं त्रासदी का सामना करना पड़ता। होरी केलिए उसकी ज़मीन, उसके गाँव और ग्रामीण जीवन का कोई विकल्प नहीं है, उसी में जीवन है और उसी में मर जाना है, लेकिन गोबर ने गाँव के विकल्प शहर को स्वीकार कर लिया है और वह होरी के कृषक-कुल से नाता तोड़कर शहर का मज़दूर बन जाता है। होरी का जीवन त्रासदी से भरा है, वह स्वयं शहरी सभ्यता से बचता है। होरी का कृषक-कुल उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाता है, लेकिन गोबर होरी बनकर जीने

▶ होरी का कृषक-कुल उसकी मृत्यु के साथ समाप्त होता है

को तैयार नहीं है वह शहर का बन जाता है।

▶ जन-जीवन तथा देश की धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के विविध चित्रण

इस प्रकार 'गोदान' में एक ओर रीति रिवाज़, खान-पान, शादी-विवाह, रूढि परंपरा से चिपटे हुए लोगों के चित्र हैं तो दूसरी ओर परंपराओं और आडंबरों के प्रति विरोधात्मक भाव है। अन्याय-अत्याचार को चुपचाप सह लेने की प्रवृत्ति एक ओर है तो दूसरी और अन्याय-अत्याचार के प्रति रोष-क्षोभ, क्रोध-विद्रोह की भावना है। 'गोदान के संबंध में डॉ. त्रिभुवन सिंह का कथन द्रष्टव्य है 'एक ही उपन्यास गोदान के अन्दर जन-जीवन तथा समाज अथवा देश की धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के जितने विविध चित्र लेखक ने समेटकर यथार्थ रूप में चित्रित किये हैं उतने चित्र संपूर्ण उपन्यास-साहित्य में ढूँढने पर ही न मिलेंगे और एक ही स्थान पर मिलना तो असंभव ही है। 'गोदान' ग्रामीण जीवन के वास्तविक पक्ष का गद्यात्मक महाकाव्य है इस उपन्यास के द्वारा प्रेमचंदजी ने जीवन और जगत् के विविध क्षेत्रों का तदवत् चित्र, अपने जीवन के संपूर्ण अनुभवों से पखारकर उतारना चाहा है, और लेखक को इस में सफलता मिली है, यही इस उपन्यास की सबसे बडी खूबी है। लेखक ने अपने जीवन की अन्तिम रक्त-बूंद तक जिन संघर्ष परिस्थितियों के साथ व्यतीत किया था, 'गोदान' उसी की सच्ची कहानी है।

3.1.3.11 मंगल-सूत्र-1948

प्रेमचंद का यह अंतिम उपन्यास अधूरा ही रहा 26 जून 1936 को वे बीमार हुए और 8 अक्तूबर 1936 को उनका देहावसान हो गया। इन दिनों में उन्होंने इस उपन्यास के लगभग 70 पृष्ठों को लिख दिया। उनकी आकस्मिक मृत्यु के कारण यह उपन्यास पूरा न हो सका। इसका प्रकाशन सन् 1948 में हुआ।

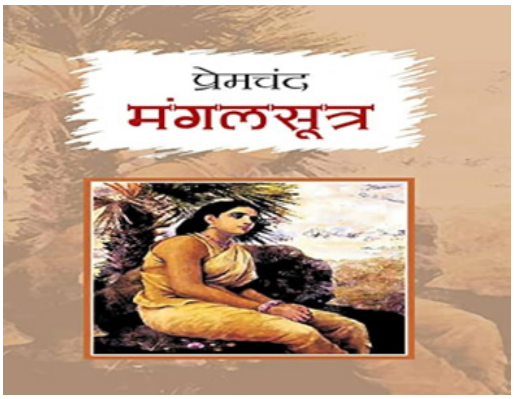

मंगलसूत्र के मूल में एक नैतिक चिन्ता है। इसमें लेखक ने अपने जीवन को रेखांकित करने का प्रयास किया है और यह इस आतंक तथा एहसास के बीच किया है कि उनके पिछले जीवन में कितना आदर्शवादी मोह रहा था। इस उपन्यास में इस मोह के टूटने का एहसास और दर्द है। देवकुमार के आत्म-चिंतन में पूरे गाँधी की समीक्षा है। देवकुमार को प्रेमचंद ने इस पतनोन्मुख समाज में शुद्ध चेतना की तरह प्रस्तुत किया है। इसमें उन्होंने स्वतंत्रता की नवीन व्याख्या की और नारी स्वतंत्रता का समर्थन किया। इन उपलब्ध उपन्यासों के अलावा 'किशन' आदि उपन्यास अभी तक अनुपलब्ध है। कुछ विद्वानों ने प्रेमचंद के 'प्रतापचन्द्र' नामक उपन्यास का भी उल्लेख किया है, लेकिन इसका

▶ स्वतंत्रता की नवीन व्याख्या की और नारी स्वतंत्रता का समर्थन

विश्वसनीय प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं।

इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासों पर विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद उपन्यासकार हैं जिनकी रचनाएँ 'उपन्यास' की कसौटी पर पूरी तरह से खरी उतरती हैं। उन्होंने समकालीन यथार्थ को बहुत कलापूर्ण ढंग से कथा साहित्य में चित्रित किया। किसानों की निर्धनता, उनकी दयनीय जीवन स्थिति आदि का चित्रण 'प्रेमाश्रम', 'गोदान', 'कर्मभूमि' आदि में है। सामाजिक सुधार करने केलिए सेवा समितियों 'रंगभूमि', 'कायाकल्प' और 'कर्मभूमि' में हैं। लेकिन सरकार इसे स्वीकार नहीं करती।प्रेमचंद ने उन सभी लोगों की, विशेषकर शिक्षित वर्ग की आलोचना की है, जो अपने स्वार्थ केलिए सरकार का समर्थन करते हैं और जनता का शोषण करते हैं। सरकार की सभी संस्थाएँ प्रेमचंद की आलोचना का विषय बनी हैं। मध्यवर्गीय समाज का चित्रण उनके प्रायः सभी उपन्यासों 'सेवासदन', कर्मभूमि, 'कायाकल्प', 'निर्मला','गबन' और रंगभूमि में हैं। प्रेमचंद भी खुद मध्यवर्ग के सदस्य थे, इसलिए इस वर्ग के अन्तर्विरोधों और असंगतियों से भरे यथार्थ को प्रस्तुत करने में उन्हें विशेष सफलता मिली है। 'सेवासदन' के कृष्णचंद और पद्मसिंह शर्मा, 'रंगभूमि' के जन-सेवक और ताहिर अली, 'निर्मला' के उदय भानु लाल और मुंशी तोताराम, 'गबन' के मुंशी दयानाथ और वकील इन्दुभूषण, सब की समस्याएँ मध्यवर्गीय अन्तर्विरोधों की समस्याएँ हैं।

▶ मध्यवर्ग के अन्तर्विरोधों और असंगतियों से भरे यथार्थ को प्रस्तुत करने में सफल

भारतीय जीवन के यथार्थ का एक महत्वपूर्ण पहलू समाज और परिवार में नारी की स्थिति को लेकर है। उस समय नारी पारिवारिक संपत्ति के अधिकार से वंचित थी। वह स्वतंत्र रूप से अपनी जीविका आर्जित करने में असमर्थ थी। 'सेवासदन' की सुमन सामाजिक निर्दयता के कारण वेश्या बनने को बाध्य होती है, 'निर्मला ' की निर्मला को इन कारणों से ही अपने जीवन में नरक की यातना भुगतनी पड़ती है। 'गबन' की रतन को भी अपने पति की मृत्यु के बाद अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। 'सेवासदन' की शान्ता, 'प्रेमाश्रम' की श्रद्धा और विद्या, 'रंगभूमि' की इन्दु, 'निर्मला ' की निर्मला और 'कर्मभूमि' की नैना आदि आरंभ से अन्त तक प्रेमचंद के नारी आदर्श के अनुरूप ही आचरण करती हैं। प्रेमचंद के नारी पात्र भारतीय आदर्श के जीवन्त रूप हैं। स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेकर प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी भी जेल गयी, इसका असर भी उनके उपन्यासों के नारी पात्रों पर है। 'गबन' की जालपा नारी जागरण की सूचना देती है। कर्मभूमि में सुखदा हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश आन्दोलन का नेतृत्व करती है और जेल जाती है, साथ ही छोटे-छोटे घरों के निर्माण के आन्दोलन में भाग लेकर सकीना, बुढिया पठानिन, रेणुका देवी और मुन्नी भी जेल जाती है। 'गोदान' की मालती देश सेवा और समाज सेवा केलिए अविवाहित रहने का व्रत लेती है।

▶ प्रेमचंद के नारी पात्र भारतीय आदर्श के जीवन्त रूप

प्रेमचंद आरंभ से ही आर्य समाज के सदस्य रहे और उसकी सुधारवादी प्रवृत्ति को आत्मासत करके उन्होंने विधवा एवं वेश्या जीवन की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया। दहेज के दुष्परिणामों को समाप्त करने की चेष्टा की। लेकिन डॉ. कमल किशोर गोयंका के अनुसार 'वे अपने व्यक्तिगत जीवन में दहेज के प्रभाव से स्वयं को न बचा

▶ समाज में व्याप्त भूत -प्रेत संबंधी अंधविश्वास का चित्रण

सके। उनकी एकमात्र पुत्री कमला जब विवाह योग्य हुई तब प्रेमचंद को भी इस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा'। डॉ. गोयंका फिर कहते हैं- "उस समय की परिस्थितियों के कारण उन्हें भी दहेज देना पड़ा। प्रेमचंद जैसे लेखक को भी अपनी मान्यताओं के विपरीत पुत्री के विवाह में दहेज देना स्वीकार करना पड़ा यह स्थिति इस प्रथा की भयंकरता एवं दबाव की द्योतक तो है ही, साथ ही आदर्श एवं यथार्थ के अन्तर को स्पष्ट करते हुए इस बात का प्रमाण है कि प्रेमचंद को भी सामाजिक बुराइयों से समझौता करना पड़ा। प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त भूत - प्रेत संबंधी अंधविश्वस को भी अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। लेकिन श्री. कमल किशोर गोयंका के अनुसार खुद प्रेमचंद को भी भूत-प्रेत पर विश्वास था। उनके उपन्यासों में भूत-प्रेत संबंधी विवरण हैं।

प्रेमचंद हिन्दी के युग-प्रवर्तक गौरवशाली कथाकार थे। उन्होंने भारतीय जनता की चित्तवृत्तियों का व्यापक धरातल पर सूक्ष्म अध्ययन किया था। डॉ. रत्नाकर पाण्डेय के मत में 'युग चेता साहित्यकार की संवेदनशील यथार्थवादी लेखनी से जन-जीवन की अनिवार्य समस्याओं का जैसा खुला चित्रपट उनके कथा-साहित्य में मिलता है वैसा कोई भी कथाकार चित्रित न कर सका।' प्रेमचंद का साहित्य मध्यवर्गीय ग्रामीण जीवन की विषम समस्याओं से आतप्रोत है। उन्होंने आँखें खोलकर तत्कालीन यथार्थ तथ्यों का विश्लेषण किया। प्रेमचंद के कथा साहित्य में जन-देवत्ता की कामना की गई।भारतीय जनमन में वास्तविकता की प्राण-प्रतिष्ठा करने में भी वे सफल हुए साथ ही ' उन्होंने आदर्श को कला से सजीव बनाया।उन्होंने ऐसे चरित्रों की प्रतिष्ठा की जो पत्थरों में प्राण भरने की शक्ति रखते हैं। कथाकार और साहित्यकार प्रेमचंद के सम्बन्ध में व्यापक धरातल पर हिन्दी-जगत में जो अध्ययन और शोध चल रहा है वही हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद के ऐतिहासिक स्थान निर्धारित करता है।

▶ प्रेमचंद का साहित्य मध्यवर्गीय ग्रामीण जीवन की विषम समस्याओं से आतप्रोत

'प्रेमचंद और उनका साहित्य' में कथाकार के रूप में प्रेमचंद के कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। 'सेवासदन' प्रेमचंद का प्रथम महान उपन्यास माना जाता है। यह उपन्यास उर्दू में लिखा गया था। बाद में उसे हिन्दी में प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास के बारे में विद्वानों का मत है कि इसमें प्रेमचंद ने वेश्या समस्या को प्रमुख स्थान दिया है। परंतु डॉ. रामविलास शर्मा का कथन है कि इसमें एक तिहाई भाग ही वेश्या समस्या से सम्बन्धित पाया जाता है। शेष भाग अन्य समस्याओं को उजागर करता है। उनकी दृष्टि में नारी की पराधीनता ही इस उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है।

▶ नारी की पराधीनता

3.1.3.12 प्रेमा (1907)

विश्व के महान कथा-शिल्पी प्रेमचंद का प्रारंभिक उपन्यास है-'प्रेमा'। प्रेमा के पूर्व

▶ विधवा जीवन की ज्वलंत समस्या

उर्दू-रूप 'हमखुर्मा व हमसवाब' नाम से प्रस्तुत उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे। विधवा जीवन की ज्वलंत समस्या को सशक्त ढंग से उठाने में सक्षम यह कथा विधवा विवाह की पक्षधर है। इसमें नायक सहसा ही समाज सुधार का बीड़ा उठाकर प्रेमा के साथ विवाह करने का वचन भंग कर देता है, जिससे विरोध की विचित्र स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

'प्रेमा' में प्रेमचंद का तीखा विरोध उन शक्तियों के प्रति है, जो धर्म के नाम पर पाखंडों में डूबी हैं। उपन्यास सम्राट के गौरव से विभूषित संसार के अग्रणी कथाकारों में प्रतिष्ठित प्रेमचंद की यह कृति सम्पूर्ण रूप में प्रामाणिक है।

रूठी रानी(1907)

▶ लघु उपन्यास / लंबी कहानी

'रूठी रानी' मुंशी प्रेमचंद जी का एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जो पहले उर्दू में लिखा गया और फिर हिन्दी में। इसका प्रकाशन वर्ष 1907 है। उपन्यास लघु कलेवर और तेज प्रवाह का है। लघु कलेवर होने के कारण इसे लंबी कहानी के अंतर्गत भी गिने जाते हैं। इसमें उर्दू के शब्द काफी मात्रा में मिलते हैं।

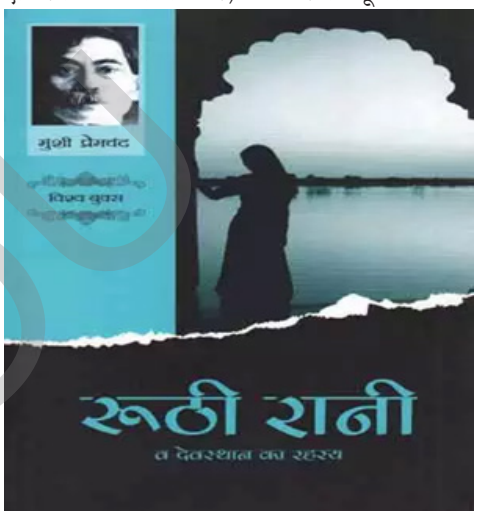

▶ प्रेमचंद का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास

यह कहानी है जैसलमेर के रावल लूणकरण की पुत्री उमादे की। उमादे का विवाह मारवाड़ के शक्तिशाली राव मालदेव के साथ होता है। मालदेव एक पराक्रमी और शक्तिशाली राजा है, लेकिन उसके पराक्रम पर उसके ऐब हावी हैं। इसी ऐब के चलते, नशे की हालत में वे शादी के शुभ अवसर पर एक ऐसा कुकृत्य कर बैठते हैं जो एक राजा को शोभा नहीं देता।

▶ स्वाभिमानिनी रानी उमादे की कहानी

प्रथम दिवस पर ही ऐसे कुकृत्य की खबर जब रानी उमादे को पता चलती है तो वह राव मालदेव से रूठ जाती है। स्वाभिमानिनी रानी उमादे एक बार ऐसी रूठी की वह ताउम्र राजा से नाराज ही रही। इसी रूठने के कारण वह इतिहास में 'रूठी रानी' के नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

यह कहानी मात्र 'रूठी रानी' की नहीं है, यह राजस्थान के उस गौरवशाली अतीत का चित्रण करती है जहाँ योद्धा गर्दन कटने के बाद भी युद्ध करते रहे। एक तरफ शक्तिशाली राव मालदेव है और दूसरी तरफ विदेशी आक्रांता हुमायूँ और शेरशाह सूरी जैसे लोग हैं। एक पराक्रमी राजा जिसके पास शेरशाह सुरी से भी ज्यादा सेना थी, लगभग सत्तर हजार सेना आखिर वह कहाँ मात खा गया।

- उपन्यास की भाषा शैली सामान्य और सहज है

राजस्थान के राजपूत योद्धा, छलकपट न जानते थे। वे तो बस लड़ना और शत्रु को मारना जानते थे। यह उपन्यास एक तरफ रूठी रानी की कथा प्रस्तुत करता है, तो दूसरी तरफ राजमहल में पनपने वाले षड्यंत्रों का भी चित्रण करता है, तीसरी तरफ यह विदेशी आक्रमणकारी और भारतीय राजाओं की आपसी द्वेष को भी प्रस्तुत करता है। दूसरी तरफ राजमहल में पनपने वाले षड्यंत्रों का भी चित्रण करता है, तीसरी तरफ यह विदेशी आक्रमणकारी और भारतीय राजाओं की आपसी द्वेष को भी प्रस्तुत करता है।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

विलासियों द्वारा देश का उद्धार नहीं हो सकता। उसके लिए सच्चा त्यागी होना पड़ेगा।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिन्दी उपन्यास जगत में प्रेमचंद का स्थान सर्वोच्च है। प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य अपने युग की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक प्रवृत्तियों का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है, वह युग का दर्पण है। इसीलिए कहा गया है कि यदि प्रेमचंद युग के भारत का इतिहास नष्ट भी हो जाय, तो भी प्रेमचंद साहित्य द्वारा उसका पुनर्निर्माण हो सकता है। मानवता का व्यापक संदेश, युग का सजीव चित्रण, कथा शिल्प की कलात्मकता, चरित्र-चित्रण की कला, भाषा में लोकभाषा और साहित्यिक सौष्ठव का समन्वय सभी के कारण उपन्यास साहित्य में उनकी कृतियों का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होनें हिन्दी उपन्यास को नई प्राणधारा प्रदान की है। वे उपन्यास क्षेत्र में मील के पत्थर हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का स्थान निर्धारित कीजिए।
2. उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद की देन क्या है ? चर्चा कीजिए।
3. 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'गोदान' आदि उपन्यासों के बारे में परिचय दीजिए।
4. 'निर्मला', 'मंगलसूत्र', 'गबन' आदि उपन्यासों का सारांश समझाइए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन- रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन- शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामवक्ष

4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत राय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

गोदान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'गोदान' का कथानक समझता है
- होरी के जीवन में घटित सभी घटनाओं की जानकारी मिलती है
- कृषक जीवन की कारुणिक दशा से परिचित होता है
- नागरिक जीवन से सम्बंधित लघुकथानक समझता है

Background / पृष्ठभूमि

गोदान 1936 में प्रकाशित मुंशी प्रेमचंद का एक हिन्दी उपन्यास है। इसे आधुनिक भारतीय साहित्य के सबसे महान हिन्दी उपन्यासों में से एक माना जाता है। उपन्यास पूर्व-स्वतंत्रता काल में रचित है और होरी जैसे गरीब किसान और उसके परिवार की कहानी इसका प्रतिपाद्य है।

'गोदान' एक शक्तिशाली और मार्मिक उपन्यास है जो स्वतंत्रता-पूर्व भारत में गरीब किसानों के जीवन की एक झलक पेश करता है। माठनवीय भावना के लिए एक वसीयतनामा है, और यह दिखाता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लोग आशा और ख़ुशी कैसे पा सकते हैं। 'गोदान' उपन्यास भारत के संयुक्त प्रांत के एक छोटे से गाँव का चित्रण प्रस्तुत करता है। गाँव एक गरीब और पिछडा स्थान है जहाँ जमींदारों और साहूकारों द्वारा किसानों का शोषण किया जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

ग्रामीण वातावरण, कृषक - जीवन की आपत्तियाँ, लघुकथानक, गो-दान

SGOU

Discussion / चर्चा

3.2.1 संक्षिप्त कथानक

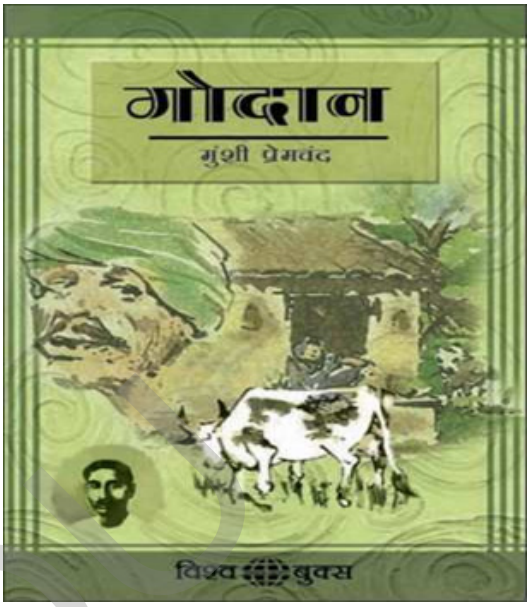

उपन्यास की कथा ग्रामीण वातावरण से ही आरम्भ होती है। किसान होरीराम और उसकी स्त्री धनिया की बातचीत से पता चलता है कि होरी को रायसाहब से मिलने जाना है। पाँच बीघे का यह साधारण किसान किसी प्रकार जीवन से संघर्ष कर रहा है। मालिक के पास जाते हुए मार्ग में पड़ोस के ग्वाले भोला से भेंट हो जाती है। होरी के मन में बहुत दिनों से एक गाय पालने की साध बनी हुई थी। आज सम्मुख अनेक गायें देखकर उसकी लालसा जागृत हो उठी। बातचीत में ही वह विधुर भोला का एक विधवा से विवाह करा देने का लालच दिखाता है। भोला भी प्रसन्न मन से उसे गाय ले जाने के लिए कह देता है। होरी उस समय गाय नहीं ले जाता, किन्तु उसके मन में इच्छा बनी रहती है। वह रायसाहब से मिलकर लौटता है और घर में सबको शुभ समाचार सुनाता है। होरी का पुत्र गोबर और दो पुत्रियाँ सोना-रूपा सभी प्रसन्न हो उठते हैं। क्योंकि निर्धन के घर गाय (लक्ष्मी)का आगमन होनेवाला था।

▶ होरी के मन में बहुत दिनों से एक गाय पालने का आग्रह

एक दिन भोला होरी के घर भूसा लेने चला आता है, क्योंकि उस रोज़ होरी ने उसे आमन्त्रित किया था। होरी, गोबर और धनिया तीनों ही उसका बड़ा स्वागत करते हैं। पिता और पुत्र भोला के साथ भूसा लेकर उसके घर तक पहुँचाने जाते हैं। यहीं गोबर की भेंट भोला की पुत्री विधवा झुनिया से होती है। दूसरे दिन गोबर भोला के घर जाकर गाय ले आया। गाय आने पर सारा गाँव उसे देखने आया। सभी ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

▶ गोबर की भेंट भोला की पुत्री विधवा झुनिया से होती है

गोबर जब गाय लेने गया तब झुनिया से प्रेम की बातें हुई। दोनों ने जीवनभर एक-दूसरे का साथ देने का वचन दिया। घर में गाय के आ जाने से होरी को प्रसन्नता अवश्य थी, किन्तु कृषक-जीवन की आपत्तियों ने अधिक समय तक उसे सुख का अनुभव न करने दिया। असाढ़ का पहला दौंगरा गिरते ही किसानों को खेत की धुन सवार हुई। इसी समय रायसाहब ज़मींदार अमरपालसिंह के कारकुन ने आदेश दिया कि बिना बाकी रुपया अदा किए खेतों को नहीं जोता जा सकता। किसानों के सम्मुख एक बड़ी मुसीबत आ गई। सब लोगों ने इधर-उधर जाकर महाजनों से उधार लिया। बेचारे होरी पर पहले

▶ किसानों के सम्मुख एक बड़ी मुसीबत आ गई

का ही ऋण लदा हुआ था। झिंगुरीसिंह, दातादीन, दुलारी सभी का वह कर्ज़दार था। आज किस मुँह से, किससे ऋण लेने जाए? उसे बड़ी ग्लानि और लज्जा हो रही थी। झिंगुरीसिंह ने कहा कि गाय गिरवी रखकर रुपए ले जाओ। होरी ने जब घर आकर यह प्रस्ताव किया तब सभी उस पर बहुत नाराज़ हुए और कोई भी गाय को बेचने या गिरवी रख देने के लिए सहमत न हुआ। पर धनिया पति की दशा देखकर मान गई और आखिर यह तय हुआ कि जब दोनों लड़कियाँ रात को सो जाएँ तो गाय झिंगुरीसिंह के पास पहुँचा दी जाए।

▶ पटेश्वरी पटवारी ने होरी से तीस रुपए दारोगा को घूस देने के लिए कहा

उसी रात होरी अपने मंझले भाई शोभा को देखने चला गया। वह कई महीनों से बीमार था। ग्यारह बजे के लगभग जब होरी शोभा को देखकर लौटा तो उसे गाय के पास हीरा खड़ा मिला। उसने बताया कि वह कौड़े में आग लेने चला गया था। होरी अपने भाई का यह नया स्नेह देखकर प्रसन्न हुआ। थोड़ी देर बाद ही गोबर ने आकर कहा कि गाय तड़प रही है। किसी ने उसे विष दे दिया था। प्रातःकाल तक उसके प्राण- पखेरू उड़ चुके थे। रात को ही होरी ने धनिया से बता दिया कि मैंने हीरा को गाय के पास खड़े देखा था। उसे भय था कि अब धनिया गाँव-भर में कुहराम मचा देगी, सबको यह बात मालूम हो जाएगी। होरी ने धनिया को मारा-पीटा, पर वह न मानी। तभी पता चला कि हीरा घर से भाग गया है। उसी दिन शाम को हलके के थानेदार आए। उन्होंने हीरा के घर की तलाशी लेने का विचार किया। होरी को कभी यह सह्य न था कि उसके जीते जी भाई के घर की तलाशी ली जाए। पटेश्वरी पटवारी ने होरी से तीस रुपए दारोगा को घूस देने के लिए कहा। होरी रुपए दारोगा के हाथ में देने ही जा रहा था कि धनिया ने उन्हें हाथ से छीनकर ज़मीन पर फेंक दिया। उसने अपनी स्पष्टवादिता से सभी को परास्त कर दिया। अन्त में दरोगा ने दातादीन, नोखेराम, पटेश्वरी और झिंगुरीसिंह से पचास रुपए वसूल किए।

▶ सभी गरीबों का खून चूसते हैं

इधर गोबर और धनिया का सम्बन्ध बढ़ता जाता था। एक रात झुनिया होरी के घर चली आई। धनिया पहले तो बिगड़ी, पर बाद में उसने उसे रख लिया। गाँव भर में हंगामा मच गया, पर धनिया ने कोई परवाह न की। उसका कहना था कि दातादीन के लड़के मातादीन के पास एक चमारिन है। सभी गरीबों का खून चूसते हैं, फिर भी उनका धर्म नहीं जानता। फिर उसी का धर्म कैसे जाएगा, पर गोबर कायरों की भाँति घर से भाग चुका था।

▶ अनाज घर आते ही सभी महाजनों ने मिलकर, पंचायत की ओर से होरी पर सौ रुपए जुर्माना अदा की

होरी की हालत बिगड़ती जा रही थी। जब खलिहान में अनाज तैयार हुआ तब उसे प्रसन्नता हुई कि कम-से-कम खानेभर को तो घर में हो जाएगा, बच्चे तो भूखों न मरेंगे। अनाज घर आने ही को था कि होरी के सभी महाजनों ने मिलकर पंचायत की ओर से फैसला किया कि होरी पर सौ रुपए नकद और तीस मन अनाज का जुर्माना किया जाय। उस पर एक गैरबिरादरी की बहू ले आने का जुर्म था। होरी की कोई प्रार्थना न सुनी गई। वह रात-भर अनाज ढोता रहा। धनिया भी केवल डेढ़-दो मन जौ रो-धोकर

रख सकी। उसी रात झुनिया के लड़का हुआ। लाचार होकर होरी ने अस्सी रुपए पर अपना घर झिंगुरीसिंह के हाथ गिरवी रख दिया और इस प्रकार बिरादरी का जुर्माना अदा किया। गोबर घर से भागकर अनिश्चित राह पर चल पड़ा। मार्ग में कोदई नामक एक व्यक्ति से उसकी भेंट हो गई। गाँव के मज़दूरों के साथ आकर अमीनाबाद में उसे मज़दूर का काम मिला। वह पन्द्रह रुपए का नौकर हो गया।

होरी के घर में खाने को एक दाना भी न था। गाँव के महाजनों ने उसे चूस लिया था। ऐसा मालूम होता था कि होरी अब इन महाजनों से पूर्णतः परास्त हो जाएगा। उसी दिन हीरा की पत्नी, पुनिया, ने खाने को अनाज दिया। हीरा के खेत भी अब होरी ही जोत देता था। इधर भोला भी अपने रुपयों के लिए बार-बार तकाजा करता। एक दिन आकर उसने होरी के बैल खोल लिए। होरी विवश था। दाताहीन आदि ने भोला को रोकना भी चाहा पर होरी ने मना कर दिया। होरी दिन बर दिन दरिद्र होता जाता था। दातादीन ने आधे साझे पर उसके खेत जोते। होरी को अपनी ऊख का ही थोड़ा-बहुत भरोसा था। ऊख काटी ही जा रही थी कि सभी महाजन आ पहुँचे। आखिर झिंगुरीसिंह ने ऊख की सारी कमाई एक सौ बीस रुपए में सिर्फ पचीस होरी को वापस किए। वे भी नोखेराम ने ले लिए। होरी विवश था। होरी अब किसानी से मज़दूरी करने लगा। वह दातादीन का मज़दूर था। धनिया, सोना, रूपा भी उसी के साथ मज़दूरी करती थीं। एक दिन काम करते-करते ही होरी को लू लग गई। वह बीमार पड़ गया। उसी समय अनायास ही गोबर भी लौट आया। घर में एक बार फिर प्रसन्नता छा गई। गोबर ने भी गाँव-भर में अपना खूब रौब जमाया। वह भोला के घर जाकर अपनी बैल की जोड़ी भी वापस ले आया। इस बार उसने गाँव में होली भी बड़े उत्साह से मनाई। उसने सब महाजनों की नकल करवाई। पर घर की स्थिति सँभालने में वह असमर्थ था। पिता का सारल्य सीमा के बाहर था। गोबर चाहता था कि वह अपनी सिधाई छोड़ दें, पर होरी के लिए यह सम्भव न था। वह महाजनों के वश में था। आखिर परेशान होकर गोबर झुनिया और बच्चे को लेकर लखनऊ चला गया।

▶ होरी दिन ब दिन दरिद्र होता जाता था

धनिया और होरी दोनों ही उदास थे, पर जीवन तो किसी प्रकार चलाना ही था। इधर सिलिया नामक एक चमार की पुत्री को भी होरी ने प्रश्रय दिया था। उसे सोना के विवाह की चिन्ता भी सता रही थी। वह बहुत परेशान था। आखिर दुलारी सहुआइन ने दो सौ रुपए देने का वादा किया। नोहरी ने भी इतने ही रुपए देने को कहा। होरी ने सोचा इससे सोना का विवाह खूब अच्छी तरह करेगा। सोना का विवाह मथुरा से हो गया, जो अच्छे किसान का बेटा था। होरी के जीवन में अन्धकार बढ़ता ही जाता था। उसके सिर पर ऋण का भारी बोझ था। वह ज़मीन से युद्ध करते-करते पराजित सा हो चुका था। उसमें अब शक्ति शेष न थी। अन्त में अपने बाप-दादों की डीह को भी उसने रेहन रख दिया और पूरी तरह मज़दूर हो गया।

▶ उसके सिर पर ऋण का भारी बोझ था

कथा की इस मूल धारा के साथ ही उपन्यास में एक अन्य लघुकथानक भी चलता रहता है। इसका सम्बन्ध नागरिक जीवन से है। इलाके के जमींदार रायसाहब

अमरपालसिंह हैं। उनके मित्रों में पंडित ओंकारनाथ 'बिजली' पत्र के यशस्वी सम्पादक हैं, जो देश की सेवा करते हैं। श्यामबिहारी तंखा बीमा कम्पनी के दलाल हैं। मिस्टर बी. मेहता यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के अध्यापक हैं। मिस मालती लेडी डॉक्टर हैं। रामलीला में धनुषयज्ञ के अवसर पर सभी व्यक्ति एक-दूसरे से परिचित होते हैं। वे अपने-अपने राजनीतिक और सामाजिक विचार प्रकट करते हैं। सभी अपने व्यवसाय के अनुरूप बात करते हुए देखे जाते हैं। मिर्जाजी एक बहुत जिन्दादिल आदमी हैं और लखनऊ में जूते की दुकान करते हैं। सन्ध्या समय भोजन के अवसर पर उनके आ जाने से वातावरण बड़ा मनोरंजक हो जाता। वे मिस मालती के नाम पर बहुत सा पैसा मिनटों में जमा कर लेते। अभी धनुषयज्ञ चल ही रहा था कि एक अफगान ने आकर कहा कि मेरे एक हज़ार रुपए गाँव के लोगों ने छीन लिए हैं। झगड़ा बढ़ रहा था कि होरी ने आकर खान को ज़मीन पर पटक दिया। खान की दाढ़ी उसके हाथ में आ गई। लोगों ने देखा कि वे मिस्टर मेहता थे। सभी उस अभिनय पर हँस पड़े।

▶ श्यामबिहारी तंखा बीमा कम्पनी के दलाल हैं

नगर की यह मित्रमंडली प्रायः मिलती रहती है। एक दिन शिकार पार्टी में मेहता और मालती की घनिष्ठता भी हो गई। अविवाहित मित्रों में स्नेह का आदान-प्रदान भी आरम्भ हो गया किन्तु भावुक मेहता और बुद्धिजीवी मालती के विचारों में अधिक साम्य न था। मिर्जाजी बड़े दिलचस्प आदमी हैं। वह हमेशा कोई न कोई तमाशा कराते रहते हैं। एक दिन उन्होंने मज़दूरों की कबड्डी भी कराई। उसे देखने के लिए टिकट भी लगा था। रायसाहब, खन्ना, मेहता, मालती सभी आए। इसी समय मेहता ने मिर्जा से कहा कि मालती एक आदर्श पत्नी नहीं बन सकतीं। गोबर को भी मिर्जा ने नौकर रख लिया। मालती देश-विदेश घूमी हुई नई सामाजिक महिला है। एक दिन मेहता का भाषण सुनकर उन पर विचित्र प्रतिक्रिया होती है। मेहता का कथन था कि भारतीय आदर्श पर चलना चाहिए, पश्चिम का अनुकरण करना उचित नहीं। मालती को यह अच्छा नहीं लगा।

▶ भारतीय आदर्श पर चलना चाहिए, पश्चिम का अनुकरण करना उचित नहीं

पंडित ओंकारनाथ रायसाहब से रुपया वसूल करना चाहते थे। पटेश्वरी का एक गुमनाम पत्र उन्हें एक दिन मिला। उसमें रायसाहब के अत्याचारों की चर्चा थी। उन्होंने होरी से तावान वसूल किया था। सम्पादकजी ने अवसर का लाभ उठाया। उन्होंने रायसाहब की ओर से अपने पत्र के सौ ग्राहक बना लिए। खन्ना रसिक व्यक्ति हैं। उनकी अपनी स्त्री से नहीं पटती। खन्ना मिस मालती की ओर भी आकृष्ट हैं। मेहता मिसेज खन्ना को एक आदर्श स्त्री मानते हैं। एक ही दिन चारों की भेंट चिड़ियाघर में हो जाती है। गोविन्दी मेहता से स्नेह की भिक्षा चाहती है, पर वे उससे सन्तान का लालन-पालन करने के लिए कहते हैं।

▶ सम्पादकजी ने होरी से तावान वसूल किया था

रायसाहब को मिस्टर तंखा काफी ठगा करते थे। चुनाव में भी वह रायसाहब से रुपया माँगते हैं। एक दिन रायसाहब तंखा को डाँट-फटकार कर खन्ना के यहाँ पहुँचे। उन्होंने खन्ना से कहा कि चुनाव और लड़की की शादी के लिए कुछ रुपए दिलवा दीजिए। खन्ना ने इधर-उधर की बातें बनाकर टाल दिया और मालती के प्रति अपने प्रेम की बात उनसे

► स्त्रियों के लिए व्यायामशाला खुली

कह दी। उसी समय मेहता आ गए। उन्होंने बताया कि स्त्रियों के लिए व्यायामशाला खुल रही है। मालती उसकी अध्यक्षा हैं। गोविन्दी उसका शिलान्यास करेंगी। खन्ना इस पर बहुत बिगड़े। मालती ने आकर उन्हें फटकारा और एक हज़ार रुपए लेकर चल दी। एक बार खन्ना को मज़दूरों की हड़ताल का सामना करना पड़ा। उनके सभी मित्र मज़दूरों का पक्ष ले रहे थे, और खन्ना को यह बात सह्य न थी। आखिर शक्कर की मिल आग में जलकर खाक हो गई।

► मिस्टर तंखा रायसाहब और राजासाहब दोनों को बेवकूफ बनाते थे

मालती और मेहता गाँवों में जाकर सेवाकार्य करते थे। एक दिन होरी से भेंट हुई। होरी ने उनका हृदय से स्वागत किया। जब वे दोनों नाव पर लौट रहे थे उनमें जीवन के विषय में अनेक चर्चाएँ हुई। रायसाहब के बड़े लड़के रूपालसिंह का विवाह राजा सूर्यप्रताप सिंह अपनी पुत्री से कराना चाहते थे। रायसाहब ने समझा, मैंने अपने पुराने शत्रु को परास्त कर दिया। किन्तु रूपाल मालती की बहन सरोज से विवाह करना चाहता था और उसने पिता से स्पष्ट कह दिया कि वह राजकुमारी को अपनी पत्नी न बना सकेगा रायसाहब ने मेहता से भी कहा। मिस्टर तंखा रायसाहब और राजासाहब दोनों को बेवकूफ बनाते थे। एक दिन जब वे दोनों व्यक्ति मिले तब तंखा की कलई खुल गई। रायसाहब को हर ओर से निराशा हो रही थी।

► मेहता और मालती का मित्रसंम्बध

मालती और मेहता एक दूसरे के निकट आते जाते हैं। मालती मेहता का बहुत ध्यान रखती है और उनकी हर प्रकार सहायता करती है। दोनों के मन में विचित्र प्रकार के भाव उठा करते हैं। आखिर मालती तय करती है कि पति-पत्नी बनकर रहने से भी अधिक सुख मित्र होकर रहने में है। मेहता और मालती का सम्बन्ध मित्रों का हो जाता है।

उपन्यास का अन्त अत्यन्त करुण है। गोबर फिर लौट आता है। होरी मज़दूरी करता है। एक दिन उसे लू लग गई। उसकी जीवनलीला समाप्त हो रही थी। कई लोगों ने कहा, 'गो-दान करा दो।' धनिया ने सुतली बेचकर लाए हुए बीस आने पैसे दातादीन के हाथ पर रखकर कहा, 'महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यह पैसा है, यही इनका गो-दान है।' और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

"प्रेम एक बीज है, जो एक बार जमकर फिर बड़ी मुश्किल से उखड़ता है।"

SGOU

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद बहुत महत्वाकांक्षी हैं और वे इस समय के भारतीय समाज की एक अच्छी तस्वीर पेश करते हुए एक अच्छी कहानी कहते हैं, फिर भी यह उनकी क्षमता से कहीं अधिक है लेकिन पुस्तक अभी भी प्रभावशाली है काफी अच्छी तरह से प्रस्तुत। सामाजिक आलोचना करता है। और यह पढ़ने में अच्छा है। इस प्रकार, गोदान भारतीय साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति है और महान पुस्तक की असली परीक्षा यह है कि वह हर समय अपनी प्रासंगिकता और विचारोत्तेजक मूल्य को बरकरार रखती है। यह अपने सफल होने के सवालों का जवाब देने में कभी विफल नहीं होता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'गोदान' की संक्षिप्त कथानक स्पष्ट कीजिए।
2. 'गोदान' के कथानक पर चर्चा कीजिए।
3. होरी के जीवन के द्वारा प्रेमचंद ने किसान जीवन का खुला वर्णन किया है। स्पष्ट कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान प्रो. रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत राय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

'गोदान'-कथानक, 'गोदान'-आदर्श एवं यथार्थ, 'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य, गोदान की पात्र - योजना

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'गोदान'-कथानक समझता है
- 'गोदान' में चित्रित 'यथार्थ' और 'आदर्श' के बारे में समझता है
- कृषक जीवन के महाकाव्य के रूप में 'गोदान' का परिचय प्राप्त होता है
- 'गोदान' की पात्र- योजना के बारे में जानता है

Background / पृष्ठभूमि

'गोदान' उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया वह उपन्यास है जिसे कृषक जीवन का महाकाव्य कहा गया है। इस उपन्यास की रचना 1935 ई. में की गई थी। 'गोदान' से पूर्व प्रेमचंद जी 'प्रेमाश्रम' की रचना कर चुके थे जिसमें ज़मींदारों द्वारा किसानों के शोषण का उल्लेख था। 'प्रेमाश्रम' को 'गोदान' की पूर्व पीठिका कहा जा सकता है। प्रेमचंद के लेखन का सरोकार ग्रामीण जीवन विशेषकर कृषक वर्ग से था। वे उनकी पीड़ा, शोषण, कठिनाइयों से भली-भांति अवगत थे और चाहते थे कि ज़मींदारी प्रथा समाप्त हो जो किसानों के शोषण के लिए बहुत कुछ उत्तरदायी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदर्श एवं यथार्थ, नैतिक एवं चारित्रिक आदर्श, रूढ़िप्रियता, अंधविश्वास, गन्दगी, हठधर्मिता, कृषक जीवन का महाकाव्य

SGOU

Discussion / चर्चा

3.3.1 'गोदान'-कथानक

▶ शोषण का शिकार होरी किसान से मज़दूर बनने को विवश हो जाता है

'गोदान' में प्रेमचंद ने 'होरी' के रूप में जिस चरित्र की परिकल्पना की है वह अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। सभी किसानों की हालत कमोवेश होरी जैसी ही है। अवध क्षेत्र के 'बेलारी गाँव का' 'होरी' पाँच बीघे जमीन का मालिक एवं सामान्य कृषक है और सबका नरम चारा है। ज़मींदार, पटवारी, सूदखोर, महाजन, पुलिस, बिरादरी तथा धर्म के ठेकेदार सब उसका शोषण करते हैं और अन्ततः शोषण का शिकार होरी किसान से मज़दूर बनने को विवश हो जाता है। गोदान की रचना कृषक - जीवन से जुड़ी समस्याओं का चित्रण करने के लिए की गई है। यह भी विडम्बना ही है कि अपने शोषकों के बारे में होरी जैसा किसान अच्छी तरह जानता है, फिर भी रूढ़ियों और संस्कारों से बँधा हुआ होने के कारण वह उनके प्रति क्रोधाभिभूत नहीं हो पाता और इस शोषण के लिए वह अपने भाग्य को दोषी मानता है।

3.3.2 'गोदान'- आदर्श एवं यथार्थ

प्रेमचंद साहित्य की वैचारिक यात्रा आदर्श से यथार्थ की ओर उन्मुख है।

'आदर्श' का अर्थ :

जीवन और जगत् में जो होना चाहिए, वही आदर्श है। भारतीय दृष्टिकोण सदा से आदर्शवादी रहा है। हिन्दी उपन्यासों में आदर्शवाद की अभिव्यक्ति इन रूपों में पायी जाती है (क) उपदेशों के रूप में, (ख) सुधार की ओर प्रवृत्त करने के रूप में, (ग) समस्याओं के समाधान के रूप में (घ) जीवन के आदर्श चित्रों को प्रस्तुत करने के रूप में।

भारतीय दृष्टिकोण सदा से आदर्शवादी है।

'यथार्थ' का अर्थ :

▶ अनैतिक, असामाजिक जीवन का चित्रण करने वाला उपन्यास यथार्थवादी उपन्यास

'यथार्थ' शब्द को लेकर बड़ा विवाद है, जिससे अनेक दार्शनिक ऊहापोह सामने आये, फिर भी यथार्थ के स्वरूप का अंतिम निर्धारण नहीं हो पाया। अधिकांश भारतीय दार्शनिक जगत् को मिथ्या मानते है, यथार्थ नहीं। मध्ययुगीन स्कौलेस्टिक यथार्थवादी शाश्वत, अमूर्त और भाव जगत् की वस्तु को यथार्थ मानते थे, स्थूल अथवा इन्द्रिय ग्राह्य को नहीं, किन्तु आधुनिक यथार्थवादी लॉक, थॉमस रीड आदि स्थूल या बाह्य संसार को यथार्थ कहते हैं। 'यथार्थ' शब्द दार्शनिक रूप से कुछ भिन्न ही अर्थ का द्योतक है। सौन्दर्यशास्त्रीय बोध के रूप में भी इस शब्द का प्रयोग किया गया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में आकर यथार्थवाद अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुआ। प्रेमचंद ने जीवन के गर्हित पक्ष का ही चित्रण नहीं किया, वरन् उसके प्रशस्त रूप का भी वर्णन किया।

'गोदान' में आदर्शवाद की प्रतिष्ठा

यह कहना कि 'गोदान' मात्र सत्य का वाहक है, अतिशयोक्ति ही कहा जायेगा। 'गोदान' में मुख्य रूप से दो कथानक हैं- (क) ग्रामीण जीवन से संबंधित होरी की कथा, (ख) नागरिक जीवन से संबधित मेहता-मालती की कथा। इनमें मेहता-मालती की कथा का आयोजन उपन्यासकार के आदर्श की स्थापना के लिए ही हुआ है। 'गोदान' में उपन्यासकार निम्नलिखित आदर्श प्रस्तुत करना चाहते हैं :-

1. नारी विषयक आदर्श

प्रेमचंद ने 'गोदान' में जिन आदर्शों को प्रस्तुत किया है उनमें प्रमुखतम नारी विषयक है। अनेक स्थलों पर इस आदर्श की प्रतिष्ठा हुई है। प्रेमचंद ने नारी के आदर्श गुणों का वर्णन अपने पात्र मेहता के मुख से कराया है - 'मेरे जेहन में औरत वफा और त्याग की मूर्ति है. जो अपनी बेजुबानी से, अपनी कुर्बानी से अपने को मिटाकर पति की आत्मा का एक अंग बन जाती है। देह पुरुष की रहती है, पर आत्मा स्त्री की होती है। स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवती है, शान्ति सम्पन्न है, सहिष्णु है। पुरुष में नारी के गुण आ जाते है, तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है।

▶ स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवती है, शान्ति सम्पन्न है, सहिष्णु है

इसी प्रकार की नारी का रूप 'गोदान' में उस समय मिलता है, जब मेहता, मालती द्वारा आयोजित विमेंस लीग की सभा में भाषण देते हैं। मेहता के द्वारा नारी विषयक आदर्श वस्तुतः प्रेमचंद का ही आदर्शवादी दृष्टिकोण है, जो परम्परागत तर्क रहित और युगबोध के प्रतिकूल है। यह स्मृति-ग्रन्थों में कथित नारी के आदर्श का ही परिवर्तित रूप है। यथार्थवादी परम्परा और विश्वास का विरोधी होता है। उसका आधार तर्क होता है। प्रेमचंद की नारी विषयक धारणा इसके सर्वथा विपरीत है, उसे यथार्थ नहीं कहा जा सकता।

2. नैतिक एवं चारित्रिक आदर्श

प्रेमचंद जीवन में नैतिक तथा चारित्रिक गुणों का महत्त्वपूर्ण स्थान मानते हैं। इसी कारण मेहता और मालती के चरित्रों में वे अपनी आदर्श नैतिकता ही प्रस्तुत करते हैं। 'गोदान' में शिकार वाली घटना की योजना नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा हेतु ही हुई है, जो अस्वाभाविक लगती है। मेहता और मालती की टोली जब शिकार खेलने जाती है, तो मालती, मेहता पर डोरे डालना प्रारम्भ करती है, किन्तु मेहता पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह स्थिति यथार्थ चित्रण की दृष्टि से अस्वाभाविक ही कही जायेगी कि एकान्त में युवक और युवती का मिलन होने पर और युवती के द्वारा हाव-भाव प्रदर्शित किये जाने पर भी युवक पर उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। यहाँ तक की नाला पार करते समय मेहता मालती का हाथ पकड़ कर नाला पार कराते हैं तथा मालती के चिपट जाने पर गीली साड़ी में अस्त-व्यस्त दशा में कन्धे पर चढ़ा लेते हैं। फिर भी मेहता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह प्रेमचंद की आदर्शवादी मनोवृत्ति का परिणाम

▶ प्रेमचंद की आदर्शवादी मनोवृत्ति का यथार्थ चित्रण

है। यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार होता, तो ऐसी स्थिति में मेहता और मालती के कामातुर मनोविकारों का चित्रण करता, किन्तु प्रेमचंद का नैतिक आदर्श उन्हें ऐसा नहीं करने देता।

3. प्रेमचंद की पवित्रता एंव अलौकिकता सम्बन्धी आदर्श

गोदान में प्रेमचंद प्रेम का आदर्श रूप प्रस्तुत करना चाहते हैं। उनकी दृष्टि में प्रेम पवित्र तथा आलौकिक पदार्थ है। वह संदेह और परीक्षा से परे है। प्रेम एकान्त आत्म-समर्पण है। वह देह की नहीं, आत्मा की वस्तु है। प्रेम की मंदिर में परीक्षक बनकर नहीं उपासक बनकर ही वरदान प्राप्त कर सकता है। इसी प्रेम के आदर्श को प्रस्तुत करने के लिए प्रेमचंद ने मेहता-मालती की कथा को अस्वाभाविक दिशा में मोड दिया। अन्यथा जब मालती स्वयं को मेहता के आदर्शों के अनुरूप ढाल लेती है और मेहता उससे विवाह का प्रस्ताव करते हैं, तो उसका विवाह कराकर कथा समाप्त हो जाती, किन्तु लेखक ने मालती के चरित्र-परिवर्तन द्वारा प्रेम का आदर्श स्थापित करने के लिए मालती द्वारा विवाह करने से इन्कार करना दिखाया है। इसके मूल में प्रेमचंद की नारी, प्रेम और विवाह विषयक आदर्श दृष्टी कार्य कर रही है, जो परम्परावादी तर्क-रहित, युग-धारणा के प्रतिकूल और भावुकतापूर्ण है।

▶ प्रेमचंद की नारी पात्र, प्रेम और विवाह विषयक आदर्श कार्य करता है

'गोदान' में यथार्थवाद की प्रतिष्ठा

उपर्युक्त आदर्शों की स्थापना होने पर भी इस बात को नहीं भूला जा सकता कि 'गोदान' में यथार्थवाद भी पूर्ण रूप से ही निखर कर आया है। मालती-मेहता की कथा को छोड़कर शेष 'गोदान' में यथार्थ की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। ग्रामीण जीवन का इतना यथार्थवादी और व्यापक चित्रण शायद ही किसी भारतीय उपन्यास में मिले। 'गोदान' भारतीय कृषक जीवन की आँसू भरी कहानी अथवा विषाद-गीत है। उपन्यास की रचना के समय भारत का कृषक वर्ग ज़मींदारों, महाजनों और पुरोहितों के निर्मम शोषण का शिकार था। 'गोदान' में बेलारी गाँव के अधिकांश गरीब किसान इसी दुर्दान्त शोषण-चक्र के शिकार हैं। प्रस्तुत उपन्यास में कृषकों की इस दयनीय स्थिति का अत्यन्त यथार्थवादी चित्रण हुआ है। मुंशी प्रेमचंद 'गोदान' उपन्यास में निम्नलिखित यथार्थ प्रस्तुत करना चाहता है-

▶ 'गोदान' में यथार्थवाद भी पूर्ण रूप से ही निखर कर आया है

1. **कृषक जीवन की समस्याओं के सभी पक्षों का यथार्थ अंकनः** 'गोदान' उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें कृषक जीवन की समस्याओं के सम्पूर्ण पक्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है। कृषकों की निर्धनता, मूर्खता, अशिक्षा, रूढ़िप्रियता, अंधविश्वास, गन्दगी, हठधर्मिता, आपसी फूट एवं वैमनस्य तथा उनकी सरलता, उदारता, सहजता, धर्मभीरुता, सहानुमति आदि सभी बातों का विश्वसनीय तथा यथार्थ अंकन किया गया है। गावों में प्रायः फूहड़ किस्म के झगड़े होते रहते हैं। 'गोदान' में इस प्रकार का पाँच स्थलों पर यथार्थ चित्रण हुआ है। इसी प्रसंग में पुलिस विभाग के अत्याचार, घूसखोरी, पंचायत, कन्या-विवाह की परेशानियों और

▶ कृषकों की निर्धनता, मूर्खता, अशिक्षा, रूढ़िप्रियता, अंधविश्वास आदि बातों का यथार्थ अंकन

दुश्चिंताओं के भी यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किये हैं। ऐसे घटनाओं की संख्या बहुत अधिक है।

2. **मध्य तथा निम्नवर्गीय परिवारों का यथार्थ अंकनः** कृषक वर्ग की समस्याओं के साथ-साथ मध्य तथा निम्नवर्गीय परिवारों का भी यथार्थ चित्रण 'गोदान' की यथार्थवादिता का दूसरा उदाहरण है। मध्यमवर्गीय परिवार के प्रतिनिधि पात्र राय साहब के जीवन का, उनकी समस्याओं और विशेषताओं का तथा खन्ना जैसे पूँजीपतियों द्वारा उनके शोषण का जैसा चित्रण प्रेमचंद ने किया है, वैसा अन्य किसी उपन्यासकार द्वारा संभव नहीं हुआ। निम्नवर्गीय मज़दूरों के जीवन का भी प्रेमचंद ने यथार्थपरक चित्रण किया है। मिल-मालिक और मज़दूरों के संघर्ष का ऐसा विश्वसनीय वर्णन 'गोदान' में पहली बार हुआ है। खन्ना के जीवन का चित्रण करके पूँजीपतियों के अशांत पारिवारिक जीवन का यथार्थ रूप लेखक ने उपस्थित किया है। इस प्रकार न केवल कृषक वर्ग, अपितु कृषकेतर वर्ग को भी उन्होंने यथार्थ रूप में ही चित्रित करने का प्रयास किया है।

▶ कृषक वर्ग और कृषकेतर वर्ग का उन्होंने यथार्थ रूप में चित्रण किया है

3. **पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण में यथार्थः** प्रेमचंद ने अपने 'गोदान' उपन्यास में पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण भी सचाई से किया है। ऐसे स्थानों पर उनकी प्रतिभा, मानव-हृदय में प्रवेश करने की क्षमता तथा सूक्ष्म निरीक्षण की शक्ति दर्शनीय है। राय साहब के यहाँ जाते समय होरी और भोला के वार्तालाप में लोग, स्वार्थ, दम, आत्म-प्रशंसा, धूर्तता, छल, उदारता आदि मानवभावों का यथार्थवादी चित्रण उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है।

▶ स्वार्थ, दम, आत्म-प्रशंसा, धूर्तता, छल, उदारता आदि मानवभावों का यथार्थवादी चित्रण

4. **समस्याओं के समाधान में यथार्थः** प्रेमचंद अपने शुरुआती उपन्यासों में समस्याओं का चित्रण तो यथार्थवादी पद्धति पर किया है, किन्तु उनके समाधान आदर्शवादी हैं। 'सेवासदन' में सेवासदनों की स्थापना तथा 'प्रेमाश्रम' में प्रेमाश्रम की स्थापना द्वारा वेश्याओं और किसानों की समस्याओं का हल ढूँढ़ना अथवा शोषकों, पूँजीपतियों का हृदय-परिवर्तन दिखाकर कृषकों तथा मज़दूरों को सुखी बनाने का यत्न आदर्शवादी समाधान है। 'गोदान' में समस्याओं के चित्रण तथा उनका समाधान दोनों ही यथार्थवादी है। प्रस्तुत उपन्यास में रातों-रात ज़मींदारों ओर शोषकों का हृदय-परिवर्तन नहीं दिखाया गया। 'गोदान' में समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते समय प्रेमचंद तटस्थ विश्लेषक और विद्रोही के रूप में सामने आये हैं। उनका विश्वास है कि केवल कानून बना देने से किसानों की ऋण - समस्या का समाधान नहीं होगा, वरन् सरकार को ऋण देने की व्यवस्था करनी पड़ेगी।

▶ 'गोदान' में समस्याओं के चित्रण तथा उनका समाधान दोनों यथार्थवादी है

5. **देशकाल और वातावरण चित्रण में यथार्थः** उपन्यास का यथार्थ उसमें प्रस्तुत जीवन के प्रकार में नहीं, वरन् उस प्रविधि में निहित होता है, जिसके द्वारा वह प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास के पात्र उपन्यासकार द्वारा अनुभूत सत्य के प्रतीक होते हैं। उपन्यासकार की दृष्टि विशिष्ट के अंकन द्वारा सामान्य के अंकन पर होती है। उसका अधिक बल विशिष्ट व्यक्ति पर होता है। विशिष्ट व्यक्ति अथवा अवस्था

SGOU

▶ 'गोदान' के पात्रों तथा उनके कार्यों को देश और काल की पृष्ठभूमि में स्थापित किया

का बोध देश और काल इन दो स्थितियों के प्रसंग में ही हो सकता है। प्रेमचंद ने 'गोदान' के पात्रों तथा उनके कार्यों को देश और काल की पृष्ठभूमि में स्थापित करके उन्हें व्यक्तित्व प्रदान किया है। उपन्यास में आये हुए सभी स्थानों-लखनऊ, सेमरी, बेलारी आदि की भौगोलिक स्थिति का पूर्ण वर्णन किया है। प्राकृतिक वर्णन कम है। किन्तु काव्यात्मक नहीं, यथार्थपरक है। पात्रों के नाम भी होरी, गोबर झिंगुरी सिंह, नौखेराम, हीरा, शोभा, दुलारी सहुआइन, मुगरूसाहु, धनिया, झुनिया, सिलिया, सोना, रूपा, पुनिया, (ग्रामीण पात्रों के नाम) तथा प्रो मेहता, रायसाहब अमरपाल सिंह, चन्द्रप्रकाश खन्ना, श्यामबिहारी, मालती, गोविन्दी, सरोज (नागरिक पात्रों के नाम) पात्रों की शिक्षा-दीक्षा, आर्थिक स्थिति, संस्कार आदि के अनुरूप हैं।

6. **भाषा के प्रयोग में यथार्थः** यथार्थवादी दार्शनिकों की मान्यता है कि शब्दों को वास्तविक पदार्थों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए और वह भी निश्चित रूप में। लोक के भाषा-विषयक सिद्धान्त को 'गोदान' में सर्वाधिक समर्थन प्राप्त हुआ है। प्रेमचंद का एकमात्र उद्देश्य शब्दों द्वारा वस्तुओं का उनकी सम्पूर्ण ठोस विशिष्टता में बोध कराना है। इसमें वे पूर्ण सफल भी हुए हैं। 'गोदान' की भाषा चित्रण के विषय के प्रस्तुतीकरण में सर्वथा समर्थ हैं।

▶ 'गोदान' में 'आदर्श' और यथार्थ का सुन्दर समन्वय

3.3.3 'गोदान' - कृषक जीवन का महाकाव्य

▶ उपन्यास ज्ञान का पोषक और मनुष्य के सांस्कृतिक विकास का परिचायक

'गोदान' में भारतीय ग्राम के अनेक-मुखी जीवन का दिग्दर्शन कराया है। इसमें कृषि संस्कृति का जितना विस्तार से चित्रण हुआ है, वह हिन्दी में अन्यत्र दुर्लभ है। इनकी कथावस्तु समाज सापेक्ष है लेकिन उसमें व्यक्ति कल्याण का उतना ही महत्व है जितना समाज के उत्कर्ष का। इसी संदर्भ में प्रेमचंद उपन्यास को ज्ञान का पोषक और मनुष्य के सांस्कृतिक विकास का परिचायक मानते थे। वे सत्य का विश्वास लेकर चले थे और अपना यही महान विश्वास विरासत में छोड़ते गये, जब उस विश्वास की विजय होगी तभी सेवा, त्याग का आदर्श मनुष्य का जीवन-मंत्र बनेगा और हमारी संस्कृति महत्तम होगी और विकास पायेगी।

'गोदान' उपन्यास कृषक संस्कृति का उपन्यास है। इसमें नगर और गाँव के जीवन की विषमताओं को भली प्रकार दर्शाया गया और इसे आदर्शपरक भावभूमि से हटाकर यथार्थवादी कठोरभूमि पर अंकित किया गया है। यह आधुनिक नवजागरण का संदेश देने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने 55 पात्रों की सृष्टि की है। उनमें से 35 पात्र ग्राम से जुड़े हैं और 20 पात्र नगर जीवन से। उन पात्रों के दो स्पष्ट वर्ग हैं शोषक और शोषित। प्रथम वर्ग में ज़मींदार, पूँजीपति और महाजन हैं। उच्चवर्ग में खन्ना जैसे पूँजीपति और रायसाहब जैसे ज़मींदार है। शोषित वर्ग में गाँव के किसान और नगर के श्रमजीवी हैं। मध्यम वर्ग में मेहता, मालती और औंकारनाथ हैं। वस्तुतः मध्यमवर्ग प्रवुद्ध वर्ग है। निम्न वर्ग में होरी गोबर, सिलिया, शोभा, हीरा, भूरे आदि व्यक्ति आते हैं। इसमें किसान और श्रमिक सम्मिलित हैं। अन्य वर्ग की तुलना में भारतीय किसान, 'शोषित', आहत, दयनीय हैं। प्रेमचंद ने मार्क्स के सिद्धान्तों को चाहे जितना भी मन में

बसाया हो इतना सत्य है कि भारतीय सामान्य जनता की दयनीय स्थितियों का चित्रण करना और शोषकों के ख़िलाफ़ झण्डा ऊँचा करना उन्होंने निजी दायित्व समझा था।

▶ भारतीय जन-जीवन की यथार्थ झाँकी

'गोदान' में भारतीय जन-जीवन की यथार्थ झाँकी अपनी तमाम दुर्बलता और सबलता, परम्परा और जातीयता, संस्कृति और सामाजिकता के साथ शोषण और अत्याचार के विरुद्ध जन संघर्ष के सुख-दुःख, आघात, प्रतिघातों एवं उत्थान-पतन के विविध रूपों में चित्रित हुई है। आत्मचेतना का अन्वेषण और उसी में व्यक्तित्व का संस्कार करने की ललक। इसमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों को चित्रित करके युग की वाणी दी है और किसान वर्ग की समूची चेतना को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है।

▶ ग्रामीण जीवन की विडम्बनाओं के साथ भारतीय किसान की ऋण संबंधी समस्याओं का चित्रण

भारतीय किसानों की गरीबी उनके समस्त दुखों की जड़ है। इस उपन्यास में होरी ऐसे भारतीय किसान का प्रतिनिधि है। प्रेमचंद ने होरी की जीवन कहानी में दुःख और करुणा की प्रस्तुति कर उसे मूर्तिमान कर दिया है। होरी के माध्यम से भारतीय गाँवों के किसानों का यह कच्चा चिट्ठा किया है, जो तत्कालीन युग का यथार्थ है, जिसमें जीवन की वास्तविकता है और जिसे पढ़कर प्रस्तुत मनुष्य जाग सकता है, उसकी सोई हुई चेतना में झंकार पैदा हो सकती है और वह जीवन संग्राम में सक्रिय योगदान के लिए तत्पर हो सकता है। 'गोदान' में ग्रामीण जीवन की विडम्बनाओं के साथ भारतीय किसान की ऋण संबंधी समस्याओं का उद्‌घाटन हुआ है।

▶ पाठकों को नवजीवन निर्माण की चेतना का संकेत दिया है

'गोदान' में ज़मींदार धर्म-कर्म और न्याय की बातें करता है लेकिन अपने स्वार्थ को नहीं छोड़ता। किसान की दशा सुधारने के बजाय बिगडती जाती है, अंत में किसान को मज़दूर बनने के लिए मजबूर करता है। फिर भी दुःख बढ़ते ही रहते हैं। एक गृहस्थ की भाँति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित थी। यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न था। होरी के लिए गाय केवल भक्ति और श्रद्धा की ही वस्तु न थी, सजीव सम्पत्ति भी थी। वह उससे अपने द्वार की शोभा और अपने घर का गौरव बढ़ाना चाहता था। लोग गाय को अपने द्वार पर बंधी देखकर पूछें कि यह घर किसका है? होरी के लिए गाय का सम्मान कुछ और है। वह पयः पान का भूखा नहीं गो-मान को चाहता है। किन्तु होरी अपनी संद्धिगत परम्पराओं में जूझकर मर जाता है, धनिया पछाड़ खाकर गिर पड़ती है। लेकिन क्या इस नग्न यथार्थता में भविष्य स्वच्छ नहीं हो पाता? प्रेमचंद ने भविष्य की दृष्टि भले न की हो, पर 'गोदान' के पाठकों को नवजीवन निर्माण की चेतना का संकेत अवश्य दिया है। मानव को मानव बनाने के लिए इससे अधिक तीखा और कौन-सा आधार हो सकता है? होरी की मृत्यु स्दन हेतु नहीं, पुरानी जर्जर मान्यताओं से संघर्ष और नवजीवन हेतु विद्रोह करने में है।

▶ गाय और भूमि कृषि संस्कृति का आधार है

प्रेमचंद ने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और उसमें होने वाले शोषण और अन्याय की पराकाष्ठा को उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है। होरी मृत्यु के वक्त कहता है कि गाय की लालसा मन में ही रह गई। गाय और भूमि कृषि संस्कृति का आधार है उसकी

दोनों इच्छाएँ अधूरी रहती हैं। गाय वह दुबारा खरीद नहीं सकता और उसकी मृत्यु एक किसान के रूप में न होकर एक मज़दूर के रूप में होती है। होरी अपने किसान धर्म के लिए मर मिटता है। होरी का त्याग, प्रेम, दया एवं बलिदान ने उसे नायक के शिखर पर पहुँचा दिया।

होरी की कथा के साथ गोबर और ज़मींदार की कथा का अटूट संबंध है। गोबर की कथा गाँव में जाने से आरम्भ होती है और दो बार गाँव आने के बाद पुनः शहर जाने के साथ समाप्त होती है। यदि गोबर पहली बार गाँव आकर शहर वापस न जाता तो शायद होरी का इतना दुःखद अन्त न होता। गोबर अपने साथ नगर संस्कृति लेकर आया है। अतः वह पिता की गृहस्थी संभालना बोझ समझता है। प्रेमचंद ने गोबर की कथा से ग्रामीण संस्कृति और नगर संस्कृति का अन्तर स्पष्ट किया है। होरी अपनी मर्यादा पालन के लिए अपने प्राणों का बलिदान करता है और गोबर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है। रायसाहब के पास से होरी लौटता है तो अपने ज़मींदार की ओर से अत्यन्त श्रद्धा का भाव लेकर, लेकिन गोबर पिता की श्रद्धा पर व्यंग्य करता है; "तो फिर अपना इलाका हमें क्यों नहीं देते। हम अपने खेत, बैल, हल, कुदाल सब उन्हें देने को तैयार हैं। करेंगे बदला? यह सब धूर्तता है। जिसे दुःख होता है वह दर्जनों मोटरें नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा-पूरी नहीं खाता और न नाच रंग में लिप्त रहता है मज़े से राज सुख भोग रहे हैं" गोबर रायसाहब के दान धर्म पर व्यंग्य करता है, "किसके बल पर यह भजन-भाव और दान-धर्म होता है?... किसानों और मज़दूरों के बल पर। यह पाप का धन पचे कैसे? भूखे नंगे रहकर भगवान का भजन करें तो हम भी देखें..." एक दिन खेत में ऊख गोड़ना पड़े तो सारी भक्ति भूल जाएँ' गोबर ज़मींदारी व्यवस्था, सूदखोरी और धर्म के नाम पर चल रहे ढोंग को समाप्त करना चाहता है। गोबर अपने पिता से कहता है- "तुम्हारा यही धर्मात्मापन तो तुम्हारी दुर्गति कर रहा है।"

▶ गोबर ज़मींदारी व्यवस्था, सूदखोरी और धर्म के नाम पर चल रहे ढोंग को समाप्त करना चाहता है

युगों से दासता की बेड़ियों में जकड़े रहने के कारण, होरी को दासता से रोष नहीं अनुराग हो गया है। यहाँ तक कि दासता को भी प्रसाधन समझने लगा है। उसी परिस्थिति में होरी की पत्नी धनिया, व्यवहार कुशल थी। उसका विचार था कि हम ज़मींदार के खेत जोते हैं, तो अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें? उसके तलवे क्यों सहलाएँ? किन्तु विवाहित जीवन के बीस वर्षों में उसे अच्छी तरह अनुभव हो गया था.... लाख कतरब्योंत करो, पेट तन काटो, मगर लगान बेबाक करना मुश्किल है।' धनिया झुंझलाती है, वह प्रतिष्ठा के फेर में मर्यादा मिटाना नहीं चाहती। उसका स्वाभिमान अकड़कर चलना चाहता है।

▶ धनिया प्रतिष्ठा के फेर में मर्यादा मिटाना नहीं चाहती

गोबर की पत्नी झुनिया के मन में बैठ गया था कि "वह पक्का मतलबी बेदर्द आदमी है। मुझे केवल भोग की वस्तु समझता है।" इधर गोबर का मन झुनिया की ओर से खिंचता है। दोनों के बीच आपस का द्वेष और भड़कने लगा। कई दिनों तक एक-एक वाक्य को मनमें पाले रहते, जैसे शिकारी कुत्ते हों। मिल की हड़ताल में आहत होने के बाद गोबर को होश आता है। वह झुनिया से अपने किये की माफी माँगता है और

▶ झुनिया श्रम करके कमाती है और कमाकर प्राणाधार को स्वस्थ करती है

झुनिया श्रम करके कमाती है और कमाकर प्राणाधार को स्वस्थ करती है। जीवन की सार्थकता में, अपनों के लिए कठिन से कठिन त्याग में और स्वाधीन सेवा में जो उल्लास है, उसकी ज्योति उसके अंग में चमकने लगी। तब तक गोबर कटुता की जगह मृदुता और अभिमान की जगह नम्रता का पाठ सीख चुका था।

मिसेज़ खन्ना का दुःख पति की विलासप्रियता के कारण है। खन्ना मालती के तितली-रूप के पीछे दीवाने हो गये हैं, लेकिन वह पति की बेरुखी से अचिंतित कर्तव्य निर्वाह में लगी रहती है। एक बार दुःखी होकर अपने कर्तव्य से भाग कर घर छोड़ने का संकल्प करती है। ऐसे अवसर पर मेहता उसे समझाते हैं- "नहीं देवीजी, वह घर आपका है और सदैव रहेगा। उस घर की आपने सृष्टि की है, उनके प्राणियों की सृष्टि की है.... मातृत्व महान गौरव का पद है, देवीजी और गौरव के पद में कहाँ अपमान, धिक्कार और तिरस्कार नहीं मिला। माता का काम जीवन देना है।" बाद में गोविन्दी अपने काम में लग जाती है। समय व्यतीत होने के पश्चात् आखिर विजय उसी की होती है। पथ भ्रांत खन्ना को उस दिन होश आता है जिस दिन उनकी मिल में आग लगती है, उसी समय उन्हें संतोष अपनी पत्नी की स्नेह छाया से मिलता है। गोविन्दी कहती है- 'तो तुम इतना दिल छोटा क्यों करते हो? धन के लिए जो सारे पाप की जड़ है उस धन से हमें क्या सुख था। सेवेरे से आधी रात तक एक न एक झंझट। आत्मा का सर्वनाश। लड़के तुमसे बात करने को तरस जाते थे, तुम्हें सम्बन्धियों को पत्र लिखने तक की फुरसत न मिलती थी... मैं तो खुश हूँ कि तुम्हारे सिर से बोझ टला। अब तुम्हारे लड़के आदमी होंगे, स्वार्थ और अभिमान के पुतले नहीं। जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उनको लूटने में नहीं। बुरा न मानना। अब तक तुम्हारे जीवन का अर्थ था आत्मसेवा, भोग और विलास। देव ने तुम्हें उस साधन से वंचित करके तुम्हारे लिए ज़्यादा ऊँचे और पवित्र जीवन का रास्ता खोल दिया है।

▶ जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उनको लूटने में नहीं

इस उपन्यास में भारतीय संस्कृति की परम्परा निभाने वाली गोविंदी भी है और पाश्चात्य संस्कृति में पली चंचल युवतियाँ मालती और सरोज भी हैं। गाँव की चंडिका और ममता की मूर्ति धनिया का दर्शन एक ओर है, सोमा, रूमा, झुनिया आदि नवयुवतियों का दर्शन दूसरी ओर है तो तीसरी ओर नोहरी जैसी कुटिल स्त्री भी दर्शन देती हैं, यहाँ मनुष्य जीवन के महासागर का दर्शन होता है।

▶ मनुष्य जीवन के महासागर का चित्रण

मानव जीवन में जो कुछ सत्य और सुन्दर है उसका उद्घाटन करना ही उचित समझा है। प्रेमचंद ने जीवन के यथार्थ में ही कोमल और पवित्र भावनाएँ खोजी और सत्य, सेवा, साधना, त्याग आदि के भाव जागृत किये। अर्थात् उन्होंने मानव जीवन में देवत्त्व ढूँढा और यही उनका आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। कुछ लोगों का कहना है कि 'गोदान' में प्रेमचंद अपना आदर्शवाद खो चुके थे। किन्तु यह मत ठीक नहीं है। 'गोदान' की मालती का उज्ज्वल नक्षत्र की भाँति जाज्वल्यमान रूप उनके आदर्शवाद का ही रूप है। ये स्थान-स्थान पर आत्मिक ज्योति की झलक दिखाना चाहते हैं। वे यथार्थ का आश्रय अवश्य

▶ मनुष्य की दुर्बलताओं, विषमताओं, कुप्रथाओं का चित्रण

ग्रहण करते हैं, मनुष्य की दुर्बलताओं, विषमताओं, कुप्रथाओं का चित्रण अवश्य करते हैं, किन्तु वे इन्हें सीमाओं से बद्ध नहीं देखना चाहते। कुत्सित में भी कहीं देवत्व छिपा होता है। यदि उसमें आत्मशक्ति हो तो अपनी दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त कर पाता है।

प्रेमचंद हमारी नई और जनवादी संस्कृति के अग्रदूत थे। वे पश्चिमी संस्कृति और विदेशी विचार से देश को बचाना चाहते थे। उन्होंने कहा था 'भाई जान !! सिर्फ रुपया कमाना ही आदमी का उद्देश्य नहीं है। मनुष्यत्त्व को ऊपर उठाना और मनुष्य मात्र के मनमें ऊँचा विचार करना कर्तव्य है। 'प्रेमचंद जनवादी कथाकार थे। उनकी सम्पूर्ण कला का स्रोत भारतीय जनता थी। उनके कथा साहित्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट होती है कि वे हर तरह गरीब जनता के साथ थे, उनका शोषण होने देना नहीं चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि गरीबों का शोषण समाप्त हो और भीषण आर्थिक वैषम्य से जन-जीवन को मुक्ति मिले। अतः वे शोषणहीन समाज की स्थापना चाहते थे। यही उनकी साम्यवादी दृष्टि थी। भारी अर्थव्यवस्था और समाज-व्यवस्था में उन्होंने एक क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहा है। इस प्रकार 'गोदान' कृषक का करुण क्रंदन नहीं कृषि संस्कृति से उच्छ्वसित शोक गान है। इन पात्रों में अपार सहनशीलता भी है और समसामयिक विस्फोट भी है। भारतीय कृषक के समस्त संस्कारों से युक्त उसकी वर्तमान दशा का चित्रण किया गया है। अतः यह उपन्यास युग का प्रतिनिधित्व करता है।

▶ भारतीय कृषक के समस्त संस्कारों से युक्त उसकी वर्तमान दशा का चित्रण

'गोदान' के अन्दर जनजीवन तथा समाज अथवा देश की धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के जितने विविध चित्र लेखक ने समेटकर यथार्थ रूप में चित्रित किये हैं, उतने चित्र सम्पूर्ण उपन्यास साहित्य में ढूँढने पर ही मिलेंगे और एक स्थान पर मिलना तो असम्भव ही है। 'गोदान' ग्रामीण जीवन के वास्तविक पक्ष का गद्यात्मक महाकाव्य है। सम्पूर्ण उपन्यास-साहित्य के अन्दर समाज एवं मानव-भावनाओं के अधिक से अधिक जितने चित्र खींचे जा सकते हैं, उतने चित्र हमें अकेले 'गोदान' में ही प्राप्त हो जाते हैं। हमारे देश के अन्दर नागरिकों के दो प्रमुख जीवन स्तर हैं। उनमें एक तो वह जो नगरों में रहता है और भारतीय होकर भी अपने को भारतीय कहने में शर्माता है तथा दूसरा वह है जिसके अन्दर गाँवों अथवा देहातों के सबसे बड़े भारतीय जनसमूह का जीवन है, जहाँ पर ही सच्चा भारत निवास करता है और एक वर्ग पटवारियों तथा सरकारी कर्मचारियों का है जो रहता तो देहातों में है परन्तु अपने को शहराती ही मानता है। इन सबका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। 'गोदान' की मूल समस्या ऋण की समस्या है, जिसके द्वारा 'प्रेमाश्रम' तथा 'कर्मभूमि' के साथ लेखक ने हिन्दुस्तानी किसानों के जीवन की बृहत्रयी समाप्त की है। प्रेमचंद के अधिकांश पात्र व्यक्ति न होकर वर्ग के प्रतिनिधि हैं। होरी, मेहता, खन्ना आदि शोषित, शिक्षित तथा शोषकवर्ग के प्रतिनिधि हैं। होरी के एकमात्र चरित्र को लेकर उसे अनेक परिस्थितियों में ढालकर तथा अन्य बहुत से पात्रों और चरित्रों को संसर्ग में लाकर समाज के एक जीवित चित्र का निर्माण किया गया है। 'गोदान' में अपने युग का प्रतिबिम्ब भी है और आने वाले युग की प्रसवव्यथा भी, उपन्यास की शैली में उसे भारतीय जीवन का महाकाव्य कहा जा सकता है।

▶ 'गोदान' की मूल समस्या ऋण की समस्या है

SGOU

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के सर्वप्रथम उपन्यासकार कहे जा सकते हैं, जिन्होंने भारतीय जीवन की वास्तविकता को उसके निकट से झाँककर देखने का प्रयत्न किया और उनका देखा हुआ दीन-दुखी, दुर्बल, प्राचीन रूढ़ियों एवं परम्पराओं से जर्जरित तथा नवयुग के जन-जागरण से अपरिचित समाज ही भारत का वास्तविक समाज था। परन्तु प्रेमचंद ने जिस समय साहित्य में अपने प्रौढ़ रूप में प्रवेश किया, उस समय तक देश के अन्दर नव-जागरण की हल्की-सी लहर फैलनी आरम्भ हो गयी थी, जिसका प्रभाव उनके उपन्यासों में स्पष्ट लक्षित होने लगा है। प्रेमचंद ने भारतीय जीवन तथा उसके दलित समाज को देखकर उसका यथातथ्य चित्रण-मात्र ही नहीं कर दिया है, बल्कि इस हीन स्थिति के मूल कारण को जानने के लिए गम्भीर चिन्तन को भी उन्होंने अपनी कृतियों में स्थान दिया है। अपने साहित्य के द्वारा वे मानव समाज के सामने एक ऐसा हल प्रस्तुत करने के लिए दत्त-चित्त रहे, जिससे समाज में दम घुटने वाले वातावरण से किसी प्रकार हट कर पवित्र स्वच्छ वायु में साँस ले सकें। वे जीवन को उसके रूप में केवल देखना ही नहीं चाहते थे, बल्कि जीवन का एक रूप उनकी आँखों के सामने नाचता रहता था, उस आदर्श रूप तक वर्तमान समाज को पहुँचा देने की प्रेरणा अपने साहित्य के द्वारा वे प्रदान करना चाहते थे। उनके सामने जीवन कैसा है, यह समस्या उतनी बड़ी नहीं थी जितनी कि जीवन कैसा होना चाहिए। यही कारण है कि प्रेमचंद की दृष्टि यथार्थवादी होते हुए भी आदर्श की ओर उन्मुख थी। स्पष्ट है कि वे किसी साहित्यिक प्रवृत्ति विशेष के प्रति दुराग्रही नहीं थे। वे सहजभाव से युगीन भाव-बोध को अपनाकर अपने ढंग से नव-सामाजिक निर्माण की प्रेरणा देने में सतत क्रियाशील रहे। वे अपने समाज को जैसा कि उपन्यास साहित्य में उन्होंने कल्पना की है, मूर्त रूप में देखना चाहते थे। इसे ही आप चाहें तो प्रेमचंद का यथार्थवाद कह लें।

▶ सहजभाव से युगीन भाव-बोध को अपन्ाकर अपने ढंग से नव-सामाजिक निर्माण की प्रेरणा

3.3.4 गोदान की पात्र योजना

प्रेमचंद को 'गोदान' में चरित्र-चित्रण की असाधारण सफलता प्राप्त हुई है। होरी के रूप में उन्होंने भारतीय कृषक को ही मूर्तिमान कर दिया है। जीवनभर परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ किसान अन्त में अपनी करुण कहानी का व्यापक प्रभाव छोड़कर समाप्त हो जाता है। भारतीय किसान की समस्त विषमता होरी में साकार हो उठी है। उसकी पत्नी धनिया आदर्श भारतीय ग्रामीण नारी की भाँति पति के सुख-दुख में उसका साथ देती है। महाजनों का एक दल ही प्रेमचंद ने प्रस्तुत कर दिया है। दातादीन, झिंगुरीसिंह सभी गरीबों का खून चूसने वाले महाजन हैं। ग्रामीण जीवन के अतिरिक्त नागरिक जीवन से भी प्रेमचंद ने पात्रों को चुना है। रायसाहब ज़मींदार वर्ग के प्रतिनिधि हैं, जो अपनी इज्जत को बचाए रखने के लिए बड़ी तरकीबें काम में लाते हैं। अन्त में उस झूठी शान को धक्का लगता है। मिस्टर तंखा, खन्ना आदि व्यक्ति लूट-खसोटकर जीने वाले व्यक्ति हैं।

▶ ग्रामीण जीवन के अतिरिक्त नागरिक जीवन से भी प्रेमचंद ने पात्रों को चुना है

मेहता के चरित्र में प्रेमचंद ने नगर के एक आकर्षक व्यक्ति को अंकित किया है।

परिवर्तन में बँधा मालती का चरित्र भी अन्त में आकर्षक हो जाता है। इस प्रकार ग्रामीण और नागरिक दो प्रकार के चरित्र गोदान में दिखाई देते हैं। उपन्यास का नायक होरी ही 'गोदान' का प्राण है। आदि से अन्त तक वह अपने संघर्ष से कथानक को आगे बढ़ाता है। उसने कभी विद्रोह नहीं किया। आजीवन परिस्थितियों के सम्मुख सिर झुकाता रहा। अपने विशाल वक्षस्थल पर उसने समस्त अत्याचार और प्रपीड़नों का भार रख लिया। महाजन उसे हमेशा चूसते रहे और विधि की विडम्बना सदा उससे खेलती रही, पर वह सब कुछ स्वीकार करता गया। होरी की सरलता, ईमानदारी और उदारता ही उसके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी पूँजी है। स्वयं विपत्तियों में रहता हुआ भी वह झुनिया, पुनिया, सिल्लो, भोला आदि को शरण देता है। रात-भर अनाज ढो-ढोकर दातादीन के घर पहुँचाता है। भाई हीरा और शोभा के लिए उसके हृदय में प्रेम है। वह यह नहीं सहन कर सकता कि उसके भाई के घर तलाशी ली जाए। उसकी आत्मा इतनी विशाल है कि उसे प्रेमचंद के किसी भी पात्र की समता में रखा जा सकता है।

▶ नायक होरी ही 'गोदान' का प्राण है

धनिया के चरित्र-निर्माण में प्रेमचंद ने ग्रामीण नारी के स्वाभाविक रूप को लाने का प्रयत्न किया है। वह जीवन के व्यावहारिक पक्ष को सशक्त करनेवाली नारी पात्र है। वह अपने पति होरी की भाँति अत्याचार और अन्याय नहीं सहन कर सकती। दारोगा को दिए जाने वाले घूस के रुपए वह होरी के हाथ से छीन लेती है। दातादीन से साफ कह देती है कि गरीबों का गला घोंटकर सुख से न रहोगे। यही नहीं वह पंचों को भी चुनौती देती है, जिन्हें होरी 'पंच परमेश्वर' मानता है। किसी भी घटनास्थल पर आकर धनिया अपनी स्पष्टवादिता से एक पल में पांसा पलट देती है। होरी क्रोध में आकर उसे मारता भी है। धनिया होरी को जीवन-सर्वस्व मानकर चलती है। उसके बार-बार कहने पर गाय को बेच देने तक के लिए वह कहती है। उपन्यास के अन्त में तो वह पागलों की भाँति दौड़ने लगती है। उसके पछाड़ खाकर गिर जाने के साथ ही दो करुण दृश्य सम्मुख आते हैं-होरी का संघर्ष और धनिया का त्याग। कभी-कभी गरीबी से परेशान हो जानेवाली धनिया क्रोधित भी हो उठती है। पर उसी ने ममतामयी बनकर झुनिया और सिलिया को सहारा भी दिया था। यदि होरी उपन्यास का सबसे संघर्षशील करुण पुरुष है तो धनिया उसकी सबसे त्यागमयी, ममतामयी और विद्रोही नारी है।

▶ किसी भी घटनास्थल पर धनिया अपनी स्पष्टवादिता से एक पल में पांसा पलट देती है

नागरिक पात्रों में मेहता का चित्रण प्रेमचंद ने एक पढ़े-लिखे व्यक्ति के रूप में किया है जो आदर्श की ओर भागते हैं। बहुत अधिक पुस्तकें पढ़ने वाले मेहता दर्शनशास्त्र के अध्यापक हैं। वह जीवन के व्यावहारिक पक्ष में अन्य नागरिक मित्रों की भाँति चतुर नहीं हैं। मालती से जब उनकी घनिष्ठता बढ़ जाती है, तब भी वह उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना नहीं चाहते। उन्हें मिसेज खन्ना एक आदर्श नारी प्रतीत होती हैं। मेहता को ग्रामीण जीवन से अभिरुचि हो जाती है और वह उसमें सुधार का प्रयत्न करते हैं। मेहता का चरित्र कुल मिलाकर एक साधारण चरित्र ही रह गया है। मिस मालती के आरम्भिक रूप में क्रमशः परिवर्तन होता जाता है। उनके रूप में जादू का-सा कुछ प्रभाव है। अन्त में वह भी ग्रामीण सुधार में मेहता का साथ देती हैं और निश्चय करती हैं कि वे दोनों मित्र होकर रहेंगे।

▶ गोदान के सभी पात्र किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं

गोदान के सभी पात्र किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं, उपन्यासकार ने उनका चरित्रांकन उनके व्यवसाय के अनुकूल ही किया है

'गोदान' विश्व-साहित्य की अमर कृतियों में स्थान पाकर भारत का सौभाग्य- सूर्य बन गया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में राजाओं से लेकर सड़क पर भीख माँगने वाले भिखारी तक, महलों से लेकर झोंपड़ी तक, कुलवधुओं से लेकर वेश्याओं तक, कलकत्ता से लेकर छोटे-छोटे गाँवों तक, गवर्नर से लेकर पटवारी तक, ब्राह्मणों से लेकर मेहतरों तक सभी की समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली। इस युग तक आते-आते हिन्दी- उपन्यास को यथार्थ और मनोविज्ञान आदि के नवीन आधार उपलब्ध हुए, जिन पर खड़े होकर उसका भवन सुदृढ़ और विशाल होने लगा तथा 'गबन' और 'गोदान' जैसे स्वर्ण- दीप जगमगाने लगे।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं। इन्हें वह जैसे चाहती है, नचाती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मुंशी प्रेमचंद गोदान में यथार्थ के साथ 'आदर्श' की प्रतिष्ठा भी करते चलते हैं। यथार्थ की 'झाँकी' और 'आदर्श' का संकेत इस तरह मिश्रित हुए हैं कि साधारण पाठक लक्ष्य भी नहीं कर पाता। संगम की तरह यथार्थ की यमुना स्वच्छन्द रूप से अपने तटवासियों को अद्भुत सौन्दर्य से तृप्त करती है और आदर्श की गंगा से मिल जाती है। दूर तक सित-असित दोनों धाराएँ हिलती मिलती, कभी श्याम, कभी स्वच्छ छटा से दर्शकों को रिझाती चलती हैं, परन्तु अन्त में 'यथार्थ' की यमुना 'आदर्श' की गंगा में विलीन हो जाती है। अतः कहा जा सकता है कि 'गोदान' में 'आदर्श' और 'यथार्थ' का सुन्दर समन्वय है। किसान से मज़दूर बनने में होरी की सज्जनता ही मूल कारण है, अन्यथा परिश्रम करने में वह किसी से कम नहीं। उपन्यास का सबसे अधिक करुण पात्र भी होरी ही है। जीवन से संघर्ष करता हुआ वह अन्त में विदा लेता है तब उसकी करुण कथा पाठकों पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ती है। इसमें केवल होरी ही एक ऐसा पात्र हैं जो आरंभ से लेकर अंत तक दया, सद्भाव व मर्यादा की मूर्ति बना रहता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. गोदान-कथानक पर चर्चा कीजिए।
2. गोदान में चित्रित 'यथार्थ' और 'आदर्श' के बारे में टिप्पणी लिखिए।
3. कृषक जीवन के महाकाव्य के रूप में 'गोदान' की आलोचना कीजिए।
4. 'गोदान' की पात्र योजना पर चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो. रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद - डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत राय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

गोदान में ग्रामीण और नगरीय कथाओं का विवेचन, गोदान की समस्याएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'गोदान' उपन्यास में चित्रित ग्रामीण व शहरी कथाएँ समझता है
- 'गोदान' के कथानक में कौतूहल एवं चमत्कार के बारे में जानता है
- ग्राम्य एवं नागरिक जीवन की कथाओं की एकसूत्रता को समझता है
- उपन्यास में चित्रित समस्याओं से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

'गोदान' मुंशी प्रेमचंद जी की एक प्रौढ़ रचना है। इसमें मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने युग का यथार्थ वर्णन किया है। प्रेमचंद कलम के सिपाही माने जाते हैं। वे अपनी लेखनी के माध्यम से ग्रामीण समस्याओं को सुलझा कर नगरीय जीवन जीने वाले ग्रामीणों को दुखों से मुक्ति दिलाना चाहते थे तथा शहरी जीवन की समस्याओं को दूर करके वहाँ मानवता का प्रचार करना चाहते थे। इसी कारण गोदान उपन्यास में ग्रामीण व नागरिक कथाएँ एक साथ चलती हैं। एक ओर ग्राम का यथार्थ चित्रण है तो दूसरी और शहरी जीवन का यथार्थ अंकन।

Keywords / मुख्य बिन्दु

कथाओं की एकसूत्रता, कौतूहल, नाटकीय परिस्थिति, समस्याओं का चित्रण

Discussion / चर्चा

3.4.1 गोदान में ग्रामीण और नगरीय कथाओं का विवेचन

'गोदान' उपन्यास में दो कथाएँ एक साथ चलती हैं-ग्रामीण कथा व शहरी कथा। दोनों कथाओं में परिवेश का यथार्थ अंकन मिलता है। ग्रामीण कथा गांव में प्रचलित बुराइयों व समस्याओं का वर्णन करती है तथा शहरी कथा शहर का यथार्थ अंकन करती है। दोनों कथाएँ एक दूसरे के समानांतर चलती हैं। दोनों आपस में एक बिंदु पर

नहीं मिलती लेकिन दोनों कथाएँ एक दूसरे से अप्रत्यक्ष रूप से कहीं ना कहीं जुड़ी भी हैं। ग्रामीण जीवन की त्रासदी में बुरे शहरी पात्रों की सक्रियता और अच्छे शहरी पात्रों की उदासीनता निर्णायक भूमिका निभाती है। ठीक इसी प्रकार ग्रामीण जीवन में व्याप्त अज्ञान, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता भी शहरी जीवन के भोग-विलास, अत्याचारी प्रवृत्ति और ऐश्वर्य संपन्न जीवन शैली का एक कारण बनती है। अगर दोनों कथाएँ आपस में नहीं भी जुड़ती तो भी अनुचित नहीं है। क्योंकि लेखक का मुख्य उद्देश्य युगीन परिवेश का यथार्थ अंकन है जिसमें लेखक पूर्णतः सफल हुए हैं। वास्तव में उपन्यासकार ने तत्कालीन समाज के प्रत्येक पक्ष को पाठकों के सामने जीवंत कर दिया है। केवल ग्रामीण कथा के होने से पाठक उस समय के शहरी जीवन की झलक से अछूते रह जाते। ऐसा लगता है कि मुंशी प्रेमचंद जी ने अपनी इस प्रौढ़ कृति के माध्यम से तत्कालीन शहरी व ग्रामीण समाज में व्याप्त सभी बुराइयों, उनके कारणों, कुप्रभावों व उनको दूर करने की आवश्यकताओं को एक ही रचना के माध्यम से कहने का अद्वितीय प्रयास किया है।

▶ तत्कालीन शहरी व ग्रामीण समाज में व्याप्त सभी बुराइयों व उनको दूर करने की आवश्यकताओं का चित्रण

3.4.1.1 ग्राम्य एवं नागरिक जीवन कथाओं की एकसूत्रता

प्रेमचंद जी 'गोदान' की कथा को होरी के ग्रामीण जीवन से प्रारम्भ करते हैं। यही कथा रायसाहब द्वारा आयोजित धनुष-यज्ञ में आकर वहाँ के नागरिक पात्रों से सम्बद्ध हो जाती है। होरी अपने ज़मींदार रायसाहब से जुड़ा हुआ है तो दूसरी ओर रायसाहब अपनी सम्पन्नता के कारण नगर के ओंकारनाथ, खन्ना, तेखा, डॉ. मेहता, मिर्जा और मालती आदि से जुड़े हुये हैं। उपन्यास में इस प्रकार रायसाहब ग्रामीण और नागरिक जीवन को आपस में जोड़ने वाले संयोजक का कार्य करते हैं। यही नहीं गोबर नगर में जाकर डॉ. मेहता, मिर्जा, मालती आदि के सम्पर्क में आकर उपरोक्त दोनों क्षेत्रों को और भी घनिष्ठ बना देता है। बाद में डॉ. मेहता और मालती का शिकार पर जाना, साथ ही होरी के घर पर पहुँचना भी दोनों क्षेत्रों को मिलाने में सहायक होता है। इसी क्रम में 'बिजली' पत्र के सम्पादक ओंकारनाथ ग्रामीणों के द्वारा भेजे गये पत्रों को अपने पत्र में छापने की सहमति देकर इस कथा से स्वतः ही जुड़ जाते हैं।

▶ रायसाहब ग्रामीण और नागरिक जीवन को आपस में जोड़ने वाली एक संयोजक कड़ी

3.4.1.2 प्रासंगिक कथाओं का मुख्य कथा के साथ सुसंगठन

इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन की विभिन्न कथाएँ हैं। गोदान में, मुख्य रूप से दो प्रेम कथाएँ चित्रित हैं: होरी और धनिया की प्रेम कहानी, और गोबर और झुनिया की प्रेम कहानी। इसके अलावा, मातादीन और सिलिया, तथा गोबर और मालती के बीच संबंध भी चित्रित किए गए हैं। यह सभी भिन्न प्रतीत होने वाली कथाएँ समाज की वास्तविकता को दिखाते ही हैं और धनिया की मानवता को उभारने में पर्याप्त सहयोग प्रदान करती हैं। सम्पूर्ण कथानक अपने सम्पूर्ण कलेवर में समाहित किये हुये हैं। नागरिक और ग्रामीण क्षेत्रों की सद्गुणों जैसे -सेवा, त्याग, मानवता आदि के प्रदर्शन

▶ नागरिक और ग्रामीण क्षेत्रों के सद्गुणों का चित्रण

के लिये कथानक की मुख्य समस्या को और भी अधिक महत्वपूर्ण और आकर्षक बना देती है। कहने का आशय यह है कि 'गोदान' में न तो कोई उपकथा गौण है और न यह विषय से अलग हटकर चलती है।

3.4.1.3 कौतूहल एवं चमत्कार का समावेश

- गोदान का नामकरण सार्थक है

सम्पूर्णतः उपन्यास का कथानक पाठकों के मन में कौतूहल बनाये रखता है। गोदान का नामकरण सार्थक है। जहाँ होरी में गाय के प्रति लालसा है वहीं गाय आ जाने पर यही कथन होता है कि भगवान चाहेंगे तो गाय बहुत दिन घर में न रहेगी। यह पाठकों के मन में शंका उत्पत्र कर देता है। उपन्यासकार ने उसकी नाटकीय परिस्थिति को बड़े कौशल से चित्रित किया है। प्रेमचंद जी पाठक की जिज्ञासा को बनाये रखने के लिये एक न एक समस्या की उद्भवना करते ही रहते हैं।

- 'गोदान' के कथानक में कोतूहल एवं चमत्कार के अनेक स्थल हैं

गोदान में चमत्कार पूर्ण स्थल भी दर्शनीय है। मालती का डॉ. मेहता केप्रति आकर्षण और फिर डॉ मेहता द्वारा ही प्रेम से मालती का उत्साह भंग करना एक अनोखी सूझ है। इसी के पश्चात् उपन्यासकार मेहता को मालती के प्रति व्याकुल दर्शित करके चमत्कार की उद्भावना करता है। मालती यद्यपि मेहता को अपने बंगले में रखती है उनका हिसाब- किताब देखती है परन्तु मिलने का अवसर कम देती है। दोनों में एक दूसरे के प्रति कुछ है परन्तु वे उसका उद्घाटन नहीं होने देते। मालती झुनिया के बच्चे की सेवा में लीन है, डॉ. मेहता जाकर याचनामयी दृष्टि से उसे देखते हैं। मालती भी उनसे लिपट जाना चाहती है। उपन्यासकार ने यहाँ उत्सुकता की चरमावस्था उपस्थित करते हुये भी अनायास ही रस में भंग उत्पन्न कर दिया है। यहाँ अचानक ही झुनिया को जगाकर प्रेमचंद जी चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं। इस प्रकार 'गोदान' के कथानक में कौतूहल एवं चमत्कार के अनेक स्थल से भरे पड़े हैं।

3.4.1.4 स्वाभाविक अंतर्द्वन्द्व योजना

'गोदान' में सर्वत्र स्वाभाविकता का निर्वाह किया गया है। इसमें प्रेमचंद जी की अद्भुत कल्पना शक्ति एवं कलात्मक सृजन शक्ति दिखाई देती हैं। काल्पनिक चित्र भी हमें स्वाभाविक दिखाई पड़ते हैं। जन-जीवन का सजीव चित्रण तो मानो प्रेमचंद जी की अद्भुत क्षमता है। गोबर और झुनिया, मातादीन और सिलिया, भोला और नोखेराम, मेहता और मालती आदि के चित्र अपने वर्गों के अनुरूप ही नहीं वरन् साकार भी है। 'गोदान' में पात्रों के विकास में अंतर्द्वन्द्व पर्याप्त सहायक है। इससे कथा को सर्वथा गति प्राप्त होती है। मालती बाहर से तितली है तो भीतर से मधुमक्खी है। मातादीन इसी अंतर्द्वन्द्व का शिकार बनकर अन्त में ठीक रास्ते पर आ जाता है। रायसाहब अपनी वास्तविकता को जानते हुये भी अपनी मर्यादा को बनाये रखते हैं। डॉ. मेहता एवं खन्ना पश्चाताप के भागीदार होते हैं। मिर्जा खुर्शीद अनावश्यक पात्र न होकर उपन्यास में मनोरंजकता की उद्भावना करता है। वयोवृद्धों की कबड्डी, वीरांगनाओं के उद्धार की योजना आदि स्वाभाविक घटनायें है। शिकार के समय काली लड़की के प्रति मालती का

- जन-जीवन का सजीव चित्रण करने की अद्भुत क्षमता

सोतिया ठह सर्वथा चमत्कार उत्पन्न करता है। इस प्रकार 'गोदान' कथानक सकुशल अपनी यात्रा पूर्ण करता है।

यद्यपि 'गोदान' का कथानक सर्वथा उत्तम है फिर भी उसमें कथा शैथिल्य का दोष लगाया जाता है परन्तु देश का सम्पूर्ण वातावरण प्रस्तुत करने वाले पेनोरमा रूपी उपन्यास की दृष्टि से असम्बद्ध घटनाओं का भी एक सार्थकता है। उपन्यासकार भारतीय समाज का सम्पूर्ण वातावरण उपस्थित करने केलिए विस्तृत केनवास को स्वीकारा है और इस हेतु ग्रामीण और नागरिक जीवन का समावेश प्रेमचंद जी के लिये अनिवार्य हो गया था। सारांशतः यही कहा जा सकता है कि भारतीय जीवन को पूर्णता के साथ अंकित करने वाला 'गोदान' उपन्यास ही प्रथम उपन्यास है जो अपने कदाचित् दोषों को भी अपनी महानता से ढक देता है।

▶ 'गोदान' भारतीय जीवन को पूर्णता के साथ अंकित करने वाला उपन्यास

3.4.2 गोदान में चित्रित समस्याएँ

'गोदान' में प्रेमचंद जी ने गाँव और शहर की कथा के माध्यम से अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। इनमें से अधिकतर समस्याओं के केंद्र में उपन्यास का नायक 'होरी' है। उपन्यास में मुख्यतः दो वर्गों का संघर्ष दिखाया गया है। उनमें से एक है शोषक और दूसरा है शोषित। एक वर्ग सुख-समृद्धि से युक्त है। साधन-संपन्न, सबल है। लेकिन दूसरा वर्ग अभाव-ग्रस्त ज़िन्दगी से युक्त है। वह साधन-हीन और निर्बल है। प्रेमचंद जी ने 'समस्या' शब्द का कहीं भी स्पष्ट उल्लेख न करते हुए शोषक और शोषित इन दोनों वर्गों की जीवन-संबंधी मान्यताएँ, उनकी आर्थिक स्थितियाँ एवं उनकी सबलता और दुर्बलता का चित्रण किया है। कृषि - प्रधान भारत देश के किसानों की वास्तविक स्थिति कैसी है ? वह किन हालातों में अपना जीवन-यापन करता है? उसकी सामाजिक एवं धार्मिक आस्थाएँ कैसी हैं ? इसी का चित्रण 'गोदान' में लेखक ने 'होरी' के माध्यम से किया है। इस चित्रण में विभिन्न प्रकार की अनेक समस्याएँ उजागर हुई हैं। वे समस्याएँ निम्नांकित हैं -

3.4.2.1 शहरी लोगों द्वारा गाँव के लोगों के शोषण की समस्या

शोषण की समस्या 'गोदान' उपन्यास की एक मुख्य समस्या है। उपन्यास में चित्रित शहरी जीवन का संबंध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में ग्रामीण जीवन से है। उपन्यास का मूल उद्देश्य किसानों की वास्तविक दशा को चित्रित करना है। अतः इसमें शहरी जीवन के उन्हीं पहलुओं को स्थान दिया गया है, जिनका किसानों से संबंध है। ज़मींदार, साहूकार, मिल-मालिक आदि का गाँव से संबंध रहता है। ज़मींदार आदि किसानों की कमाई पर शहर में भौतिक सुख समृद्धि से युक्त विलासमय जीवन जीते हैं। मिल मालिक गाँव से प्राप्त होनेवाले कच्चे माल द्वारा अपने उत्पादन कार्य को आगे बढ़ाते हुए अपनी धन-संपत्ति को और अधिक बढ़ाते हैं। साहूकार गाँवों में अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर कर्ज तथा ब्याज के पैसे वसूल करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में ज़मींदार रायसाहब, मिल-

▶ ज़मींदार, मिल-मालिक,साहूकार आदि के द्वारा किसानों के शोषण की समस्या का चित्रण

मालिक खन्ना के द्वारा इसी प्रकार के किसानों के शोषण को दिखाया है। परिणाम स्वरूप होरी जैसे किसानों के जीवन की परेशानियाँ और भी बढ़ जाती हैं।

3.4.2.2 आर्थिक अभाव की समस्या

भारतीय किसानों की सभी समस्याओं का मूल आर्थिक अभाव है। होरी, गोबर एक ऐसे समाज में रहते हैं, जहाँ धन का स्थान सर्वोपरि है। धन से ही व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा है। धन से समाज में उच्च स्थान प्राप्त किया जाता है। धन के बल पर व्यक्ति के कुकर्मों को भी छिपाया जाता है। परंतु धन-हीन होने पर सत्कर्म भी कुकर्म के रूप सिद्ध किए जाते हैं। इसीलिए तो गोबर पैसे कमाने के लिए शहर भाग जाता है। वहाँ थोड़े रुपए कमाकर जब वह गाँव आता है, तो उसमें इतना साहस आ जाता है कि, वह गाँव के साहूकार, महाजन आदि की खुलकर हँसी उड़ाता है। तात्पर्य यह कि आर्थिक अभाव ही मनुष्य के आत्मविश्वास को नष्ट कर उसे दबाकर रहने के लिए विवश करता है। अन्याय, शोषण को चुपचाप सहने के लिए बाध्य करता है।

▶ आर्थिक अभाव मनुष्य के आत्मविश्वास को नष्ट कर देता है

3.4.2.3 किसानों के शोषण की समस्या

प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास की रचना ही किसानों के शोषण को उजागर करने के लिए की है। हर कोई अवसर मिलते ही किसानों का शोषण करता है। परंतु यह शोषण प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष रूप में होता है। प्रस्तुत उपन्यास में होरी को प्रत्यक्ष रूप में कोई भी परेशान नहीं करता। उससे जितने भी पैसे वसूल किए जाते हैं, वे सब कानून, धर्म, न्याय, परंपरा आदि के नाम पर वसूल किए जाते हैं। शोषण की इस नई पद्धति को उपन्यास में कई स्थानों पर देखा जा सकता है। रायसाहब होरी से नज़राना लेते हैं। यह इसलिए कि यह परंपरा से चला आ रही रिवाज़ है। होरी मंगरूशाह का कर्जदार होने के कारण वे उसकी ईख की नीलामी कर देते हैं। बिरादरी उस पर इसलिए दंड लगाती है की उसने झुनिया को घर में आश्रय देकर बहुत बड़ा अपराध किया है। दातादीन होरी से खेत में मज़दूर की तरह कड़ी मेहनत करवाता है। तीस रुपए के बदले दो सौ रुपए वसूल करता है। इस तरह जीवनभर कड़ी मेहनत, परिश्रम करनेवाला होरी सभी से लूट लिया जाता है। परिवार के लिए आवश्यक साधन जुटाने में भी वह असमर्थ रहता है। परिवार के लिए होनेवाली उसकी छोटी-छोटी आकांक्षाओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती। शरीर में शक्ति न होने पर भी अधिक परिश्रम करने से होरी को असमय में ही मृत्यु को गले लगाना पड़ता है। इस तरह लेखक बताना चाहते हैं कि शोषण तथा हराम की खाने वाले जीवनभर आनंद भोगते हैं और शोषित दुःख, पीड़ा, वेदना को सहते हुए जीवनभर संघर्ष करते रहते हैं। होरी के जीवन की यही मुख्य समस्या है।

▶ जीवनभर कड़ी मेहनत, परिश्रम करनेवाला होरी सभी से लूट लिया जाता है

3.4.2.4 धर्म की समस्या

होरी के माध्यम से लेखक ने इस महत्वपूर्ण समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। होरी की भाग्यवाद और कर्मवाद पर अमिट श्रद्धा होने से वह अपनी दीन

दशा को अपने पूर्वजन्म के पापों का कारण मानता है। रूढ़ि-परंपरा का वह अंधा भक्त है। बिरादरी की मर्यादा उसके लिए सर्वोपरि है। अपने पूर्वजों की ज़मीन के प्रति उसके मन में मर्यादा का भाव है। परिस्थिति चाहे जैसी भी हो वह हर हाल में किसानी को मर्यादाजनक कार्य मानता है। होरी अच्छी तरह जानता है कि, खेती करने से उसके एक दिन की मज़दूरी एक आने से भी कम है। फिर भी अपनी मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह खेती में डटकर काम करना चाहता है। उसके लिए निरंतर संघर्ष करता रहता है। वह अपने बेटे गोबर से कहता है, "खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में नहीं है।" एक स्थान पर वह गोबर से कहता है 'बेटा छोटे-बडे भगवान के घर से बनकर आते हैं। संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्व जन्म में जैसे कर्म किए हैं, उसका आनंद भोग रहे हैं। हमने कुछ संचा नहीं तो भोगे क्या?' वह ब्राह्मण और पंचों को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता है।

▶ होरी रूढ़ि-परंपरा का अंधा भक्त है

इसीलिए उनके अनुचित निर्णय को भी सिर झुकाकर स्वीकार कर लेता है। जब भोला बैल खोलकर ले जाने के लिए आता है तो होरी उससे कहता है, "अगर तुम्हारा धर्म कहे तो बैल खोलकर ले जाओ।" जब भोला सचमुच बैल ले जाता है, तो होरी इसे भाग्य का विधान मानता है। पंडितों पर उसकी बड़ी श्रद्धा है, अतः दातादीन धर्म के नाम पर उसका शोषण करता है।

3.4.2.5 अशिक्षा की समस्या

▶ अशिक्षा के कारण होरी अंधविश्वासी होता है

समाज में अन्याय-अत्याचार एवं शोषण की घटनाओं को अशिक्षा के कारण ही बढ़ावा मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास में भी होरी की दशा एक महत्वपूर्ण कारण उसका अशिक्षित होना है। अशिक्षित होने के कारण ही होरी में वास्तविकता को समझने की क्षमता नहीं है। अतः होरी उसके होनेवाले शोषण को भी समझ नहीं पाता। दूसरी ओर शोषक वर्ग हमेशा यही चाहता है कि निम्न वर्ग सदा के लिए अशिक्षित ही बना रहे और वे उसी केलिए प्रयास भी करते हैं। क्योंकि उन्हें डर है कि शिक्षित होने पर शोषित शोषकों की असलियत जान जाएँगे। निम्न वर्ग का अशिक्षित रहने का और एक कारण यह भी है कि आधुनिक शिक्षा इतनी मँहगी है कि होरी के बच्चों के लिए उसे प्राप्त करना बहुत कठिन बात है। अपनी अशिक्षा के कारण ही होरी धर्म के बाह्य रूप को ही सच मान लेता है और कष्ट उठाता रहता है। अगर वह शिक्षित होता तो धर्म को लेकर अंधः विश्वासी नहीं होता।

3.4.2.6 शहर के मज़दूरों की समस्या

▶ अशिक्षित और आर्थिक अभाव के कारण मज़दूर कई बुराइयों का शिकार बनते हैं

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचंद जी ने किसानों की समस्या के साथ मज़दूरों की समस्या को भी उजागर किया है। मज़दूर भी अशिक्षित हैं। वे अनेक प्रकार की बुराइयों के शिकार हैं। परंतु शहर में रहने के कारण अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागृत हैं। अपने अधिकारों को पाने के लिए, शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए मज़दूरों द्वारा

हड़तालें की जाती हैं। मिलें जला दी जाती है। परंतु इससे उनकी समस्या का समाधान नहीं होता। शहरों में शोषक और शोषित का संघर्ष अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वहाँ भी मज़दूरों की समस्या किसानों की तरह ही है। आर्थिक अभाव उन्हें भी जीवन संघर्ष के लिए विवश करता है।

3:4:2:7 स्त्रियों की शिक्षा एवं अधिकारों की समस्या

शहरी समाज की इस समस्या के दर्शन हमें आए दिन होते रहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने इस समस्या को गोविंदी और मालती के माध्यम से उजागर किया है। गोविंदी एक आदर्श नारी है। उसकी जैसी नारियों में ही सेवा एवं त्याग की भावना संभव है। दूसरी ओर मालती सांसारिक भोग विलास को ही नारी जीवन की सार्थकता मानती है। मालती पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नारी है। वह विवाह को नारी के लिए बंधन मानती है। अतः आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लेती है। उसका मानना है कि नारियों को अपना जीवन उन्मुक्त रूप में जीने का अधिकार है। परंतु उपन्यास के अंतिम भाग में लेखक ने मालती को मेहता के संपर्क में लाकर उसमें बहुत बड़ा परिवर्तन लाया और उसके माध्यम से यह संकेत दिया कि मालती जैसी नारियों को जन-कल्याण के क्षेत्र में आगे आकर मेहता जैसे पुरुषों का साथ देना चाहिए। लेखक का कहना है कि शिक्षित स्त्रियों के अपने अधिकारों का यह मतलब नहीं है कि वे उन्मुक्त रूप से अपना जीवन जिएँ क्योंकि शिक्षित स्त्रियों द्वारा इस प्रकार अपने अधिकारों के नाम पर उन्मुक्त, भोग विलास से युक्त जीवन जीना भी समाज के लिए एक समस्या का विषय बन सकता है।

▶ शिक्षित स्त्रियों द्वारा उन्मुक्त, भोग विलास से युक्त जीवन जीना एक समस्या का विषय है

3.4.2.8 पुरुष प्रधान संस्कृति में पीड़ित नारी की समस्या

पुरुष प्रधान संस्कृति में पीड़ित नारी की दशा को भी लेखक ने एक समस्या के रूप में इस उपन्यास में उजागर किया है। हम सभी जानते हैं कि पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को हमेशा से ही दोयम स्थान देकर उसके अस्तित्व को ही नकारने की कोशिश की गई है। प्रेमचंद जी ने नारी जीवन के इसी पक्ष को उजागर कर पुरुष प्रधान सत्ता का क्रूर चेहरा हमारे सामने लाने का प्रयास किया है। हीरा सबके सामने पुनिया को लातों से पीटता है और कहता है 'तू छोटे-छोटे आदमियों से लडती फिरती है, किसकी पगड़ी नीचे होती है बता।' पुनिया रो-रोकर कहती है, 'भाग फूट गया कि तुम जैसे कसाई के पाले पड़ी।' होरी अपने भाई पर गोहत्या का अपराध नहीं लगाना चाहता। वह नहीं चाहता की दारोगा उसके घर की तलाशी ले। लेकिन धनिया उसे जेल भेजना चाहती है। इस बात को लेकर वह होरी से उलझती है। होरी धनिया को सबके सामने पीटता है। इस पर धनिया कहती है, 'मार तो रहा है और मार ले, जो तू अपने बाप का बेटा होगा तो आज मुझे मारकर तब पानी पीएगा।' उस समय धनिया को इस बात का दुःख अधिक होता है कि जिस आदमी की गृहस्थी चलाने में उसने इतना त्याग किया, मानो उसका यह पुरस्कार है। गोबर भी झुनिया के गर्भवती होने पर बीच रास्ते में छोड़कर भाग जाता है। धनिया उसे अपने घर में आश्रय देती है। परंतु झुनिया का पिता यह

▶ पुरुष प्रधान सत्ता तंत्र का क्रूर चेहरा हमारे सामने लाने का प्रयास किया है

शर्त रखता है कि या तो झुनिया को घर से निकाल दे या गाय के पैसे चुका दे। उस समय वह कहता है, 'उसने मेरी नाक कटाई है, मैं उसे ठोकरें खाते देखना चाहता हूँ।' एक बाप का अपनी बेटी के प्रति इस प्रकार का रवैया निश्चित ही अविश्वसनीय और अमानवीय है। इसी तरह सिलिया द्वारा मातादीन के साथ रहने की बात करने पर माँ और भाई द्वारा उसे पीटना, पीड़ित नारी का ही उदाहरण है।

3:4:2:9 परिवार विघटन की समस्या

होरी के दो भाई और एक बेटा है। होरी सोचता है कि अगर परिवार संगठित होता तो आज उसकी यह दशा नहीं होती। पारिवारिक संपत्ति का बंटवारा और उससे भाईयों के बीच आई कटुता भी ग्रामीण जीवन का यथार्थ है। बड़ा भाई होने के कारण होरी का अलग हुए अपने भाईयों के प्रति स्नेह बना रहता है। होरी अपने दोनों भाईयों-हीरा और शोभा को पाल-पोसकर बड़ा करता है। उनका विवाह करता है। बहुओं के लिए गहने बनवाता है। लेकिन वे अलग हो जाते हैं। होरी पछताता है, 'जिनके पीछे जवानी धूल में मिला दी वह मेरे मुद्दई हो गए' तीन हल एक साथ चलते, अब तीन अलग-अलग चलते हैं। होरी तो अपने परिवार की जिम्मेदारी को निभाता है, लेकिन उसका बेटा गोबर परिवार की जिम्मेदारी से मुकर जाता है। शहर से पहली बार घर लौटकर वह स्पष्ट शब्दों में कहता है, 'और तुम भी चाहती हो, और दादा भी चाहते हैं कि मैं सारा कर्जा चुकाऊँ, लगान दूँ, लड़कियों का ब्याह करूँ; जैसे मेरी जिंदगी तुम्हारा देना भरने के लिए है। मेरे भी तो बाल बच्चे हैं। तुम्हारी गृहस्थी का सारा बोझ मैं नहीं उठा सकता।' गोबर की इन बातों से परिवार के विघटन का स्वर ही ध्वनित होता है। बाप जिस परिवार के लिए मर मिटा, बेटा उसी परिवार से मुँह मोड़कर चला जाता है। लेखक दो पीढ़ियों के बीच अंतर को बताते हुए, नई पीढ़ी का गाँव छोड़कर शहर जाकर बसना भी परिवार विघटन का कारण मानते हैं।

▶ बाप जिस परिवार के लिए मर मिटा, बेटे ने उसी परिवार से मुँह मोड़ा

3.4.2.10 किसान से मज़दूर बनने की समस्या

प्रस्तुत उपन्यास होरी के किसान से मज़दूर बनने की ही व्यथा कथा है। किसान से मज़दूर बन जाना यह होरी के जीवन की सबसे बड़ी दर्दनाक मजबूरी है। अपनी खेती करने के लिए आवश्यक साधन और पैसे न होने के कारण होरी को विवश होकर मज़दूर बनना पड़ता है। मातादीन के यहाँ मज़दूरी करते समय उसे उसकी झिड़कियाँ सहनी पड़ती है। अन्याय सहना और परिस्थितियों से समझौता करना मानो उसकी नियति है। मज़दूर बनकर अत्यधिक काम करने से वह बेहोश भी हो जाता है। गोबर के बच्चे के लिए गाय खरीद ली जाए, इस उद्देश्य से होरी एक ठेकेदार के यहाँ पत्थर की खुदाई करने का काम करता है। काम करते समय उसे लू लग जाती है और वही उसके जीवन का अंत कर देती है। जीवन संघर्ष करते हुए बार-बार हारने पर भी वह हिम्मत नहीं हारता, बल्कि भाग्य से लड़ता रहता है। वह जीवनभर कड़ी मेहनत करता है, अनेक प्रकार के कष्ट उठाता है, अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए हमेशा प्रयत्न करता है, परंतु

▶ जीवन संघर्ष करते हुए बार-बार हारने पर भी वह हिम्मत नहीं हारता

उसे उसके परिश्रम का फल मिलने के बजाय असफलता का सामना करना पड़ता है। अंत में परिस्थितियाँ और नियति उसे किसान से मज़दूर बनने के लिए विवश करती हैं।

3.4.2.11 कर्ज़ की समस्या

'गोदान' उपन्यास में कर्ज़ की समस्या एक मुख्य समस्या है। इसी समस्या के चक्रव्यूह में फँसकर होरी का जीवन संघर्ष में ही बीत जाता है। यह समस्या केवल ग्रामीण किसानों की नहीं है, बल्कि शहर के अमीर तथा धनवान लोगों की भी रही है। 'गोदान' का होरी कर्ज़ के बोझ तले इतना दब जाता है कि जवानी में ही बुढ़ापा आ जाता है। बड़ी मुश्किल से कर्ज़ का भार सहते हुए होरी अपनी गृहस्थी चलाने का प्रयास करता है। परिवार की तलाशी से बचने के लिए उसे रिश्वत देनी पड़ती है। परंतु इस रिश्वत के पैसे देने के लिए भी उसे कर्ज़ लेना पड़ता है। इसी कर्ज़ के कारण एक दिन होरी को किसान से मज़दूर होना पड़ता है। कर्ज़ से छुटकारा पाने के लिए होरी को अपनी छोटी बेटी रूपा का विवाह अधिक उम्र वाले व्यक्ति से करना पड़ता है। होरी ने दातादीन से आलू बोने के लिए तीस रुपए का कर्ज़ लिया था। आठ-नौ साल में वह सौ रुपए हो जाता है। होरी ने झिंगुरीसिंह से चालीस रुपए का कर्ज़ लिया था, जो ब्याज सहित लगभग सौ रुपए हो जाता है। होरी ने मंगरूशाह से पाँच साल पहले साठ रुपए का कर्ज़ लिया था, इसके बदले में होरी सौ रुपए भी दे चुका था। फिर भी उस पर साठ रुपए का कर्ज़ बाकी था। इस तरह 'ग्रामीण किसान कर्ज़ में जन्म लेते हैं, कर्ज में पलते हैं और कर्ज़ में मरते हैं,' यह कहावत सत्य साबित होती है।

▶ 'गोदान' का होरी कर्ज के बोझ तले दबकर जवानी में ही बुढ़ापा झेलता है

अनमोल वचनः प्रेमचंद

संतान वह सबसे कठिन परीक्षा है जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए गढ़ी है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मुंशी प्रेमचंद ने एक शोषित समुदाय के लिए आवाज़ उठाई और उसे लेखन का विषय बनाया। उन्होंने सामाजिक मुद्दों पर लिखा, हमारी सामाजिक चेतना को जगाया।उनका मुख्य ध्यान ग्रामीण भारत और ज़मींदारों और सूदखोरों के हाथों किसानों के शोषण पर था। वे हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद लाये जो उस समय के साहित्य में एक क्रांतिकारी बदलाव था और इसे मनुष्य और समाज में आमूलचूल परिवर्तन का माध्यम बनाया। यह सुधारवादी उत्साह नहीं बल्कि अपने समय के समाज के दलितों या शोषितों के लिए गंभीर चिंता है जो प्रेमचंद को एक प्रसिद्ध लेखक बनाती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रेमचंद के युग की समस्याएँ समकालीन समाज में निरंतर बनी हुई हैं और यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि देश के विभिन्न हिस्सों में आत्महत्याओं की खबरें नियमित रूप से आती रही हैं। लेकिन हमें उस व्यवस्था से जागृत होने की ज़रुरत है जो लंबे समय से किसान समुदाय की परेशानियों पर ध्यान देने से इनकार कर रही है और हमें भारतीय किसानों से संबंधित सामयिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और उन्हें आत्मघाती मनोविकृति और पलायन से उबारना चाहिए।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'गोदान' उपन्यास में चित्रित ग्रामीण व शहरी कथाएँ समझाइए।
2. 'गोदान' के कथानक में कौतूहल एवं चमत्कार के बारे मेंटिप्पणी लिखिए
3. ग्राम्य एवं नागरिक जीवन कथाओं की एकसूत्रता के बारे में समझाइए।
4. उपन्यास में चित्रित समस्याओं पर चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष
4. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र - नन्द किशोर नवल
5. गोदान मूल्यांकन माला - सं राजेश्वर गुरु

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. उपन्यासकार प्रेमचंद डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
4. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
5. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 04

हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद

Block Content

Unit 1 : प्रेमचंद और आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

Unit 2 : प्रेमचंद और पत्रकारिता, पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान

Unit 3 : प्रेमचंद का वैचारिक गद्य (समाज, राजनीति,संस्कृति,साहित्य एवं भाषा संबंधी प्रेमचंद के विचार)

Unit 4 : प्रेमचंद की प्रासंगिकता

SGOU

इकाई 1

प्रेमचंद और आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद के साहित्य में आदर्श और यथार्थ के बारे में जान सकता है
- सर्वदा सत्य और यथार्थ के दृष्टा के रूप में प्रेमचंद का परिचय प्राप्त कर सकता है
- प्रेमचंद की आदर्शवादी दृष्टिकोण से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का मतलब है आदर्शवाद तथा यथार्थवाद का समन्वय करने वाली विचारधारा। ये बीसवीं शती के साहित्य की दो प्रमुख विचार धाराएँ थीं। आदर्शवाद में सत्य की अवहेलना करके आदर्शवाद का पालन किया जाता था। वहीं यथार्थवाद में आदर्श का पालन नहीं किया जाता था, या उसका ध्यान नहीं रखा जाता था। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद में यथार्थ का चित्रण करते हुए भी आदर्श की स्थापना पर बल दिया जाता था। इस प्रवृत्ति की ओर प्रथम महत्त्वपूर्ण प्रयास प्रेमचंद का है। उन्होंने कथा साहित्य को यथार्थ के धरातल पर रख कर उसे आदर्शोन्मुख बनाने की प्रेरणा दी और स्वतः अपने उपन्यासों और काहनियों में इस प्रवृत्ति को जीवन्त रूप में अंकित किया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, यथार्थवाद, आदर्शवाद, विचारधारा

Discussion / चर्चा

4.1.1 आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

▶ आदर्श और यथार्थ का संयोग

प्रेमचंद और आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद के विषय में समस्त हिन्दी संसार सहमत है कि प्रेमचंद न शुद्ध रूप से यथार्थवादी थे न आदर्शवादी; उन्होंने आदर्श और यथार्थ के संयोग से जिस विचारधारा का प्रवर्तन किया था, उसकी संज्ञा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख-यथार्थवादी होना स्वयं सिद्ध हो गया है। यही कारण है कि अनेक विद्वानों की सैकड़ों उक्तियाँ एवं स्वीकारोक्तियाँ तो प्राप्त होती हैं, किन्तु तर्क देने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। डॉ. राजेश्वर गुरु ने उन्हें आदशोन्मुख यथार्थवादी स्वीकार किया है क्योंकि यथार्थ को जीवन और समाजोपयोगी बनाने के लिए वे आदर्शों का संकेत करते चलते हैं तथा वे यथार्थवादी समस्याओं का आदर्शवादी हल प्रस्तुत करते हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ने भी इसी प्रकार का तर्क दिया है, जो तर्क से अधिक लक्षण ही है यहाँ पर आदर्शवाद को साहित्य में लाने के लिए प्रेमचंद यथार्थवाद की सहायता को जरूरी समझते हैं, लेकिन सिर्फ इसी हद तक कि पढ़ने वाला भुलावे में न आ जाए और यह न जानने पाये कि लेखक सरासर झूठ बोल रहा है। इसी आदर्शवाद और यथार्थवाद के सम्मिश्रण को यह आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद कहते हैं, जो हमें स्टैलिन के समय के कुछ रूसी साहित्यिक आन्दोलन की याद दिलाती है, जिनमें आदर्शवाद से साथ फिर समझौता किया गया है। लेखक मनुष्य की कमजोरियों का चित्रण करे; लेकिन हमेशा यह दिखाये कि उसने उन पर विजय पाई है।

▶ आदर्श को सजीव बनाने केलिए यथार्थ का उपयोग

वही उपन्यास उच्च कोटि के समझे जाते हैं, जहाँ यथार्थ और आदर्शवाद का समावेश हो। उसे आप आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कह सकते हैं। आदर्श को सजीव बनाने ही केलिए यथार्थ का उपयोग होना चाहिए और अच्छे उपन्यास की यही विशेषता है। अतः यदि वाह्य साक्ष्य तथा लेखक की अपनी बात को स्वीकार कर लिया जाए; कि आदर्श और यथार्थ का समावेश हो सकता है तथा उनकी संज्ञा 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' सम्भव है तो लेखक की कृतियों के आधार पर भी प्रेमचंद को 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी' लेखक के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

4.1.1.1 प्रेमचंद के साहित्य में आदर्श और यथार्थ

▶ यथार्थ को आधार बनाकर आदर्श की बात की

प्रेमचंद अपने यथार्थवादी चित्रण और आदर्शवादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। उनकी रचनाओं में यथार्थ और आदर्श का ऐसा समन्वय है जो उन्हें अन्य लेखकों से अलग करता है। प्रेमचंद ने यथार्थ और आदर्श को एक साथ पिरोकर अपनी रचनाओं को अमर बना दिया। उन्होंने यथार्थ को आधार बनाकर आदर्श की बात की। उनकी रचनाओं में यथार्थवादी चित्रण होते हुए भी पाठक को एक सकारात्मक संदेश मिलता है।

प्रेमचंद के लिये यथार्थ ही कर्मक्षेत्र है क्योंकि वह यथार्थ जीवन को कर्म का

क्षेत्र मानते थे, जिस क्षेत्र में उन्होंने गरीबी देखी थी। किसानों की पीड़ा, साहूकार के लालचीपन से कई बेईमान ज़मींदारों को किसान मज़दूरों पर अत्याचार करते देखा था जो उन्हें यथार्थ लगता था। आदर्श के उनके अपने चित्र थे जैसे - परिवार के चित्र, गरीबों के सुखी जीवन के चित्र, जाति के सांस्कृतिक आदर्श के चित्र और देश की स्वतन्त्रता के चित्र आदि।

▶ प्रेमचंद के लिये यथार्थ ही कर्मक्षेत्र है

4.1.2 प्रेमचंद का विराट साहित्य क्षेत्र

यह भी माना जाता है कि प्रेमचंद ने जन-जीवन की समस्याओं का गहन अध्ययन किया था। ऐसा इसलिये कहा गया है कि उनके चित्रण का चित्रपट बहुत विशाल था, समस्त मानव जीवन और उसके व्यवहारों को समेट लेने की भूख उनमें थीं। यह बात हमें उनकी कहानियों और उपन्यासों के समग्र कलेवर को पढ़ने से मालूम होती है और वह सभी को आदर्शनिष्ट बनाना चाहते थे। शायद हर समाज-सुधारक, समाज के प्रति यही दृष्टिकोण रखता है, राजनीतिज्ञ की भी यही सोच होती है और कवि-साहित्यकार तो अपनी रचनाओं में आदर्श के पंखों पर बेरोक-टोक उड़ता है। कभी वह समाज के यथार्थ और मानव जीवन के आचार-व्यवहार पर व्यंग्य करके जन-जीवन को चैतन्यपूर्ण बनाना करता है, तो कभी दुख प्रकट करता है, तो कभी कुछ अच्छा करने को प्रोत्साहित करता है। इसी प्रकार के धार्मिकता का बोध कराने वाले महात्मा, साधु-सन्त है। हम चाहे किसी भी क्षेत्र में चलें, आदर्श स्थापित करने वालों की सोच अपनी -अपनी होती है, परन्तु उनकी सोच वास्तविक यथार्थ के पहाड़ों में फैली अनजानी या अनदेखी घाटियों को अपनी ही मानसिक उड़ान से पार करने की कोशिश करती है।

▶ प्रेमचंद ने जन-जीवन की समस्याओं का गहन अध्ययन किया

समाज में जो कुछ लेखक के सामने घटित होता है, उसको वह बुनियादबनाते हैं, परन्तु वह बुनियाद मानवजीवन के वास्तविक व्यवहार को पूरी तरह बदल दे यह सम्भव नहीं दिखाई देता। अतः किसी भी आदर्शवादी या यथार्थवादी की मानसिकता हमें सर्वांग नैतिकता के खरे दृश्य दिखाकर मानव जीवन को उसका अनुसरण करा सके,यह सम्भव नहीं है, क्योंकि मनुष्य परिस्थितियों की जटिलता पर अपनी व्यक्तिगत मनोमयता से विवश होकर जो प्रतिक्रिया करता है और उसके बीच में अपना कौन-सा रास्ता अपनाता है, इसको जान पाने का कोई स्वयंसिद्ध सूत्र किसी के पास नहीं है। इसी कारण जितना विराट मानव-जीवन है, उतना ही विशाल उसके व्यवहार की घटनाएँ और चित्रों का भण्डार है, जो अपनी वृद्धि और फैलाव में न तो कहीं रुकता है और न ही कहीं कम होता है। हाँ, यह तो प्रायः देखा जाता है कि अनेक महात्मा, सन्त, उपदेशक, साहित्यकार, नेता, सुधारक आदि के वचनों से प्रभावित होकर अपने क्रिया-कलाप को बदल लेते हैं, परन्तु वह भी अपने वैचारिक रंगों से उसमें अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की छाप लगा लेते हैं, यही कारण है कि एक गुरु के सभी शिष्य एक जैसे उपदेश और मार्गदर्शन पाकर भी समान भूमि पर नहीं चलते।

▶ जितना विराट मानव-जीवन है, उतना ही विशाल कहानियाँ और चित्रों का भण्डार हैं

SGOU

4.1.3 सर्वदा सत्य और यथार्थ के दृष्टा

प्रेमचंद ने जिस यथार्थ को देखा था, क्या वही यथार्थ आज भी विद्यमान नहीं है? आज भी समाज में क्या वेश्यायें नहीं है? क्या उनकी समस्यायें नहीं हैं? परन्तु उन सभी नारियों को वेश्या बन जाने के स्रोत वही तो नहीं जो संस्कारयुक्त सुमन (सेवासदन) के थे। भोली भी एक वेश्या थी, उसके लिये प्रेमचंद का आदर्शवाद कौन-सा रास्ता बनाता है, यह प्रेमचंद स्वयं ही प्रकट नहीं कर सकते हैं। अपनी विमाता के यथार्थ चरित्र में सौतेली माता के स्वभाव को उन्होंने देखा था, परन्तु सौतेली माताओं के स्वभाव को अपने आदर्श की कल्पना से तो वह बदला हुआ देख सकते हैं।

▶ प्रेमचंद ने जिस यथार्थ को देखा था, वही यथार्थ आज भी विद्यमान है

4.1.4 प्रेमचंद की आदर्शवादी प्रेरणा

प्रेमचंद का आदर्शवाद हमें सात्विक प्रवृत्तियों की ओर चलने को प्रेरित करता है, परन्तु परिवार और समाज में ऐसे चरित्र होते हैं जो हमें उनके आदर्शवाद को ग्रहण कर लेने के मार्ग पर चलने से रोक देते हैं या हमारी हत्या तक करने को तत्पर रहते हैं, ऐसे अवरोधों से छुटकारा दिलाने का मार्ग तो कोई भी आदर्शवादी नहीं दिखा सकता। अतः जो भी वह दिखाता है, निश्चय ही एकांगी होता है। मानव-चरित्र ही सात्विक, राजस और तामस प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण है, उसी के कर्म का विधान चलता है। प्रेमचंद ने पहली पत्नी को अस्वीकार किया था, बाद में शिवरानीजी ने उससे पत्र-व्यवहार भी किया था, और उसे अपने पास बुलाने का निमन्त्रण भी दिया था, परन्तु पहली पत्नी का आग्रह था कि यदि स्वयं प्रेमचंदजी उसे लिवा ले जाएँ तो वह आ जायेगी, किन्तु प्रेमचंद उसे लिवा लाने को तैयार नहीं हुए। हम उनके इस आचरण में उन्हें दोषी मान सकते हैं और नहीं भी मान सकते हैं किसी आदर्शवादी के लिए कर्तव्य-दृष्टि से देखें तो कहेंगे प्रेमचंद को उन्हें लिवा लाना चाहिए था, परन्तु एक यथार्थवादी व्यवहार-दृष्टि से देखें तो हम उन्हें दोषी नहीं ठहरा देते। वस्तुतः उनके आ जाने से (उनके स्वभाव के कारण जिसे उन्होंने देखा और भोगा था) उनकी गृहस्थी कौन-सा रूप ले लेती इसका अनुमान उन्होंने किया होगा। इसी कारण वह उन्हें लिवाने नहीं गये, परन्तु यदि वे स्वयं आ जाये तो उसे भी अपनी गृहस्थी में सम्मिलित कर लेने का मार्ग बन्द नहीं किया था। अब इस बात को उनके आदर्श ओर यथार्थ की सीमाओं में हम जैसे चाहें आबद्ध करें, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार एक आदर्श पत्नी-प्रेमिका का चरित्र अपने स्त्री-पात्रों को दिखा दिया, उस भारतीय नारी के चरित्र की प्रतिष्ठा की है जो सती-सावित्री या अनुसुइया का था। वह उसे त्यागी और पतिभक्त या, उसके सदा अनुकूल रहने वाली के रूप में देखना सुखद समझते थे। यहाँ आकर वह अपनी सत्पथ से गिरी हुई पत्नियों को सही राह पर लाना नहीं भूलते। 'सेवासदन' के 'सुमन' का चरित्र इसका उदाहरण है। पद्मसिंह की पत्नी, आदि का भी चरित्र ऐसी है।

▶ भारतीय नारी के चरित्र की प्रतिष्ठा का चित्रण

प्रायः वेश्याचरित-सम्बन्धी यह एक यथार्थ है कि अपने चंगुल में आई हुई किसी नई लड़की को वेश्या व्यापार में संलग्न वेश्यायें आसानी के छुटकारा नहीं पाने देतीं, यहाँ

▶ यथार्थ और आदर्श के बीच पात्रों के चारित्रिक आरोह-अवरोह में असंगतियाँ हैं

भोली का न तो उपरोक्त वेश्या व्यवहार ही दिखाया गया है और न उसको एक उदार वेश्या के रूप में ही चित्रित किया गया है। वास्तव में कथानक की गति में इस यथार्थ को नजरन्दाज करना अखरता है। इसी प्रकार के यथार्थ और आदर्श के बीच पात्रों के चारित्रिक आरोह-अवरोह में असंगतियाँ और भी है। वास्तविक बात यह है कि प्रेमचंद आदर्शवाद से इतने आप्लावित हैं कि सहज यथार्थ से उसका सहसा आच्छादन करते दिखाई देते हैं। सदन, पद्मसिंह, गजाधर, कृष्णचन्द्र आदि कोई भी चरित्र उनकी इस निर्बलता से अछूता नहीं है। अन्य औपन्यासिक कृतियों में भी उनकी दुर्बलता सामने आती है। उनकी यह कमजोरी एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रास्ते पर बढ़कर आदर्श चरित्र प्राप्त करने से उनके पात्रों को रोक देती है। इसी कारण उनका आदर्शवाद उतना प्रभावी नहीं हो पाता, जितना प्रभावी वे उसे बना सकते थे।

4.1.2 प्रेमचंद की दृष्टि में श्रेष्ठ उपन्यास

▶ आदर्शवाद और यथार्थवाद का सन्तुलित समन्वय

एक स्थान पर स्वयं प्रेमचंद ने लिखा है कि उपन्यास वही श्रेष्ठ समझे जाते हैं जिनमें आदर्श और यथार्थ का समन्वय हो। इस बात से ऐसा तो ज्ञात होता है कि वह आदर्शवाद और यथार्थवाद के समन्वय की उपादेयता नहीं मानते थे, परन्तु उनके उपन्यासों का सूक्ष्म अध्ययन यह प्रमाणित करता नहीं दिखाई देता कि वह आदर्शवाद और यथार्थवाद का सन्तुलित समन्वय करने में सफल रहे हैं। सम्भवतः इसीलिये सुरेश सिन्हा ने लिखा है- उन्होंने अपनी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि से अपने युग की सभी समस्याओं और उनके विविध पक्षों को अच्छी तरह समझा था, किन्तु उन्होंने अपने युग और समाज को यथार्थवादी दृष्टि से नहीं देखा था। उनमें तटस्थता का पूर्ण अभाव है। उन्होंने समाज की विशेषताओं को भी देखा था और उसकी विकृतियों को भी उनमें उस संकुचित दृष्टि एवं निःसंगता का अभाव मिलता है जो यथार्थवादी उपन्यासकार के लिए आवश्यक होती है, जो 'तुर्गनिक' के उपन्यासों में, 'शोलोतीव' के 'दीन' उपन्यास में या गोर्की के 'आर्टमनोव', 'फोमा गार्टमेन' आदि उपन्यासों में परिलक्षित होती है। प्रेमचंद के उपन्यासों में यह बात साफ तौर पर दिखाई देती है कि उन्होंने अपने आदर्श को स्थापित करने केलिए यथार्थ का उपयोग सप्रयास किया है। इसी कारण उनके कथानकों में प्रधान कथावस्तु के साथ अनेक उपकथायें इस ढंग से चलती हैं जिनका मूल कथा से केवल सांसर्गिक सम्बन्ध है, विषयवस्तु की दृष्टि से वे आवश्यक भी प्रतीत होती है। जिस प्रकार उन्होंने सत् - असत् की व्याख्या की है, वह उनके यथार्थवाद को फीका कर देती है।

4.1.3 प्रेमचंद का आदर्शवादी यथार्थ

प्रेमचंद द्वारा आदर्शवाद को उभारने के लिये यथार्थ जीवन से पात्रों को चुनने के बावजूद संयोग तत्वों से उन्हें जोड़ देने के कारण कथा-विन्यास में उनका प्रयोग यान्त्रिक हो जाता है। 'सेवासदन' में गजाधर द्वारा सुमन को घर से निकाल देना, उसे फिर पद्मसिंह द्वारा भी निकलवा देना, निश्चित रूप से उसे भोली के आश्रय में भेजकर

वेश्या बना देने केलिए है। 'निर्मला' में उदयभानुलाल का घर से झगड़ा कर निकलना, लगता है जैसे उन्हें मृत्यु का ग्रास बना देने को ही है, ताकि निर्मला का अनमेल विवाह हो। 'रंगभूमि' में सोफिया का माँ से झगड़ा कर निकल जाना उसे राजा भरतसिंह के यहाँ पहुँचाने के लिये ही किया गया प्रतीत होता है। 'गबन' में रमानाथ को भी संयोगों में बाँधकर गबन करने की स्थिति में लाया गया है। 'वरदान' में कमलाचरण का ट्रेन से कूदकर मरना, 'प्रतिज्ञा' में बसन्त कुमार का गंगा में डूबकर मरना, 'सेवासदन में आजीवन ईमानदार रहे एक थानेदार को, जिसका चरित्र उज्ज्वल था, और जो अपनी विवाह योग्य होती हुई पुत्रियों के दहेज की चिन्ता करते हुए तथा अपनी पदानुकूल सामाजिक प्रतिष्ठा की चिन्ता करते हुए, अपनी बेटी के दहेज के लिए रिश्वत लेकर जेल जाना, सुमन को वेश्यालय की ओर धकेलने का प्रबन्ध करने के लिए ही तो होता है। इन बातों से लगता है कि उन्होंने सामाजिक जीवन के उन कठिन यथार्थों को उतनी गहराई से नहीं समझा था, जिनका सामना करके मनुष्य परिस्थितियों के चक्र से कुछ न कुछ हो जाता है। 'प्रेमाश्रम' में गायत्री, मनोहर और ज्ञानशंकर की आत्महत्याएँ, 'रंगभूमि' में सूरदास की मृत्यु, विनय और सोफिया की आत्महत्या, 'गबन' में जोहरा की मृत्यु पात्रों की गति को न सँभाल पाने के कारण ही हुई है।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

गलती करना उतना गलत नहीं, जितना उसे दोहराना।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदर्शवाद, कल्पना का अवलम्ब ग्रहण करता है, आस्थावान एवं आशावादी है; यथार्थवादी कल्पनामुक्त, आस्थाहीन एवं निराशावादी है। प्रथम जीवन के उज्ज्वल पक्ष को देखता है तथा द्वितीय के नयनों के सम्मुख सच्चाई का अंश ही उभरता है। इनकी शैलियों तथा शब्दावली में भी अन्तर है: आदर्शवादी लेखक भावुकता पूर्ण कोमल शब्दावली का व्यवहार पसन्द करते है तथा यथार्थवादी साहित्यकार तटस्त कठोर, कभी-कभी ग्राम्य अथवा अश्लील भाषा का भी प्रयोग कर बैठते हैं। यह तो प्रतीत होता है कि प्रेमचंद आदर्श और यथार्थ का समुचित संतुलन अपनी औपन्यासिक कथाओं में नहीं रख सके हैं, परन्तु हम यदि उन्हें एक उपन्यासकार के रूप में यह छूट दे दें कि वह अपनी मनोमय कल्पना को संयोगों द्वारा मूर्त रूप दे सकता है तो उनका यथार्थ आदर्शोन्मुख हो जाता है। अतः वह जो स्थापित करने का मार्ग-निर्देश करते हैं या वर्तमान यथार्थ को अपने आदर्श के अनुकूल यथार्थ रूप में देखना चाहते हैं तो हम उन्हें यह दोष नहीं दे सकते कि वह यथार्थ और आदर्श नहीं रख सके हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद के साहित्य में आदर्श और यथार्थ के बारे में टिप्पणी लिखिए।
2. प्रेमचंद का विराट साहित्य क्षेत्र में आदर्श और यथार्थ का समन्वय है। सिद्ध कीजिए।
3. सर्वदा सत्य और यथार्थ के दृष्टा के रूप में प्रेमचंद को समझाइए।
4. प्रेमचंद की आदर्शवादी प्रेरणा पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत राय
3. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
4. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
5. प्रेमचंद एक विवेचन-रामविलास शर्मा
6. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
7. प्रेमचंद और भारतीय किसान- प्रो.रामवक्ष

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कुछ विचार - प्रेमचंद।
2. प्रेमचंद की साहित्य साधना - रांगेय राघव।
3. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल।
4. प्रेमचंद नयी दृष्टि : नए निष्कर्ष - कमल किशोर गोयनका।
5. कहानीकार प्रेमचंद रचनादृष्टि और रचनाशिल्प -शिवकुमार मिश्र

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

प्रेमचंद और पत्रकारिता, पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- पत्रकार के रूप में प्रेमचंद के आगमन के बारे में समझता है
- प्रेमचंद के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- साहित्य में 'हंस' की भूमिका जानता है
- स्वतंत्रता संग्राम में 'हंस' का योगदान समझता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी पत्रकारिता का सूर्य 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई 1826 कलकत्ता में उदित हुआ। पं. युगलकिशोर मुकुल उसके जन्मदाता थे। 11 सितम्बर 1828 ई. को 'उदन्त मार्तण्ड' अस्त हो गया, किन्तु अस्त होने के बावजूद उसने अपनी प्रखरता में हिन्दी-जगत को जागृत किया। देश की जनता को अभिव्यक्ति की दिशा मिली, वाणी मिली, भाषा मिली, विचार मिले, ज्ञान का द्वार उन्मुक्त हुआ।इसके बाद कई पत्र -पत्रिकाएँ अवतरित हुए।

बीसवीं शताब्दी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा शुरु की गई 'सरस्वती' से आरम्भ होती है। 1903 ई. में पत्रकारिता-जगत के भीष्म पितामह महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य को सारस्वत स्वरूप प्रदान किया। द्विवेदीजी के कार्यकाल में भाषा को संस्कार मिला, विषय मिला, विविध ज्ञान-विज्ञान की जानकारी हुई। खड़ी बोली हिन्दी का विकास हुआ। कितने लेखकों, कवियों का जन्म हुआ, प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, निराला सभी ने 'सरस्वती' में प्रवेश पाया। साहित्यिक पत्रिकाओं की बाढ़ आ गई। देश के कोने-कोने से पत्रिकाएँ निकलने लगीं।

प्रेमचंद सिर्फ सर्जनात्मक लेखक ही नहीं थे, वे विचारात्मक लेखक भी थे। उनके लेखन का आरंभ वैचारिक गद्य से होता है। वे उर्दू में दयानारायण निगम के पत्र 'ज़माना' में लगातार लेख लिखते थे। हिन्दी में आने के बाद भी उनका यह क्रम जारी रहा। वह पत्र-पत्रिकाओं का दौर था। प्रेमचंद साहित्यिक पत्रकारिता से जुड़े हुए थे। इसलिए उन्होंने उस युग की पत्रिकाओं का संपादन भी किया। 1918 में जब संपूर्णानंद जेल चले गए थे तब प्रेमचंद ने 'मर्यादा' का सम्पादन किया। बाद में 'माधुरी' का संपादन किया। उनसे पहले दुलारे लाल भार्गव 'माधुरी' के संपादक थे। सन् 1930 में प्रेमचंद ने अपना पत्र प्रारंभ किया- 'हंस'। उन्होंने 'जागरण' साप्ताहिक का भी संपादन किया है। 'जागरण' तो बंद हो गया परन्तु 'हंस' उनकी मृत्यु के बाद भी कई वर्षों तक प्रकाशित होता रहा। प्रेमचंद का नाम हिन्दी में जयशंकर प्रसाद और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के साथ लिया जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

'माधुरी', 'मर्यादा', 'हंस', 'जागरण', साप्ताहिक पत्र, विशेषांक

Discussion / चर्चा

4.2.1 पत्रकार के रूप में प्रेमचंद का आगमन

▶ पत्रकारिता के क्षेत्र में नवीन मानदंड की स्थापना की

उपन्यास सम्राट और हिन्दी कथा साहित्य के महान प्रणेता प्रेमचंद ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी नवीन मानदंड की स्थापना की है, इस बात की ओर कम लोगों का ध्यान गया है। यों तो प्रेमचंद का सम्पूर्ण साहित्य ही राष्ट्रीय भावनाओं से ओत- प्रोत है, किन्तु भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को अग्रसर करने तथा राष्ट्रीय जागरण के निमित्त आपने 'हंस' और 'जागरण' के माध्यम से जो शंखनाद किया, उसका ऐतिहासिक महत्व है।

▶ पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी साहित्य जगत को प्रगतिशील दृष्टि प्रदान की

प्रेमचंद पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी साहित्य जगत को प्रगतिशील दृष्टि प्रदान की। प्रेमचंद ने पत्रकारिता को एक मिशन के रूप में लिया, फैशन या व्यवसाय के रूप में नहीं। प्रेमचंद ने काशी में 'सरस्वती' प्रेस की स्थापना की। उसी प्रेस से 'हंस' का मुद्रण, प्रकाशन होता था। भारतेन्दु ने हिन्दी खड़ी बोली को परिष्कृत किया। खड़ी बोली के विकास में 'हंस' ने अपनी कहानियों एकांकियों तथा कविताओं के माध्यम से नया स्वरूप दिया। 'हंस' मासिक पत्रिका थी, जिसने हिन्दी पत्रकारिता को नयी दिशा दी।

▶ परिवेश और परिस्थिति का आवश्यकतानुसार समावेश

एक पत्रकार के लिए जिन अपेक्षाओं को मूर्तरूप देना आवश्यक होता है, प्रेमचंद वैसे ही पत्रकार थे, उनकी हंसवाणियों में आह्वान, आलोचना, सुझाव, विरोध, समर्थन आदि का समावेश ,परिवेश और परिस्थिति की आवश्यकतानुसार होता था। बहुजन हिताय में जो कर्म होता, वे उसके प्रशंसक बन जाते, परंतु इसके विपरीत वाली कार्यपद्धति की आलोचना करने से पीछे नहीं हटते थे। वह गाँधी के भक्त थे, परंतु अंधभक्त नहीं थे।

4.2.2 प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

▶ उर्दू भाषा के पत्र 'ज़माना' में प्रथम कहानी 'सबसे अनमोल रतन' प्रकाशित हुई

प्रेमचंद ने 'माधुरी', 'मर्यादा', 'हंस' तथा 'जागरण' का सम्पादन किया और मासिक तथा साप्ताहिक पत्रकारिता के क्षेत्र में नए प्रयोग कर नया मूल्य स्थिर किए। कानपुर से प्रकाशित होने वाले उर्दू भाषा के पत्र 'ज़माना' से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध था। आपकी प्रथम कहानी 'सबसे अनमोल रतन' इसी पत्र में प्रकाशित हुई। इस मासिक पत्र के 'रफ्तारे ज़माना' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रेमचंद विश्व की सामयिक घटनाओं पर नियमित रूप से लिखा करते थे।

'स्वदेश', 'आज' आदि पत्रों से भी वे सम्बद्ध रहे। असहयोग आन्दोलन के ज़माने में स्तम्भकार के रूप में उनकी बहुत ख्याति थी। प्रेमचंद स्वयं सक्रिय राजनीति के क्षेत्र में

SGOU

▶ साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ़ उन्होंने खुलकर बिगुल बजाया

कभी नहीं उतरे, लेकिन पत्रकारिता के माध्यम से स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी महती भूमिका निभाते रहे। साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ़ उन्होंने खुलकर बिगुल बजाया। स्वराज प्राप्त करने के लिए हमेशा योगदान करते रहे। विभिन्न शीर्षक से उन्होंने देश की आजादी के लिए टिप्पणियाँ लिखी।

▶ लखनऊ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'माधुरी' के आप प्रधान सम्पादक थे

लखनऊ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'माधुरी' के आप प्रधान सम्पादक थे, जिसमें हिन्दी संसार के सभी जाने - माने साहित्यकारों का योगदान रहता था। सन् 30 में आपने 'हंस' के प्रकाशन की योजना बनाई और जीवन के अन्त तक इसका प्रकाशन और सम्पादन सरकारी कोष, आर्थिक कठिनाइयों आदि का सामना करते हुए किया, जिसका इतिहास अत्यन्त प्रेरणाप्रद है।

4.2.2.1 'हंस' की भूमिका

'हंस' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ करके उन्होंने देशवासियों को देश-दशा से आगाह कराना चाहा था। प्रेमचंद की सोच और उनका साहित्य मजहबी, कर्मकांडी, जाति, प्रजाति, कुलीन, अकुलीन, अभिजात्य और अस्पृश्यता की संकीर्णता पर आधारित नहीं है। वे यथास्थितिवाद, जातिगत घृणा, गरीबी के संताप-संत्रास के साथ-साथ नैतिकता और जीवन-मूल्यों के अवमूल्यन पर वज्र के समान बरसे थे। मुंशी प्रेमचंद ने 'हंस' पत्रिका की आवश्यकता बताते हुए अपने प्रथम सम्पादकीय में लिखा है- "मुसलमान किसी प्रश्न पर राष्ट्र की आँखों से नहीं देखता। वह उसे मुस्लिम आँखों से देखता है। वह अगर कोई प्रश्न पूछता है, तो मुस्लिम दृष्टि से, किसी बात का विरोध करता है, तो मुस्लिम दृष्टि से। लाखों मुसलमान बाढ़ और सूखे के कारण तबाह हो रहे हैं। उनकी तरफ़ किसी मुस्लिम सदस्य की निगाह नहीं जाती। आज तक कोई ऐसा मुसलमान संगठन नहीं हुआ, जो मुस्लिम जनता की सांसारिक दशा को सुधारने का प्रयत्न करता हो। हाँ, उनकी मजहबी मनोवृत्ति से फायदा उठाने वालों की कमी नहीं है। महात्मा गाँधी खद्दर का प्रचार दिलोजान से कर रहे हैं, इससे मुसलमान जुलाहों का फायदा अगर हिन्दू कोरियों से ज्यादा नहीं, तो कम भी नहीं है। लेकिन जहाँ इस सूबे के छोटे से शहर ने महात्माजी को थैलियाँ भेंट की, अलीगढ़ ने सिर्फ एड्स देना ही काफी समझा। यह मुस्लिम मनोवृत्ति है।"

▶ सांसारिक दशा को सुधारने का प्रयत्न

▶ देश की स्वतन्त्रता इस पत्र का मुख्य लक्ष्य था

देश की स्वतन्त्रता इस पत्र का मुख्य लक्ष्य था। प्रेमचंद जी ने अपने समकालीन प्रमुख लेखकों के भारतीय स्वाधीनता और साहित्य से सम्बन्धित लेखों को प्रकाशित किया। इसका प्रथम अंक इतना सजधज कर प्रकाशित किया गया कि स्वयं आधुनिक कहानियों की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'हंस' चर्चित हो गया। इसके प्रथम अंक में प्रेमचंद की 'मधुआ', राजेश्वरप्रसाद सिंह की 'परख और हार' अक्टूबर-नवम्बर 1933 ई. अंक में प्रसादजी की सुप्रसिद्ध कहानी 'गुंज' जैसी कहानियाँ प्रकाशित हुई। केदारनाथ मिश्र का 'दैनिक जीवन में कविता की आवश्यकता' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ। प्रेमचंद की 'जुलूस' और 'परमेश्वर' कहानियाँ भी प्रकाशित हुई। इसी अंक में

'पुस्तक और प्रकाशक' के सम्बन्धों पर भी लेख प्रकाशित किये गये।

▶ 'हंस' के जातीय स्वर की प्रखरता के कारण कई बार सरकार को जमानत भी देनी पड़ी

'हंस' के जातीय स्वर की प्रखरता के कारण कई बार सरकार को जमानत भी देनी पड़ी। अक्टूबर 1935 ई. में श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने 'हंस' के लिए एक लिमिटेड कम्पनी गठित की और उसका मुद्रण-प्रकाशन उसके पत्र को सुपुर्द कर दिया गया। कम्पनी की ओर से उसके नये स्वरूप की घोषणा की गई- 'हंस' अब एक लिमिटेड कम्पनी द्वारा प्रतिबन्धित रूप में निकलेगा, जो इस उद्देश्य से बनायी गयी है। उसमें प्रतिमास सौ पृष्ठ होंगे और उसका वार्षिक मूल्य 5 रुपया होगा। प्रान्तीय विद्वानों और सुलेखकों से लेख प्राप्त करना, उन्हें हिन्दी रूप में लाना, साहित्य के प्रत्येक अंग की पूर्ति करना, मेहनत का काम भी है और खर्च का भी।

▶ 'हंस' का आत्मकथांक बहुत चर्चित रहा

'हंस' का हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य केलिए सबसे बड़ा योगदान उसके विशेषांक हैं। प्रेमचंद के सम्पादन में आत्मकथांक विशेषांक (1931 ई.), काशी अंक (1933 ई.), द्विवेदी अभिनन्दन अंक प्रकाशित हुए। 'हंस' का आत्मकथांक बहुत चर्चित रहा। 170 पृष्ठों के दो तिरंगे तथा बीस एकरंगे चित्र के साथ यह अंक प्रकाशित हुआ। प्रवासीलाल वर्मा सहायक सम्पादक थे। जयशंकर प्रसादजी से इसके लिए लेख माँगा गया, उन्होंने अनेक तकाजों और आग्रह के उपरान्त कविता भेजी।

▶ 'हंस' का दूसरा विशेषांक 'काशी अंक' था

आत्मकथांक के अन्य प्रमुख लेखक थे- रायकृष्णदास, कौशिक, सुदर्शन, विनोदशंकर व्यास, जैनेन्द्र, प्रेमचंद, बदरीनाथ भट्ट, अन्नपूर्णानंद, रामचन्द्र शुक्ल, केदारनाथ पाठक, गोपालराम गहमरी, श्रीराम शर्मा, रामनारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय, लक्ष्मीधर बाजपेयी, धीरेन्द्र वर्मा, ज्वालादत्त शर्मा। 'हंस' का दूसरा विशेषांक 'काशी अंक' था जो अक्टूबर-नवम्बर 1933 ई. में प्रकाशित हुआ। इसमें काशी पर अनेक शोधपूर्ण लेख थे। इस विशेषांक में काशी के विविध स्वरूप को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है- काशी के दार्शनिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, व्यावसायिक स्वरूप के साथ-साथ नूतन परम्पराओं की ओर अग्रसर काशी पर भी महत्वपूर्ण सामग्री दी गई है।

▶ 'भारतीय साहित्य परिषद' का गठन किया

बाद में प्रेमचंद स्मृति अंक (1936 ई. सम्पादक पराड़कर), भारतेन्दु अंक, एकांकी नाटक अंक, रेखाचित्र अंक, कहानी अंक, प्रगति अंक, शान्ति अंक हिन्दी साहित्य की दुर्लभ विरासत हैं। 'हंस' में प्रसाद, भुवनेश्वर प्रसाद, नन्ददुलारे वाजपेयी, निरालाजी, सुभद्राकुमारी चौहान, अज्ञेय, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', अमृतलाल नागर, रामचन्द्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा, वासुदेवशरण अग्रवाल प्रभृति बड़े रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित हुईं। सन् '30-32 के बीच 'हंस' छः-छः महीने तक कई बार बन्द भी हुआ। प्रेमचंद जी ने पत्रिका को सुचारु रूप से चलाने तथा उसे राष्ट्रीय स्वरूप देने के लिए 'भारतीय साहित्य परिषद' का गठन कर उसे परिषद को सौंप दिया। पत्रिका पर कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और प्रेमचंदजी का नाम छपता था।

SGOU

▶ 'मुक्त- मंजूषा के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर अत्यन्त रोचक टिप्पणियाँ प्रकाशित की गयीं

'हंस' ने एकांकी नाटक, अनूदित एकांकी, अनूदित कविताएँ, अनूदित कहानियाँ, के. एम. मुंशी के 'लोपामुद्रा' उपन्यास, कृष्णदास के 'शैवालिनी' उपन्यास का धारावाहिक प्रकाशन किया था। इसके अतिरिक्त गद्य गीत, लघु कहानियाँ, निबन्ध, अनूदित निबन्ध, 'नीर-क्षीर' शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तकों की समीक्षाएँ प्रकाशित की गयी थीं। 'मुक्त - मंजूषा के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर अत्यन्त रोचक टिप्पणियाँ प्रकाशित की गयी थीं। 'हंसवाणी' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न विचारणीय विषयों पर पर्याप्त लेख प्रकाशित हुए।

▶ 'हंस'- प्रगतिशील लेखक संघ का मुख्य पत्र

1930-36 ई. तक प्रेमचंद ने 'हंस' का सम्पादन किया, उनके निधन के पश्चात शिवरानी देवी (1936 ई.), जैनेन्द्र कुमार (1937 ई.), के.एम. मुंशी शिवदान सिंह चौहान (1942 ई.), श्रीपतराय (1938 ई.), प्रवासीलाल व अमृतराय (1943 ई.)। पत्रिका के परामर्श दाताओं में थे- महात्मा गाँधी, राजर्षि टण्डन, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, काका कालेलकर, सज्जाद जहीर आदि। प्रेमचंद के निधन के बाद शिवदान सिंह ने 'हंस' का सम्पादन ग्रहण किया। उनकी कम्युनिस्ट विचारधारा थी। 'हंस' को उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ का मुख्य पत्र बना दिया। 'हंस' के माध्यम से उन्होंने प्रगतिशील साहित्य का नेतृत्व किया।

4.2.2.2 स्वतंत्रता - संग्राम और 'हंस'

▶ 'हंस' का प्रकाशन स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में चिरस्मरणीय

'हंस' का प्रकाशन जिन उच्च राष्ट्रीय आदर्शों तथा सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा तथा प्रतिपादन के लिए किया गया, वह देश के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। इसके प्रकाशन की आवश्यकता तथा नीति पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचंद जी ने लिखा- 'हंस के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि उसका जन्म ऐसे शुभ अवसर पर हुआ है कि जब भारत में एक नए युग का आगमन हो रहा है, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से निकलने के लिए तड़पने लगा है।..... इस संग्राम में एक दिन हम विजयी होंगे। वह दिन देर में आएगा या जल्द, यह हमारे पराक्रम, बुद्धि और साहस पर मुनहसर है। हां, हमारा यह धर्म है कि उस दिन को जल्द से जल्द लाने के लिए तपस्या करते रहें। यही 'हंस' का ध्येय होगा और इसी ध्येय के अनुकूल उसकी नीति होगी। भारत ने शान्तिमय समर की मेरी बजा दी है। 'हंस' मानसरोवर की शान्ति छोड़कर, अपनी नन्हीं सी चोंच में चुटकी भर मिट्टी लिए हुए आज़ादी के जंग में योग देने चला है। यह तो हुई उसकी राजनीति। साहित्य और समाज में वह उन गुणों का परिचय देगा, जो परम्परा ने उसे प्रदान किए हैं।

▶ देश में राष्ट्रीय जागरण करना

'हंस' के प्रथम अंक का यह सम्पादकीय उन उद्देश्यों और रीति- नीतियों पर सम्यक् प्रकाश डालता है, जिनके लिए उसका प्रकाशन किया गया। प्रथमांक में सम्पादकीय नीति स्पष्ट करते हुए प्रेमचंद ने 'युवकों का कर्तव्य' शीर्षक जो टिप्पणी लिखी है, वह उनकी भावनाओं की परिचायक है और इस बात की सूचक भी कि वह किस प्रकार देश में राष्ट्रीय जागरण करना चाहते थे। युवक स्वराज्य का सन्देश गांव में नहीं पहुंचा

सकते? क्या तुम गांवों के संघटन में योग नहीं दे सकते? हम सच कहते हैं, एल.एम. पी. या एम.ए- हो जाने के बाद, यह अमली तालीम, यह अनुभव, तुम्हें इतना हितकर होगा, जितना पुस्तक ज्ञान उम्र भर भी नहीं हो सकता। 'हंस' के प्रथमांक की ही सावधानी से परख कर ली जाए, तो पता चल जाता है कि प्रेमचंद की पत्रकारिता का रहस्य और उसकी विशेषताएं क्या थीं।

'हंस' को तत्कालीन सभी श्रेष्ठ कथाकारों, कवियों तथा निबन्धकारों का सहयोग प्राप्त था। इसी के माध्यम से हिन्दी के दो महान साहित्यकारों की रचनाएं हिन्दी संसार के सम्मुख आने लगीं। ये प्रेमचंद और प्रसाद। प्रथम अंक की प्रथम कहानी प्रसाद की है और उसका शीर्षक है 'मधुआ'। 'हंस' के विविध स्तम्भों के नामकरण तथा उनमें प्रकाशित पाठ्य सामग्री की ओर ध्यान दिया जाए तो प्रेमचंद की पत्रकारिता के क्षेत्र में नई सूझ- बूझ का परिचय सहज ही मिल जाता है। 'मानसरोवर' स्तम्भ में प्रथम कहानी प्रकाशित की जाती थी, जो रचना तथा कथा की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ होती थी। 'हंस' के प्रथम अंक में ही प्रेमचंद जी की 'जुलूस' शीर्षक कहानी प्रकाशित हुई है। 'मुक्ता-मंजूषा' स्तम्भ में भारत की विभिन्न भाषाओं के पत्रों में प्रकाशित विशेष लेख के सारगर्भ अंश दिए जाते थे। यह स्तम्भ अपने ढंग का निराला था और आगे चलकर समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकाशित सामग्री का परिचायक और संगम बन गया।

▶ प्रथम अंक की प्रथम कहानी प्रसाद की है

प्रथम वर्ष में ही 'हंस' का जो रंग-बिरंगा तथा विशिष्ठ पाठ्य सामग्रियों से युक्त विशेषांक निकला, उसमें भारतीय भाषाओं के कथा साहित्य की समीक्षा तथा परिचय प्रकाशित किए गए हैं। उसी अंक में पन्त और निराला का छन्दोबद्ध पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ है। प्रसाद का खंड-काव्य 'प्रलय की छाया' का प्रथम प्रकाशन भी उसी में हुआ। 'हंस' के स्वदेशांक, काशी अंक, आदि अनेक विशेषांक निकले, जो हिन्दी साहित्य की स्थायी सम्पत्ति हैं।

▶ विशेषांक में पन्त और निराला का छन्दोबद्ध पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ

'हंस' में प्रकाशित लेखों तथा उसमें सरकारी दमन नीति की कटु आलोचना से क्षुब्ध होकर ब्रिटिश सरकार ने अनेक बार उससे जमानतें मांगी। अन्तिम समय में सन् 1936 में जब प्रेमचंद लम्बी बीमारी में पड़े थे, पत्र से पुनः जमानत मांगी गई। सन् 1936 में 'हंस' भारतीय साहित्य परिषद की ओर से निकलता था, जिसके सभापति महात्मा गांधी थे और इसके सम्पादक मंडल में समग्र भारतीय भाषाओं के विद्वान थे। 'हंस' इस समय भारतीय साहित्य का मुखपत्र बन गया था। 'हंस' लिमिटेड के संचालकों ने पत्र बन्द कर दिया तो - प्रेमचंद जी ने जमानत देकर उसे पुनः प्रकाशित किया और सम्पादकीय टिप्पणी में प्रगतिशील साहित्य तथा कला के प्रति 'हंस' के प्रकाशन की नई योजना पर प्रकाश डाला। सितम्बर 1936 के 'हंस' में अपने 'साहित्यालोचन की समस्या' शीर्षक अग्रलेख लिखा। 'हंस' में यही लेख आपका अन्तिम लेख रहा। प्रेमचंद अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में 'हंस' के लिए बहुत चिन्तित रहे। सरकारी कोषों तथा हजारों रुपयों का घाटा उठाकर भी वह बराबर 'हंस' निकालते रहे। जब उनके शरीर का हंस उड़ रहा था, तब भी उन्हें 'हंस' की चिन्ता थी।

▶ 'हंस' भारतीय साहित्य का मुखपत्र बन गया

SGOU

'हंस' के प्रकाशन के साथ ही, 13 अगस्त, 1933 को प्रेमचंद के सम्पादकत्व में 'जागरण' निकला। इसके सम्पादकीय में उन्होंने स्पष्ट किया कि 'जागरण' को हमने व्यापारिक लाभ के लिए नहीं निकाला है, इसका मुख्य उद्देश्य सद्विचारों का प्रचार है। 'जागरण' अपने समय के सर्वोत्तम साप्ताहिकों में से था।

▶ अपना सर्वस्व नष्ट कर अपनी पत्रिकाओं को जीवित रखने का आदर्श

'माधुरी', 'हंस', 'जागरण' के अतिरिक्त उस युग में प्रकाशित होने वाली 'मर्यादा' मासिक पत्रिका का भी प्रेमचंद ने सम्पादन किया था। जिन-जिन पत्र-पत्रिकाओं से प्रेमचद का सम्बन्ध रहा, उनमें उनके व्यक्तित्व एवं विचार स्वातंत्र्य की अमिट छाप मिलती है। अपना सर्वस्व नष्ट कर अपनी पत्रिकाओं को जीवित रखने का जैसा आदर्श उन्होंने रखा, वह असाधारण एवं अतुलनीय है। पत्रकार प्रेमचंद की महत्ता उपन्यास सम्राट तथा महान कहानीकार प्रेमचंद से किसी अर्थ में कम नहीं है।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

अधिकार में स्वयं एक आनंद है, जो उपयोगिता की परवाह नहीं करता।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

30 मई 1826 ई. को हिन्दी पत्रकारिता का जन्म हुआ और 19 वीं शताब्दी बीतते-बीतते इसका चहुंमुखी विकास हुआ। बीसवीं शताब्दी के प्रथम पचास वर्ष पत्रकारिता की दृष्टि से कितने महत्त्वपूर्ण थे, जब दो-दो विश्वयुद्धों और स्वतंत्रता संग्राम के बीच हुए बदलाव ने देश की राजनीति, समाज, साहित्य, भाषा सभी को गहराई से स्पर्श किया। प्रेमचंद ने पत्रकारिता को एक प्रमुख मिशन के रूप में लिया, फैशन या व्यवसाय के रूप में नहीं। वे पत्रकारिता में पूँजी के प्रभुत्त्व के खिलाफ़ थे। पत्रकारिता में विज्ञापनों को वे कतई महत्त्व नहीं देते थे। वे पत्रकारिता के बुनियादी सिद्धान्तों व सवालों के हिमायती थे। वे किसी सत्ता प्रतिष्ठान के आगे नतमस्तक होकर पत्रकारिता के कतई पक्षधर नहीं थे।

आधुनिक चमक-धमक की पत्रकारिता से उनका कोई नाता नहीं था। इसलिए उनकी पत्रकारिता आज भी पत्रकारों के लिए पाथेय है जो सिद्धान्तों के लिए लड़ना सिखाती है। जन-समुदाय का कल्याण करना चाहती है। जो बेजुबान की जुबान बनकर बोलना जानती है। ऐसी थी प्रेमचंद की पत्रकारिता का आदर्श। उनका साहित्यकार रूप जितना विराट है, पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके स्वरूप की चर्चा है। परन्तु पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका कर्म भी उतना उच्च, दृढ़ और देशानुरागी है। आज भी हम उनकी पत्रकारिता से प्रेरणा ले सकते है। पत्रकारिता के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद का योगदान अद्वितीय है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. पत्रकार के रूप में प्रेमचंद की जाँच कीजिए।
2. प्रेमचंद की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के बारे में टिप्पणी लिखिए।
3. हिन्दी साहित्य में 'हंस' की भूमिका समझाइए।
4. स्वतंत्रता संग्राम में 'हंस' का योगदान पर आलेख तैयार कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत राय
3. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
4. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
5. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
6. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
7. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी पत्रकारिता भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर-काल तक - डॉ. धीरेन्द्रनाथ सिंह
2. कुछ विचार - प्रेमचंद।
3. प्रेमचंद की साहित्य साधना - रांगेय राघव।
4. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल।
5. प्रेमचंद नयी दृष्टि : नए निष्कर्ष - कमल किशोर गोयनका।
6. कहानीकार प्रेमचंद रचनादृष्टि और रचनाशिल्प - शिवकुमार मिश्र

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

प्रेमचंद का वैचारिक गद्य (समाज, राजनीति, संस्कृति, साहित्य एवं भाषा संबंधी प्रेमचंद के विचार) साहित्य का उद्देश्य-निबंध-प्रेमचंद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद का विचारात्मक गद्य की समझ विकसित होगी।
- साम्प्रदायिकता और संस्कृति पर प्रेमचंद के विचार जानता है
- प्रेमचंद के मत में साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा समझता है
- 'साहित्य के उद्देश्य' निबंध से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

संस्कृति के बारे में प्रेमचंद कहते हैं जैसे 'हिंदू अपनी संस्कृति को कयामत तक सुरक्षित रखना चाहता है, वैसे मुसलमान भी। दोनों ही अभी तक अपनी-अपनी संस्कृति को अछूती समझ रहे हैं, यह भूल गए हैं कि अब न कहीं हिंदू संस्कृति है, न मुस्लिम संस्कृति और न कोई अन्य संस्कृति। अब संसार में केवल एक संस्कृति है और वह है आर्थिक संस्कृति, मगर आज भी हिंदू और मुस्लिम संस्कृति का रोना रोए चले जाते हैं, हालांकि संस्कृति का धर्म से कोई संबंध नही'। भविष्य नहीं है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

वैचारिक गद्य, पत्रिका जमाना, महाजनी सभ्यता, दरिद्रता के भीषण दृश्य, प्रगतिशील साहित्यकार

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद का वैचारिक गद्य

- अंतिम वैचारिक निबंध 'महाजनी सभ्यता'

प्रेमचंद ने कथा-साहित्य के साथ-साथ नियमित रूप से प्रचुर मात्रा में वैचारिक गद्य का लेखन भी किया। यह काफी उन्होंने हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के डारी किया। इस तरह का उनका पहला लेख सन् 1903 में उर्दू पत्रिका 'ज़माना' में प्रकाशित हुआ। इसी के आसपास उनका पहला उपन्यास भी प्रकाशित हुआ। उनका अंतिम वैचारिक निबंध 'महाजनी सभ्यता' है। उनका यह लेखन

पत्रकारिता के रूप में, संपादकीय के रूप में, पत्र साहित्य के रूप में और सामयिक विषयों पर टिप्पणियों के रूप में प्रकाशित हुआ। वैचारिक गद्य की उनकी कोई सुव्यवस्थित कृति नहीं है। इस सारी सामग्री को अब 'प्रेमचंद रचनावली' में संकलित कर लिया गया है।

अपने वैचारिक गद्य में उन्होंने यूरोपीय समाज और साहित्य की जनतांत्रिक परंपरा का परिचय दिया। यूरोपीय इतिहास के ऐसे प्रकरणों को खोज करके उन्होंने प्रस्तुत किया जिनसे भारतीय राष्ट्रीय जागरण में मदद मिल सके। उन्होंने समाज सुधार से जुड़े हुए विभिन्न मुद्दों पर कई लेख लिखे। इससे हमें उस युग की सामाजिक कुरीतियों, समस्याओं और परिस्थितियों की जानकारी मिलती है। साथ ही, उन्होंने अंग्रेज सरकार के कार्यों की जानकारी दी और जहाँ आवश्यक लगा वहाँ सरकारी कार्यों से असहमति प्रकट की और उनका विरोध भी किया। इस तरह उनके लेखन की प्रमुख धारा राष्ट्रीय स्वाधीनता से जुड़ी हुई है। उन्होंने कहीं भी तत्कालीन अंग्रेज सरकार के पक्ष में कुछ नहीं लिखा। यदि भारत के अंग्रेज़ शासकों के विरुद्ध कोई तथ्य, घटना या विचार इंग्लैंड के अंग्रेज़ों ने व्यक्त किया तो, प्रेमचंद ने उत्साहपूर्वक उनका स्वागत किया। फिर देश-विदेश के लेखकों से हिन्दी पाठकों को परिचित करवाया। विदेशी लेखकों की कुछ रचनाओं का अनुवाद किया, भावानुवाद किया और कभी-कभी उनकी बातों का सार संक्षेप प्रस्तुत किया।

▶ उनके लेखन की प्रमुख धारा राष्ट्रीय स्वाधीनता से जुड़ी हुई है

प्रेमचंद के लेखन का समय सन् 1903 से 1936 के बीच की अवधि का है। इस काल में महात्मा गाँधी भारत के सर्वमान्य राजनीतिक नेता बन गए थे। प्रेमचंद ने गाँधी जी का समर्थन किया। कभी-कभी उन्होंने गाँधी जी के मत से अपनी असहमति व्यक्त की और कभी-कभी विरोध भी किया। तब भी मोटे तौर पर महात्मा गाँधी के विचारों से वे सहमत दिखते हैं। प्रेमचंद आरंभ में आर्य समाज से बहुत प्रभावित थे। वे उनके कार्यक्रमों में रुचि लेते थे। वे अपने संपूर्ण लेखन में हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक रहे। साम्प्रदायिकता और संस्कृति के सवाल पर उन्होंने लिखा, "साम्प्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है। उसे अपने असली रूप में निकलते शायद लज्जा आती है। इसलिए वह गधे की भाँति, जो सिंह की खाल ओढ़कर जंगल के जानवरों पर अपना रौब जमाता फिरता था, संस्कृति की खाल ओढ़कर आती है।" इसलिए प्रेमचंद इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जो लोग साम्प्रदायिकता की दुहाई देते हैं, वे अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी राज के स्थायीत्व का समर्थन करते हैं। सन् 1917 की सोवियत क्रांति के बाद प्रेमचंद पर समाजवादी विचारधारा का भी प्रभाव पड़ा। हालाँकि वे पूरी तरह से न गाँधी वादी थे और न समाजवादी। वे दोनों के कुछ विचारों से सहमत और कुछ से असहमत थे।

▶ "साम्प्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है"

प्रेमचंद के जीवन की सबसे बडी आकांक्षा थी देश को स्वतंत्रता मिल जाए। उनका साहित्यिक लेखन इस आकांक्षा से अनुप्राणित हैं। इसी कारण वे साहित्य की उपयोगिता के समर्थक थे और 'कला कला के लिए' को गैरज़रूरी सिद्ध करते थे। उन्होंने लिखा,

'कला कला के लिए का समय वह होता है, जब देश सम्पन्न और सुखी हो। जब हम देखते है कि भाँति-भाँति के राजनीतिक और सामाजिक बंधनों में जकड़े हुए है। जिस पर नजर उठती है, दुःख और दरिद्रता के भीषण दृश्य दिखाई देते हैं, विपत्ति का करुण क्रन्दन सुनाई देता है तो कैसे संभव है कि किसी विचारशील प्राणी का हृदय न दहल उठे?' और इसके साथ लेखक अपनी कलात्मकता का निर्वाह भी कैसे करता चले। इसलिए उनका वैचारिक गद्य मूलतः आन्दोलनधर्मी है। वे परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं और चाहते हैं कि उनके पाठकों के मन में परिवर्तन की यह आकांक्षा जाग्रत हो। इस दृष्टि से उन्होंने आचार्य चतुरसेन शास्त्री की आलोचना की तथा प्रसाद के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक नाटकों का इस आधार पर विरोध किया कि इनमें प्रसाद 'गड़े मुर्दे उखाड़ रहे हैं।' जब प्रसाद ने 'कंकाल' उपन्यास लिखा। उसमें देश-दशा का वर्णन किया, तब प्रेमचंद ने दिल खोलकर उसकी प्रशंसा की। परिवर्तन की इसी आकांक्षा के कारण उन्होंने जीवन और साहित्य में घृणा के महत्व पर प्रकाश डाला। इसलिए वे चाहते थे कि हमारे लेखक ऐसे मनुष्यों की सृष्टि करें जो साहसी, ईमानदार, स्वतंत्र चेतनायुक्त, जान पर खेलने वाले जोखिम उठाने वाले और ऊँचे आदर्शों वाले मनुष्य हो। आज इसी की ज़रूरत है।"

▶ उनका वैचारिक गद्य मूलतः आन्दोलनधर्मी है

प्रेमचंद साहित्य में समाज

प्रेमचंद से पहले निबन्ध और कविता, दोनों में सामाजिक जीवन की विभिन्न धार्मिक कुरीतियाँ और अंग्रेजों की लूट, कर्मचारियों की घूसखोरी, भूख, महामारी और करों के भार से पिसती हई भारतीय जनता का मुख्य विषय था। इन रचनाकारों को हिन्दी भाषी समाज के नहीं वस्तुतः 'राजनीति' के आगे मशाल लेकर चलनेवाले समझते थे।

निरन्तर विकसित होते मध्यवर्ग और पतनोन्मुख सामन्तवाद के जिस उषाकाल में प्रेमचंद ने रचना का कार्य प्रारम्भ किया, उसमें सामाजिक पतनोन्मुखता और सुधारवाद आपस में जुड़े दो सत्य थे।

▶ प्रेमचंद साहित्य में राजनीति और संस्कृति

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में समाज की विभिन्न रूढियों और सामाजिक दुराचार द्वारा किए जानेवाले शोषण का स्वरूप निरन्तर बदलते हुए समाज के साथ बदलता रहता था। उनके कथा-साहित्य की दुनिया परिवर्तन की चेतनावाली दुनिया हो जाती थी। प्रारम्भिक कथाओं और उपन्यासों के भीतर की बेबसी और यातनापूर्ण स्थिति का साक्षीभाव परवर्ती उपन्यासों विशेष रूप से 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'कायाकल्प', 'प्रेमाश्रम' और 'गोदान' में कर्म के द्वारा यथार्थ को बदल डालने के अपराजेय संकल्प में बदल जाता है।

किसी भी महान लेखक की जड़ें समाज की सांस्कृतिक धरोहर में गहराई से जमी होती हैं। अपनी प्रतिभा से नवनिर्माण करते समय जितनी शक्तिमत्ता के साथ वह इन सांस्कृतिक उत्सों से जीवन शक्ति खींच लेगा उसी अनुपात में महानता का आयाम उसके कृतित्व में जुड़ता जाएगा। यह सांस्कृतिक धरोहर लेखक के राजनैतिक विचारों,

▶ साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो

सामाजिक मान्यताओं और अन्य वैचारिक सरणियों से अधिक शक्तिशाली एवं अधिक स्थायी होती है और उसके लेखन की सामाजिक उपयोगिता एवं चिरकालिकता का सम्बन्ध सांस्कृतिक चेतना से अधिक होता है। प्रेमचंद का सेवाभाव इस कोटि का नहीं है। उसमें प्रेम की उमंग है।

प्रेमचंद ने भारतीय परम्पराओं में या कहिए सांस्कृतिक धरोहर में उत्पन्न दोषों का विरोध किया। वर्ण और जाति के आधार पर सामाजिक शोषण की अविरत परम्परा का जो पर्दाफाश प्रेमचंद ने किया उसको अब यहाँ अलग से विवेचित करने की जरूरत नहीं रही। 1911 में प्रेमचंद ने इसके विरोध में 'दोनों तरफ से' कहानी में आवाज उठाई थी। उसके बाद यह विरोध का स्वर प्रबल ही होता गया। लेकिन इस वर्ण-जाति व्यवस्था का जहर समाज को तोड़ेगा, ऐसा भय उन्होंने कभी व्यक्त नहीं किया। उन्हें भारतीय सामंजस्यवादी प्रवृत्ति और सहिष्णुता पर विश्वास था। यह अन्तर्दृष्टि उनके कथात्मक साहित्य में प्रचुरता से प्राप्त होती है।

प्रेमचंद ग्राम्य जीवन की सादगी और सरलता के समर्थक थे और नगर सभ्यता का प्रभाव गाँव जीवन की संस्कृति के लिए हानिकर समझते थे। यह दृष्टिकोण अन्त तक रहा। मनुष्य के स्नेह को और अन्य उदात्त मानवीय मूल्यों को खत्म कर देनेवाली यंत्र की गति को प्रेमचंद स्वीकार नहीं कर सकते थे।

साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा

▶ साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है

प्रेमचंद ने कहा है कि साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है। चाहे वह निबंध के रूप में हो चाहे कहानियों के या काव्य के. उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए। वास्तव में साहित्य गुण-दोष का विश्लेषण करने वाला आलोचक ही नहीं है। यह विधायक कलाकार है। वह जीवन की समस्याओं पर विचार भी करता है और उनका हल भी करता है।

साहित्यकार या कलाकार स्वभावतः प्रगतिशील होता है। अगर यह उसका स्वभाव न होता तो शायद वह साहित्यकार ही न होता। उसे अंदर भी एक कमी महसूस होती है और बाहर भी। इसी कमी को पूरा करने के लिए उसकी आत्मा बेचैन रहती है। अपनी कल्पना में वह व्यक्ति और समाज को सुख और स्वच्छंदता की जिस अवस्था में देखना चाहता है, वह उसे दिखाई नहीं देती इसीलिए वर्तमान मानसिक और सामाजिक अवस्थाओं से उसका दिल कुढ़ता रहता है। वह इन अप्रिय अवस्थाओं का अंत कर देना चाहता है, जिससे दुनिया में जीने के लिए इससे अधिक अच्छा स्थान हो जाए। यही वेदना और यही भाव उसके हृदय और मस्तिष्क को सक्रिय बनाये रखता है। वह इस वेदना को जितनी बेचैनी के साथ अनुभव करता है, उतना ही उसकी रचना में जोर और सच्चाई पैदा होती है। अपनी अनुभूतियों को वह जिस कमानुपात में व्यक्त करता है वहीं उसकी कला-कुशलता का रहस्य है। वस्तुतः साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और

जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्णरूप में उसी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयों और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हों।

साहित्य की प्रवृत्ति अहंवाद या व्यक्तिवाद तक परिमित नहीं रह गई है, बल्कि वह मनोवैज्ञानिक और सामाजिक होती जाती है। वह व्यक्ति को समाज से अलग नहीं देखता है क्योंकि समाज से अलग होकर उसका मूल्य शून्य के बराबर हो जाता है।

साहित्य में एक सार्थक आदर्श लेकर चलने के लिए यह आवश्यक है कि हमारी सुंदरता का मापदंड बदले। अभी तक यह मापदंड सामंती और पूँजीपतिक ढंग का रहा है। अगर सौंदर्य देखने वाली दृष्टि में विस्तृति आ जाये तो वह देखेगा कि रंगे होठों और कपड़ों की आड़ में अगर रूप, गर्व और निष्ठुरता छिपी है, तो इन मुरझाये हुए होठों और कुम्हलाए हुए गालों के आँसुओं में त्याग, श्रद्धा और कष्ट-सहिष्णुता है। हाँ, उसमें नफासत नहीं। दिखावट नहीं, सुकुमारता नहीं। वस्तुतः साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है-उसका दर्जा इतना न गिराइए। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह राजनीति के पीछे चलने वाली चीज नहीं, उसके आगे-आगे चलने वाली एडवांस गार्ड है। वह उस विद्रोह का नाम है जो मनुष्य के हृदय में अन्याय, अनीति और कुरुचि से उत्पन्न होता है।

साहित्यकार का लक्ष्य

हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो स्वाधीनता का भाव हो सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो-जो हम में गति और संघर्ष को बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है। सच्चा कलाकार बनने के लिए उसे संकीर्णता और स्वार्थ से ऊपर उठना होगा। संकीर्णता से ऊपर उठकर उसे अपनी सौंदर्यान्वेषी दृष्टि से सौंदर्य का ऐसा स्थल खोजना होगा जो केवल रूप-रंग तक ही सीमित नहीं है। उसे अंतर का सौंदर्य-उच्च भावों का सौंदर्य, कर्म का सौंदर्य परखना होगा।

अनमोल वचनः प्रेमचंद

धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सकें तो यह कोई महंगा सौदा नहीं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिन्दी के ही नहीं बल्कि अंग्रेजी के भी कुछ आलोचक प्रेमचंद पर इन अर्थों में गंभीर आरोप लगाते हैं। वे कहते है कि प्रेमचंद के सांप्रदायिकता विरोधी विचार उस समय के राष्ट्रवादी आंदोलन की जरूरत के तौर पर उभरे थे न कि उनके सहज विश्वास के कारण। प्रेमचंद का विपुल साहित्य इस बात का प्रमाण है कि केवल भाषा के स्तर पर उन्होंने उर्दू और हिन्दी में कोई पूर्वाग्रह नहीं किया। हम आज के दौर में देखते हैं कि अपनी रचनाओं में मुस्लिम समुदाय और पात्रों के माध्यम से उनके संसार, उनके स्वप्नों, उनके दुखों को आवाज़ दी।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'प्रेमचंद का वैचारिक गद्य' विषय पर एक लेख लिखिए।
2. साम्प्रदायिकता और संस्कृति पर प्रेमचंद का विचार स्पष्ट कीजिए।
3. प्रेमचंद के मत में साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा समझाइए।
4. साहित्य का उद्देश्य क्या है?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
3. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
4. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
5. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
6. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कुछ विचार - प्रेमचंद।
2. प्रेमचंद की साहित्य साधना - रांगेय राघव।
3. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल।
4. प्रेमचंद नयी दृष्टि : नए निष्कर्ष - कमल किशोर गोयनका।
5. हानीकार प्रेमचंद रचनादृष्टि और रचनाशिल्प - शिवकुमार मिश्र

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

प्रेमचंद की प्रासंगिकता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद की रचनाओं में यथार्थवादी चित्रण समझता है
- सामाज सुधारक के रूप में प्रेमचंद को जानता है
- सांप्रदायिकता का विरोध और हिंदू-मुस्लिम एकता संबंधी विचारों से परिचित होता है
- प्रेमचंद की रचनाओं में गाँधीवादी प्रभाव से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी साहित्य के चेतना रूपांतरण के बड़े लेखक हैं। उन्होंने अपने परवर्ती लेखकों का मानस विस्तार कर सर्वाधिक प्रभावित किया। कथा साहित्य में उनके नाम की परंपरा कायम हुई। क्यों साहित्य की इतनी विविधता और विस्तार के बावजूद प्रेमचंद ही बार-बार याद आते हैं? यह सवाल अक्सर किया जाता है। प्रेमचंद का लेखन स्वाधीनता के बुनियादी सरोकारों से सूत्रबद्ध है। उनकी राष्ट्रीयता और पराधीन देश की मुक्ति के संकल्प अपने समकालीनों से सर्वथा भिन्न हैं। उसमें जाति, धर्म, संप्रदाय आदि किसी भेदभाव के बिना भारतीय समाज की बहुस्वरता के मुद्दे सभी वर्गों की सहभागिता निहित है। उनकी स्वाधीन भारत की संकल्पना भावुकता और रूमानियत से परे भारतीय परिवेश में सच्चाइयों के आधार पर रूपायित है।

इसीलिए उनके 'स्वराज' का स्वप्न महात्मा गांधी के विचारों के काफी निकट है। प्रेम, त्याग और बलिदान के उच्च आदर्श उनके आरंभिक लेखन में भी दिखते हैं, पर आगे उनका दायरा व्यापक और यथार्थपरक होता गया। वे आजादी की लड़ाई को केवल राजनीतिक सत्ता हस्तांतरण नहीं, साधारण जनों के आर्थिक-सामाजिक-सांस्कृतिक सवालों से जोड़ना चाहते थे। किसान, स्त्री और दलितों को समाज की सामंती और पूंजीवादी व्यवस्था के शोषण और उत्पीड़न से मुक्त कराना चाहते थे। इसलिए उन्होंने इन वर्गों की वास्तविकता को अपनी कहानियों और उपन्यासों में दिखा कर, उनकी मुक्ति के सवाल बार-बार उठाए। हिंदू-मुसलिम सहअस्तित्व की ज़रूरी चिंताएं भी उनके लेखन से अछूती नहीं हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

यथार्थवाद, युगप्रवर्तक कथाकार, सांप्रदायिकता का विरोध, धार्मिक सुधार आंदोलन, गाँधीवाद के प्रचारक, मानवीय मूल्य

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद को भारतीय समाज के पारिवारिक जीवन की विविधताओं की गहरी परख थी। होरी-धनिया के बहाने वे अभावग्रस्त दाम्पत्य में निहित प्रेम संबंधों का सुन्दर वर्णन करते हैं। होरी धनिया को गुस्से में आकर मारता-पीटता है, तो थोड़ी देर बाद उसे पश्चाताप का भी अनुभव होता है। यहीं आकर पुनः प्रेम सम्बन्ध ऊष्मायित हो जाते हैं। इसके ठीक विपरीत वे 'कफन' कहानी में स्वार्थ की पराकाष्ठा का वर्णन उतनी ही सहजता से कर देते हैं। धीसू और माधव का प्रसव के दर्द से कराहती बुधिया के पास इस कारण से न जाना कि एक यदि चला गया तो दूसरा उसके आलुओं पर हाथ साफ कर देगा, अपने पेट की आग शान्त करने के लिए मनुष्यता को भूल जाने की हद तक घरेलु का पतन हो जाता है। उल्लेखनीय बात यह है कि प्रेमचंद ने कफन और गोदान दोनों को अपने जीवन के अन्तिम वर्ष अर्थात् सन् 1936 में लिखा था। ये दोनों रचनाएँ उनकी समाज पर पैनी नज़र की परिचायक हैं।

आज प्रेमचंद को गए अस्सी से अधिक वर्ष बीत जाने के बावजूद भी भारतीय समाज की समस्याओं में परिवर्तन नहीं आया। विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने के बावजूद भी भारत की वास्तविक समस्याओं के प्रति संवेदनहीनता का पर्याप्त अभाव है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रेमचंद के पात्रों की समस्याओं को अपने समाज से विमुक्त करने का प्रयास करें और तब शायद हम सिर उठाकर कह सकेंगे कि हमने वास्तविक आज़ादी हासिल कर ली।

सामाजिक यथार्थवाद

प्रेमचंद की रचनाएँ भारतीय समाज का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करती हैं। भारतीय उपन्यास साहित्य में किसानी जीवन के यथार्थवादी चित्रण की परम्परा को फकीर मोहन सेनापति के बाद प्रेमचंद ने विकसित किया है। 'भारतीय उपन्यास और प्रेमचंद' में मैनेजर पाण्डेय विचार करते हुए लिखते हैं, 'प्रेमचंद के कथा साहित्य में मध्यवर्ग भी है, लेकिन केन्द्रीय स्थिति किसान-जनता की ही है। यहाँ किसानों का जीवन संघर्ष ही केन्द्रीय विषय है। किसान जिस शोषण के शिकार थे, उस शोषण के पेचीदा तंत्र, उसकी जटिल प्रक्रिया और उसकी भयानक परिणति का चित्रण प्रेमचंद ने किया है। इनके कथा साहित्य के लगभग सभी नायक किसान ही रहे हैं। इसमें किसान जीवन के विभिन्न रूप, जीवन के संघर्ष और मुक्ति संघर्ष में लगे किसान के जीवन के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। इनकी रचनाओं में यहाँ किसान जीवन समग्रता में चित्रित है। कथा साहित्य में किसान को केन्द्र में रखकर उनकी वास्तविकता और आकांक्षाओं का कलात्मक चित्रण कर उपन्यास की विशिष्ट यथार्थवादी परम्परा का निर्माण किया गया है। उनका किसानों से प्रेम और सहानुभूति साफ दिखाई देती है, जब किसान संघर्ष करते हुए हारने के बावजूद जीतते हैं और सामंतवाद हारता है।

▶ कथा साहित्य में किसान को केन्द्र में रखकर उनकी वास्तविकता का चित्रण

SGOU

प्रेमचंद की रचनाओं को किसान जीवन का 'ट्रजिक महाकाव्य' कह सकते हैं। इस ट्रैजिक स्थिति का 'रंगभूमि' में कलात्मक स्तर प्रकट होता है तो 'गोदान' में कला का चरमोत्कर्ष है। प्रेमचंद के हाथों हिन्दी उपन्यास की 'कर्मभूमि' ही नहीं बदलती, बल्कि उसका 'कायाकल्प' भी होता है। 'गोदान' उपन्यास किसान जीवन का मर्मस्पर्शी, करुण और त्रासद दस्तावेज बन जाता है। प्रेमचंद के कथा साहित्य में जीवनानुसार भाषा का प्रयोग हुआ है। हर वर्ग, जातियों की सांस्कृतिक जड़ें उसकी भाषा में निहित होती है। मालती-मेहता, रमानाथ और देवीदीन खटीक और होरी-धनिया की किसान संस्कृति की भाषा अलग दिखाई देती है। सही कहते हैं मैनेजर पाण्डेय कि 'शेखर एक जीवनी के शिल्प और भाषा में 'गोदान' नहीं लिखा जा सकता है।' होरी की भाषा में शेखर का द्वंद्व नहीं आ सकता है, ठीक वैसे ही किसानों, आदिवासियों और दलित समुदाय की अभिव्यक्ति के लिए भारतीय जनजीवन की भाषा और बोली का रचनात्मक प्रयोग हुआ है। किसान, आदिवासी और दलित जीवन भारतीय आमजन के विशेष वर्ग हैं।

▶ प्रेमचंद की रचनाओं को किसान जीवन का 'ट्रैजिक महाकाव्य' कह सकते हैं

सामाजिक - सुधार

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में मौजूद बुराइयों - बाल विवाह, दहेज, और जातिगत भेदभाव का विरोध किया है। किसी रचनाकार की प्रासंगिकता इस बात में भी है कि वे सार्वकालिक होते हैं। न्याय मिलना जितना जरूरी था, उतना ही हिंदू-मुसलिम का भाईचारा। प्रेमचंद के उस धर्म निरपेक्ष सपने की अहमियत आज भी कम नहीं हुई है। उन्होंने सांप्रदायिकता प्रतिरोध और हिंदू-मुसलिम एकता का प्रबल समर्थन कई लेखों, कहानियों, उपन्यासों और नाटक आदि के द्वारा किया। पत्रकारिता में उनका वैचारिक लेखन भी प्रेरणाप्रद है। लेखन के विविध आयामों के बीच वे मूलतः युग प्रवर्तक कथाकार थे। अपने अभावों और संघर्षों से भरे जीवन की कठिनाइयों के चलते उन्होंने जनजीवन से एकात्म बनकर साहित्य की पूंजी कमाई। यह उनकी निष्ठा, प्रतिबद्धता और साधना की मिसाल है। देश के लिए उनके देखे हुए सपने की आकांक्षा अभी खत्म नहीं हुई है। उनसे उठाई गई सामाजिक समस्यायें अब भी विद्यमान है। इसलिए प्रेमचंद का प्रासंगिक होना स्वाभाविक है। वे अपनी सर्जना और विचारों के साथ आज के संघर्षों और चुनौतियों के मार्गदर्शक हैं।

▶ अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में मौजूद बुराइयों का विरोध किया

सांप्रदायिकता का विरोध

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में सांप्रदायिकता का विरोध किया है और हिंदू-मुस्लिम एकता का समर्थन किया है। उनकी साधारण कही जाने वाली कहानियों का भी आंतरिक सौंदर्य महत्त्वपूर्ण है। 'पंच परमेश्वर', 'ईदगाह', 'नमक का दारोगा', 'दो बैलों की कथा' आदि ऐसी कहानियाँ हैं, जिनके ज़रिये हर पीढ़ी का पहला परिचय प्रेमचंद से होता है। हिन्दी-उर्दू की विरासत से बहुत कुछ लेकर उन्होंने अपनी सहज कथा पद्धति विकसित की। आरंभ में नारी उद्धार और सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति संबंधी विचार प्रेमचंद ने आर्य समाज से ग्रहण किए थे। जब वहां मुसलमानों के शुद्धिकरण का प्रश्न हिंदू- मुस्लिम के बीच दरार पैदा करने लगा, तो वे उससे अलग हो गए। 'पंच परमेश्वर' में अलग धर्मों

▶ हिंदू-मुस्लिम एकता का समर्थन किया

के दो मित्रों की दोस्ती, नैतिकता और न्याय की विजय कामना कर प्रेमचंद ने अपने समय और समाज के नव -निर्माण का ही मार्ग प्रशस्त किया था।

दलितों की मुक्ति

- दलित वर्ग के प्रति संवेदनशील

प्रेमचंद दलित वर्ग के प्रति संवेदनशील थे। उन्होंने उनकी मुक्ति के लिए संघर्ष किया है। उपन्यास 'गोदान' का मातादीन-सिलिया प्रसंग ही नहीं, 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआं' और 'दूध का दाम' आदि कहानियां इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी दलितों के पक्ष में चिंता का संबंध भी भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन से मिली प्रेरणाओं से है- जो हमेशा उनके रचनात्मक लेखन में मौजूद रहीं। उस वक्त 'स्त्री की सामाजिक अस्मिता' के अनेक सवाल सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का अहम हिस्सा थे। 'सेवासदन' और 'निर्मला' उपन्यास तथा 'बड़े घर की बेटी', 'घासवाली', 'बूढ़ी काकी', 'सुभागी' आदि कहानियों के जरिए प्रेमचंद ने अपने रचनात्मक सरोकारों में स्त्री जीवन से जुड़ी समस्याओं को अभिव्यक्त किया। यही नहीं, स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख मुद्दों में उन्हें शामिल करने के लिए संघर्ष करते हुए आवाज भी उठाई।

कृषि और ग्रामीण जीवन

- किसानों की समस्याओं को उजागर किया

प्रेमचंद ने कृषि और ग्रामीण जीवन पर ध्यान केंद्रित किया है और किसानों की समस्याओं को उजागर किया है। भारतीय उपन्यास साहित्य में किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण की परम्परा को फकीर मोहन सेनापति के बाद प्रेमचंद ने विकसित किया है। 'भारतीय उपन्यास और प्रेमचंद' में मैनेजर पाण्डेय विचार करते हुए लिखते हैं, 'प्रेमचंद के कथा साहित्य में मध्यवर्ग भी है, लेकिन केन्द्रीय स्थिति किसान-जनता की ही है। यहाँ किसानों का जीवन संघर्ष ही केन्द्रीय विषय है। किसान जिस शोषण के शिकार थे, उस शोषण के पेचीदा तंत्र, उसकी जटिल प्रक्रिया और उसकी भयानक परिणति का चित्रण प्रेमचंद ने किया है। इनके कथा साहित्य के लगभग सभी नायक किसान ही रहे हैं।

- 'गोदान' आज भी नए परिप्रेक्ष्य में विचार के लिए प्रेरित करता है

उनका उपन्यास 'गोदान' आज भी नए परिप्रेक्ष्य में नए विचार के लिए प्रेरित करता है। यह औपनिवेशिक युग में किसानों के शोषण की गाथा ही नहीं, समकालीन नव-उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण की चुनौतियों और उसके विमर्शों से सामना करने वाली सच्ची रचना भी है। प्रेमचंद के समय महाजनों का, अंग्रेज़ों का राज था, आज अमेरिकी साम्राज्यवाद आर्थिक नीतियों में अदृश्य रूप से घुसा है। देश में बड़े पैमाने पर किसानों की आत्महत्या के चलते ही कर्ज़ माफ़ी की योजनाएं बनीं। गरीब आदमी अब भी सर्वाधिक संकटग्रस्त है। जीवन और जीविका के लिए जूझते-झींकते 'होरी' आज भी गांवों में मौजूद हैं।

किसानों की स्थितियों को लेकर प्रेमचंद सदैव चिंतित रहे। 'जागरण' में उनका संपादकीय 'हतभागे किसान' और 'महाजनी सभ्यता' जैसे लेख इसके प्रमाण हैं।

▶ पूंजीवादी औद्योगिक विकास के खतरों को प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' में उजागर किया है

भारतीय संरचना में किसान की ऐतिहासिक और सामाजिक-आर्थिक भूमिका को वे भली-भांति समझते थे। इसे 'प्रेमाश्रम', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' उपन्यास तथा 'पूस की रात' जैसी कहानियां लिख कर उन्होंने सिद्ध भी किया। 'गोदान' की अप्रतिम दृष्टि और सृजन अपने समय को अतिक्रमित करता है। पूंजीवादी औद्योगिक विकास के खतरों को प्रेमचंद ने वर्षों पहले 'रंगभूमि' में उजागर किया। भूमंडलीय नीतियां ग्रामीण अस्मिता, निम्नवर्गीय जीवन और सपनों पर कहर बरसा रही हैं।

▶ प्रेमचंद की चर्चित कहानी 'कफ़न' विमर्श और विवाद के केंद्र में रही है

प्रेमचंद की चर्चित कहानी 'कफ़न' भी विमर्श और विवाद के केंद्र में रही है। सहमतियों और असहमतियों के बीच इसकी आंतरिक शक्ति और लेखकीय परिपक्वता, इसे कभी अप्रासंगिक नहीं होने देती। अपने कलात्मक शिखर पर संयम से रची सिर्फ़ इसी कहानी को लेकर प्रेमचंद आज भी चुनौती की तरह अडिग हैं। इस पर अनेक दृष्टियों से विचार हुआ, फिर भी संभावनाएं बनी रहती हैं। सामान्य तर्कों से परे जाकर ही कहानी, कहानी बनती है। तभी वह बड़े जीवन सत्य को अभिव्यक्त कर सकती है। इस अर्थ में 'कफ़न' गहरे निहितार्थों की कहानी है, किसी वर्ग-जाति की निंदा की नहीं।

▶ श्रेष्ठ कलात्मक और यथार्थोन्मुख कहानियाँ

इस तरह समकालीन साहित्य-विमर्श में प्रचलित प्रमुख आयामों के 'बीज' रूप प्रेमचंद के लेखन में मौजूद हैं, जिनका संबंध क्रमशः किसानों, स्त्रियों और दलितों की मुक्ति तथा कथा-साहित्य में प्रचलित विमर्शों से है। गौर करना चाहिए कि प्रेमचंद ये चिंताएं तब साहित्य के केंद्र में लाए, जब इनके बारे में कोई ठीक-ठाक विचार भी नहीं था। उन्होंने कहानी-उपन्यास को रूमानी, मनोरंजक और आभिजात्य के समांतर सामयिक चिंताओं और वृहत्तर जीवन संदर्भों से जोड़ा, तभी सामाजिक, सोद्देश्य और यथार्थवादी भूमिका पर संभावना के रास्ते फूटे। उन्होंने पहले सैकड़ों ऐसी कहानियां लिखीं, जिनका हृदय परिवर्तन पर अंत है। उन्हें आलोचकों ने आदर्शवादी टाँचे में रख कर कला की दृष्टि से अपरिपक्व कहा। प्रेमचंद ने अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर कथायात्रा के अगले मुकाम पर श्रेष्ठ कलात्मक और यथार्थोन्मुख कहानियां लिखीं।

गाँधीवाद का प्रभावी लेखक

▶ प्रेमचंद को गाँधीवाद के प्रतिनिधि लेखक मानते हैं

देश की राजनीति पर एक मात्र गाँधी का वर्चस्व था। गाँधी ने आज़ादी की लड़ाई को सुचिंतित दिशा प्रदान की थी। राजनीति में राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का जो काम गाँधी ने किया वही काम साहित्य में प्रेमचंद ने किया। डॉ. बच्चन सिंह व प्रो. केसरी कुमार प्रेमचंद को गाँधीवाद के प्रतिनिधि लेखक मानते हैं। वे हिन्दी साहित्य को प्रेमचंद का केवल इसलिए ऋणी नहीं मानते कि स्वदेशी आंदोलन व अछूतोद्धार को गाँव-गाँव पहुँचाने के सारे काम करने वाले गाँधी रहे हैं। क्या प्रेमचंद गाँधी के भक्त थे? ऐसे ढेरों सवाल आज भी मुंह बाये खड़े मिलते हैं। शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' पुस्तक में जो लिखा है, उनमें से एक घटना उल्लेखनीय है। प्रेमचंद गाँधी जी से वर्धा से मिलकर लौटते हैं। बात ही बात में गाँधी जी की प्रशंसा सुनकर शिवरानी ने साफ़ शब्दों में कह बैठती है, "तुम गाँधी के चेला होकर लौटे हो!" प्रेमचंद ने बताया जो बात वे कह रहे थे, वह मैं 'प्रेमाश्रम' में किसानों के बारे में पहले से ही लिखता चला आ रहा हूँ और

गाँधी भी तो यही कह रहे हैं। इस उद्धरण से स्पष्ट है कि प्रेमचंद गाँधीवादी थे। उन्हें मार्क्सवादी प्रगतिशील साबित करने में लग रहे हैं। दरअसल हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद के बजाए गाँधीवादी जैनेन्द्र कहे जा सकते हैं।

प्रेमचंद पर गाँधीवाद का प्रभाव वैसे ही था जिस तरह तालस्तोय का रहा है। प्रेमचंद की कई बातों पर गाँधी से असहमतियाँ रही है। जिन किसानों की अहम् भूमिका गाँधी के आंदोलन में रही है, वे प्रेमचंद की रचनाओं में भी प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। गाँधी केलिए किसान कठपुतली की तरह है तो प्रेमचंद केलिए वह आजाद है। अगर किसान ज़मींदार के ख़िलाफ़, मज़दूर पूँजीपति के ख़िलाफ़ खडे होते तो गाँधी उन्हें तुरन्त रोक देते हैं। गाँधी के यहाँ किसान की जो स्थिति रही है वही प्रेमचंद के यहाँ भी थी। इससे यह स्पष्ट है कि प्रेमचंद गाँधीवादी थे पर उनके अंधभक्त नहीं थे। प्रेमचंद के उपन्यास और कहानियों में किसान-ज़मींदार की टकराहटें खूब सुनाई देती हैं। प्रेमचंद गाँधीवाद के प्रचारक मात्र नहीं थे और न ही गाँधी के सत्याग्रह की वकालत ही करने वाले। नामवर सिंह स्पष्ट शब्दों में लिखते है, 'प्रेमचंद के साहित्य में केवल गाँधीवाद की गहरी छाप देखना गाँधी जी के समस्त विचारों की छाया देखना और यह कहना कि अंत में न सही तो आरम्भिक दिनों में वे गाँधीवादी थे ही, सरासर गलत है ज्यादती है। नामवर सिंह गाँधी के प्रभाव को सिरे से ही नकार रहे हैं तो जैसे जितना प्रभाव आरम्भ में होता है, वैसा बाद में नहीं रह पाता है।

▶ गाँधी के यहाँ किसान कठपुतली की तरह है तो प्रेमचंद के यहाँ आज़ाद है

देश प्रेमी रचनाकार

स्वाधीनता संग्राम में किसानों की भूमिका को राजनीति में समझने वाले पहले गाँधी थे और साहित्य में प्रेमचंद। जबकि किसान की भूमिका को राजनीति में साम्यवादी भी नहीं समझ सके थे। किसान के महत्त्व को दोनों ने अपनी अपनी तरह से समझा था और आगे चलकर दोनों के रास्ते भी अलग हो जाते हैं, क्योंकि गाँधी किसान को ज़मींदारों के विरोध में जाने से रोकते हैं।

▶ गाँधी किसान को ज़मींदारों के विरोध में जाने से रोकते हैं

'सोजे वतन' मुंशी प्रेमचंद की कहानी संग्रह है जो देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। इस कहानी संग्रह में मुंशी प्रेमचंद ने देशप्रेम का वर्णन किया है। मुंशी प्रेमचंद की कहानी संग्रह 'सोजे-वतन' जो कि 1908 में प्रकाशित हुई थी। यह वह दौर था,जब हमारे देश के वीर सिपाही देश को स्वतंत्रता के लिए मैदान में आज़ादी की जंग लड़ रहे थे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जब हमारे देश के वीर सिपाही मैदान में अंग्रेज़ों से लोहा ले रहे थे,उस वक्त मुंशी प्रेमचंद बंद कमरे में बैठकर कलम को अपना हथियार बनाकर 'सोजे वतन' की रचना कर रहे थे जो देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण है। और ये कहानियां लोगो में देशभक्ति की भावना को उजागर करती हैं। तथा अपने देश के वीर सिपाहियों तथा देशभक्तों के बलिदान को दर्शाती है।

▶ मुंशी प्रेमचंद की कहानी संग्रह 'सोजे वतन' देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है

मुंशी प्रेमचंद ने तलवार उठाने की बजाय अपनी कलम को उठाकर अंग्रेज़ों से लोहा लिया। उनकी राजगद्दी को हिला डाला। जिसके कारण अंग्रेज़ों को भारी नुकसान हुआ और परिणामस्वरूप हमारे राष्ट्र को अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्ति मिल गयी।

मानवीय मूल्य

प्रेमचंद की रचनाएँ मानवीय मूल्यों जैसे प्रेम, सहानुभूति, और न्याय पर बल देती हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।प्रेमचंद का साहित्य ग़रीब जनता का साहित्य है। उन्होंने जीवन को बहुत नज़दीक से देखा था। उनके उपन्यासों में निम्न और मध्यम श्रेणी के गृहस्थों के जीवन का बहुत सच्चा रूप मिलता है। इनकी कहानियों में पहली बार समाज का पूरा परिवेश उसकी कुरूपता, असमानता, छुआछूत, शोषण की विभिषिका, कमज़ोर वर्ग और स्त्रियों का दमन आदि सचाई के साथ प्रकट हुआ है। ग्रामीण जीवन को उन्होंने बिना किसी वाद की दृष्टि से देखकर अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। अपने पात्रों को ऐसे सजीव रूप में चित्रित करते हैं कि पाठक की सहानुभूति सहज ही प्राप्त हो जाती है। पुरुष-पात्रों के साथ-साथ उन्हें नारी-पात्र के चरित्र- चित्रण में भी सफलता मिली है। सच तो यह है कि समाज के सभी वर्ग के पात्रों का चरित्र अपने-अपने सहज रूप में समान स्थान पाता है।

▶ प्रेमचंद का साहित्य ग़रीब जनता का साहित्य है

प्रेमचंद का जीवन औसत भारतीय जन जैसा है। यह साधारणत्व एवं सहजता प्रेमचंद की विशेषता है। प्रेमचंद दरिद्रता में जनमे, दरिद्रता में पले और दरिद्रता से ही जूझते-जूझते समाप्त हो गए। फिर भी वे भारत के महान साहित्यकार बन गए थे। उन्होंने अपने को सदा मज़दूर समझा। बीमारी की हालत में, मरने के कुछ दिन पहले तक भी अपने कमज़ोर शरीर को लिखने केलिए मज़बूर करते थे। कहते थे, "मैं मज़दूर हूं! मज़दूरी किए बिना मुझे भोजन का अधिकार नहीं है।"

▶ प्रेमचंद का जीवन औसत भारतीय जन जैसा है

अनमोल वचनःप्रेमचंद

"उपहास और विरोध तो किसी भी सुधारक के लिए पुरस्कार जैसे हैं"।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रेमचंद के कथा साहित्य में प्रमुख रूप से किसानों का संघर्ष ज़मींदारों, साहूकारों और पटवारियों से होता है। गाँधी के लिए आज़ादी के आंदोलन में जितनी आवश्यकता किसान की थी उतनी ही ज़मींदारों, पूँजीपतियों की भी होती हैं। वे आंदोलन में सबको साथ लेकर चलना चाहते थे। ऐसी किसी तरह की मजबूरी रचनाकार के नाते प्रेमचंद की नहीं थी, जैसे राजनीति में गाँधी की रही है। गाँधी के स्वराज्य में रामराज्य की परिकल्पना निहित है, जबकि प्रेमचंद का स्वराज अलग तरह का रहा है। प्रेमचंद गाँधी की आध्यात्मिकता और रहस्यवादिता की धारणा से मुक्त रहे हैं। देश की सत्तर फीसदी आबादी किसान को वास्तविकता में समझने वाले पहले रचनाकार साबित होते हैं। किसान जीवन से जुड़ा आधुनिक महाकाव्य लिखते हैं। वे एक तरफ़ किसान आंदोलन से जुड़ा 'प्रेमाश्रम' (1922) लिखते हैं, जिसमें किसान ज़मींदार के ख़िलाफ़ तनकर खड़े मिलते हैं तो दूसरी तरफ़ 'रंगभूमि' (1924) का सूरदास छोटी-सी ज़मीन का मालिक होते हुए भी पूँजीपति से सीधा संघर्ष करता है। 'कर्मभूमि' (1932) 'प्रेमाश्रम' की अगली कड़ी के रूप में हैं। इसमें किसान के अलावा छात्र, मज़दूर, हिन्दू, मुसलमान, ग़रीब-अमीर सभी लोग हैं।

'गोदान' (1936) में आते-आते भारतीय किसान की दयनीय व वास्तविक स्थिति से सीधा साक्षात्कार होता है। वह निरंतर पीड़ित और शोषित किसान की विडम्बना की दास्ण त्रासदी हो जाती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'प्रेमचंद की रचनाओं में यथार्थवादी चित्रण हुआ है'। समझाइए।
2. 'समाज सुधारक के रूप में प्रेमचंद का योगदान' पर टिप्पणी लिखिए।
3. 'प्रेमचंद की रचनाओं में सांप्रदायिकता का विरोध और हिंदू-मुस्लिम एकता का वर्णन दिया है' सिद्ध कीजिये।
4. 'प्रेमचंद की रचनाओं में गाँधीवादी प्रभाव है' समझाइए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कलम का मज़दूर : प्रेमचंद - मदन गोपाल
2. कलम का सिपाही : प्रेमचंद - अमृत रॉय
3. प्रेमचंद - गंगाप्रसाद विमल
4. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
5. प्रेमचंद एक विवेचन - रामविलास शर्मा
6. प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा नव मूल्यांकन - शैलेश जैदी
7. प्रेमचंद और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कुछ विचार - प्रेमचंद।
2. प्रेमचंद की साहित्य साधना - रांगेय राघव।
3. हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद - मदन गोपाल।
4. प्रेमचंद नयी दृष्टि : नए निष्कर्ष - कमल किशोर गोयनका।
5. कहानीकार प्रेमचंद रचनादृष्टि और रचनाशिल्प - शिवकुमार मिश्र

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

MODEL QUESTION PAPER SETS

SCOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg.No:.....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-I
POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

FOURTH SEMESTER -M23HD12DC-विशेष लेखक प्रेमचंद
CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Max. Time: 3 Hours

Max. Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. प्रेमचंद के साहित्य विशेषताएँ क्या-क्या है?
2. प्रगतिशील लेखक संघ का उद्देश्य क्या है?
3. सद्गति कहानी में चित्र 'वर्ग संघष'।
4. हिन्दी कहानीकार के रूप में प्रेमचंद का पदार्पण।
5. गबन उपन्यास में चित्रित समस्याएँ क्या क्या हैं?
6. गोदान की पात्र योजना।
7. प्रेमचंदयुगीन धार्मिक परिस्थितियां क्या-क्या हैं ?
8. प्रगतिशील लेखक संघ का उद्देश्य क्या है?

(5×2 = 10 Marks)

SECTION - B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद का परिचय दीजिए।
10. प्रेमचंद कथा साहित्य पर युगीन परिस्थितियों का प्रभाव समझाइए।
11. कफन कहानी का सारांश लिखिए।
12. बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा की स्थिति की बूढ़ी काकी कहानी के आधार पर आलोचना कीजिए।
13. स्त्री और दलित जीवन से संबंधित प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों के बारे में टिप्पणी लिखिए।
14. प्रेमचंद और 'हंस' पत्रिका।
15. कर्मभूमि उपन्यास का सारांश लिखिए।

SGOU

16. कृषक जीवन के महाकाव्य के रूप में गोदान की चर्चा कीजिए।

17. प्रेमचंद की आदर्शवादी प्रेरणा पर टिप्पणी लिखिए। (6×5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

18. कहानीकार प्रेमचंद विषय पर आलेख तैयार कीजिए।

19. मेरा जीवन संक्षिप्त आत्मवृत्त का सारांश लिखिए।

20. प्रेमचंद की प्रासंगिकता पर आलेख तैयार कीजिए।

21. उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद का समर्थन कीजिए। (2×15 = 30 Marks)

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-II
POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
FOURTH SEMESTER -M23HD12DC-विशेष लेखक प्रेमचंद

CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Max. Time: 3 Hours Max. Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. गाँधी जी के आदर्शों का प्रेमचंद पर कैसा प्रभाव पड़ा?
2. प्रेमचंद युग के प्रमुख उपन्यासकार एवं उनकी रचनाएँ
3. प्रेमचंद युगीन साहित्यिक परिस्थितियों क्या-क्या है?
4. आर्थिक शोषण के विरुद्ध आंदोलन प्रेमचंद ने किस प्रकार दिखाई है?
5. गोदान उपन्यास में चित्र ग्रामीण कथाएं क्या क्या हैं?
6. हंस पत्रिका के बारे में टिप्पणी लिखिए?
7. गोदान के कथानक क्या है?
8. निर्मला उपन्यास में चित्र के प्रमुख समस्याएँ क्या-क्या है? (5X2 = 10 Marks)

SECTION - B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. प्रेमचंद युगीन समाज की विभिन्न परिस्तिथितियों का अवलोकन कीजिए।
10. 'सद्गति' कहानी में चित्रित वर्ग संघर्ष पर टिप्पणी लिखिए।
11. गोदान के कथा साहित्य में कल्पना एवं चमत्कार के बारे में टिप्पणी लिखिए
12. स्वतंत्रता संग्राम में हंस की भूमिका समझाइए।
13. सांप्रदायिकता और संस्कृति पर प्रेमचंद का विचार स्पष्ट कीजिए।
14. प्रेमचंद का विराट साहित्य क्षेत्र में आदर्श और यथार्थ का सामन्वय है। सिद्ध कीजिए।

SGOU

15. गोदान की पात्र योजना पर टिप्पणी लिखिए।

16. गबन उपन्यास का सारांश लिखिए।

17. सेवासदन उपन्यास के बारे में टिप्पणी लिखिए।

18. पंच परमेश्वर कहानी का सारांश लिखिए। (6X5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

19. हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद का स्थान निर्धारित कीजिए।

20. ईदगाह' कहानी में चित्रित बाल मनोविज्ञान पर टिप्पणी लिखिए।

21. पन्यासकार के रूप में प्रेमचंद की देन क्या है? चर्चा कीजिए

22. प्रेमचंद की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं के बारे में लिखिए। (2×15 = 30 Marks)

SGOU

NO TO DRUGS

തിരിച്ചിറങ്ങാൻ പ്രയാസമാണ്

SGOU

NO TO DRUGS

ആരോഗ്യ കുടുംബക്ഷേമ വകുപ്പ്, കേരള സർക്കാർ

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

विशेष लेखक प्रेमचंद

Course Code: M23HD12DC

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

ISBN 978-81-990686-6-7

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841